एन सी ई आर टी

वार्षिक रिपोर्ट 2001-2002

दिसंबर 2002

अग्रहायण 1924

PD 5H NSY

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा नाथ ग्राफिक्स, 1/21, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली 110 016 द्वारा लेज़र टाइपसैट होकर शगुन ऑफसैट, 132, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली 110 066 द्वारा मुद्रित।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) डा. मुरली मनोहर जोशी, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री और परिषद् के अध्यक्ष के प्रति उनके परामर्श और मार्गदर्शन के लिए आभारी है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार के कार्यक्रमों में गहन रुचि लेने और समर्थन प्रदान करने के लिए अपने महानिकाय, कार्यकारिणी समिति, कार्यक्रम सलाहकार समिति और अन्य कार्यक्रम कार्यविधि समितियों के विशिष्ट सदस्यों के प्रति कृतज्ञ है।

परिषद् उन विशेषज्ञों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा अनेक प्रकार से सहायता प्रदान की है। वे सभी राज्य शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और विश्वविद्यालय सहित सभी संगठन और संस्थान भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने शिक्षा में भागीदारी की भावना से परिषद् को सहयोग देकर उसके कार्यकलापों को कार्यान्वित करने में संपूर्ण सहायता प्रदान की है।

एन.सी.ई.आर.टी. यूनेस्को, यूनिसेफ, यू.एन.डी.पी., यू.एन.एफ.पी.ए., विश्व बैंक आदि के प्रति भी सम्मान व्यक्त करती है जिन्होंने अपने प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहयोग प्रदान किया। परिषद् अपने सभी स्तरों के स्टाफ के सदस्यों के प्रति भी आभार प्रकट करती है, जिनके सहयोग और कर्तव्यनिष्ठा के बिना कार्यक्रम का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन संभव नहीं था। परिषद् उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और ऐसे अनेक व्यक्तियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है जिन्होंने परिषद् के 2001-2002 के प्रकाशनों और कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए परिषद् के विभिन्न संघटकों को पत्र भेजे और निरंतर बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरणा के सतत स्रोत बने।

इस रिपोर्ट का प्रारूप योजना, कार्यक्रम, परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग के डॉ. जे.पी. मित्तल, रीडर ने संकाय सदस्यों और कार्यालय के स्टाफ की सहायता से तैयार किया है। इसका प्रकाशन कार्य प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संपन्न हुआ है। इन सभी के बहुमूल्य सहयोग से इस रिपोर्ट को यह स्वरूप प्राप्त हुआ है।

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्**

मोनोग्राम में परस्पर आवेष्टित हंस,
एन.सी.ई.आर.टी. के कार्य के तीनों पहलुओं
के एकीकरण के प्रतीक हैं
अर्थात् (i) अनुसंधान और विकास
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार और प्रसार।
यह डिज़ाइन, कर्नाटक के रायचूर ज़िले
में मस्के के निकट हुई खुदाई से प्राप्त
ईसा पूर्व तीसरी सदी के अशोक युगीन भग्नावशेष
के आधार पर बनाया गया है।

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' आदर्श वाक्य ईशावास्य
उपनिषद् से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व मिलता है।

विषय सूची

आभार		iii
1.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संगठन	1
2.	विद्यालयी शिक्षा में एन.सी.ई.आर.टी. के योगदान का विहंगावलोकन	12
3.	प्रारंभिक शिक्षा	32
4.	अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा	41
5.	विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा	45
6.	बालिका शिक्षा	52
7.	विज्ञान और गणित शिक्षा	56
8.	सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा	64
9.	परीक्षा सुधार	70
10.	शैक्षिक मनोविज्ञान	75
11.	मूल्यपरक शिक्षा	77
12.	अध्यापक शिक्षा	82
13.	व्यावसायिक शिक्षा	93
14.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी	101
15.	कंप्यूटर शिक्षा	108
16.	प्रतिभा की पहचान और प्रोत्साहन	111
17.	शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन	115
18.	अंतर्राष्ट्रीय संबंध	123
19.	हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन	134
परिशिष्ट		
I.	एन.सी.ई.आर.टी. की समितियां	138
II.	संस्वीकृत स्टाफ की क्षमता	171
III.	वर्ष 2001-2002 का प्राप्ति और भुगतान लेखा	172
IV.	वर्ष 2001-2002 के दौरान निकाले गए प्रकाशन	175
V.	एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों के थोक एजेंटों के नाम और पते	182

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. गांधी

1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और [illegible] परिषद् : विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संगठन

अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, प्रकाशन और प्रसार संबंधी कार्यकलापों के अलावा, एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए एक प्रमुख अभिकरण के रूप में कार्य करती है। एन.सी.ई.आर.टी. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, आगंतुक विदेशी विशेषज्ञों तथा शिष्टमंडलों के साथ संपर्क करती है, विचारों का आदान-प्रदान करती है और उनके सहयोग से कार्य करती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संगठन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) की स्थापना 1961 में भारत सरकार द्वारा सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम (1860 का 21वां अधिनियम) के अंतर्गत एक रजिस्ट्रीकृत स्वायत्त संगठन के रूप में की गई थी और उसे शिक्षा के क्षेत्र में नीतियां तथा प्रमुख कार्यक्रम बनाने और उनका कार्यान्वियन करने में विशेष रूप से विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा विभागों को सलाह एवं सहायता देने का काम सौंपा गया था। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एन.सी.ई.आर.टी. और उसकी संघटक इकाइयां :

- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों/विषयों पर स्वयं अनुसंधान/शोध कार्य करती हैं और दूसरों के द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों के लिए सहायता एवं प्रोत्साहन देती हैं तथा उनके बीच समन्वय करती हैं;
- अध्यापकों के लिए सेवापूर्व तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करती हैं;
- जो संस्थाएं शैक्षिक अनुसंधान, अध्यापकों के प्रशिक्षण में संलग्न हैं उनके लिए विस्तार सेवाओं की व्यवस्था करती हैं और स्कूलों के लिए विस्तार सेवाएं उपलब्ध कराती हैं;
- उन्नत शैक्षिक तकनीकें, परिपाटियां और नवाचार विकसित और प्रसारित करती हैं;
- राज्यों के शिक्षा विभागों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करती हैं, उन्हें सलाह और सहायता देती हैं;
- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित सभी विषयों में विचारों तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान के केन्द्र के रूप में कार्य करती हैं;
- अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, सामग्रियों तथा अन्य साहित्य के प्रणयन, निर्माण तथा/अथवा प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लेती हैं;
- प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक नोडल अभिकरण के रूप में कार्य करती हैं।

अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, प्रकाशन और प्रसार संबंधी कार्यकलापों के अलावा, एन.सी.ई. आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के कार्यान्वियन के लिए एक प्रमुख अभिकरण के रूप में कार्य करती है। एन.सी.ई.आर.टी. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, आगंतुक विदेशी विशेषज्ञों तथा शिष्टमंडलों के साथ संपर्क करती है, विचारों का आदान-प्रदान करती है और उनके सहयोग से कार्य करती है। इसके अलावा, वह विकासशील देशों से आने वाले शैक्षिक कार्मिकों को विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करती है।

संघटक इकाइयां

एन.सी.ई.आर.टी. की प्रमुख संघटक इकाइयां निम्नलिखित हैं:

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), नई दिल्ली;
2. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई. ई.टी.), नई दिल्ली;
3. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल;
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर;
5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल;
6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर;
7. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूर;
8. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर. आई.ई.), शिलांग।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पाठ्यचर्या के शैक्षिक पहलुओं से संबद्ध अनुसंधान एवं विकास

कार्य करता है; आद्य-पाठ्यचर्यात्मक और अन्य अनुपूरक शैक्षिक सामग्री तैयार करता है; विद्यालयी शिक्षा से संबंधित डाटाबेस विकसित करता है तथा विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के लिए विद्यालय-पूर्व, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर प्रयोग करता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान मुख्य संसाधन व्यक्तियों और केंद्र-प्रायोजित विद्यालय सुधार संबंधी स्कीमों के कार्यान्वयन से संबद्ध अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन करता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभाग और उनके शैक्षिक कार्यक्षेत्र पृष्ठ 4 और 5 पर दिए गए हैं।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी)

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का कार्य शैक्षिक अवसरों का विस्तार करने और शैक्षिक प्रक्रियाओं, व्यवहारों और प्रतिफलों की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से शैक्षिक प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से जनसंचार माध्यमों का विकास करना है।

सी.आई.ई.टी. के कार्यकलापों में मीडिया सॉफ्टवेयर यानी रेडियो तथा टेलीविजन के कार्यक्रम तैयार करना और प्रस्तुत करना भी शामिल है। सी.आई.ई.टी. ऐसे सॉफ्टवेयर के विकास तथा उपयोग के लिए राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों के मीडिया कार्मिकों में सक्षमता का निर्माण करने के लिए भी कार्यक्रम आयोजित करता है। संस्थान प्रसारण माध्यमों से तथा अन्य तरीकों से भी अपने सॉफ्टवेयर का प्रसार करता है। आवश्यकताओं का आकलन करने, श्रोताओं के स्वरूप का निर्धारण करने और पाठ्य-सामग्री तथा सह-पाठ्यचारी सामग्रियों के प्रयोग को समर्थन देने के लिए सी.आई.ई.टी. द्वारा विकसित सामग्रियों तथा कार्यक्रमों की प्रभावकारिता का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान तथा मूल्यांकन संबंधी कार्यकलाप संपन्न किए जाते हैं।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)

भोपाल में स्थापित पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों स्तरों पर, कार्य शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी कार्यकलाप संचालित करता है। व्यावसायिक पाठ्यचर्याओं, मार्गनिर्देशों और अनुदेशात्मक सामग्रियों के विकास के आलावा यह संस्थान महत्त्वपूर्ण कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण/ अभिविन्यास और अनुसंधान/कार्यात्मक अनुसंधान, डेटाबेस के निर्माण, सूचना के आदान-प्रदान, कार्यात्मक तथा व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देने, उन्हें लोकप्रिय बनाने और कार्यान्वित करने के कार्यकलापों में संलग्न है; यह तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा की यूनेस्को परियोजना यूनेवॉक के ई-फोरम का भी सदस्य है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं (सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षा) को पूरा करते हैं; कुछ हद तक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा विज्ञान तथा गणित शिक्षण हेतु विद्यालयी अध्यापकों और प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-प्रशिक्षकों को तैयार करने हेतु सेवापूर्व व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। यह संस्थान विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा हेतु क्षेत्रीय संसाधन संस्थानों के रूप में कार्य करते हैं; राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की नीतियों को कार्यान्वित करने में अपेक्षित सहायता देते हैं और केंद्र-प्रायोजित योजनाओं/स्कीमों के क्रियान्वयन, परिवीक्षण तथा मूल्यांकन हेतु सहायता प्रदान करते हैं। अजमेर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल तथा संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़ में अध्यापक शिक्षा तथा तत्संबंधी शैक्षिक आवश्यकताओं की देखरेख करता है। भोपाल स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और संघ राज्य क्षेत्र दादर व नगर हवेली तथा दमन व दीव की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। क्षेत्रीय शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभाग और उनके शैक्षिक कार्यक्षेत्र

विभाग/प्रभाग	*शैक्षिक कार्यक्षेत्र*
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई)	स्कूल जाने वाले और स्कूल न जा सकने वाले बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएँ। उन्हें औपचारिक और वैकल्पिक शिक्षा देने के लिए आदर्श पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री के अनुसंधान और विकास से संबंधित कार्यकलापों के माध्यम से पढ़ाना। स्कूल-पूर्व, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तरों पर गुणवत्तापरक शिक्षा देने के लिए राज्य और जिला स्तर के समूहों की क्षमता का निर्माण करके तथा अनुसंधान एवं विकास के कार्यकलाप आरंभ करके सर्व शिक्षा अभियान को शैक्षिक/अकादमिक एवं व्यावसायिक सहायता प्रदान करने के लिए प्रमुख विभाग के रूप में कार्य करना।
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन)	अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों, अल्पसंख्यकों, विकलांगों और विशेष आवश्यकता वाले अन्य समूहों की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएँ, और तत्संबंधी अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण तथा ऐसे ही कार्यकलापों में संलग्न संगठनों के साथ संपर्क/नेटवर्क बनाए रखना। तृणमूल स्तर पर अच्छे समवेत व्यवहारों का विश्लेषण करना और उनके लिए सुविधाएं प्रदान करना और इस हेतु कार्यकर्ताओं तथा संगठनों की क्षमता का निर्माण करना।
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)	बालिकाओं और स्त्रियों की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएँ तथा तत्संबंधी अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, महिलाओं की समानता तथा सशक्तीकरण और समर्थन के कार्यकलाप।
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)	विज्ञान और गणित शिक्षा के मुद्दे और समस्याएं तथा प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतम माध्यमिक स्तरों के लिए आदर्श पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री में अनुसंधान एवं विकास तथा विज्ञान उपकरणों का अभिकल्पन/डिजाइनिंग व विकास।
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)	राज्य/उप-राज्य स्तरों पर अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता के निर्माण/विकास के लिए कार्यक्रम तथा अध्यापक शिक्षा की केंद्र-प्रायोजित योजनाओं को शैक्षिक/अकादमिक सहायता; प्रारंभिक शिक्षा विभाग तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के समन्वय से प्रशिक्षण, शिक्षाशास्त्र और पाठ्यचर्या पर राष्ट्रीय संसाधन दल के कार्य तथा विस्तार शिक्षा से संबंधित मुद्दे।
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)	सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा संबंधी मुद्दे और समस्याएं, आदर्श पाठ्यचर्या और उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतम माध्यमिक स्तरों के लिए अनुदेशात्मक/शिक्षण सामग्री का अनुसंधान और विकास, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) के भाग के रूप में जनसंख्या शिक्षा कार्यकलाप।

विभाग/प्रभाग	*शैक्षिक कार्यक्षेत्र*
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक आधारों से संबंधित अध्ययन, तुलनात्मक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा के लिए उनके निहितार्थ, मूल्यपरक शिक्षा को सबल बनाना, विद्यालय स्तर पर, अध्यापक प्रशिक्षण/शिक्षा में मनोविज्ञान पढ़ाना और मार्गदर्शन तथा परामर्श।
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)	विद्यालयी शिक्षा से संबंधित मापन और मूल्यांकन संबंधी मुद्दे, सतत और व्यापक मूल्यांकन सहित परीक्षा सुधार और तत्संबंधी अनुसंधान और विकास के कार्यकलाप।
शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा प्रक्रिया विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)	अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण सहित आवधिक विषयगत, शैक्षिक अध्ययन, अनुसंधान के सांख्यिकीय तरीकों में प्रशिक्षण, डेटाबेस का विकास; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संघटकों द्वारा बड़े स्तर पर आयोजित सर्वेक्षण/अध्ययन से संबंधित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण तथा परिमाणात्मक विश्लेषण में प्रयोग हेतु विभिन्न अनुप्रायोगिक सॉफ्टवेयर क्षमता के संबंध में अनुसंधान और प्रयोग सहित मूल विषयक शैक्षिक अध्ययन।
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)	शिक्षा में नीतिगत अनुसंधान को बढ़ावा देना, 'थिंक टैंक' कार्यों के प्रचालन के लिए कार्यकलाप को आयोजित करना; विद्यालयी शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति सचिवालय के कार्यों और विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान और नवाचारों को आरंभ करना, समन्वित करना, प्रायोजित करना।
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)	कंप्यूटर शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करता है; छात्रों के लिए अनुदेशात्मक सामग्री विकसित करता है; विद्यालयी शिक्षा में कंप्यूटर के प्रयोग के विषय में अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण का संचालन करता है; शिक्षा संबंधी मल्टी-मीडिया सॉफ्टवेयर विकसित करता है।
प्रकाशन विभाग (पी.डी.)	विद्यालयी स्तर की पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण तथा अनुपूरक सामग्री, पत्रिकाएं और शोध प्रबंध प्रकाशित करना।
योजना, प्रोग्रामिंग, परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)	शैक्षिक कार्यक्रम प्रारूपण का समन्वय, कार्यान्वयन, परिवीक्षण, बजट कार्य, मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजी जाने वाली आवधिक रिपोर्टें और विवरणियाँ तथा वार्षिक रिपोर्ट तैयार करना।
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)	अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देने के लिए अन्य देशों में स्थित शैक्षिक संस्थाओं के साथ कार्यकलापों का समन्वय तथा राष्ट्रीय विकास दल के लिए अकादमिक सचिवालय के रूप में कार्य करना।
पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)	शैक्षिक सूचना का प्रलेखन और पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करना, शैक्षिक सूचना के राष्ट्रीय आदान-प्रदान के केंद्र के रूप में कार्य करना और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं के साथ संपर्क-संबंध बनाए रखना।

संस्थान, भुवनेश्वर के अधिकार क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल तथा संघ राज्य क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह शामिल हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर के अधिकार क्षेत्र में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु, लक्षद्वीप व पांडिचेरी शामिल हैं।

शिलांग में एक नए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना की गई है जो चालू होने पर पूर्वोत्तर राज्यों अर्थात् असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा तथा सिक्किम की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

संगठनात्मक संरचना

मानव संसाधन विकास मंत्री राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के महानिकाय के अध्यक्ष (पदेन) हैं। महानिकाय के सदस्यों में सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री शामिल हैं। महानिकाय के अन्य सदस्यों में अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग; सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार; विश्वविद्यालयों के चार उपकुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक); अध्यक्ष, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड; आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन; निदेशक, केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो; प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय; शिक्षा प्रभाग, योजना आयोग के एक प्रतिनिधि; परिषद् की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य (ऊपर शामिल नहीं) और भारत सरकार द्वारा मनोनीत व्यक्ति (छः से अधिक नहीं, इनमें कम से कम चार स्कूल शिक्षक हों) शामिल हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिव इस महानिकाय के संयोजक होते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का मुख्य शासी निकाय यह कार्यकारिणी समिति है। मानव संसाधन विकास मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) तथा मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री इसके पदेन उपाध्यक्ष हैं। कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार; निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष; विद्यालयी शिक्षा में रुचि लेने वाले चार विख्यात शिक्षाविद् (इनमें से दो स्कूल शिक्षक हों); राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संयुक्त निदेशक; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तीन संकाय सदस्य (इनमें से कम से कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के स्तर के हों); मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का वित्तीय सलाहकार हो) होंगे। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिव कार्यकारिणी समिति के संयोजक के रूप में कार्य करते हैं।

कार्यकारिणी समिति निम्नलिखित स्थायी समितियों के सहयोग से कार्य करती है :

1. वित्त समिति
2. स्थापना समिति
3. भवन एवं निर्माण समिति
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियां
5. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड
6. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड
7. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति
8. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के सलाहकार बोर्ड
9. कार्यक्रम सलाहकार समिति
10. शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मुख्यालय के दो भाग हैं :

1. परिषद् का सचिवालय
2. लेखा शाखा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में सरकार द्वारा मनोनीत पांच वरिष्ठ पदाधिकारियों में निदेशक, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के संयुक्त निदेशक, पंडित सुंदरलाल शर्मा

केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान के संयुक्त निदेशक और सचिव शामिल हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान इन पदों पर निम्नलिखित व्यक्ति आसीन थे :

एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ पदाधिकारी

निदेशक	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत
संयुक्त निदेशक (सी)	प्रो. एम.एस. खापर्डे
संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)	प्रो. पी.के. भट्टाचार्य (31-05-2001 तक) *प्रो. एम.एस. खापर्डे* (1-06-2001 से)
संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)	प्रो. एस.ज़ैड. हैदर
सचिव	श्री सतिन्दर सिंह

अकादमिक कार्यकलापों में तीन संकायाध्यक्ष (डीन) निदेशक की सहायता करते हैं। डीन (अकादमिक) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के कार्य का समन्वय करते हैं; डीन (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वय करते हैं और शैक्षिक अनुसंधान व नवाचार समिति के कार्य देखते हैं तथा डीन (समन्वय) सेवा उत्पादन विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के कार्यकलापों का समन्वय करते हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित व्यक्ति इन पदों पर रहेः

एन.सी.ई.आर.टी. के संकायाध्यक्ष

डीन (अनुसंधान)	प्रो. एम.एस. खापर्डे
डीन (अकादमिक)	प्रो. जी.के. लहरी
डीन (समन्वय)	प्रो. आर.डी. शुक्ल

कार्यकलाप और उपलब्धियां

अपनी स्थापना के समय से ही, एन.सी.ई.आर.टी. एक ऐसी संस्था के रूप में कार्य करती रही है जो अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यों के प्रति समर्पित हो; विज्ञान और सामाजिक अध्ययन विषयक पाठ्यपुस्तकों की अनेक शृंखलाएं विख्यात लेखकों तथा सुप्रसिद्ध संगठनों के सहयोग से प्रकाशित की जा चुकी हैं। एन.सी.ई.आर.टी. ने वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए उपस्कर/उपकरण भी विकसित किए हैं। अध्यापकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया है कि वे विभिन्न अनुदेश विधियों के साथ इन सामग्रियों तथा प्रयोगों की व्यावहारिक जांच करें। छात्रों के अध्ययन-अधिगम निष्कर्षों का मूल्यांकन और अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या का विकास पिछले दस वर्षों में हुए महत्त्वपूर्ण कार्यकलाप हैं।



परम पावन दलाई लामा एन.सी.ई.आर.टी. परिसर में आयोजित 'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर विस्तार भाषण के समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए। साथ में हैं डा. कर्ण सिंह भूतपूर्व शिक्षा मंत्री तथा अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. और प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.

जिन उल्लेखनीय कार्यकलापों ने एन.सी.ई.आर.टी. को राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाया है उनमें शामिल हैं: बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों तथा अनुदेशात्मक सामग्रियों की अनेक शृंखलाएं तैयार करना; नवाचारात्मक सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम, जैसे 4-वर्षीय बी.एससी. बी.एड, 2-वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) और एम.एड. (प्रारंभिक), राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना/स्कीम, बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी-राष्ट्रीय और राज्य स्तर; बाल साहित्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता; अध्यापक शिक्षा में नवाचारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; विद्यालयी शिक्षा में नवाचारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; व्यावसायिक शिक्षा के संवर्धन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; मार्गदर्शन तथा परामर्श/उपबोधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम; सामुदायिक गायन कार्यक्रम, स्कूली बच्चों के लिए श्रव्य कार्यक्रमों तथा ई.टी.वी. का प्रसारण; आकाशवाणी पर 'उमंग' और 'ज्ञानवाणी', ज्ञानदर्शन चैनल और डी.डी.-1 पर 'तरंग' कार्यक्रम।

देश में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली यानी 10+2+3 प्रणाली के कार्यान्वयन के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. ने 1976, 1988 और 2000 के दौरान राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और उसके संशोधनों के रूप में और आदर्श पाठ्यचर्या, अनुदेशात्मक सामग्री, मूल्यांकन उपकरण और नवाचारात्मक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के रूप में निविष्टियां (इनपुट) प्रस्तुत कीं।

एन.सी.ई.आर.टी. ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, कार्यवाही कार्यक्रम (एन.पी.ई., पी.ओ.ए. 1986/92) के निर्माण में सर्वेक्षण, अनुसंधान और विकास संबंधी निविष्टियों के रूप में योगदान देकर एक उल्लेखनीय भूमिका अदा की। एन.पी.ई. और पी.ओ.ए. की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1988 (नेशनल करीक्यूलम फॉर एलिमेंटरी एंड सेकंडरी एजुकेशन : ए फ्रेमवर्क 1988) और उसके बाद विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए मार्गनिर्देश तथा पाठ्यचर्या प्रकाशित कीं।

एन.सी.ई.आर.टी. ने सभी एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., एस.आई.ई.टी. आदि संस्थाओं में क्षमता के निर्माण में और विज्ञान शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, सुविधावंचित समूहों की शिक्षा आदि को लोकप्रिय बनाने और उसमें सुधार करने की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य किया।

राज्यों के साथ सार्थक संबंध जोड़ने और साझेदारी स्थापित करने के उद्देश्य से, एन.सी.ई. आर.टी. ने अनेक केंद्रीय सेक्टर की परियोजनाओं/स्कीमों में अकादमिक योगदान दिया। इन परियोजनाओं/स्कीमों में से कुछ ये हैं : माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण; 6-14 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम; शैक्षिक प्रौद्योगिकी; प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.); सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.); विद्यालयी अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास के कार्यक्रम (पी-मोस्ट); विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा के सुधार की योजना; विद्यालयी शिक्षा का पर्यावरणिक अभिविन्यास; विद्यालयों में कंप्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास); ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (ओ.बी.) स्कीम, विद्यालयों में योग संवर्धन और विकलांगों की एकीकृत शिक्षा की स्कीम आदि।

एन.सी.ई.आर.टी. ने अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा निधि-पोषित अनेक महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं को हाथ में लिया, जिन्होंने शिक्षा संबंधी नीतियों और योजनाओं तथा कार्यक्रमों के निर्माण के लिए आधारभूत सामग्री एवं आंकड़े प्रस्तुत किए। उनमें से कुछ हैं : आई.ई.ए. (शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगम); प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या का नवीकरण (पी.ई.सी.आर.); भाषा तथा विज्ञान में हुई उपलब्धियों का अध्ययन; आई.ई.ए. कॉम्पेड स्टडी/अध्ययन; सामुदायिक शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक कार्यकलाप (डी.ए.सी.ई.पी.), प्राथमिक शिक्षा तक व्यापक पहुंच (केप); जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.); राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.); माध्यमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण, हाईस्कूल के बालकों में उपलब्धि अभिप्रेरक और उसके लिए प्रशिक्षण; श्रेणी-8 और 9 के लिए हिंदी में शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षण; माध्यमिक विद्यालयों में निरीक्षण

राज्य शिक्षा प्राधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करके एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अभिनिर्धारित राज्य शैक्षिक आवश्यकताओं पर राज्य समन्वय समितियों के माध्यम से कार्रवाई की जाती है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थाओं के शैक्षिक कार्यक्रमों पर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियों के माध्यम से कार्यवाही की जाती है।

विश्वविद्यालय विभागों और स्वैच्छिक संगठनों सहित परिषद् के संघटक, यूनिट व अन्य संस्थानों/संगठनों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति द्वारा विचार किया जाता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के परामर्श पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के शैक्षिक कार्यक्रमों, राज्य शिक्षा प्राधिकारियों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तालमेल, केंद्रीय शिक्षा संगठनों (सी.ए.बी.ई., के.वि.सं., नवोदय विद्यालय, के.मा.शि.बो. आदि) को सहायता आदि पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों के विभागों के सलाहकार बोर्डों द्वारा तथा तत्पश्चात् राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति द्वारा कार्रवाई की जाती है।

शिक्षा प्रणाली द्वारा अपेक्षित मीडिया सहायता के आधार पर केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यक्रमों और एन.सी.ई.आर.टी. और उनके संघटकों की आवश्यकताओं पर संस्थान के सलाहकार बोर्ड द्वारा कार्रवाई की जाती है।

केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान के कार्यक्रमों पर संस्थान के सलाहकार बोर्ड द्वारा कार्रवाई की जाती है।

ए.सी., आई.ए.बी., एम.सी. और एरिक द्वारा संदर्भित कार्यक्रमों की कार्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा जांच की जाती है ताकि पुनरावृत्ति, अतिव्याप्ति, अंतर आदि से बचा जा सके।

कार्यक्रम सलाहकार समिति की उप-समिति द्वारा जांचे गए कार्यक्रमों पर परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा विचार किया जाता है।

कार्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों को अंततः परिषद् की कार्यकारिणी समिति द्वारा अनुमोदित किया जाता है।

कार्यक्रम सलाहकार समिति और कार्यकारिणी समिति द्वारा अनुमोदित कार्यक्रम परिषद् द्वारा कार्यान्वित किए जाते हैं।

कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति का प्रतिमाह संघटक/विभाग के अध्यक्ष द्वारा तथा निदेशक की अध्यक्षता में गठित परिवीक्षण समिति द्वारा परिवीक्षण किया जाता है।

कार्यक्रमों के परिणामों की संघटक/विभाग द्वारा जांच की जाती है ताकि उन्हें स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षा प्रणाली में व्यापक रूप से समाविष्ट किया जा सके।

शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रारूपण के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के स्तर पर तंत्र का आरेखी प्रस्तुतीकरण जो राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं, राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और अंतर्राष्ट्रीय निवेशों, विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु उनके कार्यान्वयन, कार्यक्रम कार्यान्वयन के परिवीक्षण, अंतिम उत्पादों/निष्कर्षों के मूल्यांकन और शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए उनके उपयोग को दर्शाता है।

और पर्यवेक्षण के लिए मूल्यांकन कसौटियां; प्राथमिक तथा मिडिल स्कूलों में अपव्यय और गतिरोध; विद्यालयी शिक्षा के तीन स्तरों पर गणित में उपलब्धि का सर्वेक्षण; प्रारंभिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में प्रतिभा की पहचान; माध्यमिक विद्यालयों में गणित की पाठ्यचर्या और अध्यापन विधियां।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा हाल में उठाए गए कदमों में शामिल हैं: विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई.)-2000 का प्रकाशन और कार्यान्वयन; राष्ट्रीय मूल्यपरक शिक्षा संसाधन केंद्र (एन.आर.सी.वी.ई.) की स्थापना; राष्ट्रीय कंप्यूटर शिक्षा केंद्र की स्थापना; शैक्षिक सार और मूल्यपरक शिक्षा की पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ करना।

कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन

परिषद् के संघटक अपने कार्यक्रम तैयार करते समय अन्य बातों के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को और जिन राज्यों को परिषद् के निवेशों (इनपुट) की आवश्यकता है, उनकी शैक्षिक जरूरतों को भी ध्यान में रखते हैं। राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं का अभिनिर्धारण मुख्यतः राज्य समन्वय समितियों के तंत्र के माध्यम से किया जाता है जो परिषद् के संकाय और राज्य शिक्षा विभागों के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के बीच तालमेल के लिए एक मंच प्रदान करता है। राज्य शिक्षा सचिव, राज्य समन्वय समिति के अध्यक्ष हैं तथा संबंधित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्राचार्य (प्रिंसिपल) सदस्य-संयोजक हैं।

राज्यों की अभिनिर्धारित शैक्षिक आवश्यकताओं पर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) द्वारा अपनी प्रबंध समितियों (एम.सी.) में विचार किया जाता है। राज्यों की इन शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए निवेश क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाता है। परिषद् के अन्य संघटकों से जिन राज्यों को निवेशों की आवश्यकता है उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को आवश्यक कार्रवाई हेतु उनके पास भेज दिया जाता है। एन.आई.ई. के विभागों के शैक्षिक कार्यक्रमों पर संबंधित विभागों के सलाहकार बोर्डों के माध्यम से कार्रवाई की जाती है तथा तत्पश्चात् एन.आई.ई. की अकादमिक समिति (ए.सी.) उस पर कार्रवाई करती है। शैक्षिक प्रणाली के लिए अपेक्षित मीडिया सहायता पर आधारित केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) के कार्यक्रमों पर संस्थान के सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) के माध्यम से कार्रवाई की जाती है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रमों पर संस्थान के सलाहकार बोर्ड के माध्यम से कार्रवाई की जाती है। एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्य संस्थाओं/ संगठनों के संघटकों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान व नवाचार समिति (एरिक) द्वारा विचार किया जाता है। यह समिति विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहित और प्रायोजित करती है। अकादमिक समिति, संस्थान के सलाहकार बोर्ड, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियों और शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समितियों द्वारा निर्दिष्ट कार्यक्रमों की छानबीन कार्यक्रम सलाहकार समिति की उप समिति द्वारा की जाती है और उन्हें अनुमोदन के लिए पी.ए.सी. के समक्ष रखा जाता है।

विभिन्न कार्यक्रम क्रियान्वयन समितियों द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रमों पर अंतिम रूप से कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) द्वारा विचार किया जाता है। कार्यक्रम सलाहकार समिति, अन्य बातों के साथ-साथ परिषद् की कार्यकारिणी समिति को ऐसे दिशानिर्देशों की सिफारिश करती है जिस पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, विस्तार और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए तथा ऐसे चैनल प्रदान करती है जिन पर उन्हें देश में विद्यालयी शिक्षा को बढ़ावा देने के लक्ष्य को पूरा करने के निर्देश दिए जाने चाहिए। कार्यक्रम सलाहकार समिति उन कार्यक्रमों पर भी विचार करती है जो परिषद् को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त होते हैं।

कार्यक्रम कार्यान्वयन का परिवीक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रत्येक संघटक/विभाग के अध्यक्ष मुख्यतः अपने कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के परिवीक्षण (मानीटरिंग) के लिए उत्तरदायी हैं। परिषद् के संघटकों/ विभागों के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा निदेशक/संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा की जाती है। एन.सी.ई. आर.टी. के विभिन्न संघटकों के कार्यक्रमों के आयोजन, कार्यान्वयन, परिवीक्षण व मूल्यांकन की संपूर्ण प्रक्रिया एन.सी.ई.आर.टी. और राज्यों का एक संयुक्त कार्य है। परिषद् के लगभग सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षाविद् और व्यावसायिक विभिन्न स्तरों पर अर्थात् आयोजन से लेकर प्रणाली में निष्कर्षों के व्यापक प्रसार तक शामिल होते हैं।

परिषद् के कार्यक्रमों और कार्यकलापों से संबंधित सूचनाओं का प्रसार एन.सी.ई.आर.टी. कार्यक्रम, एन. सी.ई.आर.टी. प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कलैण्डर, एन. सी.ई.आर.टी. की वार्षिक रिपोर्ट और एन.सी.ई. आर.टी. की वेबसाइट (www.ncert.nic.in) के माध्यम से किया जाता है।

रिपोर्टें और विवरणियाँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विभिन्न उद्देश्यों हेतु अपने कार्यक्रमों और कार्यकलापों के संबंध में समय-समय पर कई रिपोर्टें और विवरणियाँ तैयार करती है। निम्नलिखित रिपोर्टें व विवरणियाँ मानव संसाधन विकास मंत्रालय को प्रस्तुत की गई हैं:

1. महत्त्वपूर्ण कार्यकलापों और विशिष्ट घटनाओं की मासिक रिपोर्ट।
2. महत्त्वपूर्ण कार्यकलापों और विशिष्ट घटनाओं का मासिक सारांश।
3. मंत्रिमंडल सचिवालय के लिए महत्त्वपूर्ण घटनाओं की मासिक रिपोर्ट।
4. अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा के संबंध में मासिक प्रगति रिपोर्ट।
5. राष्ट्रीय एकता परिषद् की सिफारिशों के कार्यान्वयन हेतु की गई कार्रवाई के संबंध में त्रैमासिक रिपोर्ट।
6. अल्पसंख्यकों के कल्याण तथा सांप्रदायिकता की रोकथाम के लिए की गई कार्रवाई के संबंध में त्रैमासिक रिपोर्ट।
7. शिक्षा विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) की वार्षिक रिपोर्ट के लिए सामग्री।
8. कार्यनिष्पादन बजट।
9. पूर्वोत्तर क्षेत्र और सिक्किम में विकास कार्यक्रमों पर 10 प्रतिशत बजट व्यवस्था विषयक रिपोर्ट।

स्टाफ संख्या

31 मार्च 2002 की स्थिति के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की श्रेणीवार संस्वीकृत स्टाफ संख्या *परिशिष्ट II* में दर्शाई गई है।

वित्त

वर्ष 2001-2002 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्राप्ति व भुगतान के संबंध में सूचना *परिशिष्ट III* में दी गई है।

2

विद्यालयी शिक्षा में एन.सी.ई.आर.टी. के योगदान का विहंगावलोकन

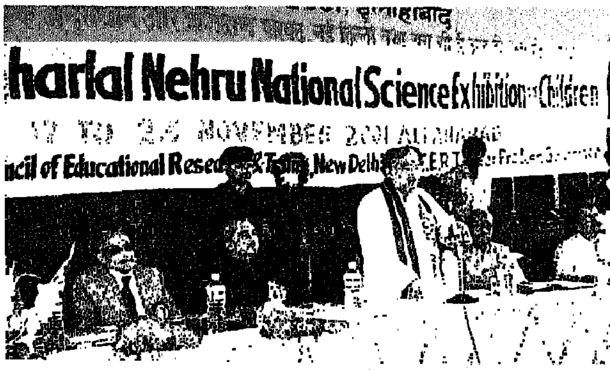
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) वर्षों से विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने की दिशा में प्रयासरत है। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् अपने विभिन्न संघटकों के माध्यम से अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार तथा शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित कर रही है।

विद्यालयी शिक्षा में एन.सी.ई.आर.टी. के योगदान का विहंगावलोकन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) वर्षों से विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने की दिशा में प्रयासरत है। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् अपने विभिन्न संघटकों के माध्यम से अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार तथा शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित कर रही है।

एन.सी.ई.आर.टी. ने विज्ञान की शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा के उन्नयन, अध्यापक शिक्षा, विद्यालय पद्धतियों में नवाचार, प्रतिभा की खोज, महिलाओं का सशक्तीकरण, अध्यापकों का सशक्तीकरण आदि के संबंध में पहले से चल रहे अपने सुज्ञात कार्यक्रमों को जारी रखा। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी।
- राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों को सहायता-समर्थन।
- अध्यापक शिक्षा में नवाचारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार।
- विद्यालयी शिक्षा में नवाचारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार।
- एन.पी.ई.पी. के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता और जनसंख्या सप्ताह का आयोजन।
- राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना/स्कीम।
- प्राथमिक स्तर पर विद्यालय की प्रभावकारिता के विषय में हुए अनुसंधान कार्यों पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी/सेमिनार।
- स्त्री-शिक्षा और विकास की कार्यप्रणाली पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- एरिक के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधान और नवाचारों को समर्थन-सहायता।
- एस.ओ.पी.टी., ई.जी.एस., एन.एफ.ई., वी.ई.पी., डी.पी.ई.पी., एन.पी.ई.पी., ई.टी. इत्यादि जैसी केन्द्र-प्रायोजित स्कीमों का कार्यान्वयन।
- ज्ञानदर्शन, 'तरंग', 'उमंग' के माध्यम से दूरदर्शन आकाशवाणी पर शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन-प्रसारण।
- विद्यालयी अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.)।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) में नवाचारात्मक सेवापूर्व पाठ्यक्रम।
- राष्ट्रीय एकता के लिए सामुदायिक गायन परियोजना।
- विद्यालयी शिक्षा का अखिल भारतीय सर्वेक्षण।
- शैक्षिक अनुसंधानों का सर्वेक्षण।
- पत्र-पत्रिकाएं।





माननीय मा.सं.वि.मं. तथा एन.सी.ई.आर.टी. के अध्यक्ष डा. मुरली मनोहर जोशी बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में अभिभाषण देते हुए

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान हाथ में लिए गए कुछ नए कार्यक्रम यह हैं :

- विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का कार्यान्वयन और कम-से-कम समय में पहली, तीसरी, छठी, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के भिन्न-भिन्न विषयों के लिए पाठ्यपुस्तकें और मार्गनिर्देश तथा पाठ्यविवरण तैयार करना। शेष कक्षाओं के लिए अनुदेशात्मक सामग्री की तैयारी शुरू कर दी गई है।
- विद्यालयी शिक्षा में उभरते हुए मुद्दों/सरोकारों तथा एन.सी.ई.आर.टी. की भूमिका के विषय में राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन करना, ताकि एन.सी.ई.आर.टी. के भावी कार्यकलापों/कार्यक्रमों के बारे में नीति संबंधी परिप्रेक्ष्य विकसित किया जा सके।
- शैक्षिक अनुसंधान के छठे सर्वेक्षण का श्रीगणेश करना।
- 30 सितंबर, 2002 को संदर्भ तिथि मानकर सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण का समारंभ करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों से जुड़े डी.एम. विद्यालयों में विद्यालय-आधारित आकलन की योजना प्रारंभ करना।
- एन.सी.ई.आर.टी. के दिव्य दर्शन का विकास करना।
- प्राथमिक अवस्था के अंत में (कक्षा-5) और उच्च प्राथमिक अवस्था के अंत में (कक्षा-7/8) उपलब्धि संबंधी सर्वेक्षण।
- 'सॉप्ट' कार्यक्रम को विद्यालयी शिक्षा की सभी अवस्थाओं तक बढ़ाना।
- उच्च स्तर के अनुसंधान कार्यविधि पाठ्यक्रम और अनुसंधान-आधारित शोध प्रबंधों की एक शृंखला के विषय में योजना बनाना।
- विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए एक विज्ञान केन्द्र का विकास करना, जिसमें विज्ञान उद्यान, ऊर्जा उद्यान और विज्ञान क्लब स्थापित हों।

प्रारंभिक शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. इन तीन प्रमुख विषय-क्षेत्रों से सरोकार रखती है, अर्थात्, शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा (औपचारिक) जो प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई) के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियां हैं।

शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. संगत संसाधन सामग्रियों के विकास, कार्यरत कार्मिकों की क्षमता के निर्माण, सामग्रियों तथा सूचना के प्रसार और अनुभवों के आदान-प्रदान के माध्यम से विद्यालय-पूर्व शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए उल्लेखनीय निविष्टियां तथा अकादमिक समर्थन देती रही है। विद्यालय-पूर्व आयु के बच्चों के क्रमिक विकास के अनुरूप उनकी आवश्यकताओं के संदर्भ में बच्चों को और उनकी जरूरतों को समझने में अभिभावकों तथा अध्यापकों को सहायता देने के उद्देश्य से, अध्यापकों तथा माता-पिता/अभिभावकों के लिए एक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा नामक पुस्तिका का प्रारूप तैयार किया गया। प्रशिक्षण पैकेज, खेल सामग्री और/अथवा किटों और अभिभावकों की जागरूकता के लिए अध्ययन सामग्री के विकास के लिए भिन्न-भिन्न डी.पी.ई.पी. राज्यों को अकादमिक सहायता दी गई। 'प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम' (एस.ओ.पी.टी.) पैकेज के लिए 'बच्चों के लिए विद्यालय जाने की तैयारी' विषय पर एक मॉड्यूल तैयार किया गया। इसके अलावा, बच्चों की मीडिया प्रयोगशाला (सी.एम.एल.) के लगभग 300 किट विभिन्न राज्य स्तरीय अभिकरणों, गैर-सरकारी संगठनों, डी.पी.ई.पी. राज्यों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं को बांटे गए, और ई.सी.सी.ई. पर अभिभावकों के लिए विकसित किए गए सात जागरूकता पोस्टरों के 5000 सेट भिन्न-भिन्न राज्यों को भेजे गए।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की योजना की व्यापक परिधि के भीतर, एन.सी.ई.आर.टी. ने पाठ्यचर्या के नए सेट और अनुदेशात्मक सामग्री के विकास, राज्यों की क्षमता के निर्माण, उभरते हुए विषय क्षेत्रों

में अनुसंधान-अध्ययन और सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) को अकादमिक एवं व्यावसायिक सहायता आदि से संबंधित अनेक कार्यकलाप संपन्न किए। प्रारंभिक अवस्था में विज्ञान की शिक्षा की स्थिति और उसकी उभरती हुई प्रवृत्तियों का अध्ययन पिछले दशक (1990-2000) के दौरान हुए शोधकार्यों के परिविश्लेषण और कक्षा में प्राप्त अनुभवों के आधार पर किया गया। प्राथमिक अवस्था के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्यचर्या नामक एक नया पाठ्यचर्या सेट और सभी पाठ्यचर्यात्मक विषयों अर्थात् भाषा, गणित, पर्यावरणिक अध्ययन और स्वस्थ तथा उत्पादक जीवन की कला में अध्यापन-अध्ययन सामग्री का नया सेट तैयार किया गया और उसे प्रकाशित भी कर दिया गया। विज्ञान तथा गणित के क्षेत्र में अधिगम/अध्ययन संबंधी कुछ कमियों का पता चला है और प्राथमिक स्तर की अन्तिम अवस्था (ग्रेड-5) में इन स्थलों को कठिन माना गया है। उच्च प्राथमिक अवस्था पर भिन्न-भिन्न पाठ्यचर्यात्मक विषय क्षेत्रों के लिए विषय-वस्तु संवृद्धि पैकेज (विषय-वार) तैयार किया गया है। प्राथमिक अवस्था के लिए, क्षेत्रीय भाषाओं में अमुद्रित सामग्री के विकास के लिए भी प्रयत्न किए गए हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में अध्यापकों की भूमिका तथा स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों के बारे में बच्चों को अवगत करने के लिए और उनमें जागरूकता उत्पन्न करने के लिए और अध्यापकों को भी अपने कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील बनाने और उनमें देशभक्ति की भावना भरने के लिए 'शिक्षकों के लिए एक चुनौती: बच्चों में देश प्रेम की भावना कैसे जागृत करें' नामक एक कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है।

वर्ष 2001 को स्वयंसेवकता (वालंटियरिज्म) के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में मनाए जाने के उपलक्ष्य में, स्वयंसेवकता विषय पर 3-दिवसीय एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बच्चों में अनुभवजन्य मूल्यपरक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तीन अंतर्राज्यीय शिविरों का आयोजन किया गया। इसके अलावा अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा अध्यापकों के लिए दो शिविर लगाए गए और पांच सामूहिक गायन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। संगीत के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किया गया।

उच्च प्राथमिक स्तर पर कामचलाऊ अध्यापन उपकरणों तथा अध्यापन-अधिगम सहायता-सामग्रियों के निर्माण के लिए उत्तरी राज्यों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों तथा अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किए गए। देश के भिन्न-भिन्न भागों के भिन्न-भिन्न प्रकार के लाभार्थियों (के.आर.पी., अध्यापक-प्रशिक्षकों और अध्यापकों) के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम भी चलाए गए।

सर्व शिक्षा अभियान के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत, शिलांग, ऐजावल और मसूरी में तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए, जिनमें प्रारंभिक शिक्षा के गुणवत्तात्मक आयामों की योजना बनाने के कार्य में राज्य तथा जिला स्तर की टीमों का अभिविन्यास किया गया। मूल्यांकन तथा पर्यवेक्षण के कार्य में मूल्यांकन दलों के सदस्यों का अभिविन्यास करके, सर्व शिक्षा अभियान (राज्य/जिला स्तर) के मूल्यांकन मिशन में अकादमिक सहायता दी गई। 'सर्व शिक्षा अभियान की योजनाओं के मूल्यांकन के लिए मैन्युअल' नामक एक दस्तावेज तैयार किया गया और कार्य क्षेत्र में इसके प्रभाव का परीक्षण किया गया। अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षा संघ (ए.आई.पी.एफ.टी.) के सदस्यों को भी सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत गुणात्मक मुद्दों पर अभिविन्यस्त किया गया। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के अंतर्गत, अन्तस्थ आकलन सर्वेक्षण (टी.ए.एस.) आठ डी.पी.ई.पी. चरण-I के राज्यों के 49 जिलों में स्थित 2444 विद्यालयों, 80697 छात्रों तथा 7587 अध्यापकों के बारे में किया गया। 'टी.ए.एस. के अंतर्गत छात्रों की उपलब्धि-चरण-I के जिलों में मूल्यांकन' नामक एक दस्तावेज प्रकाशित किया गया।

अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में, एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यतः सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों प्रकार के संगठनों में क्षमता निर्माण और संसाधन विकास, नवाचारात्मक परियोजनाओं के मूल्यांकन और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्वीकृति के लिए प्राप्त गैर-सरकारी संगठनों की परियोजनाओं की

जांच से सरोकार रखती है। एन.एफ.ई. और वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रमों का कार्यान्वियन करने वाले स्वैच्छिक संगठनों को परामर्श तथा अनुसंधान सहायता दी जाती है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान चंडीगढ़ के रात्रि विद्यालयों में पढ़ाने वाले अध्यापकों की प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों का पता लगाया गया। महाराष्ट्र राज्य के रात्रि विद्यालयों के लिए काम करने वाले मुख्य संसाधन व्यक्तियों को भी विज्ञान तथा गणित शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया। झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र के वरिष्ठ एन.एफ.ई. कार्यकर्ताओं को शिक्षा गारंटी योजना तथा वैकल्पिक एवं नवाचारात्मक शिक्षा (ई.जी.ई. व ए.आई.ई.) के सभी आयामों में प्रशिक्षित किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की नवाचारात्मक और प्रायोगिक कार्यक्रमों की योजना के अंतर्गत, 40 से अधिक परियोजना प्रस्तावों की समीक्षा तथा छानबीन की गई। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की प्रारंभिक शिक्षा में नवाचारात्मक और प्रायोगिक कार्यक्रमों की योजना के अंतर्गत गैर-सरकारी संगठनों की परियोजनाओं के मूल्यांकन पर एक अनुसंधान एवं मूल्यांकन अध्ययन संपन्न किया गया और मानव संसाधन विकास मंत्रालय को उसकी रिपोर्ट भेज दी गई।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

सबके लिए शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. सामाजिक दृष्टि से सुविधावंचित समूहों, जैसे अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा पर विशेष बल देती है; शुरू किए गए अध्ययनों में शामिल थे : (i) जनजातीय छात्रों को विद्यालयों में रखने में रुकावट डालने वाले कारकों की पहचान, (ii) अल्पसंख्यकों (मुस्लिमों) के लिए केंद्र-प्रायोजित योजनाओं से उनके द्वारा उठाए गए शैक्षिक लाभ और (iii) अनुसूचित जाति के बच्चों के प्रति अध्यापकों में अभिवृत्ति संबंधी मुद्दों का पता लगाना। उत्तरांचल के जौनसार-बावर क्षेत्र के जनजातीय लोगों, जिन्हें खस या जौनसारी कहा जाता है, की नृजातिसूचक परिच्छेदिका (प्रोफाइल) तैयार की गई और उसमें उनकी शैक्षिक जरूरतों पर ध्यान केंद्रित किया गया। 'भारत में जनजातीय शिक्षा : प्रवृत्तियां और रणनीतियां' विषय पर एक स्रोत पुस्तक तैयार की जा रही है। पूर्वोत्तर राज्यों के संसाधन व्यक्तियों को सामाजिक रूप से सुविधावंचित समूहों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग में अभिविन्यस्त किया गया। उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ और झारखंड के नव-निर्मित राज्यों के अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के बच्चों की शिक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए दो-दिवसीय एक कार्याशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इन राज्यों से तथा स्वैच्छिक अभिकरणों से आए सहभागियों ने परस्पर अनुभव बांटे और अपने राज्य से संबंधित विशेष मुद्दों पर चर्चा की। पहली तथा दूसरी कक्षा के लिए पर्यावरणिक अध्ययन के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किया गया जिसका उद्देश्य शिक्षा को आनंदप्रद बनाना था। वर्ष 2000-2001 के दौरान, गणित, उड़िया तथा अंग्रेजी भाषा, और पर्यावरणिक अध्ययन में विषय-वस्तु मॉडयूल विकसित किए गए, साथ ही जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों में प्रभावकारी पाठ्यचर्या संव्यवहार के लिए जागरूकता मॉड्यूलों को अंतिम रूप दिया गया। आंध्र प्रदेश के लिए, रिहायशी विद्यालयों में जनजातीय बच्चों के लिए सहपाठ्यचारी कार्यकलापों के विकास के लिए तीन कार्यशालाओं की शृंखला आयोजित की गई।

विशेष जरूरतमंद बच्चों के लिए शिक्षा

'सबके लिए शिक्षा' के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों में शामिल कराने के लिए प्रयत्नशील है। विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा के मूल्यांकन अध्ययन (आई.ई.डी.सी.) की योजना विशेष जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा पर अब तक हुए प्रभाव का आकलन करने के लिए हाथ में ली गई। इस अध्ययन से पता चला

कि आई.ई.डी.सी. स्कीम 'सबके लिए शिक्षा' के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है, इसने विरत यानी बीच में पढ़ाई छोड़ देने वाले छात्रों की दर में कमी की है और सामान्य अध्यापक को बेहतर अध्यापक बना दिया है। विकासात्मक कार्यकलापों में शामिल थे : (i) बच्चों के श्रवण विकास हेतु भाषा पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं समायोजन : प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए पुस्तिका, (ii) समवेत प्राथमिक विद्यालयों में प्रमस्तिष्क अंगघात पीड़ित बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या में अनुकूलन, (iii) विशेष जरूरतों वाले बच्चों की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को सुकर बनाने के लिए श्रव्य-दृश्य सामग्री, (iv) समवेत शिक्षा चलाने वाले संगठनों का विशेष अध्ययन, (v) भिन्न-भिन्न निर्योग्यताओं वाले बच्चों के अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए स्वतः शिक्षण-सामग्री, (vi) विशेष शैक्षिक आवश्यकताएं : माता-पिता के लिए संदर्शिका, (vii) व्यावहारिक समवेत शिक्षा पर प्रशिक्षण पैकेज (viii) विशेष ध्यान-केंद्रित समूहों की शिक्षा, (ix) पाठ्यचर्या को विशेष जरूरतमंद बच्चों की पहुंच योग्य बनाना, और (x) दृष्टि-बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या की पुनःसंरचना और परीक्षा प्रक्रियाओं में आशोधन।

राज्य तथा जिला स्तर पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के रूप में क्षमता निर्माण करने के लिए, समवेत शिक्षा में प्रशिक्षण मॉड्यूलों के विकास का काम हाथ में लिया गया है, जिनकी सहायता से नेटवर्किंग के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाएगा। उत्तरी राज्यों में इस स्कीम का कार्यान्वयन करने वाले आई.ई.डी.सी. प्रकोष्ठों में कार्यरत कार्मिकों के लिए दो-दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। पश्चिमी क्षेत्र की एस.सी.ई.आर.टी. परिषदों और 'डाइट' संस्थाओं के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों को समवेत विद्यालयों के विकलांग बच्चों को शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षित किया गया। एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. संस्थाओं के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए समवेत शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य इन प्रमुख व्यक्तियों को अपने-अपने राज्य में कक्षा की पद्धतियों के साथ-साथ प्रशिक्षण अध्यापक की जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार करना और समवेत कक्षा में विशेष जरूरतों वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सक्षम बनाना था। विशेष जरूरतों वाले बच्चों की शिक्षा से संबंधित नवीनतम मुद्दों और सरोकारों पर, विभिन्न संगठनों से आने वाले शिष्टमंडलों के साथ चर्चा की गई।

बालिकाओं की शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. बालिकाओं की शिक्षा और महिलाओं के सशक्तीकरण और विद्यालयों में बालिका-अनुकूल वातावरण के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत में पचास वर्षों में स्त्री शिक्षा की स्थिति पर एक अध्ययन किया गया जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में बालिकाओं तथा महिलाओं की शिक्षा में हुए विकास की समीक्षा करना था। यह अध्ययन स्त्रियों में वर्षों से चले आ रहे शैक्षिक तथा सामाजिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अपनाई गई नीतियों और योजना तथा प्रबंध संबंधी रणनीतियों के संदर्भ में किया गया था। बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा के बाद किए गए प्रयत्नों के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। स्त्रियों के साक्षरता स्तर में तेजी से वृद्धि हुई है, विद्यालयों में छात्राओं की संख्या बढ़ी है और छात्राएं शिक्षा के उच्चतर स्तरों पर आगे बढ़ने लगी हैं। कर्नाटक के माध्यमिक विद्यालयों में निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक पक्षपात यानी बालिकाओं/स्त्रियों के विरुद्ध पक्षपात का पता लगाने के लिए एक छोटा-सा अध्ययन किया गया। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2000 के अनुसरण में, बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन-कौशलों को शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से, 'प्रारंभिक स्तर पर जीवन-कौशलों का शिक्षा के साथ एकीकरण' विषय पर दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और पंजाब के शिक्षा विभागों के सहयोग से दो सप्ताह तक चलने वाली विकासात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों को भिन्न-भिन्न विषय-क्षेत्रों के साथ जीवन-कौशलों

के एकीकरण/समावेश के लिए और विषय-विशेष के मॉड्यूल तैयार करने के लिए अभिप्रेरित किया गया। स्त्री-शिक्षा तथा विकास की कार्य-विधि पर छह-सप्ताह का ग्यारहवां प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षकों के रूप में कार्य करने हेतु तैयार करने के लिए आयोजित किया गया। एक प्रशिक्षण मैन्युअल भी तैयार किया गया। 14 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से आए सत्ताईस प्रमुख स्तर के कार्मिकों ने, जिनमें से अधिकांश डी.आई.ई.टी. तथा एस.सी.ई.आर.टी. से थे, कार्यक्रम में भाग लिया। एक ऐसा ही कार्यक्रम भुवनेश्वर में भी अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए आयोजित किया गया।

विज्ञान तथा गणित की शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में विज्ञान, गणित तथा पर्यावरणिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से प्रयत्नशील रही है। इस हेतु, एन.सी.ई.आर.टी. ने इन विषयों में पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य अनुदेशात्मक सामग्रियों की अनेक शृंखलाएं विकसित की हैं। इसके अलावा, (i) विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं के लिए पाठ्यचर्या का नवीकरण, (ii) विद्यालय पाठ्यचर्या में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी शिक्षा के प्रौद्योगिकी संघटक की पहचान, (iii) संकल्पनात्मक समझ तथा अन्तरण के लिए एक रचनावादी विज्ञान अधिगम चक्र का प्रयोगात्मक अध्ययन, (iv) उड़ीसा राज्य के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अध्यापकों के लिए कठोर स्थलों की पहचान, (v) माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में पाठ्यचर्या का बोझ : परिप्रेक्ष्य तथा संभावनाएं - जैसे विषयों पर अध्ययन प्रारंभ किया गया है। उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर छठी, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान तथा गणित की पाठ्यपुस्तकें हिंदी तथा अंग्रेजी में विकसित की जा चुकी हैं। जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों का व्यवसायों में प्रौद्योगिकी की अनुप्रयुक्त भूमिका को विज्ञान के साथ एकीकृत कर दिया गया है। वाणिज्यिक गणित पर बल देते हुए, दैनंदिन जीवन में गणित का अनुप्रयोग एक अन्य विशेषता है जो उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर गणित की पाठ्यपुस्तकों में प्रतिबिंबित होती है। ग्यारहवीं कक्षा के लिए, भौतिकी, रसायन, गणित तथा जीवविज्ञान की पाठ्यपुस्तकें छात्रों को इन विषयों की बुनियादी संरचना तथा विषय-वस्तु से परिचित कराने के उद्देश्य से विकसित की गई हैं जिससे कि इन विषयों की ऐसी नींव बन सके जिसके आधार पर उच्च स्तरों पर इन विषयों का सफलतापूर्वक अध्ययन किया जा सके।

विज्ञान को लोकप्रिय बनाना परिषद् के दायित्वों का प्रमुख विषय रहा है जिस पर आज भी उसका ध्यान केन्द्रित है। एन.सी.ई.आर.टी. ने 'पढ़ें और सीखें' (रीडिंग टू लर्न) परियोजना के अंतर्गत लगभग चालीस पुस्तकें विकसित की हैं। इस पुस्तक माला/शृंखला के अंतर्गत दो पांडुलिपियां: (i) वनस्पति-कार्बनिक रसायनों की प्रयोगशाला और (ii) रूई से नाइलॉन तक-विकसित की गई और अब वे मुद्रणाधीन हैं। 'डाइट' संस्थानों के लिए चार प्रशिक्षण मॉड्यूल पर्यावरणिक शिक्षा पर, देश के चार भागों (उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी) की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित किए गए। 'स्कूल साइंस' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका अध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों को विज्ञान तथा गणित की शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित अपने बोध, अनुभव और नवाचारों का प्रसार-प्रचार करने के लिए उपयुक्त मंच प्रदान करती रही। विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् के परिसर में एक विज्ञान उद्यान (साइंस पार्क) स्थापित किया जा रहा है। इस साइंस पार्क में कुछ सौर ऊर्जा यंत्र भी स्थापित किए जा रहे हैं। इस स्कीम के एक अन्य संघटक के रूप में 'साइबर कैफे' के साथ एक विज्ञान क्लब भी स्थापित किया जा रहा है।

बच्चों के लिए 28वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी (जे.एन.एन.एस.ई.सी.)-2001 'विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' विषय पर आयोजित की गई। इस अवसर पर 'स्ट्रक्चर एंड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स' शीर्षक पुस्तकें अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं में प्रकाशित की गईं। 27 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों, के.वी.एस., एन.वी.एस. और परमाणु ऊर्जा

विद्यालय शिक्षा सोसाइटी द्वारा राज्य स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। एन.सी.ई.आर.टी. ने इन प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को अकादमिक मार्गदर्शन तथा वित्तीय सहायता दी।

परिषद् ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए 200 एकीकृत विज्ञान किटें तैयार कीं। जो कार्यकलाप इन किट आइटमों की सहायता से किए जा सकते हैं वे मुख्यतः 'विज्ञान पाठ्यचर्या' पर आधारित हैं।

परिषद् ने विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर विज्ञान तथा गणित के क्षेत्रों में अध्यापकों, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और राज्य पदाधिकारियों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम जे.एन.वी., के.वी.एस., डाइट संस्थानों तथा अन्य बहुत से संगठनों के अध्यापकों के लिए आयोजित किए गए थे। इन प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों में संसाधन सहायता दी गई। विद्यालयी शिक्षा की सभी अवस्थाओं के लिए विज्ञान तथा गणित में कक्षा में शिक्षण कार्य को सुकर बनाने के लिए प्रशिक्षण पैकेज विकसित किए गए हैं। इन पैकेजों में विभिन्न विषय-प्रकरणों में, विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर कुछ चुनी हुई संकल्पनाओं पर उदाहरणस्वरूप कार्यकलाप शामिल किए गए हैं।

सामाजिक विज्ञानों और मानविकी विषयों की शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2002 की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, पाठ्यचर्या और पाठ्यचर्या सामग्री का विकास करना एक बड़ा काम था। हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू भाषाओं में (उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर) सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा और कार्य शिक्षा (उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर), और भूगोल, समाजशास्त्र और वाणिज्य (उच्चतर माध्यमिक स्तर) में मार्गनिर्देश और पाठ्यचर्याएं नवंबर 2001 में प्रकाशित कर दी गईं।

पाठ्यपुस्तकें तथा पाठ्य-सामग्रियां तैयार करने का कार्य चरणबद्ध रीति से प्रारंभ हुआ। वर्ष 2001-2002 के दौरान, छठी, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए ये सामग्रियां विकसित कर ली गईं। इन विषय-क्षेत्रों में पाठ्यचर्या का विकास नए विचारों तथा दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए किया गया :

- भाषा संबंधी पाठ्यक्रमों में संप्रेषण कौशलों के विकास पर बल दिया गया है।
- एक एकीकृत विषयगत पद्धति का अनुसरण करते हुए, 'सामाजिक विज्ञानों' में एक ही पाठ्यपुस्तक (चार अलग-अलग पाठ्यपुस्तकों की बजाय) विकसित की गई है।
- नए उभरते हुए सरोकारों और मुद्दों, जैसे मूल्यपरक शिक्षा, पर्यावरणिक शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, उपभोक्ता शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा और यातायात शिक्षा का समुचित रूप से सुसंगत स्थानों पर समावेश किया गया है।
- नई पाठ्यपुस्तकों में कार्यकलापों और परियोजनाओं को पहले से अधिक मात्रा में शामिल किया गया है जिससे कि पढ़ाई सबके लिए अधिक प्रभावकारी और सुसंगत हो जाए।
- कुल मिलाकर, पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु के भार को सभी समूहों के लिए पहले से अधिक हलका और सुसंगत बना दिया गया है।

ज्ञान और आनंद के लिए साधारण पठन-सामग्रियों के रूप में तीन पुस्तकें-भारतीय बाल विकास, प्राचीन संस्कृत शिक्षा-सिद्धांत और प्रयोग, और शिक्षा की भारतीय परंपरा-संस्कृत शिक्षा ग्रंथमाला/सीरीज़ के अंतर्गत प्रकाशित की गई हैं और संस्कृत विज्ञान ग्रंथमाला के अंतर्गत एक पुस्तक 'मैथेमेटिक्स इन संस्कृत' (संस्कृत में गणित) निकाली गई है। राष्ट्रीय संस्कृत परियोजना के अंतर्गत, बोलचाल की संस्कृत के लिए कक्षाएं चलाई गईं। नए सीखने वालों के लिए अध्ययन साम्रगी के साथ 20 घंटे का एक पाठ्यक्रम भी तैयार किया गया है।

अंग्रेजी, उर्दू और वाणिज्य में प्रशिक्षण सामग्रियां विकसित की गई हैं; उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी, हिंदी, भूगोल और वाणिज्य पढ़ाने वाले अध्यापकों तथा प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम चलाए गए। हिमाचल प्रदेश और राजस्थान के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई.

आर.टी./डी.आई.ई.टी. संस्थानों के कार्मिकों को संप्रेषण कौशलों में प्रशिक्षण दिया गया।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा देश की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में कार्यान्वित की जा रही है। इसका उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा की विषय-वस्तु तथा प्रक्रिया में जनसंख्या शिक्षा का समावेश/एकीकरण करना है। ऐसा एकीकरण किए जाने पर छात्र जनसंख्या और सतत एवं संधारणीय विकास के बीच के पारस्परिक संबंध के प्रति जागरूक हो सकेंगे। इससे उनमें सकारात्मक अभिवृत्ति और उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार की भावना जागृत होगी, जिससे वे जनसंख्या और विकास संबंधी मुद्दों के संबंध में प्राप्त सूचना के आधार पर सुविचारित निर्णय ले सकेंगे। वर्ष 2001-2002 के दौरान, परियोजना संबंधी कार्यकलाप पाठ्यचर्याओं तथा पाठ्यपुस्तकों में जनसंख्या शिक्षा के तत्वों के समावेश पर ही केंद्रित रहे। ये पाठ्यचर्याएं और पुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी. और कुछ राज्यों द्वारा भी विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आधार पर संशोधित की जा रही थीं। अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, पक्षसमर्थन, सहपाठ्यचारी गतिविधियाँ और परिवीक्षण तथा समन्वय जैसे विभिन्न प्रकार के कार्यकलाप राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राज्य तथा जिला स्तरों पर संचालित किए गए।

तीन अध्ययन अर्थात् किशोरावस्था में प्रजननात्मक स्वास्थ्य का आधाररेखीय सर्वेक्षण, उड़ीसा के खुरदा, बालासोर और कोरापुट जिलों के लोगों के जीवन की भौतिक/शारीरिक गुणवत्ता के प्राचलों का प्रस्थिति अध्ययन और मैसूर जिले में किशोर शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं के आकलन का अध्ययन किए गए जिनका मुख्य उद्देश्य भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक परिवेश में पलने वाले किशोरों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं को जानना था। 'यंग पीपल्स परसेप्शंस ऑफ पॉपुलेशन एंड डेवलपमेंट' (जनसंख्या तथा विकास के बारे में युवा लोगों का बोध) शीर्षक पुस्तक मुद्रणार्थ भेजी गई। पॉपुलेशन एजुकेशन बुलेटिन के दो अंक प्रकाशित और व्यापक रूप से प्रसारित किए गए। जनसंख्या संबंधी सूचना, शिक्षा तथा संचार विषयक संक्षिप्त ग्रंथसूची तैयार की गई और वितरित की गई। वित्तीय प्रबंध और प्रतिवेदन के विषय में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम और पुनःसंकल्पित जनसंख्या शिक्षा पर एक अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या निधि (यू.एन.एफ.पी.ए.) के सहयोग से एक अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता-2001 मई-सितंबर 2001 के दौरान आयोजित की गई; इसका विषय था: 'जनसंख्या और पर्यावरण'। एक राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता 2000 के 15 विजेताओं को स्मारिकाएं प्रदान की गईं। किशोर शिक्षा में सह-पाठ्यचारी कार्यकलाप और छात्रों से संबंधित कार्यकलाप देशभर में बहुत-से विद्यालयों में आयोजित किए गए। विश्व जनसंख्या एड्स दिवस और जनसंख्या शिक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए; जैसे, जिला मुख्यालयों में लंबी दूरी की दौड़, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध एवं प्रश्नोत्तरी/क्विज प्रतियोगिता, आदि। कुछ विद्यालयों में विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए।

दसवीं पंचवर्षीय योजना की महत्वपूर्ण निविष्टि (इनपुट) के रूप में, चंडीगढ़, गुवाहाटी, बंगलौर और पणजी (गोवा) में, जनसंख्या शिक्षा के भावी दिशा-निर्देश विषय पर चार क्षेत्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गईं। इन संगोष्ठियों की सिफारिशों का योजना तैयार करने की प्रक्रिया में उपयोग किया गया। चूंकि राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना 30 राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों में वहाँ की राज्य शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषदों के माध्यम से और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (एन.ओ.एस.), केंद्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.) और नवोदय विद्यालय संगठन (एन.वी.एस.) के माध्यम से भी कार्यान्वित की जा रही हैं इसलिए कुछ महत्वपूर्ण परिवीक्षण (मानीटरिंग) कार्यकलाप भी आयोजित किए गए। अंतर-क्षेत्रकीय समन्वय बैठकें, वार्षिक परियोजना प्रगति समीक्षा (पी.पी.आर.) बैठकें और त्रिपक्षीय प्रगति समीक्षा (टी.पी.आर.) बैठकें आयोजित की गईं जिनमें संबंधित कार्यान्वयन अभिकरणों,

यू.एन.एफ.पी.ए., मानव संसाधन विकास मंत्रालय और स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

वर्ष 2001-2002 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रमुख रूप से विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई.) 2000 के कार्यान्वियन पर बल दिया। इसके कार्यान्विय की रणनीति के अंतर्गत, राज्यों के विद्यालय शिक्षा बोर्डों और एस.सी.ई.आर.टी. परिषदों के माध्यम से, राज्यों में संगोष्ठियां (सेमिनार) और कार्यशालाएं आयोजित की गईं। ये संगोष्ठियां/कार्यशालाएं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अध्ययनों, संगोष्ठियों, मूल्यांकन आदि के लिए दिए जाने वाले अनुदानों की योजना के अंतर्गत आयोजित की गईं। जिन राज्यों में ये संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित की गईं उनमें आंध्र प्रदेश, बिहार, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल शामिल थे। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों के लिए 'गाइडलाइन्स एंड सिलेबाई' (मार्ग-निर्देश और पाठ्यचर्याएं) के चार खंड प्रकाशित किए गए।

परीक्षा सुधार

शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान संचालित करती है, संकल्पनात्मक और नमूना सामग्री विकसित करती है, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, प्रश्नपत्र निर्माताओं और परीक्षकों को प्रशिक्षित करती है और शैक्षिक निकायों तथा परीक्षक अभिकरणों को अकादमिक तथा तकनीकी समर्थन-सहायता देती है। छात्रों के कार्य-निष्पादन में गुणात्मक सुधार लाने के लिए एक विद्यालय-आधारित आकलन की योजना क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के साथ जुड़े डी.एम. विद्यालयों के प्राथमिक अनुभागों में प्रारंभ की गई है। इस योजना के कार्यान्वयन के बारे में स्वयं कक्षाओं में जाकर, विद्यालय पर्यावरण का सर्वेक्षण करके, विद्यालय के अभिलेखों की जांच करके और समन्वयकर्ताओं/प्राथमिक अनुभागों के प्रभारियों/दल नेताओं/अभिभावकों और पांचवीं कक्षा के छात्रों आदि से चर्चा करके, एक मध्यावधिक आकलन तैयार किया गया है। उपलब्धि सर्वेक्षण के अंतर्गत, पांचवीं कक्षा के अंत में उपलब्धियों का आकलन करने के लिए पंद्रह क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षा तथा प्रश्नपत्रों को अन्तिम रूप दिया गया। राज्यों के समन्वयकर्ताओं को वास्तविक सर्वेक्षण कार्य में अभिविन्यस्त किया गया और जिलों, खंडों, विद्यालयों और ब्लाकों के नमूने तैयार करने और परीक्षा लेने के लिए प्रशिक्षित किया गया। उच्च प्राथमिक अवस्था के अन्त में उपलब्धि सर्वेक्षण के लिए, सातवीं तथा आठवीं कक्षाओं के लिए उपलब्धि परीक्षाओं के तीन समानांतर सेट- गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी, तेरह क्षेत्रीय भाषाओं) में तैयार किए गए और उन्हें अन्तिम रूप दिया गया। अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और गोवा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की विषय समिति के सदस्यों को श्रेणी-निर्धारण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की संकल्पनाओं से अवगत कराया गया। मिजोरम विद्यालय शिक्षा बोर्ड, उड़ीसा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद के प्रश्नपत्र निर्माताओं, परीक्षकों तथा अनुशोधकों (मॉडरेटरों) को संतुलित प्रश्नपत्रों के विकास में अभिविन्यस्त किया गया। विद्यालय शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों का दो-दिवसीय एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य परीक्षा के क्षेत्र में हुए नवाचारों तथा अनुभवों को आपस में बांटना, बोर्डों तथा एन.सी.ई.आर.टी. के बीच संपर्क-सूत्रों को मजबूत करना, और श्रेणी निर्धारण सहित परीक्षा सुधार से संबंधित अनेक संगत मुद्दों पर चर्चा करना था। सिक्किम के 42 उच्चस्तरीय शैक्षिक योजना निर्माताओं, प्रशासकों और शिक्षा व्यवसायियों को एन.सी.एफ.एस.ई. 2000 की प्रमुख विशेषताओं, पाठ्यचर्या की नवीकरण के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और उसके आधारभूत महत्त्व, परिवर्तित परिदृश्य में प्रणाली के प्रबंध से संबंधित पाठ्यचर्यात्मक तथा मूल्यांकन सरोकारों से परिचित कराया गया। इसके अलावा, गणित में प्रश्न बैंक, वाणिज्य में नैदानिक परीक्षा विषय (आइटम) और सेवाकालीन

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के मूल्यांकन के साधन भी विकसित किए गए।

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान, मार्गदर्शन तथा परामर्श/उपबोधन के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक महत्वपूर्ण सरोकार/दायित्व है। समीक्षाधीन वर्ष में, एन.सी.ई.आर.टी. ने ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए मनोविज्ञान विषय की पाठ्यचर्या और ग्यारहवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक तैयार की। इस पाठ्यपुस्तक का अंग्रेजी संस्करण-'इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी, पार्ट-I' तैयार और प्रकाशित किया गया। इसका हिंदी अनुवाद प्रगति पर है। बारहवीं कक्षा के लिए मनोविज्ञान में एन.सी.ई.आर.टी. की मौजूदा पाठ्यपुस्तक के बारे में छात्रों, अध्यापकों और समीक्षकों के विचार (फीडबैक) आमंत्रित किए गए ताकि उनके संदर्भ में नई पाठ्यपुस्तक विकसित की जा सके। प्राप्त फीडबैक का मूल्यांकन किया गया। मार्गदर्शन तथा उपबोधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में आयोजित किए जाते रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय (एन.एल.ई.पी.टी) ने अपने स्टाफ में नए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सामग्री जोड़ी, भारतीय परीक्षणों की समीक्षा की और अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों को परामर्श सेवाएं देना जारी रखा। मार्गदर्शन प्रयोगशाला को इस विषय की सामग्रियां तैयार करके और प्राप्त करके लगातार अद्यतन तथा समृद्ध बनाया जाता रहा।

मूल्यपरक शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित सभी कार्यो के लिए मूल केंद्र है और उसके राष्ट्रीय मूल्यपरक शिक्षा संसाधन केंद्र (एन.आर.सी.वी.ई.) ने देश में विद्यालयी स्तर पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम संपन्न किए हैं। दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कुछ चुने हुए विद्यालयों में मूल्य-आधारित पद्धतियों एवं परिपाटियों का अध्ययन किया गया जिसका उद्देश्य इस बात का पता लगाना था कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विद्यालयों में छात्रों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिए किन परिपाटियों का अनुसरण किया जाता है और क्या उन्हें सार्थक रूप से अपनाया जा सकता है। राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के विकासात्मक कार्यकलापों में शामिल हैं : (i) भारत में मूल्यपरक शिक्षा की सटिप्पणीक पुस्तक/निबंध सूची (बिब्लियोग्राफी), (ii) मानवीय अधिकारों तथा दायित्वों के विषय में छात्रों में जागरूकता बढ़ाने के लिए विद्यालय-आधारित कार्यक्रम, (iii) विद्यालयी शिक्षा में एक एकीकृत समवर्ती दृष्टिकोण के रूप में मूल्यों का स्पष्टीकरण, (iv) सृजनात्मकता संबंधी मूल्यों के पोषण हेतु अध्यापकों के लिए स्रोत सामग्रियां, (v) छात्रों के आध्यात्मिक अभिविन्यास हेतु अध्यापकों के लिए कार्यक्रम, और (vi) माता-पिता/अभिभावकों के लिए मूल्य विषयक पठन सामग्री। मूल्यपरक शिक्षा के उपबोधकों/परामर्शदाताओं को सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया गया, ताकि वे छात्रों को वांछनीय मूल्य विकसित करने में सहायता दे सकें। जिन सात गैर-सरकारी संगठनों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मानवीय मूल्यों की शिक्षा हेतु सेवाकालीन अध्यापक-प्रशिक्षण के लिए क्षेत्रीय संसाधन केंद्र (आर.आर.सी.) घोषित किया गया है, उनकी एक परामर्श बैठक आयोजित की गई जिसमें अनुभवों को परस्पर बांटा गया, गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संचालित अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की गई और अध्यापकों को मानवीय मूल्यों की शिक्षा के लिए प्रशिक्षण देने की रणनीतियां तैयार की गईं। एन.आर.सी.बी.ई. ने अपने संदर्भ पुस्तकालय को समृद्ध बनाना जारी रखा; मूल्यपरक शिक्षा की पत्रिका प्रकाशित की और मानवीय मूल्यों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं के साथ संपर्क-संबंध स्थापित किए। अल्पावधिक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल हैं : (क) उत्तरी राज्यों के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए सात-दिवसीय जीवन विज्ञान शिविर; (ख) दक्षिणी राज्यों के प्रमुख स्तर के कार्मिकों का मूल्यपरक शिक्षा में अभिविन्यास; (ग) 'डाइट' संकाय और दक्षिणी क्षेत्र के अन्य अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए योग प्रशिक्षण;

(घ) पश्चिम बंगाल के पी.टी.टी.आई. संस्थानों के प्रमुख व्यक्तियों के लिए मूल्यपरक शिक्षा की कार्यविधि के विषय में अभिविन्यास कार्यक्रम; (ङ) व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से मूल्यों के प्रति आस्था जागृत करने के उद्देश्य से व्यावसायिक अध्यापकों के लिए अभिविन्यास।

"महापुरुषों के जीवन से मूल्यों की खोज" नामक एक अध्ययन प्रारंभ किया गया जिसका उद्देश्य था- पूर्वी भारत के महापुरुषों की जीवनियों का विश्लेषण करना और उनके जीवन से मानवीय मूल्यों का चयन करना। एक अन्य अध्ययन में मैसूर के समवेत विद्यालयों और अनन्य विद्यालयों के बालक-बालिकाओं की अकादमिक उपलब्धि और मूल्यबोध के बीच के संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर एक विस्तार व्याख्यान परम पूज्य श्री दलाईलामा द्वारा एन.आई.ई. परिसर, एन.सी.ई.आर.टी. में 4 जनवरी 2002 को दिया गया। इस कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. के अध्यापन-वर्गीय तथा अन्य कार्मिक उपस्थित थे। माननीय संसद सदस्य और एन.सी.ई.आर.टी. के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

कंप्यूटर शिक्षा

इस वर्ष के दौरान विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में घटित उल्लेखनीय घटनाओं में एक है 'लर्निंग विद कंप्यूटर्स' (कंप्यूटर से शिक्षा) (स्तर 1, 2 व 3) के तीन खंडों का प्रकाशन, जिसमें छात्रों के लिए अनुदेशात्मक सामग्रियां प्रकाशित की गई हैं। 'इनफोर्मेशन टैक्नोलॉजी इन स्कूल्स : करिक्यूलम गाइड एंड सिलेबस' का हिंदी संस्करण प्रकाशित किया गया। छात्रों के लिए अनेक मल्टीमीडिया शिक्षण कार्यक्रमों के प्रोटोटाइप संस्करण एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट पर स्थापित किए गए। 'सीडी' पर प्रचारित किए जाने वाले अनेक कार्यक्रम फिलहाल तैयार हो रहे हैं। प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए 'फ्रैक्शन'/'भिन्न' विषयक एक कार्यक्रम का प्रोटोटाइप संस्करण तैयार किया जा चुका है।

एक सॉफ्टवेयर-कृति विकसित की गई है जो परिषद् के भिन्न-भिन्न संघटकों द्वारा संपन्न किए गए कार्यक्रमों के विषय में सूचना प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, 14 परियोजनाओं के डाटा के कंप्यूटरीकरण का काम इस वर्ष पूरा किया गया। कक्षोपयोगी कंप्यूटर-आधारित शिक्षण सामग्रियों के ज्ञान, विकास और उपयोग के विषय में केंद्रीय विद्यालयों तथा नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के लिए राष्ट्रीय कंप्यूटर शिक्षा केन्द्र में कई प्रशिक्षण- कार्यक्रम आयोजित किए गए। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों को सामान्य शिक्षा में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों (आई.सी.टी.) के उपयोगों के बारे में अभिविन्यस्त किया गया। श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के एक शिष्टमंडल को विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों की मूल संक्रियाओं में प्रशिक्षित किया गया।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त, एन.आई.ई. परिसर में आई.सी.टी. की सुविधाओं को बढ़ा दिया गया है और एन.सी.ई.आर.टी. के अकादमिक और प्रशासनिक स्टाफ को अपने विशिष्ट कार्यों में इन सुविधाओं का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यकलापों का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, जिसमें उपलब्धता/पहुंच बढ़ाने के लिए मास मीडिया का उपयोग करना और विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता और साम्या (ईक्विटी) को बढ़ावा देना शामिल है। एन.सी.ई.आर.टी. की संघटक इकाई सी.आई.ई.टी. ने डी.डी.-I और आकाशवाणी पर क्रमशः 'तरंग' और 'उमंग' कार्यक्रम और ई.टी.वी. प्रसारण ज्ञानदर्शन तथा ज्ञानवाणी जारी रखे। समीक्षाधीन वर्ष में अनेक स्क्रिप्टें तैयार की गईं और 96 ई.टी.वी. कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2000 के कुछ पहलुओं पर शृंखला/कार्यक्रम तथा अन्य बहुत से कार्यक्रम शामिल थे, जैसे : जड़ी-बूटियाँ, चिकित्सोपयोगी पेड़-पौधे, व्यावसायिक

शिक्षा के भिन्न-भिन्न क्षेत्र, अध्यापकों की प्रतिबद्धताएं और कार्य-निष्पादन, ग्यारहवीं कक्षा के लिए गणित, पत्रों के उत्तर, उभरते हुए वैज्ञानिक, क्रोध पर विजय, मानवाधिकारों तथा मौलिक कर्तव्यों पर स्पॉट कार्यक्रम और एन.सी.ई.आर.टी. पर एक वृत्तचित्र। 'भूमि तथा लोग' श्रृंखला के अंतर्गत गोवा पर एक फिल्म बनाई जा रही है। इसका छायांकन कार्य पूरा हो चुका है और संपादन कार्य हो रहा है।

हिंदी की शिक्षा देने के लिए (i) आओ मिलकर गाएं, (ii) आओ मिलकर सीखें, और (iii) रंगोली श्रृंखलाओं के अंतर्गत 85 श्रव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। अन्य विकासात्मक कार्यकलाप, जैसे कम लागत वाली शिक्षण सहायक सामग्रियों का भंडारघर स्थापित करना, ऑडियो तथा वीडियो कार्यक्रमों की सूची को अद्यतन बनाना, वीडियो कार्यक्रमों का कंप्यूटरीकृत डेटा-बेस विकसित करना और ई.टी.वी. प्रस्तुतियों को समृद्ध बनाने के लिए ग्राफिक एनीमेशनों का विकास करना, आदि भी हाथ में लिए गए। आयोजित कार्यक्रमों में शामिल हैं (i) पूर्वोत्तर राज्यों तथा (ii) उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल राज्यों में स्थित 'डाइट' संस्थानों के संकाय के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण; सी.आई.ई.टी./एस.आई.ई.टी. के इंजीनियरों के लिए (क) स्टूडियो एयरकंडीशनिंग और एकौस्टिक सिस्टम और (ख) ई.टी.वी./रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुति, प्रौद्योगिकी में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम; आर.आई.ई., मैसूर के संकाय के लिए ई.टी.वी. स्क्रिप्ट लेखन पर एक अभिविन्यास कार्यशाला। श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों और दक्षिणपूर्व अफ्रीकी देशों के शैक्षिक योजना निर्माताओं और प्रशासकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में एक अभिविन्यास कार्यक्रम चलाया गया।

मीडिया अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययनों में शामिल किए गए कार्य थेः (i) दर्शकों की प्रतिक्रियाओं का परिवीक्षण तथा विश्लेषण; (ii) बच्चों के व्यवहार के स्वरूपों पर टी.वी. का प्रभाव; (iii) दूरस्थ शिक्षा में टेली-पाठ्यक्रमों की प्रभावकारिता, और (iv) गणितीय संकल्पनाओं को समझने में ई.टी.वी. कार्यक्रमों की प्रभावकारिता।

व्यावसायिक शिक्षा

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., जो एन.सी.ई.आर.टी. का ही एक संघटक है, अनुसंधान तथा विकास संबंधी सर्वोच्च संस्था है। साथ ही, वह भारत में 'यूनेवॉक' अर्थात् यूनेस्को की तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय परियोजना का केन्द्र भी है। समीक्षाधीन वर्ष में, दो 'एरिक' परियोजनाएं पूरी की गईं, जिनके नाम हैं : 'कतिपय राज्यों में सामान्य आधारभूत पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन', और 'भारत में व्यवसाय तथा वाणिज्य पर आधारित पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने वाले व्यावसायिकों की प्रस्थिति का अध्ययन'। इस समय चल रहे अध्ययनों में शामिल हैं: (i) माध्यमिक व्यावसायिक विद्यालयों में विद्यालय-उद्योग संबंधों की स्थापना-क्रियानिष्ठ अनुसंधान; (ii) कृषि में व्यावसायिक अध्यापन-अधिगम की प्रस्थिति और प्रभावकारिता का अध्ययन; (iii) महाराष्ट्र की कुछ व्यावसायिक संस्थाओं के विद्यालय-उद्योग संबंधों पर व्यक्ति अध्ययन (केस स्टडी); (iv) पंजाब के व्यावसायिक छात्रों के कार्य-निष्पादन पर अंतःकार्य प्रशिक्षण का प्रभाव; (v) महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के मामले में गृह विज्ञान के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का महत्त्व; और (vi) 10+2 स्तर के छात्रों में व्यावसायिक कौशलों के विकास में अध्यापक व्यवस्था की भूमिका। इनमें से अधिकांश अध्ययन शीघ्र ही पूरे होने वाले हैं। इसके अलावा, व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के मूल्यांकन का काम हरियाणा और असम राज्यों में शुरू किया गया है। बी.वोक.एड. की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप दिया जा चुका है और वृद्धजन के कल्याण/देखभाल/आहार विज्ञान विषयक पाठ्यचर्या विकसित की जा चुकी है। मॉड्यूल के रूप में विकसित पाठ्यचर्याओं में शामिल हैं : ग्रामीण विपणन, भवन अनुरक्षण, फीजियोथेरेपी टैक्नीशियन पाठ्यक्रम, पौधा संरक्षण, दृष्टि-बाधितों के लिए गृह विज्ञान पर आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम, कृषि-व्यवसाय, शिशुगृह और विद्यालय-पूर्व प्रबंध, और स्वास्थ्य एवं पोषाहार के क्षेत्र में शैक्षिक खेलों पर मॉड्यूल और कार्य शिक्षा कार्यक्रम के लिए पर्यावरणिक शिक्षा। राष्ट्रीय व्यावसायिक अर्हता (एन.वी.क्यू.) प्रणाली के अंतर्गत, मुर्गीपालन और यात्रा तथा पर्यटन विषयों में अनेक छोटे मॉड्यूलीय पाठ्यक्रम

विकसित किए गए। व्यावसायिक शिक्षा के लिए अनुदेशात्मक सामग्रियों की 31 पांडुलिपियाँ जिनमें अधिकांश 11वीं तथा 12वीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें तथा प्रयोग पुस्तिकाएं हैं, प्रकाशनाधीन हैं। पर्यावरणिक शिक्षा की कार्य-पुस्तिका की पांडुलिपियों का प्रारूप और संधारणीय विकास संबंधी मॉड्यूल भी विकसित किए गए। संरक्षित खेती, ऊन और उसके उत्पाद, दृश्य बेसिक्स के साथ शुरूआत और फलों का विपणन जैसे विषयों पर पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा के मॉड्यूल विकसित किए गए। पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा पर अनुदेशात्मक सामग्रियां प्री-फेब्रिकेटिड भवन निर्माण सामग्री और मोतीकला पर भी विकसित की गईं। व्यावसायिक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा में कार्य-शिक्षा के माध्यम से मूल्यों के समावेश पर मार्ग-निर्देशात्मक दस्तावेजों के प्रारूप तैयार किए गए।

बिजली के घरेलू उपकरणों और रेडियो तथा टीवी रिसीवरों के रखरखाव तथा मरम्मत के क्षेत्र में, वाणिज्यिक पोशाक डिजाइन करना तथा बनाना, लेखा-परीक्षा तथा लेखे, खरीदारी तथा भंडार रक्षण, स्वास्थ्य क्षेत्र, उद्यमिता विकास, लाइनमैन, व्यापक व्यावसायिक पाठ्यक्रम, डेरी उद्योग, भवन अनुरक्षण तथा सिविल निर्माण क्षेत्र, व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श तथा विशिष्ट शिक्षण संबंधी निर्योग्यता जैसे क्षेत्रों में 18 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 408 व्यावसायिक अध्यापकों/प्राध्यापकों/व्याख्याताओं तथा अन्य पदाधिकारियों ने भाग लिया। 18 अभिविन्यास कार्यक्रमों के माध्यम से राज्यों के 557 प्रमुख कर्मियों, अध्यापकों और अन्य अधिकारियों को अभिविन्यस्त किया गया, जिनमें मदरसों, अल्पसंख्यकों की संस्थाओं (महिलाओं के लिए) के कार्यकर्ता/अधिकारी, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के व्यावसायिक अध्यापकों, व्यावसायिक मार्गदर्शन देने वाले परामर्शदाता आदि शामिल थे। कुछ चुने हुए राज्यों में स्थित उत्पादन-एवं-प्रशिक्षण केंद्रों (पी.टी.सी.) को बढ़ावा देने के लिए एक संगोष्ठी आयोजित की गई। ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं और विक्रेताओं तथा बिजली के घरेलू उपकरण बनाने वालों तथा उनके वितरकों के साथ दो खोज सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य उनके साथ अंतःकार्य प्रशिक्षण, उत्तीर्ण होकर निकलने वाले विद्यार्थियों के रोजगार को बढ़ाने और नियोजकों तथा विद्यालयों के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए संपर्क-संबंध विकसित करना था।

व्यावसायिक शिक्षा के प्रोन्नयन के लिए, सर्वोत्तम व्यावसायिक संस्था, सर्वोत्तम व्यावसायिक अध्यापक और सर्वोत्तम विद्यालय-उद्योग संबंधों के लिए पुरस्कार (प्रत्येक राज्य के लिए एक) दिए गए। सर्वोत्तम उपलब्धिकर्ता पुरस्कार प्रत्येक राज्य को दो-दो दिए गए जो उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में उनके परीक्षाफल पर आधारित थे। प्रकाशनों की दो प्रदर्शनियां लगाई गईं। व्यावसायिक शिक्षा के त्रैमासिक बुलेटिन के तीन अंक और व्यावसायिक शिक्षा की भारतीय छमाही पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किए गए। बुलेटिन का एक बाकी रहा अंक मुद्रित हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और कार्यानुभव के विभिन्न पहलुओं पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों तथा स्वैच्छिक संगठनों को दौरे तथा चर्चा के माध्यम से परामर्श-सेवाएं प्रदान की गईं।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा को सुधारने के लिए एक निर्णायक/अति महत्त्वपूर्ण निविष्टि (इनपुट) है। इसलिए एन.सी.ई.आर.टी. अध्यापकों को शिक्षा देने के लिए सेवापूर्व और सेवाकालीन दोनों प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करती है। इस क्षेत्र के कार्यक्रमों तथा कार्यकलापों का जोर अनुसंधान सहायक सामग्रियों के विकास, अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों पर केंद्रित रहता है। अनेक विषयों पर अध्ययन प्रारंभ किए गए और इस समय वे पूर्णता की विभिन्न अवस्थाओं में हैं। ये विषय हैं : (i) विद्यालयी शिक्षा के भिन्न-भिन्न स्तरों पर प्रवेश नीतियां और पद्धतियां, (ii) शिक्षा संबंधी विधान और विकास, (iii) प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के प्रधानों की परिच्छेदिका (प्रोफाइल), (iv) 2-वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, (v) भारतीय शिक्षा में निजी उद्यमों की भूमिका तथा उनका योगदान, (vi) चंडीगढ़ के

अध्यापकों के रात्रि विद्यालयों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं का आकलन, (vii) उड़ीसा राज्य के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान की शिक्षा में अध्यापकों के समक्ष उपस्थित होने वाले कठोर स्थलों की पहचान, (viii) दक्षिणी क्षेत्र में छात्र अध्यापकों की संस्थाओं द्वारा विकल्प के रूप में चुने गए और प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में अपेक्षित विशिष्ट विषयों का अध्ययन, और (ix) उद्देश्यों, अध्यापकों की सक्षमताओं तथा प्रतिबद्धता क्षेत्रों के संदर्भ में पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु तथा कार्यान्वियन संबंधी रणनीतियों की उपयुक्तता के संबंध में 2-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम का गहराई से अध्ययन।

विकासात्मक कार्यकलापों के अंतर्गत, एन.सी.ई.आर.टी. ने भारतीय शिक्षा विश्व कोश तैयार करने के काम को हाथ में लिया है, यह विश्व कोश भारतीय शिक्षा के भिन्न-भिन्न पक्षों पर ज्ञान तथा सूचना का अकेला स्रोत होगा। इसके अलावा, उच्च प्राथमिक अध्यापकों के लिए जागरूकता पैकेज, विज्ञान के अध्यापकों के लिए स्वतः शिक्षण पैकेज और उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के लिए भी स्वतः शिक्षण पैकेज विकसित किए गए हैं।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए जागरूकता तथा कार्य निष्पादन पैकेज, प्रारंभिक शिक्षा स्तर के लिए सांस्कृति-विशिष्ट शिक्षाशास्त्रों पर हैंडबुक और सक्षमता, प्रतिबद्धता और कार्य निष्पादन-आधारित अध्यापक शिक्षा के विषय पर प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के लिए स्वतः शिक्षण मॉड्यूल विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान किटों और कम लागत वाली सामग्रियों के प्रयोग के संबंध में अनेक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किए गए हैं, प्रारंभिक स्तर के लिए शिक्षण सहायक सामग्री तैयार की जा रही है। प्राथमिक स्तर पर उर्दू पढ़ाने की रणनीति, जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों, यानी सेवाश्रमों के अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्यात्मक कार्य-व्यवहार, माध्यमिक स्तर पर अध्यापन की तकनीकें और रणनीतियां, उच्चतर प्राथमिक स्कूलों के लिए अंग्रेजी भाषा की शिक्षा और माध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान में विषय वस्तु एवं कार्य विधि, आदि से संबंधित अनेक प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए गए हैं। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर तमिल भाषा की शिक्षा देने वाले अध्यापकों के लिए हैंडबुक/पुस्तिका, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मूल्यांकन की हैंडबुक और अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर हैंडबुक भी विकसित की जा चुकी है।

अध्यापकों के लिए सेवा-पूर्व नवाचारात्मक शिक्षा-पाठ्यक्रमों का विकास तथा कार्यान्वयन भी एन.सी.ई.आर.टी. का एक बड़ा दायित्व है। इस हेतु, एन.सी.ई.आर.टी. 4-वर्षीय एकीकृत बी.एससी.बी.एड./बी.एससी.एड. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम, विज्ञान तथा मानविकी विषयों में 2-वर्षीय बी.एड. माध्यमिक पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में एक-वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और मार्गदर्शन तथा परामर्श/उपबोधन में एक-वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित अपने चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में चला रही है। निदर्शन विद्यालय (डिमोंस्ट्रेशन स्कूल) इन क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के अभिन्न अंग हैं जहां भावी अध्यापकों को व्यावहारिक अनुभव कराया जाता है। ये विद्यालय एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अभिकल्पित नई पद्धतियों तथा अनुभवों के लिए प्रयोगशाला का काम कर रहे हैं।

गुजरात, कर्नाटक, उड़ीसा, केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पूर्वोत्तर क्षेत्र की 'डाइट' संस्थाओं के प्रधानाचार्यों तथा एस.सी.ई.आर.टी./डाइट संस्थाओं के संकाय सदस्यों के लिए अनेक सेवाकालीन प्रशिक्षण/अभिस्थापन/अध्यापन विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न क्षेत्रों, जैसे सेवाकालीन कार्यक्रमों की योजना बनाना और उन्हें चलाना, क्रियानिष्ठ अनुसंधान, संचार/संप्रेषण कौशल, मूल्यपरक शिक्षा, प्रश्नपत्र बनाने की तकनीक, अध्यापन में इंटर्नशिप, विशेष जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा, योग प्रशिक्षण आदि से संबंधित थे।

सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और आंध्र प्रदेश के 'डाइट' संस्थानों के नए भर्ती किए गए व्याख्याताओं के लिए प्रवर्तन स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

अध्यापक-प्रशिक्षकों/प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न विषय-क्षेत्रों, जैसे वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान की शिक्षा देने की विधियाँ और विषय-वस्तु, प्राथमिक स्तर पर विज्ञान की शिक्षा, प्राथमिक स्तर पर उर्दू की शिक्षा, वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान की शिक्षा में कंप्यूटर का अनुप्रयोग, और माध्यमिक स्तर पर विज्ञान का व्यावहारिक कौशल आदि में संचालित किए गए। प्रमुख संसाधन व्यक्तियों को मूल्यपरक शिक्षा की कार्यविधि, मातृभाषा (उड़िया) की शिक्षा, अंग्रेज़ी की शिक्षा, क्रियानिष्ठ अनुसंधान की कार्यविधि, समर्थता-आधारित अध्यापन, अधिगम और मूल्यांकन जैसे विषय-क्षेत्रों में भी प्रशिक्षित किया गया।

अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों ने विद्यालयी शिक्षा के भिन्न-भिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न विषयों की शिक्षा देने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण का कार्य हाथ में लिया।

एन.सी.ई.आर.टी. को विद्यालय अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट) की केंद्र-प्रायोजित स्कीम के कार्यान्वयन को सुकर बनाने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान 3 लाख 41 हजार अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 1993-94 में इस स्कीम के प्रारंभ से लेकर लगभग 21 लाख विद्यालय अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

अध्यापक शिक्षा तथा विद्यालयी शिक्षा में नवाचारों की योजना के अंतर्गत, अध्यापकों तथा अध्यापक- प्रशिक्षकों से नवाचारी शोधपत्र/निबंध आमंत्रित किए गए। इन पत्रों का तीन स्तरों यानि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय स्तरों पर और राष्ट्रीय संगोष्ठी में मूल्यांकन किया गया। अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए एक संयुक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें दोनों श्रेणियों के अध्यापकों ने विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के बीच की खाई को पाटने के लिए नवाचारात्मक पेपर प्रस्तुत किए। वर्ष 2000-2001 के दौरान, 56 विद्यालय अध्यापकों और 18 अध्यापक-प्रशिक्षकों को नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके नवाचारों के लिए विशिष्ट योग्यता प्रमाणपत्रों तथा नकद धनराशि से सम्मानित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. ने एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. संस्थानों के निदेशकों का एक सम्मेलन आयोजित किया। इस वर्ष के सम्मेलन में मुख्य रूप से विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 के कार्यान्वयन पर विचार किया गया। मुख्य रूप से तीन सम्मेलन आयोजित किए गए जिनके नाम थे : 2 वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम 2001 के अध्यापन में इंटर्नशिप के संबंध में सहयोग देने वाले विद्यालयों के अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों का सम्मेलन, बी.एड. के बहुल सांस्कृतिक स्थापन की मूल्यांकन विधियों के लिए सहयोग प्रदान करने वाली संस्थाओं का सम्मेलन और 4-वर्षीय एकीकृत बी.एससी.बी.एड. कार्यक्रमों से संबंधित अध्यापन में इंटर्नशिप के संबंध में सहयोग प्रदान करने वाले विद्यालयों के अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों का सम्मेलन।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

इस योजना का उद्देश्य है – कक्षा दस के अंत में प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान करना और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करना ताकि वे आगे अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें। 150 अनुसूचित जाति और 75 अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों सहित 1000 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। इन छात्रवृत्तियों के लिए चयन दो स्तरों पर किया गया। प्रथम स्तर पर राज्यों द्वारा लिखित परीक्षाओं के आधार पर चयन किया गया। द्वितीय स्तर पर चयन एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के आधार पर किया गया। वर्ष 2001-2002 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में पढ़ रहे कुल 4315 छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं को 97.81 लाख रुपये छात्रवृत्ति के रूप में वितरित किए गए। किए गए अध्ययनों में (i) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा 2001 का मूल्यांकन, (ii) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा की निर्मित वैधता

का अध्ययन, तथा (iii) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज के पुरस्कृत छात्रों की रूपरेखा इत्यादि शामिल हैं। एम. ए.टी. तथा एस.ए.टी. में लेख बैंक (आइटम बैंक) का भी विकास किया गया।

शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचारों को प्रोत्साहन

एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान तथा विकास संबंधी अपने कार्यक्रमों का संचालन तो करती ही है, साथ ही वह देश भर के विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत अनुसंधानकर्ताओं तथा संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक अनुसंधान कार्यों तथा नवाचारों को भी प्रोत्साहन देती है। शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचार समिति (एरिक), जो कि परिषद् की एक स्थायी समिति है, अनुसंधान प्रस्तावों की निधि-व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार है और पीएच.डी. के शोध-प्रबंधों के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता देती है। परिषद् शैक्षिक अनुसंधानों के आवधिक सर्वेक्षणों के रूप में, अनुसंधान कार्यों तथा अनुसंधान प्रवृत्तियों के बारे में सूचना का प्रसार करती है।

आलोच्य वर्ष के दौरान, 'एरिक' द्वारा निधि-पोषित सोलह अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी की गईं और 40 अनुसंधान कार्य चल रहे थे। अनुसंधानों के बारे में सूचना देने और अकादमिक विचार-विमर्श एवं चिंतन-मनन को अभिप्रेरणा देने के लिए मंच प्रदान करने का कार्य पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से बराबर चलता रहा। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (अंग्रेज़ी त्रैमासिक), इंडियन एजुकेशनल एब्स्ट्रैक्ट्स (अंग्रेज़ी में छःमाही पत्रिका), भारतीय आधुनिक शिक्षा (हिंदी त्रैमासिक) और इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अंग्रेज़ी छःमाही पत्रिका) ग्राहकों/पाठकों के लाभार्थ नियमित रूप से प्रकाशित होती रहीं। शैक्षिक अनुसंधानों के छठे सर्वेक्षण के रूप में शैक्षिक अनुसंधान की प्रवृत्तियों से अवगत कराने का कार्य भी वर्ष के दौरान बराबर चलता रहा। अनुसंधान के निष्कर्षों के आधार पर प्रबंध-ग्रंथ तैयार करने का काम आलोच्य वर्ष के दौरान प्रारंभ किया गया, इससे अध्यापक तथा विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्य लोग लाभान्वित होंगे। अनुसंधान विषयक सूचना के वितरण के साथ-साथ, परिषद् ने यूनेस्को द्वारा निधि-पोषित दो अध्ययनों, अर्थात् "प्रोत्साहन योजनाओं संबंधी राज्य नीतियां" और "बालिकाओं की सहभागिता में योगदान", के निष्कर्षों से अवगत कराने के लिए क्रमशः चेन्नई तथा लखनऊ में दो सूचना-वितरण कार्यशालाएँ आयोजित कीं।

देश में विद्यालयी शिक्षा के उभरते हुए परिवर्तनशील संदर्भों में, परिषद् के भावी दिशा-निर्देशों पर विचार-विमर्श करने के लिए, 'विद्यालयी शिक्षा में उभरते हुए मुद्दों/सरोकारों और एन.सी.ई.आर. टी. की भूमिका विषय पर दो-दिवसीय एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

क्षमता-निर्माण के क्षेत्र में प्रारंभिक स्तर पर एक अनुसंधान कार्यविधि विषयक पाठ्यक्रम पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित 'डाइट' संस्थानों तथा एस.सी.ई.आर. टी. परिषदों के संकायों के लिए गुवाहाटी में आयोजित किया गया। इसी प्रकार, पश्चिमी राज्यों के 'डाइट' संस्थानों के संकाय के लिए तृणमूल स्तर के अनुसंधान अध्ययनों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम दिल्ली में संपन्न किया गया। प्राथमिक अध्यापक के लिए क्रियानिष्ठ अनुसंधान के संबंध में एक प्रयोक्ता संदर्शिका तैयार की गई और वह मुद्रणाधीन है। एक उन्नत अनुसंधान कार्यविधि पाठ्यक्रम के लिए सामग्री तैयार करने के लिए प्रयत्न प्रारंभ किए गए। राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित प्रवृत्तियों और राज्य स्तर पर उनमें उपलब्ध अंतर को प्रस्तुत करने के लिए शैक्षिक आंकड़ों का एक संग्रह तैयार किया गया।

"विद्यालयी शिक्षा में राज्य अध्ययन : प्रस्थिति, मुद्दे और भावी प्ररिप्रेक्ष्य" नामक परियोजना, जो परिषद् द्वारा समर्थित है और एस.सी.ई.आर.टी./ एस.आई.ई. संस्थानों द्वारा कार्यान्वित की जा रही है, उसमें आगे प्रगति हुई और नौ राज्यों में प्रस्थिति अध्ययन पूरे किए जा चुके हैं। विद्यालयी शिक्षा संबंधी वित्त के बारे में एक प्रायोगिक अध्ययन भी वर्ष के दौरान प्रारंभ किया गया।

परिषद् द्वारा पहले नियमित अंतराल के बाद संचालित अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण देश में नीति-निर्धारण और शैक्षिक योजनाओं के निर्माण में अपनी बहुमूल्य उपयोगिता के लिए विख्यात है। सातवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण को संपन्न

करने के लिए शैक्षिक संस्थाओं की इस विराट जनगणना के लिए तैयारी संबंधी कार्यकलाप वर्ष के दौरान प्रारंभ किए गए। सातवें सर्वेक्षण के लिए जनगणना की संदर्भ तिथि 30 सितंबर 2002 रखी गई है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र 'निक' और सभी 35 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासन इस भीम-विशाल कार्य में भागीदार हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के कार्यान्वियन के लिए मुख्य एजेंसी के रूप में कार्य करना जारी रखा। विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त शैक्षिक रिपोर्टों, सामग्रियों, दस्तावेज़ों, आदि को पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग में स्थित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संसाधन केंद्र में प्रदर्शित किया गया। परिषद् के कई संकाय सदस्यों को, अन्य देशों या अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया। परिषद् ने उन कई देशों के प्रतिनिधि मंडलों/शिक्षाविदों और अध्यापकों से विचार-विनिमय किया, जो एन.सी.ई.आर.टी. में आए।

श्रीलंका के राष्ट्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए दो व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए और 'सार्क' क्षेत्र में सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध के विषय पर एक उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम चलाया गया। अध्यापक शिक्षा के प्रत्यापन के विषय में एक-मासीय अभिविन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम श्रीलंका के राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा प्राधिकरण (नाटे) के दो निदेशकों के लिए चलाया गया। यूनेस्को के बैंकाक स्थित 'रूशैप' एकक अर्थात् एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र के लिए सामाजिक तथा मानवीय विज्ञानों के क्षेत्रीय एकक द्वारा प्रायोजित प्रवसन शिक्षा कार्यक्रम के तीसरे चरण का काम पूरा किया जा चुका है। प्रवसन शिक्षा विषयक अध्ययन-अधिगम सामग्रियां तैयार की जा चुकी हैं, अब उनका ऐसे विद्यालयों में, जहाँ प्रवासी छात्र अध्ययन करते हैं, प्रयोग करके उनकी उपयुक्तता को जांचा-परखा जाएगा। मालदीव के शैक्षिक कार्मिकों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम (एक अध्यापकों के लिए और दूसरा प्रधानाध्यापकों के लिए) मैसूर में चल रहे हैं।

पुस्तकालय एवं प्रलेखन

एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय में स्थित पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर, नई दिल्ली में परिषद् के विभिन्न एककों के अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्यकलापों को सहायता देना जारी रखा। परिषद् के अन्य संघटकों ने भी अपने परिसरों में पुस्तकालय सुविधाएँ दे रखी हैं। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा और संबद्ध विषयों में अध्येताओं, अध्यापक-प्रशिक्षकों, अध्यापकों और छात्रों आदि के प्रयोग के लिए बड़ी संख्या में पुस्तकें व पत्रिकाएँ संकलित की गईं। पुस्तकालय शनिवार व रविवार को भी खुला रहता है। 31 मार्च 2002 की स्थिति के अनुसार पुस्तकालय में कुल 132416 पुस्तकें और पत्रिकाएँ थीं। परिषद् यूरोपीय आयोग के सहयोग से स्वचलीकरण (ऑटोमेशन), संग्रहण, पुस्तकालय सेवा विकास, स्टाफ विकास, प्रबंधन और एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकालय प्रणाली को चुनिंदा शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थानों के पुस्तकालयों/संसाधन केंद्रों के साथ नेटवर्किंग के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा संसाधन केंद्र के रूप में परिवर्तित करने की योजना को कार्यान्वित कर रही है।

हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन

परिषद् के संघटकों में दिन-प्रतिदिन के कार्य में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। मुख्यालय में लिपिकों, आशुलिपिकों और वैयक्तिक सहायकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। परिषद् के संघटकों में राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति के बारे में जानकारी लेने के लिए परिषद् की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की गईं। 14 से 28 सितंबर, 2001 तक 'हिंदी पखवाड़ा' मनाया गया। इस अवधि के दौरान टिप्पण/प्रारूपण, निबंध लेखन, टंकण, अनुवाद, वाद-विवाद, कविता और आशुलिपि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय

व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों ने भी हिंदी सप्ताह मनाया तथा हिंदी की प्रोन्नति के लिए कई प्रतियोगिताएँ और कार्यक्रम आयोजित किए तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। हिंदी प्रकोष्ठ परिषद् के प्राशासनिक दस्तावेज़ों एवं कागज-पत्रों के अनुवाद में सहायता करता रहा तथा इसने टंकण और आशुलिपिक सुविधाएँ भी प्रदान कीं, जहां पर यह उपलब्ध नहीं थीं। मुख्यालय में एक विभाग तथा तीन अनुभागों की जांच के माध्यम से राजभाषा नियमों के कार्यान्वियन की स्थिति का परिवीक्षण किया गया।

कार्यक्रम आयोजन, परिवीक्षण एवं मूल्यांकन

परिषद् के संघटकों/विभागों के अध्यक्षों ने अपने संकाय सदस्यों द्वारा आरंभ किए गए कायक्रमों के कार्यान्वियन का परिवीक्षण करना जारी रखा। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक/संयुक्त निदेशक ने आयोजन, कार्यक्रम परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग के माध्यम से अपने संघटकों के कार्यक्रमों का पुनरीक्षण भी किया। परिषद् के विभिन्न संघटकों के कार्यक्रमों के आयोजन एवं कार्यान्वियन का संपूर्ण कार्य परिषद् और राज्यों का सहयोगात्मक उद्यम बना रहा। कार्यक्रम सलाहकार समिति की विशेष बैठक में अगले वर्ष के अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों हेतु बल दिए जाने वाले क्षेत्रों को अभिनिर्धारित किया गया। परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति जो अनुमोदन के लिए अंतिम रूप से कार्यकारिणी समिति को संस्तुत करती है, द्वारा विचार किए जाने से पहले, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान विभागों के कार्यक्रमों पर उनके विभागीय सलाहकार बोर्ड तथा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति द्वारा, सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के कार्यक्रमों पर उनके संस्थान सलाहकार बोर्ड द्वारा तथा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के कार्यक्रमों पर उनकी प्रबंध समितियों द्वारा कार्यवाही की गई। परिषद् ने कार्यक्रमों और कार्यकलापों के संबंध में मानव संसाधन विकास मंत्रालय को समय-समय पर रिपोर्ट व विवरणिका देना जारी रखा।

प्रकाशन

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, अनुपूरक पाठमाला, शिक्षक संदर्शिकाओं, व्यावसायिक शिक्षा में अनुकरणीय अनुदेशात्मक सामग्री, अनुसंधान रिपोर्ट/प्रबंध और शैक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रही है। आलोच्य वर्ष के दौरान 350 प्रकाशन निकाले गए। वर्ष के दौरान निकाले गए पत्रिकाओं के अंकों की संख्या नीचे दी गई है:

- जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन
  तीन अंक
- स्कूल साइंस
  तीन अंक
- दि प्राइमरी टीचर
  तीन अंक
- प्राइमरी शिक्षक
  चार अंक
- भारतीय आधुनिक शिक्षा
  चार अंक
- जर्नल ऑफ वेल्यू एजुकेशन
  दो अंक
- इंडियन एजुकेशनल रिव्यू
  एक अंक
- इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रैक्ट्स
  दो अंक

परिषद् की पाठ्यपुस्तकों के वितरण का कार्य संपूर्ण देश में थोक विक्रेता एजेंटों के माध्यम से किया गया। उर्दू के प्रकाशन उर्दू अकादमी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के माध्यम से वितरित किए/बेचे गए। परिषद् का प्रकाशन विभाग, अपनी पाठ्यपुस्तकों आदि की आपूर्ति के लिए स्कूलों तथा व्यक्तियों से सीधे आर्डर लेता रहा। वर्ष के दौरान प्रकाशित कई शीर्षक अनुमोदित डाक सूची के अनुसार भेजे गए। प्रकाशनों की बिक्री से हुई कुल प्राप्ति लगभग 48.87 करोड़ रुपये थी। बड़ी संख्या में संस्थाओं और अनुसंधानकर्ताओं से परिषद् के निर्मूल्य प्रकाशनों की मांग प्राप्त हुई जिसे पूरा कर दिया गया। सुखचर (पश्चिम बंगाल), बंगलौर और

अहमदाबाद स्थित क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केंद्रों ने अपने संबंधित क्षेत्रों अर्थात् पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन तथा वितरण का कार्य जारी रखा। पूर्वी क्षेत्र की आवश्यकताओं को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मुख्यालय से पूरा किया गया।

सूचना प्रसार से संबंधित कार्य के एक भाग के रूप में परिषद् के प्रकाशन विभाग ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लिया :

1. दिल्ली पुस्तक मेला, सितंबर 2001
2. जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी इलाहाबाद, नवंबर 2001
3. देहरादून पुस्तक मेला, सितंबर 2001
4. पाँचवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला, एरणाकुलम् दिसंबर 2001
5. कोलकाता पुस्तक मेला, जनवरी-फरवरी 2002
6. विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली जनवरी-फरवरी 2002
7. रामजस कालेज मेला, जनवरी 2002

कल्याणकारी कार्यकलाप

समीक्षाधीन वर्ष में कर्मचारियों को उनकी पात्रता और स्थिति के अनुसार विभिन्न श्रेणियों के 156 आवासीय क्वार्टर आबंटित किए गए।

परिषद् के कर्मचारियों के लिए जीवन बीमा की सामूहिक बचत-जुड़ी बीमा योजना जारी रखी गई। 195 सदस्यों को उच्च श्रेणी में रखा गया तथा 45 नए लोगों को योजना के अंतर्गत शामिल किया गया। पालिसी समाप्त होने/वापसी और मृत्यु दावे के 136 मामले भारतीय जीवन बीमा निगम को निपटान के लिए भेजे गए। कुछ को छोड़कर, भारतीय जीवन बीमा निगम से सभी का भुगतान मिल गया है तथा वह भुगतान भूतपूर्व सदस्यों/मृतक सदस्यों के नियुक्त नामित व्यक्तियों को दे दिया गया है।

1,090 नियमित कर्मचारी तथा 400 पेंशनभोगी सी.जी.एच.एस. सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं। जो लोग सी.जी.एच.एस. के अधिकार क्षेत्र से बाहर रह रहे हैं वे ए.एम.ए. के माध्यम से आपाती चिकित्सा सुविधाएं ले रहे हैं। सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर परिषद् के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को 45 प्रतीक उपहार प्रदान किए गए।

3

प्रारंभिक शिक्षा

सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा गारंटी स्कीम और वैकल्पिक तथा अभिनव शिक्षा नामक एक नई स्कीम तैयार की गई। एन.सी.ई.आर.आर.टी. इन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए सरकारी और गैर-सरकारी दोनों प्रकार के संगठनों की क्षमता के निर्माण और संसाधनों के विकास पर ध्यान केंद्रित करती रही है।



प्रारंभिक शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. राष्ट्रीय स्तर पर औपचारिक और गैर-औपचारिक क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में भारत सरकार को सलाह देने वाला नोडल संगठन है; यह प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के स्थूल ढांचे के अन्तर्गत विभिन्न क्रियाकलाप और कार्यक्रम हाथ में लेती है, जिनमें मुख्य ध्यान पाठ्यचर्या और सामग्री के विकास, अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार पर केन्द्रित किया जाता है। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में इन प्रमुख लक्ष्यों के अनुसरण में, एन.सी.ई.आर.टी. तीन फोकल क्षेत्रों के बारे में कार्रवाई करती है, अर्थात : **शैशवकालीन देखरेख और शिक्षा, गैर-औपचारिक शिक्षा** (शिक्षा गारंटी स्कीम और वैकल्पिक तथा नवाचारी शिक्षा) और **प्रारंभिक शिक्षा (औपचारिक)**। संगत संसाधन/समृद्धिकारी सामग्री विकसित करके, प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम संचालित करके और अनुसंधान अध्ययन हाथ में लेकर विभिन्न क्रियाकलापों के जरिए इन क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों और अभिकरणों को नियमित रूप से महत्वपूर्ण निविष्टियां और शैक्षिक समर्थन प्रदान किया जाता रहा है।

शैशवकालीन देखरेख और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का शैक्षिक कार्यक्रमों में दोहरा महत्व है। एक तो यह कि मानव संसाधन विकास की कार्यनीति में ई.सी.सी.ई. निविष्टियां प्रारंभिक शिक्षा के लिए पोषक और समर्थन कार्यक्रम के रूप में कार्य करती हैं। दूसरे, यह विद्यालयों में बच्चों की भागीदारिता सुनिश्चित करती है और इस प्रकार प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की एक सक्षम कार्यनीति के रूप में कार्य करती है। इस दोहरी कार्यपद्धति को ध्यान में रखते हुए, एन.सी.ई.आर.टी. संगत सामग्री विकसित करके और इस क्षेत्र में मुख्य कार्मिकों को प्रशिक्षित करके इसका पक्षपोषण करती है, जागरूकता उत्पन्न करती है और संबंधित व्यक्तियों अर्थात भागीदारों में क्षमता-निर्माण करती है। मुख्य ध्यान बच्चों, अध्यापकों, माता-पिता और अध्यापक-शिक्षकों के लिए 'समृद्धिकारी' और संसाधन सामग्री का विकास करने पर दिया जाता रहा है। यह संगठन राज्य सरकारों द्वारा अपने ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों के आयोजन, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के लिए हाथ में लिए गए क्रियाकलापों में नियमित रूप से समन्वय स्थापित करता रहा है। स्कूल-पूर्व शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों में शामिल कार्मिकों की क्षमता के निर्माण का कार्य भी किया गया है और इसमें मुख्य ध्यान आनंदपूर्ण अधिगम को बढ़ावा देने पर दिया गया है।

गैर-औपचारिक शिक्षा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य को पूरा करने की एक महत्वपूर्ण कार्यनीति है। स्कूलों से बाहर के बच्चों को शिक्षा सुलभ कराने और उनकी नियमित भागीदारिता सुनिश्चित करने और अधिगम के एक संतोषजनक स्तर पर प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के लिए किए जाने वाले प्रयत्न प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के समूचे प्रयास के भाग होने जरूरी हैं। एन.एफ.ई. की पिछली स्कीम की कमियों और डी.पी.ई.पी. के सफल अनुभवों के कारण इस स्कीम का कायाकल्प करना जरूरी हो गया था और इस प्रकार सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) कार्यक्रम के अंतर्गत **शिक्षा गारंटी स्कीम और वैकल्पिक तथा अभिनव शिक्षा** नामक एक नई स्कीम तैयार की गई। एन.सी.ई.आर.टी. इन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए सरकारी और गैर-सरकारी दोनों प्रकार के संगठनों की क्षमता के निर्माण और संसाधनों के विकास पर ध्यान केंद्रित करती रही है। इन कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता के संबंध में अनुसंधान अध्ययन करने के लिए भी प्रयत्न किए गए। 'प्रारंभिक स्तर पर प्रयोगात्मक और अभिनव कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता की मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्कीम' के अंतर्गत गैर-सरकारी संगठनों को गैर-औपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण की जो अभिनव परियोजनाएं मंजूर की गई थीं, उनका मूल्यांकन इस क्षेत्र का एक ऐसा क्रियाकलाप है, जो जारी है। एन.सी.ई.आर.टी.एन.एफ.ई. और वैकल्पिक शिक्षण कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करने वाले स्वैच्छिक संगठनों को परामर्श संबंधी और अन्य शैक्षिक समर्थन भी प्रदान करती है।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के स्थूल ढांचे के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं। पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री का एक नया सेट विकसित करने, क्षमता-निर्माण के लिए प्रशिक्षण विषयक निविष्टियों के बारे में बैठकें आयोजित करने और नवोदित क्षेत्रों में अनुसंधान-अध्ययन शुरू करने से संबंधित विभिन्न क्रियाकलाप हाथ में लिए गए। प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के राष्ट्रीय कार्यक्रम-सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. ने राज्यों और जिलों की टीमों की क्षमता-निर्माण के रूप में शैक्षिक और व्यावसायिक समर्थन प्रदान किया; इसके अतिरिक्त, मानव जीवन और राष्ट्रीय मेल-मिलाप के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, 'बच्चों में मूल्यों की शिक्षा को प्रोत्साहन' का कार्यक्रम परिषद् के एक महत्त्वपूर्ण कार्यान्वयनाधीन कार्यक्रम के रूप में उभरा है। परस्पर लाभ के लिए और विभिन्न संगठनों के साथ समन्वय स्थापित करने (नेटवर्किंग) के लिए राष्ट्रीय प्रलेखन यूनिट के माध्यम से इन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण और संगत सूचना को बांटने के लिए भी प्रयत्न किए गए हैं।

प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में 2001-2002 के दौरान शुरू किए गए प्रमुख क्रियाकलाप इस प्रकार हैं :

अनुसंधान

गैर-सरकारी संगठनों की परियोजनाओं का मूल्यांकन

देश के ग्यारह राज्यों में उन पैंतीस गैर-सरकारी संगठनों के जिन्हें मानव संसाधन विकास मंत्रालय से सहायता अनुदान मिले थे, योगदान की जांच करने के लिए, 'प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में अभिनव और प्रयोगात्मक कार्यक्रमों के बारे में एम.एच.आर.डी. की स्कीम के अंतर्गत एन.जी.ओ. परियोजनाओं का मूल्यांकन' नाम से एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में कार्यक्रमों के अभिनव पहलुओं के बारे में और समूचे देश में शिक्षा की आम प्रणाली में सफल अनुभवों को अपनाने/उनके अनुकूलन की कार्यनीतियों के प्रचार के बारे में कुछ उपयोगी सुझाव दिए गए थे।

विज्ञान शिक्षण की स्थिति और उभरती हुई प्रवृत्तियां

पिछले एक दशक (1990-2000) में किए गए अनुसंधानों के विश्लेषणों और शिक्षण-कक्षाओं में किए गए अवलोकनों के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर विज्ञान के शिक्षण की प्रवृत्तियों की जांच करने के लिए "प्रारंभिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण की स्थिति और उभरती हुई प्रवृत्तियां" नामक एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य अध्यापन की प्रक्रिया के दौरान विद्यमान शैक्षणिक अंतरों का पता लगाने के इरादे से कक्षाओं में विज्ञान के शिक्षण के तत्वों की गहराई से जांच करना था। इस अध्ययन के लिए गुणात्मक कार्यविधि अपनाई गई, जिसमें कक्षा IV और VII के कक्षों में गहन अवलोकन करना, अध्यापकों, प्रशासकों और बच्चों के साथ, महत्त्वपूर्ण दृश्य उपकरणों (स्पॉट) के साथ साक्षात्कार करना भी शामिल था। इसमें तीनों श्रेणियों अर्थात सरकारी स्कूलों, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और केंद्रीय विद्यालयों में से 9 स्कूलों के नौ प्रिंसीपलों और अठारह अध्यापकों और छत्तीस छात्रों के साथ साक्षात्कार और चउवन कक्षाओं का अवलोकन शामिल था। संबंधित साहित्य की समीक्षा करने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर जो अनुसंधान-अध्ययन किए गए थे, उनका विश्लेषण इस क्षेत्र में उभर रही प्रवृत्तियों को समझने के लिए किया गया। विज्ञान शिक्षण और उसकी प्रक्रियाओं को समझने पर प्रमुख रूप से ध्यान केन्द्रित करते हुए कक्षाओं में विज्ञान शिक्षण के महत्त्वपूर्ण कदमों का भी विश्लेषण किया गया। रिपोर्ट संबंधित अभिकरणों के बीच शीघ्र ही प्रचारित की जाएगी।

प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कुछ अन्य अनुसंधान अध्ययन भी किए गए हैं, जो इनके बारे में हैं (i) प्रारंभिक विद्यालयों के बच्चों के व्यवहार में खराबियां, (ii) 8वीं कक्षा के कन्नड़ भाषी विद्यार्थियों में हिंदी में पढ़ने और लिखने की योग्यता में कमियों का पता लगाना, (iii) कन्नड़ माध्यमिक स्कूलों में उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में अंग्रेज़ी शब्दों के वर्णाविन्यास की भूलें।

विकास

स्कूल-पूर्व जागरूकता सामग्री

माता-पिता, अध्यापकों और नीति-निर्माताओं में स्कूल-पूर्व शिक्षा के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने की दृष्टि से, जिससे कि वे स्कूल-पूर्व शिक्षा से संबंधित मुद्दों को समझ सकें और विशेष रूप से यह समझ सकें कि स्कूल-पूर्व शिक्षा क्या है, और बच्चों को शिक्षा के अति-भार से बचाने के लिए "पूर्व प्राथमिक शिक्षा" नामक एक पुस्तिका तैयार की गई है, जो अध्यापकों और माता-पिता को संबोधित है। मोटे रूप से, इस पुस्तिका में ई.सी.सी.ई. के महत्व पर और स्कूल-पूर्व अवस्था के बच्चों को उद्दीप्त करने वाले अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, ताकि बाद के जीवन में उनका विकास स्वस्थ और अच्छी तरह से संतुलित व्यक्तियों के रूप में हो सके। इस पुस्तिका का एक प्रारूप तैयार किया गया है और उसे व्यापक रूप से वितरित किया गया है।

इस पुस्तिका में स्कूल-पूर्व शिक्षा के स्वरूप, स्कूल-पूर्व शिक्षा की आवश्यकता और उसके महत्व, स्कूल पूर्व-शिक्षा के आयोजन और संगठन, स्कूल-पूर्व शिक्षा में माता-पिता और अध्यापकों की भूमिका जैसे विषयों को शामिल किया गया है। यह सही प्रकार की स्कूल-पूर्व शिक्षा के बारे में संवेदनशील बनाने की एक कोशिश है। इस पुस्तक को इसके प्रकाशन के बाद व्यापक रूप से प्रचारित किया जाएगा।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.) के अंतर्गत स्कूलों के लिए बच्चों की तैयारी के संबंध में एक माड्यूल तैयार किया गया था। इस माड्यूल में स्कूलों के लिए बच्चों की तैयारी की आवश्यकता और उसके महत्व पर प्रकाश डाला गया था और इसके साथ-साथ कक्षा-I के शुरू में स्कूल के लिए तैयारी के लिए कुछ क्रियाकलापों का सुझाव दिया गया था।

पाठ्यचर्या नवीकरण और सामग्री विकास

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर पर्यावरणिक अध्ययनों और स्वस्थ और उत्पादक जीवन की कला के क्षेत्रों में सलाहकार समितियों का गठन किया गया। 'प्राथमिक स्तर के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्यविवरण' शीर्षक से पाठ्यविवरण का एक नया सेट विकसित और प्रकाशित किया गया। जिन प्रमुख विचारणीय बातों के कारण प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का संशोधन किया गया, वे ये थीं: विषय-वस्तु का नवीकरण, शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन, पाठ्यचर्या के भार को कम करना और मूल्यों की शिक्षा पर ध्यान। इन सभी परिवर्तनों को कार्यान्वित करने और इन सभी बातों को प्रणाली में शामिल करने के लिए प्राथमिक स्तर के पाठ्यचर्या संबंधी सभी क्षेत्रों, अर्थात भाषा (हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू), गणित, पर्यावरणिक अध्ययन, और स्वस्थ तथा उत्पादक जीवन की कला में अध्यापन-अधिगम सामग्री के नए सेट विकसित किए गए; इस शृंखला में, पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों में, ए.एच.पी.एल. को छोड़ कर, जिसके लिए श्रेणी I, II और III के वास्ते अध्यापक मार्गदर्शिका विकसित की गई थी।

उत्तर प्रदेश और राजस्थान (उपनगर/ग्रामीण क्षेत्र) राज्यों के लिए कक्षा V के विद्यार्थियों में विज्ञान (पर्यावरणिक अध्ययन) और गणित के अधिगम संबंधी कमियों का पता लगाया गया है, ताकि इन क्षेत्रों के कठिन स्थलों को समझा जा सके। उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल राज्यों के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत की पढ़ाई के लिए और कक्षा I और II में हिंदी और गणित की क्रियाकलाप-आधारित पढ़ाई के लिए कुछ विषयों के बारे में विषय-वस्तु को समृद्ध बनाने के पैकेज विकसित किए गए। गुजरात के डाइट (डी.आई.ई.टी.) के लिए प्राथमिक स्तर पर विज्ञान पढ़ाने के लिए अनुदेशात्मक सामग्री विकसित की गई। इनके अलावा, प्राथमिक स्तर पर तमिल पढ़ाने के लिए अध्यापकों के लिए एक पुस्तिका और उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया। सुन कर समझने के लिए कक्षा I और II के लिए तमिल भाषा में योग्यता-आधारित श्रव्य कार्यक्रम भी विकसित किए गए हैं।

देशभक्ति की भावना का संचार

"शिक्षकों के लिए एक चुनौती : बच्चों में देश प्रेम की भावना जागृत करें" नामक एक कार्यक्रम बच्चों को अध्यापकों के संघर्ष और स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में उनके बलिदानों से अवगत कराने और अध्यापकों को अपने कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील बनाने तथा देशभक्ति की भावना भरने के लिए शुरू किया गया है। देश के विभिन्न भागों के ऐसे लगभग पच्चीस अध्यापकों का पता लगाया गया था, जिन्होंने स्वतंत्रता-संघर्ष में भाग लिया था और उनसे साक्षात्कार (आमने-सामने बातचीत) किया जाएगा। इस अध्ययन की एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी और देश भर में प्रचारित की जाएगी।

प्रशिक्षण

उत्तरी राज्यों के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित और विज्ञान की शिक्षा देने, विज्ञान किटों/कम लागत वाली सामग्री का उपयोग करने और शिक्षण उपकरण (टीचिंग एड्स) तैयार करने के लिए मुख्य संसाधन व्यक्तियों और संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को पढ़ाने की कार्यनीतियों के बारे में अभिविन्यास किया गया। गोवा राज्य के लिए 'मूल्यपरक शिक्षा का पर्यावरणिक अध्ययनों के साथ एकीकरण' और पश्चिमी क्षेत्रों के लिए 'उर्दू के शिक्षण की कार्यनीतियों' के बारे में मूल संसाधन व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रारंभिक शिक्षा की उभरती हुई प्रवृत्तियों और उसके मुख्य सरोकारों, विशेष रूप से अधिगम के न्यूनतम स्तरों, योग्यता-आधारित शिक्षण और मूल्यांकन, अंग्रेजी पढ़ाने की तकनीकों और पर्यावरणिक अध्ययनों के कुछ चुने हुए विषयों के बारे में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, उड़ीसा और बिहार के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अध्यापक-शिक्षकों के लिए एक अन्य अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। लक्षद्वीप के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम के दौरान मूल्यांकन के पहलुओं के बारे में शैक्षिक मार्गदर्शन और निविष्टियां भी प्रदान की गईं।

झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र के गैर-औपचारिक शिक्षा संबंधी वरिष्ठ पदधारियों के लिए नागपुर में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ई.जी.एस. और ए.आई.ई. के सभी आयामों को शामिल किया गया, जिनमें नए केन्द्र खोलने, सामग्री विकास, शिक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षण-अधिगम कार्यनीतियों, विद्यार्थियों के मूल्यांकन, मानीटरिंग, पर्यवेक्षण और मूल्यांकन के तंत्र से संबंधित मुद्दे भी सम्मिलित थे। पाठ्यक्रम के दौरान सभी आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई।

चंडीगढ़ में रात्रिकालीन विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं का पता गुणवत्ता में सुधार के लिए लगाया गया है। महाराष्ट्र राज्य के मूल संसाधन व्यक्तियों को रात्रिकालीन विद्यालयों में विज्ञान और गणित की शिक्षा देने का प्रशिक्षण दिया गया है।

विस्तार

स्वैच्छिक सेवा संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठी

अंतर्राष्ट्रीय स्वैच्छिक सेवा वर्ष 2001 के कार्यक्रम की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में स्वैच्छिक सेवा के बारे में तीन-दिवसीय एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का प्रयोजन विभिन्न क्षेत्रों में स्वयंसेवकों के योगदान को स्वीकार करना और मान्यता प्रदान करना तथा देश में स्वैच्छिक सेवाओं को बढ़ावा देना और सुविधाजनक बनाना था। संगोष्ठी में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे स्वस्थ जीवन, पर्यावरणिक सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना, मूल्य और सदाचार, सामाजिक बुराइयों के निवारण, स्वैच्छिक सेवाओं में विद्यार्थियों की भूमिका, सर्वजनीन शिक्षा और विभिन्न रूपों में विकलांग समूहों की शिक्षा के क्षेत्रों में स्वैच्छिक सेवाओं को बढ़ावा देने पर भी ध्यान दिया गया। संगोष्ठी में निर्धारित विषयों पर आलेख

प्रस्तुत किए गए और अनेक मुद्दों पर चर्चा की गई। स्वैच्छिक सेवाओं को प्रोत्साहन देने की कार्यनीतियां विकसित करने के बारे में एक पेनल चर्चा भी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले व्यक्तियों में सुप्रतिष्ठित शिक्षाविद, समाज सुधारक और विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे, जिहोंने संगोष्ठी में अपने अनुभवों का परस्पर आदान-प्रदान किया। आलेखों के उद्धरणों, प्रमुख मुद्दों और संगोष्ठी की सिफारिशों को रिपोर्ट के रूप में प्रलेखबद्ध किया गया और उसे व्यापक रूप से प्रचारित किया गया।

अनुभवजन्य मूल्यपरक शिक्षा का संवर्धन

समूचे विश्व में बच्चों में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करने की आवश्यकता स्वीकार की जाती है। मानव जीवन में उनके महत्व को देखते हुए, एन.सी.ई.आर.टी. ने वर्ष 1999 में 'बच्चों में अनुभवजन्य मूल्यपरक शिक्षा को बढ़ावा देने' की परियोजना शुरू की थी। इस परियोजना का उद्देश्य बच्चों के अंतर्राज्यीय शिविरों और सामुदायिक गायन के दो प्रमुख क्रियाकलापों के जरिए बच्चों और अध्यापकों के लिए इकट्ठे रहने और सामुदायिक गायन में भाग लेने के अवसर प्रदान करके भावनात्मक एकता और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना है।

वर्ष के दौरान, पांडिचेरी और साधुफूल (हिमाचल प्रदेश) में बच्चों और अध्यापकों के लिए 15-15 दिन की अवधि के दो अंतर्राज्यीय शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में विद्यालयों में पढ़ने वाले 13+ से 15+ के आयु-वर्गों के 130 बच्चों और 25 अध्यापकों ने भाग लिया था। हरियाणा, छत्तीसगढ़, पांडिचेरी और तमिलनाडु के बच्चों ने पांडिचेरी के शिविर में और हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश और पंजाब के बच्चों ने हिमाचल प्रदेश में आयोजित शिविर में भाग लिया। एस.सी.ई.आर.टी., गुवाहाटी, असम द्वारा फरवरी, 2002 में बच्चों और अध्यापकों के लिए एक अंतरजिला शिविर आयोजित किया गया। इस पंद्रह-दिवसीय शिविर में असम के 14 जिलों के 266 बच्चों और 33 अध्यापकों ने भाग लिया। सामुदायिक गायन के बारे में अध्यापक शिक्षकों और अध्यापकों के लिए जून, 2001 में दो शिविर-एक गुवाहाटी में और दूसरा शिलांग में-आयोजित किए गए। इन शिविरों में 75 व्यक्तियों ने भाग लिया। शिविरों के अलावा, विद्यालयों के बच्चों के लिए भोपाल (अगस्त, 2001), मैसूर (अक्तूबर, 2001), शिलांग (अक्तूबर, 2001), अजमेर (अक्तूबर, 2001) और भुवनेश्वर (नवंबर, 2001) में पांच बृहद सामुदायिक गायन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 23,000 बच्चों और 1200 अध्यापकों ने भाग लिया। इन क्रियाकलापों के अलावा, विभिन्न भाषाओं के गीतों को सिखाने के लिए संगीत-शिक्षकों के लिए 10 श्रव्य कैसेटों वाला एक प्रशिक्षण पैकेज भी तैयार किया गया है, जिसका उपयोग देश भर में किया जाता है।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का राष्ट्रीय कार्यक्रम : सर्व शिक्षा अभियान

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का राष्ट्रीय कार्यक्रम : सर्व शिक्षा अभियान एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसमें राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण हस्तक्षेप करने पर बल दिया गया है। सर्व शिक्षा अभियान से संबंधित क्रियाकलापों में मुख्य ध्यान सर्व शिक्षा अभियान के क्रियाकलापों की योजनाएं बनाने के लिए राज्यों, विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों, जम्मू और कश्मीर और पंजाब की क्षमता-निर्माण की ओर दिया गया है। शिलांग, एजावल और मसूरी में एक-एक दिन की अवधि के तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए ताकि राज्यों और जिलों की टीमों का प्रारंभिक शिक्षा के गुणात्मक आयामों की योजनाएं बनाने में अभिविन्यास किया जाए। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के संबंध में डी.पी.ई.पी. चरण-I के राज्यों की टीमों के अभिविन्यास के लिए भी एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के बार में कार्य करने के लिए एन.आई.ई. और आर.आई.ई. के संकाय के 26 सदस्यों की एक टीम गठित की गई और सर्व शिक्षा अभियान के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनका अभिविन्यास किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के सदस्यों ने भी इसमें भाग लिया और सर्व शिक्षा अभियान (राज्य/जिला स्तर) के मूल्यांकन मिशनों को शैक्षिक (अकादमिक) समर्थन प्रदान किया। सर्व शिक्षा अभियान की योजनाओं के मूल्यांकन और पर्यवेक्षण के बारे में, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और अन्य व्यक्तियों में से गठित मूल्यांकन टीमों के सदस्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की रिपोर्ट तैयार की गई और व्यापक रूप से प्रचारित की गई। एस.एस.ए. (सर्व शिक्षा अभियान) के बारे में एन.सी.ई.आर.टी. की टीम को, जिसमें संकाय के छत्तीस सदस्य शामिल थे, उनके द्वारा विभिन्न राज्यों के मूल्यांकन मिशनों में भाग लिए जाने से पहले, जिला योजनाओं के मूल्यांकन और पर्यवेक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में पांच-दिवसीय एक कार्यक्रम में प्रशिक्षण दिया गया। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से क्षेत्र परीक्षण के बाद ''सर्व शिक्षा अभियान की योजनाओं के मूल्यांकन के लिए नियम पुस्तिका'' नामक एक दस्तावेज तैयार किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आमंत्रण पर एस.एस.ए. संबंधी पहलें अथवा कार्यों के लिए अकादमिक संसाधन सहायता भी प्रदान की गई। एस.एस.ए. में अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ (ए.आई.पी.टी.एफ.) को शामिल करने के प्रयत्न भी किए जा रहे हैं। उन्हें दो कार्यशालाओं में, जिनमें से एक मैसूर में और दूसरी उदयपुर में आयोजित की गई थी, एस.एस.ए. के गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के बारे में अभिविन्यास प्रदान किया गया था। इसके अलावा, सर्व शिक्षा अभियान और 'सबके लिए शिक्षा' कार्यक्रमों को समर्थन प्रदान करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सौंपे गए कुछ अन्य अतिरिक्त कार्य भी हाथ में लिए गए थे।

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. आधार-रेखा मूल्यांकन सर्वेक्षण (बी.ए.एस.), मध्यावधिक मूल्यांकन सर्वेक्षण (एम.ए.एस.) और अंतिम मूल्यांकन सर्वेक्षण (टी.ए.एस.) करती है। एम.ए.एस. और टी.ए.एस. के लिए अनुसंधान-डिजाइन के विकास और उपकरणों के पुनरीक्षण का काम हाथ में लिया गया। असम, हरियाणा, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु राज्यों में स्थित 40 जिलों में किए गए टी.ए.एस. के आंकड़ों (डाटा) का विश्लेषण किया गया और छात्रों की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करने का काम हाथ में लिया गया। सर्वेक्षण में डी.पी.ई.पी. चरण-I के आठ राज्यों के 49 जिलों के 2444 विद्यालयों, 80697 छात्रों और 7587 शिक्षकों को कवर किया गया। तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर ''टी.ए.एस. के अंतर्गत छात्रों की उपलब्धियां-चरण I के जिलों में एक मूल्यांकन'' नामक एक दस्तावेज तैयार किया गया और संदर्भ तथा प्रचार-प्रसार के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया। वर्ष के दौरान, ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में, माता-पिता में जागरूकता उत्पन्न करने, खेल-कूद की सामग्री और/अथवा किट तैयार करने, अधिगम सामग्री और प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने के लिए डी.पी.ई.पी. के विभिन्न राज्यों को अकादमिक सहायता भी प्रदान की गई। एस.एस.ए. कार्यक्रम के अंतर्गत ई.सी.सी.ई. के लिए बेसलाइन सर्वेक्षण करने के लिए बिहार राज्य में डी.पी.ई.पी. के क्रियाकलापों के वास्ते गैर-सरकारी संगठनों को ई.सी.सी.ई. संबंधी निविष्टियां भी उपलब्ध कराई गईं।

प्रचार-प्रसार

पाठ्यचर्या, अधिगम के न्यूनतम स्तरों (एम.एल.एल.), सर्व शिक्षा अभियान, सबके लिए शिक्षा (ई.एफ.ए.), शिक्षा गारंटी स्कीम और वैकल्पिक नवाचारी शिक्षा (ई.जी.एस./ए.आई.ई.) के संबंध में उपयोगी सूचना और सामग्री राष्ट्रीय प्रलेखन एकक में स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा के डाटा बैंक के अनुरक्षण की परियोजना के अंतर्गत संकलित और वर्गीकृत की जा रही है। एम.एल.एल. संबंधी क्रियाकलापों की मानीटरिंग करने और राज्यों को अकादमिक निविष्टियां मुहैया करने का काम भी एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किया जा रहा है। एम.एल.एल. क्रियाकलापों के क्रियान्वयन में हुई राज्य-वार प्रगति को एक रिपोर्ट के रूप में समेकित किया गया और रिपोर्ट मानव संसाधन

विकास मंत्रालय को प्रस्तुत की गई। विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री और उपयोगी सूचना नियमित रूप से संकलित की गई है और उसे परस्पर लाभ और नेटवर्किंग के लिए संबंधित अभिकरणों के पास भेजा गया है।

इस क्षेत्र में नई संसाधन सामग्री का प्रचार-प्रसार और अनुभवों का आदान-प्रदान भी नियमित रूप से किया गया है। वर्ष के दौरान, ई.सी.सी.ई. के बारे में माता-पिता में जागरूकता पैदा करने वाले सात पोस्टरों के 5000 से अधिक सेट विकसित किए गए और विभिन्न राज्यों में भेजे गए। इसके अलावा, बच्चों के लगभग 300 मीडिया प्रयोगशाला किट राज्य स्तर की विभिन्न एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों, डी.पी.ई.पी., राज्यों, आई.सी.डी.सी. केन्द्रों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के पास भेजे गए।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- प्राथमिक स्तर के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्य विवरण
- लेट अस लर्न मेथेमैटिक्स बुक-I (क्लास-I)
- लेट अस लर्न मेथेमैटिक्स बुक-III (क्लास-III)
- आओ गणित सीखें-पुस्तक 1
- आओ गणित सीखें-पुस्तक 3
- बाल भारती-I (कक्षा-1 के लिए पाठ्यपुस्तक) संशोधित संस्करण (मुद्रणाधीन)
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती-I, कक्षा-1 (संशोधित संस्करण) (मुद्रणाधीन)
- बाल भारती-III (कक्षा-3 के लिए पाठ्यपुस्तक) (संशोधित संस्करण) (मुद्रणाधीन)
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती-III, कक्षा-3 (संशोधित संस्करण) (मुद्रणाधीन)
- लर्निंग इंग्लिश-बुक-III, क्लास-III
- लर्निंग इंग्लिश-वर्कबुक, क्लास-III
- लेटअस लुक, लर्न एण्ड एराउण्ड, एनवायरनमेंटल स्टडी, क्लास-III
- देखे, करें और सीखें-पर्यावरण अध्ययन, कक्षा-3
- टीचर्स हैण्डबुक फॉर आर्ट ऑफ हैल्थी एंड प्रोडक्टिव लिविंग, क्लास I, II एण्ड III (मुद्रणाधीन)
- स्वस्थ और उत्पादक जीवन की कला के बारे में अध्यापकों के लिए पुस्तिका (कक्षा I, II और III) (मुद्रणाधीन)
- स्वैच्छिक सेवा के बारे में राष्ट्रीय संगोष्ठी-एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएं : प्राथमिक स्तर पर बच्चों के कार्य-निष्पादन के संबंध में अध्यापकों की अभिवृत्तियाँ/ अपेक्षाएं-एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएं : महाराष्ट्र राज्य की तुलनात्मक मामला अध्ययन : एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के लिए योजना बनाने के बारे में प्रशिक्षण : एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- सर्व शिक्षा अभियान-मूल्यांकन और पर्यवेक्षण संबंधी अभिविन्यास-एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- प्रारंभिक स्तर पर उदीयमान संसाधन परिप्रेक्ष्य के बारे में डी.आई.ई.टी. के संकाय का अभिविन्यास – एक रिपोर्ट
- जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों (सेवाश्रमों) में अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्या के संचालन के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (मुद्रणाधीन)
- शिष्यों की वैयक्तिक सफाई और स्वास्थ्य उपचर्या के बारे में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का ज्ञान, उनकी अभिवृत्ति और उनका व्यवहार: विद्यालय की प्रभावकारिता के बारे में इनका फलितार्थ
- प्रारंभिक स्तर पर मूल संसाधन व्यक्तियों को योग्यता-आधारित अध्यापन, अधिगम और मूल्यांकन के बारे में प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित की शिक्षा देने के बारे में सिक्किम के मूल संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षण-एक रिपोर्ट (मुद्रणाधीन)
- जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यचर्या के संचालन से संबंधित कार्यनीतियों का क्षेत्र परीक्षण-एक रिपोर्ट (मुद्रणाधीन)
- क्रियाकलाप-आधारित आनंदपूर्ण शिक्षण ढांचे के आधार पर पर्यावरणिक अध्ययनों के बारे

में जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज का विकास (मुद्रणाधीन)

- अंग्रेजी पढ़ाने के बारे में प्रारंभिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (उड़ीसा)-एक रिपोर्ट (मुद्रणाधीन)
- प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में उभरते हुए मुद्दों के बारे में मूल संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास (अंडमान और निकोबार) (मुद्रणाधीन)
- चंडीगढ़ के रात्रिकालीन स्कूलों के अध्यापकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं का निर्धारण (गन्दी बस्तियों में माता-अध्यापकों की जरूरतें) (फोटोकापी)
- उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश राज्यों के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित में वस्तु-विषय की समृद्धि और संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण-एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान-किट और कम लागत वाली सामग्री के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षण की कार्यनीतियों के बारे में प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों का प्रशिक्षण – एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण के सहायक उपकरण तैयार करने के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- प्राथमिक स्तर पर उर्दू पढ़ाने की कार्यनीतियों का प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- प्राथमिक स्तर पर उर्दू की शिक्षा संबंधी कार्यनीतियों के बारे में मूल संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास (फोटोकापी)
- उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देने के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- प्राथमिक स्तर पर तमिल शिक्षण के लिए अध्यापकों के लिए पुस्तिका (फोटोकापी)
- सुनकर समझने की योग्यता विकसित करने के लिए कक्षा I और II के लिए तमिल भाषा में योग्यता-आधारित श्रव्य कार्यक्रम (फोटोकापी)
- प्राथमिक शिक्षा के बारे में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की नवाचारी और प्रयोगात्मक कार्यक्रमों की स्कीम के तहत एन.जी.ओ. परियोजनाओं का मूल्यांकन-एक रिपोर्ट
- प्राथमिक स्तर पर योग्यता-आधारित अध्यापन, अधिगम और मूल्यांकन के बारे में मूल संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- बिहार राज्य के लिए पर्यावरणिक अध्ययनों के बारे में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक-शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (मुद्रणाधीन)
- प्रारंभिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के निर्देशकों के बारे में क्षेत्रीय अनुसंधान संगोष्ठी (सारांश) (फोटोकापी)

4

अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

सबके लिए शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से, एन.सी.ई आर.टी. विशेष आवश्यकताओं वाले समूहों, जैसे अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दे रही है।



अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

सबके लिए शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से, एन.सी.ई.आर.टी. विशेष आवश्यकताओं वाले समूहों, जैसे अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दे रही है। देश में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों की शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या और सामग्री विकास के क्षेत्र में उपयुक्त हस्तक्षेप करने की योजना बनाती है, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों की क्षमता-निर्माण के कार्यक्रम चलाती है, इन बच्चों की पहुंच, उनके प्रतिधारण और उनकी उपलब्धियों को बढ़ावा देने के संबंध में नीतियां तैयार करती है और डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में जनजातीय शिक्षा के राष्ट्रीय संघटक के अंतर्गत क्रियाकलापों का संचालन करती है।

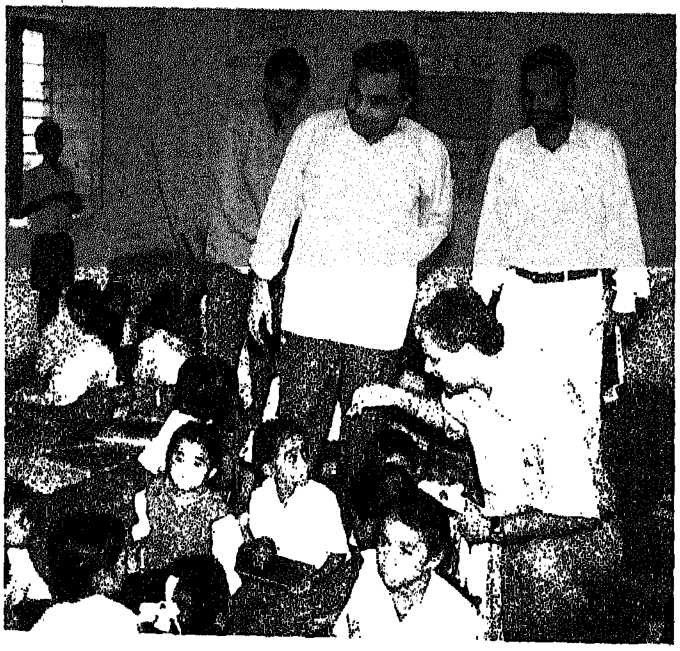
अनुसंधान

उन बातों का पता लगाना, जिनके कारण विद्यालयों में अनुसूचित जनजातियों के बच्चों को बनाए रखने में बाधा आती है

बच्चों के प्रतिधारण की मौजूदा स्थिति का अध्ययन करने, विद्यालयों में अनु. जनजातियों के छात्रों के कम प्रतिधारण के मुख्य कारणों का पता लगाने और स्थिति में सुधार करने की कार्यनीतियां विकसित करने तथा विद्यार्थियों के प्रतिधारण पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन करने के लिए मध्य प्रदेश और गुजरात के क्रमशः बस्तर और डांग जिलों के जनजातीय क्षेत्रों में एक अध्ययन किया गया है। प्रश्नावलियों, साक्षात्कारों और अवलोकन अनुसूचियों की सहायता से प्रिंसीपलों, अध्यापकों, माता-पिता और सामुदायिक नेताओं से आंकड़े एकत्र किए गए थे। 20 स्कूलों में गहन अवलोकन इस कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग था। इस प्रकार एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण अंतिम रिपोर्ट तैयार करने के लिए किया जा रहा है।

अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) के लिए केन्द्र-प्रायोजित स्कीमों से प्राप्त शैक्षिक लाभ

अल्पसंख्यक समूहों के सदस्यों (मुसलमानों) के लिए चलाई गई चार केन्द्र-प्रायोजित स्कीमों, अर्थात शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए क्षेत्र सघन कार्यक्रम, मदरसा-शिक्षा के आधुनिकीकरण के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम, शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यक समुदाय के कमजोर वर्गों के लिए कोचिंग कक्षाओं की स्कीम और सामुदायिक पॉलीटैकनिकों की स्कीम, से अल्पसंख्यक समुदाय (मुस्लिमों) के सदस्यों को किस हद तक लाभ हुआ है, इसका अध्ययन करने के लिए एक नमूना सर्वेक्षण किया गया है। बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल के तीन राज्यों में से एक प्रतिनिधिक नमूने का चुनाव प्रबंधकों, अध्यापकों, विद्यार्थियों और समुदाय के सदस्यों से आंकड़े एकत्र करने के प्रयोजन से किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण कर



मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र में कक्षा का एक दृश्य

लिया गया है और रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

अनुसूचित जातियों के बच्चों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति संबंधी मुद्दों का पता लगाना

इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षार्थियों के रूप में अनुसूचित जातियों के बच्चों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति से संबंधित विभिन्न मुद्दों का पता लगाना और कक्षा में कार्यरत गतिकी का अध्ययन करना है। इस परियोजना के अंतर्गत दस जिलों - बिहार और उत्तर प्रदेश के पांच-पांच जिलों - से अध्यापकों, छात्रों, माता-पिता और समुदाय के सदस्यों से आंकड़े एकत्र किए गए हैं। प्रत्येक राज्य से चुने गए पांच जिलों में से चार जिले ऐसे चुने गए थे, जहां पर अनुसूचित जातियों की महिलाओं की साक्षरता दर 5 प्रतिशत से कम थी और एक जिला ऐसा था, जहां पर अनु. जाति की महिला साक्षरता दर अपेक्षाकृत अधिक अर्थात 5 प्रतिशत से अधिक, लेकिन 10 प्रतिशत से कम थी। परियोजना के अंतर्गत एकत्र किए गए गुणात्मक और मात्रात्मक, दोनों प्रकार के डाटा का विश्लेषण किया जा रहा है।

विकास

भारत में जनजातीय शिक्षा : प्रवृत्तियां और कार्यनीतियां - एक स्रोत पुस्तक

इस विषय पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया और इस स्रोत पुस्तक में शामिल किए जाने के लिए सामग्री एकत्र की गई। इस स्रोत पुस्तक के प्रथम प्रारूप में विभिन्न विद्वानों की प्रकाशित सामग्री और कुछ नए अध्याय शामिल हैं। विशेषज्ञों के सुझावों को शामिल करके प्रारूप को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

जनजातीय लोगों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उनकी जाति-वैज्ञानिक रूपरेखा

इस परियोजना के लिए जाति-वैज्ञानिक रूपरेखा तैयार करने के लिए उत्तरांचल के देहरादून जिले के जौनसार-बावर क्षेत्र के जनजातीय लोगों को चुना गया था, जिन्हें खासा अथवा जौनसारी कहा जाता है। सूचना और सामग्री क्षेत्र का वास्तविक दौरा करके और द्विवितीयक स्रोतों, जैसे पुस्तकों और पत्रिकाओं से एकत्र की गई। जनजातीय लोगों की जनजातीय रूपरेखा का खाका तैयार किया गया था और उसे अंतिम रूप दिया गया था और तदनुसार जौनसारियों की जाति-वैज्ञानिक रूपरेखा तैयार की गई है।

जनजातीय प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए पर्यावरणिक अध्ययन के बारे में क्रियाकलाप-आधारित आनंदपूर्ण प्रशिक्षण ढांचे के आधार पर प्रशिक्षण का पैकेज

विशेषज्ञों द्वारा पर्यावरणिक अध्ययनों (I और II) के बारे में अध्यापकों के लिए आनंदपूर्ण क्रियाकलाप का कार्यपद्धति वाला एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया था।

जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यचर्या पढ़ाने से संबंधित कार्यनीतियां

चरण-I में गणित, भाषाओं (उड़िया और अंग्रेजी) और ई.वी.एस. के बारे में विकसित माड्यूलों और जनजातीय प्राथमिक स्कूलों में पाठ्यचर्या की प्रभावकारी पढ़ाई से संबंधित जागरूकता माड्यूलों का परीक्षण किया गया और कार्यरत अध्यापकों और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के सहयोग से इन्हें अन्तिम रूप दिया गया।

आंध्र प्रदेश के रिहायशी स्कूलों में जनजातीय बच्चों के लिए संस्कृति-सापेक्ष सह-पाठ्यचर्या संबंधी क्रियाकलाप

इस कार्यक्रम के अंतर्गत तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं और विशेषज्ञों की सहायता से सामग्री विकसित की गई। रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

प्रशिक्षण

सामाजिक रूप से असुविधाग्रस्त समूहों (अनु. जातियों/अनु. जनजातियों और अल्पसंख्यकों) के लिए शिक्षा के क्षेत्र में पूर्वोत्तर राज्यों में राज्यों के संसाधन व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिए पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य-स्तर के पदधारियों की क्षमता का निर्माण करने के उद्देश्य से, विभिन्न एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. से इस प्रयोजन के लिए विशेष रूप से तैयार की गई प्रश्नावली के जरिए सूचना एकत्र की गई थी। राज्यों के प्रत्युत्तरों का विश्लेषण किया गया, जिससे यह पता चला कि ये राज्य विषय-वस्तु की समृद्धि के रूप में और प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक दोनों स्तरों पर विशेष विषयों, जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, भाषाएं, विशेष रूप से अंग्रेजी की शिक्षा के रूप में विशेष प्रशिक्षण निविष्टियां प्राप्त करने के इच्छुक हैं। अध्यापकों से यह भी अपेक्षित किया जाता था कि उनके पास विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न ग्रेडों और विभिन्न आयु-समूहों के शिक्षार्थियों को संभालने की योग्यता/कौशल भी हो। राज्यों से प्राप्त प्रत्युत्तरों के आधार पर, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग में 8-दिवसीय एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

राज्यों और स्वैच्छिक अभिकरणों में संसाधनों का विकास

उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ और झारखंड के नव-निर्मित राज्यों में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान, रातू, रांची में दो-दिवसीय एक कार्यशाला-व-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मंच से इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी राज्यों को आपस में अपने अनुभव बाँटने की व्यवस्था हुई और सामाजिक रूप से असुविधाग्रस्त समूहों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने और उनकी योजना बनाने के लिए राज्य-सापेक्ष मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्तियों से, जो राज्यों द्वारा सामाजिक रूप से असुविधाग्रस्त समूहों की शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले विभिन्न संगठनों में से भेजे गए थे, यह अपेक्षा की जाती है कि वे संबंधित क्षेत्र में विशिष्ट कार्यक्रम तैयार करेंगे और उन्हें क्रियान्वित करेंगे। एन.सी.ई.आर.टी. इन सभी कार्यक्रमों को अकादमिक सहायता प्रदान करेगी।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- भारत में जनजातीय शिक्षा-एक स्रोत पुस्तक (प्रारूप)
- जनजातीय लोगों की जाति-वैज्ञानिक रूपरेखा-जौनसारी जनजाति और कुनबी जनजाति (टंकित)
- उड़ीसा में जनजातीय बच्चों की विज्ञान की शिक्षा पर मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारकों का प्रभाव
- जनजातीय प्राथमिक स्कूलों (सेवाश्रम) के अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्या को पढ़ाने के बारे में प्रशिक्षण का पैकेज (मुद्रणाधीन)
- जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यचर्या को पूरा करने से संबंधित कार्यनीतियों का क्षेत्र में परीक्षण (मुद्रणाधीन)
- पर्यावरणिक अध्ययनों के बारे में क्रियाकलाप-आधारित आनंदपूर्ण अधिगम ढांचे के अंतर्गत जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज का विकास (मुद्रणाधीन)

5

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों सहित सभी विद्यार्थियों में निष्पक्ष अधिगम की उपलब्धता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम चलाती रही है। जिन क्षेत्रों पर अधिक जोर दिया जा रहा है, उनमें ये शामिल हैं : अनुसंधान, क्षमता-निर्माण, विशेष समूहों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता में वृद्धि और इन क्षेत्रों में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों और अन्य संस्थाओं के साथ नेटवर्क स्थापित करना।



विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा

सबके लिए शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों में शामिल करने के लिए कार्य कर रही है। एन.सी.ई.आर.टी. विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों सहित सभी विद्यार्थियों में निष्पक्ष अधिगम की उपलब्धता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम चलाती रही है। जिन क्षेत्रों पर अधिक जोर दिया जा रहा है, उनमें ये शामिल हैं: अनुसंधान, क्षमता-निर्माण, विशेष समूहों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता में वृद्धि और इन क्षेत्रों में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों और अन्य संस्थाओं के साथ नेटवर्क स्थापित करना। एन.सी.ई.आर.टी. ने विकलांग व्यक्ति अधिनियम, 1995 को क्रियान्वित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया और नियमित विद्यालयों में विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम हाथ में लिए। इन कार्यक्रमों का केंद्र-बिंदु सभी बच्चों के लिए गुणवत्ता वाली शिक्षा की उपलब्धता को बढ़ावा देना और इस प्रकार नीतिगत निदेशों के अनुसार विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास में योगदान देना है।

अनुसंधान

विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की योजना का मूल्यांकन

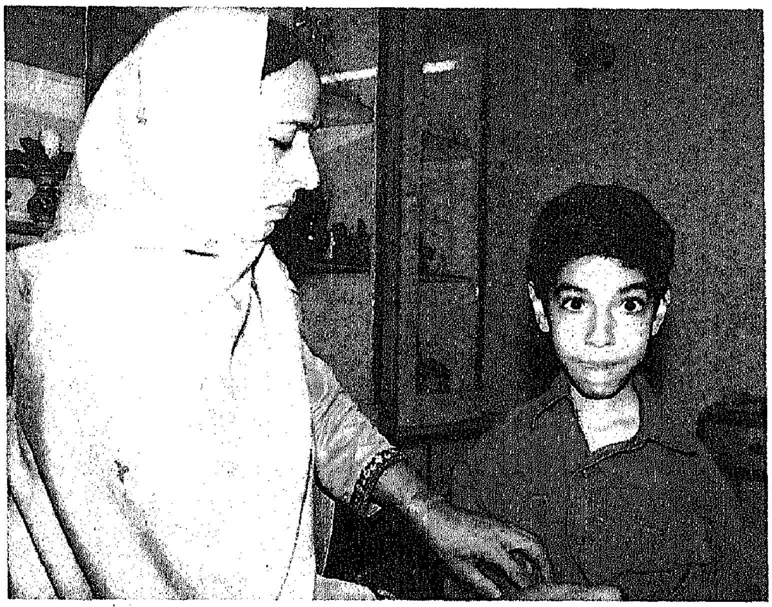
विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की योजना आई.ई.डी.सी. के मूल्यांकन-अध्ययन का काम हाथ में लिया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य यह देखना था कि राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और मिजोरम राज्यों में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा पर आई.ई.डी.सी. का क्या प्रभाव पड़ा है। एकीकृत शिक्षा का प्रभाव विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति, सामाजिक एकीकरण और पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या संबंधी क्रियाकलापों में इन बच्चों की भागीदारिता पर देखा गया। विभिन्न राज्यों से प्राप्त डाटा से प्रकट हुआ कि आई.ई.डी.सी. के शुरू किए जाने से न केवल विकलांग बच्चों बल्कि गैर-विकलांग बच्चों द्वारा भी बीच में स्कूल छोड़ देने की दर में कमी आई है। सामान्य अध्यापकों ने यह पाया है कि विकलांगता वाले बच्चों के लिए तैयार की गई शैक्षिक सामग्री/संसाधन सामग्री गैर-विकलांग बच्चों के लिए भी उपयोगी है। इस अध्ययन से यह भी पता चला कि सामान्य कक्षाओं में विकलांग बच्चों की उपस्थिति ने एक सामान्य अध्यापक को एक बेहतर अध्यापक बनाया। इस प्रकार, आई.ई.डी.सी. स्कीम से सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिली है। नीति-निर्माताओं को इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर आई.ई.डी.सी. स्कीम को संशोधित करने और योजना-निर्माताओं को विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों की योजना बनाने में सहायता प्राप्त होगी।

विकास

श्रवण विकार बच्चों हेतु भाषा पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं समायोजन : प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए पुस्तिका

पहले किए गए एक अनुसंधान और विकास अध्ययन के अंतर्गत हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर अधिगम के न्यूनतम स्तर के अनुकूलन के लिए और अध्यापन की कार्यविधियों तथा मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को उन श्रवण विकारयुक्त बच्चों की, जो सामान्य स्कूलों में पढ़ते हैं, आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने और उनका समायोजन करने के लिए प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए एक पुस्तिका तैयार की गई है। इस पुस्तिका में समवेत शिक्षा की अवधारणाओं, पाठ्यक्रम के अनुकूलन और समायोजन और प्राथमिक स्तर पर भाषा की शिक्षा के न्यूनतम स्तरों के बारे में सैद्धांतिक सूचना दी गई है। इसमें श्रवण विकार वाले बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रमों, शैक्षिक सामग्री, शिक्षण के तरीकों, मूल्यांकन और

प्रक्रियाओं के अनुकूलन के लिए व्यावहारिक मार्ग निर्देश दिए गए हैं। इसमें समवेत शिक्षा के ढांचे के अंदर विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहुंच पाठ्यक्रम तक सुगम बनाने के लिए विभिन्न स्तरों पर जो प्रणालीगत परिवर्तन जरूरी हैं, उनके बारे में भी मार्ग निर्देश दिए गए हैं।


प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चे को घर पर सहायता करते हुए अभिभाविका

समवेत प्राथमिक विद्यालयों में प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या का अनुकूलन

यह परियोजना प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चों के लिए आवश्यक अनुकूलनों का सुझाव देने के लिए हाथ में ली गई थी, ताकि पाठ्यचर्या को सभी बच्चों की पहुंच के योग्य बनाया जा सके। प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से पीड़ित बच्चों में अंग-संचलन संबंधी विकारों सहित अन्य विकार भी होते हैं, जैसे दृष्टि विकार, वाक् और श्रवण विकार और बौद्धिक विकार। विशेष स्कूलों तथा इसके अलावा समवेत स्कूलों से डाटा एकत्र किया गया। दिल्ली, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, हैदराबाद और कर्नाटक राज्यों से निविष्टियां प्राप्त हुईं। पाठ्यचर्या के विश्लेषण से उन कठिनाइयों का पता चला है, जो प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चों को स्कूल में अन्य बच्चों के साथ शिक्षण प्राप्त करने में पेश आती हैं। इससे शिक्षा प्रदान करने की कार्यनीतियों, इन बच्चों के लिए पाठ्यचर्या क्रियान्वित के लिए अपेक्षित सहायक सामग्री और मूल्यांकन करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं का भी पता लगा है। तैयार की गई सामग्री से अध्यापकों को इन अवधारणाओं को अमली रूप देने, सामग्री तैयार करने और विभिन्न प्रकार की असमर्थताओं वाले बच्चों का मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा और उनके प्रशिक्षण को सुगम बनाने वाली श्रव्य और दृश्य सामग्री

ई.टी.वी कार्यक्रम असमर्थताओं वाले बच्चों की शिक्षा और उनके अधिकारों के बारे में समाज के विभिन्न वर्गों को संवेदनशील बनाने और उनमें जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से तैयार किए जा रहे हैं। विभिन्न पदधारियों, जैसे नीति-निर्माताओं, स्कूल प्रशासकों, अध्यापकों और स्कूलों के अन्य कर्मचारियों, समकक्ष व्यक्तियों, बच्चों, माता-पिता, सामान्य समाज और असमर्थताओं वाले बच्चों के लिए श्रव्य और दृश्य सामग्री तैयार की जा रही है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि असमर्थताओं से ग्रस्त लोगों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और वे इन पर किस प्रकार काबू पाते हैं। इन कार्यक्रमों में सभी प्रकार की असमर्थताओं, असमर्थता की मात्रा, आयु, लिंग, पाठ्यचर्या के क्षेत्र और बच्चों के सामाजिक-आर्थिक स्तरों, आदि सभी बातों को शामिल किया गया है। एक कार्यक्रम तैयार कर लिया गया है और शेष निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।

समवेत शिक्षा प्रणाली को व्यवहार में लाने वाले संगठनों का मामला-अध्ययन

एन.सी.ई.आर.टी. ने समय-समय पर उन सकल प्रयोगों और व्यवहारों के बारे में, जो स्कूलों द्वारा असमर्थताओं वाले बच्चों को सामान्य स्कूलों में शामिल करने के लिए अपनाए गए हैं, दस्तावेज़ प्रकाशित किए हैं। ऐसे व्यवहारों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का एक तरीका मामला-अध्ययन (केस स्टडी) करना है। जो मामला-अध्ययन किए गए हैं, वे दो विद्यालयों और कुछ गैर-सरकारी संगठनों के बारे में हैं। ये स्कूल हैं: राजेंद्र प्रसाद सर्वोदय विद्यालय, नई दिल्ली, जिसने दृष्टि विकार वाले बच्चों को और बलवंत राय मेहता विद्या भवन, नई दिल्ली जिसने मंद बुद्धि वाले बच्चों तथा वाक् और श्रवण विकार वाले बच्चों को शामिल किया। जिन गैर-सरकारी संगठनों को शामिल किया गया था, वे हैं : नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड, दिल्ली; सी.बी.आर. नेटवर्क, बंगलौर (कर्नाटक), स्पास्टिक सोसाइटी ऑफ तमिलनाडु, चेन्नई और अमर ज्योति चैरिटेबिल ट्रस्ट, दिल्ली।

विभिन्न असमर्थताओं वाले बच्चों को शिक्षित करने के बारे में अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए स्व-शिक्षण सामग्री

एन.सी.ई.आर.टी. दृष्टि विकार वाले बच्चों, वाक् और श्रवण विकारों वाले बच्चों और मंद बुद्धि वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापकों के वास्ते स्व-शिक्षण सामग्री पहले ही प्रकाशित कर चुकी है। इस शृंखला में अंग-संचलन लोकोमोटर असमर्थताओं वाले बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए स्व-शिक्षण सामग्री प्रकाशित की गई है। अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए स्व-शिक्षण सामग्री तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि अध्यापकों को समवेत शिक्षा के ढांचे में विभिन्न असमर्थताओं वाले बच्चों के साथ व्यवहार करने के लिए अपेक्षित योग्यता प्रदान की जा सके।

विशेष शैक्षिक आवश्यकताएं : माता-पिता के लिए संदर्शिका

बच्चों के माता-पिता को स्कूलों के अध्यापकों और प्रशासकों की सहायता करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है, ताकि वे ऐसे हस्तक्षेपों की योजना बना सकें, जो उनके बच्चों के लिए उपयुक्त हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह संदर्शिका तैयार की गई थी कि इस बात की जानकारी प्राप्त करने में माता-पिता की सहायता की जा सके कि उनके बच्चे और अन्य बच्चों की विभिन्न आवश्यकताएं क्या हैं और उन्हें कैसे पूरा किया जा सकता है। संदर्शिका में इस प्रकार के विषय शामिल हैं, जैसे विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं से परिचय, पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे, स्कूल जाने वाले बच्चे, परिवार की भूमिका, सामुदायिक समर्थन और बार-बार पूछे जाने वाले सवाल। यह संदर्शिका विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के माता-पिता के मार्ग-दर्शन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इससे अध्यापकों को सबके लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लक्ष्य को पाने में, बच्चों के माता-पिता के साथ भागीदारों के रूप में भी काम करने में सहायता मिलेगी।

समवेत शिक्षा-कार्यरूप में

यह माड्यूल उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए सॉप्ट (एस.ओ.पी.टी.) पैकेज के वास्ते तैयार किया गया था और इसमें समवेत शिक्षा की अवधारणा और विशेष शैक्षिक आवश्यकताएँ, सम्मिलन और एकीकरण में अंतर और सम्मिलन का औचित्य, किसी समवेत स्कूल की विशेषताएँ, पाठ्यचर्या अनुकूलन, अध्यापन संबंधी योग्यताएँ और कार्यनीतियाँ, समर्थन सेवाओं की भूमिका और नीतिगत और कानूनी ढाँचे में हाल में हुए परिवर्तन जैसे विषय शामिल हैं।

विशेष केंद्रित समूहों की शिक्षा

यह मॉड्यूल विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बच्चों और बालिकाओं को सफलतापूर्वक शामिल करने के

संबंध में अध्यापकों का अभिविन्यास करने के लिए विकसित किया गया था। यह स्व-शिक्षण (सेल्फ लर्निंग) मॉड्यूल अध्यापकों का संवैधानिक उपबंधों, नीतिगत ढांचे और कानूनों, विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के अर्थ, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के बारे में पाठ्यचर्या के सरोकारों और अध्यापकों की भूमिका, लैंगिक अंतर के कारणों और उन्हें कम करने की कार्यनीतियाँ, जातिगत और जनजातिगत भेदों और अंतरों के कारणों और उन्हें कम करने की कार्यनीतियों, लैंगिक, जातिगत और जनजातिगत विषमताओं को घटाने में अध्यापक की भूमिका से परिचय कराता है।

इस मॉड्यूल का उपयोग अध्यापकों को समवेत शिक्षा को कार्य रूप देने की कार्यनीतियों की जानकारी देने और इन विशेष जरूरतों वाले बच्चों की आवश्यकताओं के बारे में जब उन्हें नियमित स्कूल शिक्षा में शामिल किया जाएगा, जागरूकता उत्पन्न करने के लिए किया जाएगा।

पाठ्यचर्या तक विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहुँच सुगम बनाने के बारे में मॉड्यूल

''विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहुँच पाठ्यचर्या तक सुगम बनाने'' के लिए एक स्व-शिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया। इस मॉड्यूल में पाठ्यचर्या, विशेष आवश्यकताओं की परिभाषा, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या प्रबंध, अध्यापन संबंधी कार्यनीतियाँ और कक्षा प्रबंध, आकलन और भावी कार्य जैसे उप-विषय शामिल हैं। इस मॉड्यूल का उपयोग एन.सी.ई.आर.टी और यूनेस्को द्वारा आयोजित ''पाठ्यचर्या में परिवर्तन के बारे में उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम'' में अन्य क्षेत्रों के स्व-शिक्षण मॉड्यूलों के साथ किया गया था।

दृष्टि विकार वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का पुनर्गठन और परीक्षा की प्रक्रियाओं में फेर-बदल

एन.सी.ई.आर.टी. और सी.बी.एस.ई. ने संयुक्त रूप से उन कदमों और कार्यकलापों का पता लगाया, जो शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया में परिवर्तन करके दृष्टि विकार वाले बच्चों की पहुंच पाठ्यचर्या तक सुगम बनाने के लिए जरूरी हैं; इसके लिए परीक्षा लेने की प्रक्रिया में फेरबदल करने के लिए भी कदम उठाए जाने जरूरी हैं, जैसे अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए पुस्तिकाओं, स्रोत पुस्तकों और संदर्शिकाओं को विकसित करना और इस प्रकार अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के संसाधनों/क्षमता का निर्माण, दृष्टि विकार वाले बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए सहायता सामग्री तैयार करने के लिए क्षमता विकसित करना, उन प्रश्नों के स्थान पर, जिसके लिए उम्मीदवारों की दृश्य निविष्टियों पर आधारित स्थानिक कौशलों (स्पेशियल स्किल) की आवश्यकता होती है, वैकल्पिक प्रश्न रखना, श्रुतलेखकों का उपयुक्त चुनाव और उनका प्रशिक्षण, 20 मिनट प्रति घंटे की दर से अतिरिक्त समय की व्यवस्था करना, और परीक्षा के दौरान ब्रेल स्लेट टेलोर फ्रेमों, एबेकस आदि जैसे विशेष उपस्करों के उपयोग की अनुमति।

समवेत स्कूलों में विकलांग बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक सामग्री का विकास और एस.सी.ई.आर.टी. और 'डाइट' के मुख्य संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षण

मुख्य संसाधन व्यक्तियों को समवेत शिक्षा के बारे में प्रशिक्षण देने का एक कार्यक्रम चलाया गया। इसमें भाग लेने वाले व्यक्ति विभिन्न एस.सी.ई.आर.टी. से और आर.आई.ई., भोपाल के अंतर्गत आने वाले राज्यों के डी.आई.ई.टी. से थे। उन्हें अपने-अपने संगठनों में समवेत शिक्षा के संबंध में अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रशिक्षण दिया गया। विकलांगता के विभिन्न पहलुओं, जैसे श्रवण विकार, दृष्टि विकार अधिगम संबंधी असमर्थताएँ, अस्थि विकलांगता और मंद बुद्धि जैसे पहलुओं पर चर्चा की गई। शारीरिक चुनौतियों वाले बच्चों को सामान्य कक्षाओं में शामिल करने के तरीकों पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया, ताकि मूल संसाधन व्यक्ति अध्यापकों को सही किस्म का प्रशिक्षण दे सकें।

प्रशिक्षण

नेटवर्किंग के जरिए प्रशिक्षण : समवेत शिक्षा के बारे में प्रशिक्षण मॉड्यूलों का विकास

अध्यापक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के रूप में राज्य और जिला स्तर पर क्षमता-निर्माण के महत्त्व को

महसूस करते हुए, उपर्युक्त परियोजना हाथ में ली गई थी। इस परियोजना में राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मिजोरम, मध्य प्रदेश और हरियाणा के विशेषज्ञों को शामिल किया गया था। मॉड्यूल राज्यों के विशेषज्ञों और एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय के सदस्यों द्वारा विकसित किए गए थे। मॉड्यूलों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं और अंततः अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए एक प्रायोगिक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूलों के शीर्षक ये हैं : समवेत शिक्षा : अवधारणा और अर्थ, सबके लिए कक्षा-कक्ष : कक्षा-कक्ष का प्रबंध, मार्गदर्शन और परामर्श, स्कूल जाने की तैयारी, अध्यापन क्षमता, सामुदायिक समर्थन और मूल्यांकन। इस प्रकार विकसित किए गए स्व-शिक्षण मॉड्यूलों से अध्यापक-प्रशिक्षकों की क्षमता के निर्माण में सहायता मिलेगी।

एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के मुख्य संसाधन व्यक्तियों को समवेत विद्यालयों में विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा के बारे में प्रशिक्षण दिया गया और शिक्षण-सामग्री का प्रचार-प्रसार किया गया।

राज्यों और स्वैच्छिक अभिकरणों में संसाधन विकास

विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा की स्कीम क्रियान्वित करने वाले आई.ई.डी.सी. कक्षों के कार्मिकों की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से अनन्य रूप से उत्तरी राज्यों के लिए दो-दिवसीय एक कार्यशाला 31 मार्च से 2 अप्रैल, 2002 तक आयोजित की गई। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू और कश्मीर और बिहार राज्यों के प्रतिनिधियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। भाग लेने वाले व्यक्तियों ने विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा की मौजूदा स्थिति के बारे में अपने-अपने राज्यों की स्थिति रिपोर्ट पेश की, जिनमें बताया गया था कि इस प्रकार की स्कीम कितने जिलों में क्रियान्वित की जाती है और इन स्कीमों के क्रियान्वयन में क्या बाधाएँ आती हैं। अपने राज्यों में इन सेवाओं को शामिल करने और उन्हें मजबूत बनाने से संबंधित मुद्दों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करने के बाद, भागीदार राज्यों ने अपने राज्यों में क्रियान्वयन के लिए कार्य-योजनाएँ तैयार कीं। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. से सहायता मिलने और एन.सी.ई.आर.टी. के साथ सूचना के आदान-प्रदान की आवश्यकता भी व्यक्त की। विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा से संबंधित दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्र थे – अध्यापकों की क्षमता का निर्माण और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सामग्री का विकास।

विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. में बहुत से विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधिमंडल संपर्क स्थापित करने और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा से संबंधित अद्यतन मुद्दों और सरोकारों की जानकारी प्राप्त करने के लिए आते रहते हैं। इस वर्ष के दौरान विद्यार्थियों के दो समूह - एक समूह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विज़ुएली हैंडीकैप्ड, देहरादून से और दूसरा समूह विवेकानंद मिशन से - एन.सी.ई.आर.टी. में आए। उन्होंने संकाय के सदस्यों के साथ विचार-विनिमय किया और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किए गए कार्य की जानकारी प्राप्त की।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

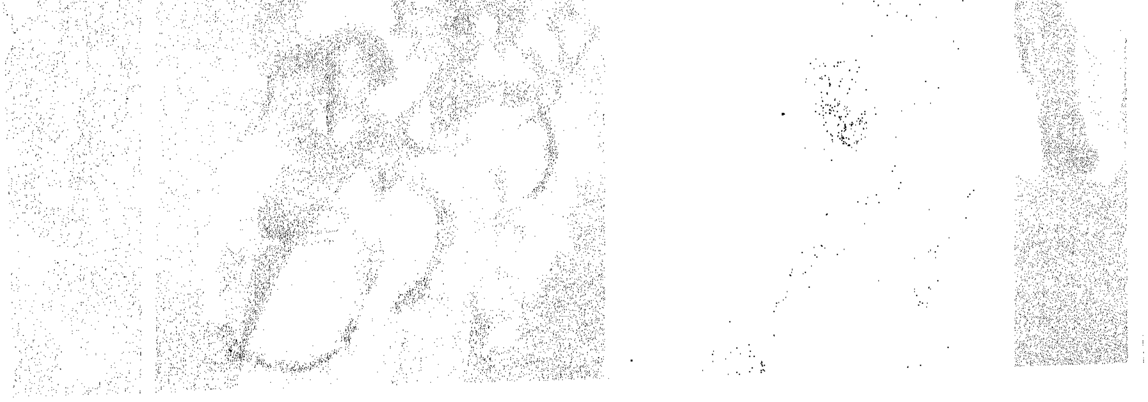
- समवेत शिक्षा के संवर्धन के लिए गैर-सरकारी संगठनों के साथ भागीदारी निर्माण (टंकित)
- समवेत प्राथमिक स्कूलों में प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या का अनुकूलनः बहु माध्यम पैकेज (टंकित)
- दृष्टि विकार वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का पुनर्गठन और परीक्षाओं की प्रक्रियाओं में फेर-बदल (टंकित)
- समवेत शिक्षा के बारे में मामला-अध्ययन-सी.बी.आर. नेटवर्क, बंगलौर (टंकित)
- समवेत शिक्षा के बारे में मामला अध्ययन-स्पास्टिक सोसाइटी ऑफ तमिलनाडु (टंकित)

- विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा का मूल्यांकन-अध्ययन - एक अनुसंधान परियोजना
- निम्नलिखित रिपोर्टें प्रकाशित की गईं :
  1. राजस्थान में छाबरा ब्लॉक में आई.ई.डी.सी. (टंकित)
  2. राजस्थान के 24 विभिन्न जिलों में आई.ई. डी.सी. (टंकित)
  3. 4 राज्यों - राजस्थान, महाराष्ट्र, मिजोरम और दिल्ली में आई.ई.डी.सी. के बारे में अंतरिम रिपोर्ट (टंकित)
- श्रवण विकार बच्चों हेतु भाषा पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं समायोजन : प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए हैंडबुक (मुद्रणाधीन)
- विशेष शैक्षिक आवश्यकताएँ माता-पिता के लिए एक संदर्शिका (टंकित)
- पाठ्यक्रम तक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहुँच को सुगम बनाने के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- मंद बुद्धि बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- दृष्टि विकार वाले बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- वाक् और श्रवण विकार वाले बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- अंग-संचलन लोकोमोटर समस्याओं से ग्रस्त बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- नेटवर्किंग के जरिए प्रशिक्षण : समवेत शिक्षा के बारे में मॉड्यूल का विकास (टंकित)
- समवेत शिक्षा-अमली रूप में : उच्च प्राथमिक स्तर पर एस.ओ.पी.टी. प्रशिक्षण पैकेज के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- विशेष केन्द्रित समूहों की शिक्षा : प्राथमिक स्तर पर एस.ओ.पी.टी. प्रशिक्षण पैकेज के लिए स्व-शिक्षण मॉड्यूल (टंकित)
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा के लिए डी.आई.ई.टी. के संकाय के अभिविन्यास के बारे में रिपोर्ट
- सेवाश्रमों में जनजातीय शिक्षार्थियों की मनोवैज्ञानिक- सामाजिक और शैक्षिक समस्याएँ

6

बालिका शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नीतिगत योजना, पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन और अध्यापकों की शिक्षा के संबंध में उपयुक्त उपाय करके बालिकाओं की शिक्षा और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए वचनबद्ध है। इसके कार्यक्षेत्र में ये बातें शामिल हैं : एक मजबूत आंकड़ा-आधार का विकास, लैंगिक पक्षपात और रूढ़िबद्ध छवि चित्रण को दूर करने के लिए पाठ्यचर्या का पुनरभिकल्पन, सभी शैक्षिक कार्मिकों को लैंगिक परिप्रेक्ष्य से संवेदनशील बनाना, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए हस्त-पुस्तिकाएं तैयार करना, जागरूकता उत्पन्न करना, बालिकाओं की शिक्षा और विकास का पक्षपोषण करना।



बालिका शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. नीतिगत योजना, पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन और अध्यापकों की शिक्षा के संबंध में उपयुक्त उपाय करके बालिकाओं की शिक्षा और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए वचनबद्ध है। इसके कार्यक्षेत्र में ये बातें शामिल हैं: एक मजबूत आंकड़ा-आधार का विकास, लैंगिक पक्षपात और रूढ़िबद्ध छवि चित्रण को दूर करने के लिए पाठ्यचर्या का पुनरभिकल्पन, सभी शैक्षिक कार्मिकों को लैंगिक परिप्रेक्ष्य से संवेदनशील बनाना, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए हस्त-पुस्तिकाएं तैयार करना, जागरूकता उत्पन्न करना, बालिकाओं की शिक्षा और विकास का पक्षपोषण करना, लैंगिक न्याय, सौहार्द और शान्ति को बढ़ावा देने के लिए माता-पिता और समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना। विद्यालयों में बालिकाओं के अनुकूल वातावरण का निर्माण करने का निरन्तर प्रयास किया जाता है।

अनुसंधान

भारत में महिला शिक्षा के पचास वर्ष

इस अध्ययन में महिलाओं के चिरकालीन शैक्षिक और सामाजिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए किए गए नीतिगत उपायों और आयोजन तथा प्रबंध संबंधी कार्यनीतियों के संदर्भ में, भारत में 1947 से बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा के विकास की समीक्षा की गई है।

नीति और घोषणाओं के स्तर पर महिलाओं की शैक्षिक और सामाजिक स्थिति को ऊंचा उठाने के लिए बहुत कुछ किया गया है, लेकिन नीतियों को कार्यान्वित करने में रह गई कमियों और कथनी तथा करनी के बीच के अंतर को दूर करने के लिए इरादों को ठोस अमली रूप देने के लिए शायद और अधिक प्रयत्न किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षा के सभी स्तरों पर शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार हुआ है और बालिकाओं तथा विशेष रूप से शहरी बालिकाओं, को उससे लाभ भी हुआ है। भेदभाव रहित पाठ्यचर्या की स्वीकृत नीति और शिक्षा की विषय-वस्तु और प्रक्रिया के अभिविन्यास से शिक्षा को लैंगिक परिप्रेक्ष्य से संवेदनशील और महिलाओं की समानता और उनके सशक्तीकरण का एक सशक्त साधन बनाने का प्रयास किया गया है। बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में एन.पी.ई. के बाद के काल में जो प्रयत्न किए गए हैं, उनके सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं। इसका एक प्रमुख मानदंड यह है कि महिला साक्षरता दर में तेजी से वृद्धि हुई है और शिक्षा के क्रमिक उच्चतर स्तरों में बालिकाओं के प्रतिधारण में वृद्धि हुई है और इन स्तरों पर अधिक लड़कियां प्रवेश ले रही हैं।

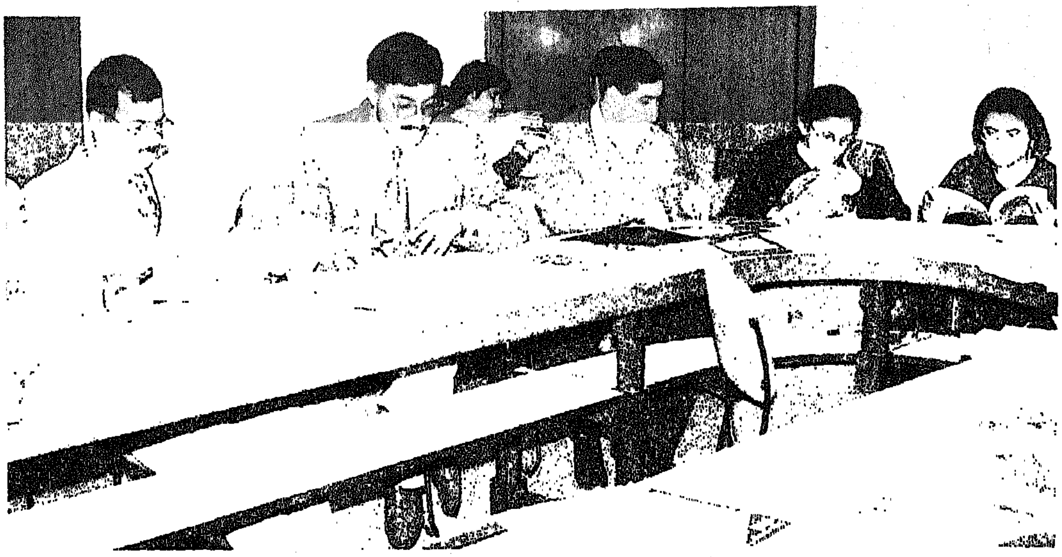
अध्ययन रिपोर्ट में ये बातें शामिल हैं: (i) स्वतंत्र भारत में बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा का अवधारणात्मक ढांचा, (ii) स्वतंत्रतापूर्व भारत में, विशेष रूप से औपनिवेशिक शासन के दौरान महिला शिक्षा के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में, भारत में 1947 से लेकर महिलाओं की शिक्षा में हुए विकास का विस्तृत विश्लेषण, (iii) महिला साक्षरता और महिलाओं तथा बालिकाओं की भागीदारिता के रूप में पिछले पांच दशकों में महिला शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियां और कमियां-मात्रात्मक आयाम, (iv) पाठ्यचर्या और उसके क्रियान्वयन के जरिए लैंगिक समानता लाने और महिलाओं का सशक्तीकरण करने के गुणात्मक पहलू, (v) बालिकाओं की शिक्षा के बारे में अनुसंधान और इस क्षेत्र में कुछ कार्य/अनुसंधान परियोजनाएं, (vi) निष्कर्षों का सारांश, वे मुद्दे, जिनकी ओर अभी ध्यान दिया जाना बाकी है और वे प्रस्तावित क्षेत्र, जिन पर भविष्य में जोर दिया जाना है।

कर्नाटक में माध्यमिक स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक पक्षपात का पता लगाने के लिए भी एक लघु अनुसंधान-अध्ययन किया गया था।

विकास

जीवन कौशलों का प्रारंभिक स्तर की शिक्षा के साथ एकीकरण

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2000 में इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चों के संपूर्णतावादी विकास के लिए



जीवन-कौशलों का शिक्षा के साथ एकीकरण विषय पर कार्यशाला का एक दृश्य (7-18 जनवरी 2002)

जीवन-कौशलों को शिक्षा के साथ जोड़ना आवश्यक है। इससे बच्चों में ज्ञान को आलोचनात्मक सोच-विचार में बदलने, समस्याओं को हल करने, निर्णय लेने और जीवन की वास्तविक स्थितियों में यह जानने की व्यावहारिक योग्यता उत्पन्न होगी कि उन्हें क्या करना है, कब करना है और कैसे करना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए "जीवन-कौशलों का प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा के साथ एकीकरण" के बारे में दो सप्ताह की अवधि की एक विकास-कार्यशाला दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, और पंजाब के शिक्षा निदेशालयों के सहयोग से आयोजित की गई है, ताकि अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को जीवन-कौशलों का एकीकरण प्रारंभिक स्तर पर विभिन्न विषय-क्षेत्रों के साथ करने के प्रति संवेदनशील बनाया जाए और शिक्षा के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के लिए जीवन-कौशलों के साथ एकीकृत विषय-सापेक्ष मॉड्यूल विकसित किए जाएं। इन मॉड्यूलों से अध्यापकों को कक्षाओं में काम करने में सुविधा मिलेगी।

प्रशिक्षण

महिलाओं की शिक्षा और उनके विकास की कार्यविधियों के बारे में ग्यारहवां प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

'महिलाओं की शिक्षा और उनके विकास की कार्यविधियों' के बारे में छः सप्ताह की अवधि का एक प्रशिक्षण हर वर्ष आयोजित किया जाता है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की कार्यविधि बहुत ही सहभागितापूर्ण और तालमेल युक्त होती है। पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों को एक स्थिति-रिपोर्ट तैयार करके लानी होती है, जिसकी रूपरेखा की जानकारी उनको पहले से दे दी जाती है। वे संकाय के पर्यवेक्षण में काम करते हैं और एन.सी.ई.आर.टी., एन.आई.ई.पी.ए. और अन्य संसाधन केन्द्रों में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके अपनी स्थिति-रिपोर्टों को समृद्ध और परिमार्जित करते हैं। इस बार इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में 14 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के सत्ताईस व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें से अधिकतर डी. आई.ई.टी. से लिए गए थे। एक प्रशिक्षण मेनुअल तैयार किया गया है, जिसमें पाठ्यक्रम की रूपरेखा का विस्तृत ब्योरा और विषयों की विस्तृत रूपरेखा और विषय-वस्तु दी गई है। यह कार्यक्रम मूल स्तर के कार्मिकों को महिलाओं की शिक्षा और उनके विकास की कार्यविधियों और महिलाओं के सशक्तीकरण के प्रशिक्षकों के रूप में कार्य करने के वास्ते तैयार करने के लिए विकसित किया गया है और इसके लिए उन्हें महिलाओं के मुद्दों की जानकारी प्रदान की जाती है, एक तुलनात्मक प्ररिप्रेक्ष्य में महिलाओं की शिक्षा और स्थिति के बारे में उन्हें अवगत कराया जाता है, बालिकाओं की

शिक्षा और उनके विकास के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक आयामों की जानकारी दी जाती है, डाटा एकत्र करने, संकलित करने और उसका विश्लेषण करने के तरीके सिखाए जाते हैं और इस क्षेत्र में अनुसंधान और कार्य परियोजनाएं तैयार करने की योग्यता उत्पन्न की जाती है।

अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने का एक ऐसा अन्य कार्यक्रम भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- भारत में महिला शिक्षा के पचास वर्ष (फोटोकापी)
- लिंग संवेदन जीवन कौशल उपागम का प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या क्रियान्वयनः हरियाणा की पाठ्यपुस्तक पर आधारित एक हस्त-पुस्तिका, 2001 (फोटोकापी)
- प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा के साथ जीवन कौशलों के एकीकरण संबंधी कार्यशाला (7-8 जनवरी, 2002)
  - सूचना विवरणिका (अंग्रेजी और हिंदी में) (फोटोकापी)
  - रिपोर्ट (अंग्रेजी में) (फोटोकापी)
- महिलाओं की शिक्षा और उनके विकास की कार्यविधियों के बारे में ग्यारहवां प्रशिक्षण कार्यक्रम :
  - घोषणा संबंधी विवरणिका
  - सूचना विवरणिका (फोटोकापी)
  - प्रशिक्षण मेनुअल (फोटोकापी)
  - रिपोर्ट (अंतिम रूप दिया जा रहा है)
- विकास के प्रति लैंगिक पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण, 2001-2002 (फोटोकापी)
- उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के बारे में प्रशिक्षण पैकेज का विकास (मुद्रणाधीन)
- महिला शिक्षा और सशक्तीकरण की कार्यविधि के बारे में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (मुद्रणाधीन)

7

विज्ञान और गणित शिक्षा

वर्ष 2001 में पाठ्य-विवरणों के जारी होने के तुरंत बाद, एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए विज्ञान और गणित के लिए पाठ्य सामग्री तैयार करने का काम शुरू कर दिया। अब, दैनिक जीवन में, और उद्योग, कृषि, संचार, रक्षा, मौसम, आदि के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की भूमिका को देखते हुए, विज्ञान ने उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी का रूप ले लिया है।



विज्ञान और गणित शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी अपने क्रियाकलापों के जरिये स्कूलों के स्तर पर विज्ञान, गणित और पर्यावरण की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के निरंतर प्रयास करती रही है। वर्ष 2001 में पाठ्य-विवरणों के जारी होने के तुरंत बाद, एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए विज्ञान और गणित के लिए पाठ्य सामग्री तैयार करने का काम शुरू कर दिया। अब, दैनिक जीवन में, और उद्योग, कृषि, संचार, रक्षा, मौसम, आदि के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की भूमिका को देखते हुए, विज्ञान ने उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी का रूप ले लिया है। इन दो स्तरों के लिए तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रायोगिक अथवा व्यावहारिक भूमिका का पता चलता है। उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर विकसित की गई नई पाठ्यपुस्तकों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को एकीकृत कर दिया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित की विषयवार पुस्तकें तैयार की जाती हैं। उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के लिए तैयार की गई गणित की पुस्तकों से भी दैनिक जीवन में गणित के प्रयोग पर प्रकाश पड़ता है और उनमें वाणिज्यिक गणित पर पर्याप्त बल दिया गया है।

नए तरीकों और प्रौद्योगिकियों वाली अध्यापन-अधिगम की नई कार्यनीतियों के बारे में काफी बड़े पैमाने पर प्रयोग किए जाते हैं। अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलापों में ये शामिल हैं: लोकप्रिय पठन सामग्री और पूरक पुस्तकों के लेखन-प्रकाशन द्वारा विज्ञान को लोकप्रिय बनाना, विज्ञान प्रदर्शनियों और 'स्कूल साइंस' नामक त्रैमासिक पत्रिका द्वारा वैज्ञानिक ईजादों और अवधारणाओं के प्रचार-प्रसार, जैसे स्कूल-बाह्य क्रियाकलापों को बढ़ावा देना। प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के लिए विज्ञान-किटों का निर्माण किया जाता है और विभिन्न व्यवसायों (ट्रेड्स) के लिए प्रशिक्षु प्रशिक्षण का कार्य भी हाथ में लिया जाता है।

अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्यचर्याओं का नवीकरण

पाठ्यचर्याओं का नवीकरण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा को वांछित स्वरूप देने और इसमें सुधार लाने के लिए पाठ्यचर्या के नवीकरण की प्रासंगिकता को देखते हुए इस कार्य को प्राथमिकता प्रदान की थी। विज्ञान और गणित की शिक्षा के बारे में विद्यालयी तंत्र से प्राप्त फीडबैक का उपयोग विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्य सामग्री विकसित करने के लिए किया जा रहा है।

विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा के प्रौद्योगिकी संघटक का निर्धारण

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 के अनुसार, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के लिए जो मार्ग निर्देश और पाठ्यविवरण तैयार किये गये थे, उनके अनुसार विज्ञान और प्राद्योगिकी की पाठ्यपुस्तकों में प्रौद्योगिकी को विज्ञान के साथ एकीकृत किया जाना है। इस संबंध में, एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में प्रौद्योगिकी को विज्ञान के साथ एकीकृत करने के क्षेत्र में एक संक्षिप्त अनुसंधान अध्ययन शुरू किया गया था। यह अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर तक विज्ञान की मौजूदा पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा करने के लिए शुरू किया गया था, ताकि उसमें प्रौद्योगिकी के संघटक का पता लगाया जाए।

अवधारणात्मक समझ और अंतरण के लिए विज्ञान के 'कंस्ट्रक्टिविस्ट' अधिगम चक्र का एक प्रयोगात्मक अध्ययन

इस अध्ययन के अंतर्गत विज्ञान की अवधारणात्मक समझ और स्कूल से बाहर की विषय वस्तु में उसके अंतरण का एक अधिगम चक्र विकसित किया गया है। यह मनोवैज्ञानिक और 'कंस्ट्रक्टिविस्ट' अधिगम के सिद्धांतों पर आधारित है। इस प्रस्तावित

अधिगम चक्र में प्रगामी डायालॉजिक समन्वेषण, विस्तारण और रूपान्तरण के तीन चरण शामिल हैं, जिनमें विद्‌यार्थी प्रगामी रूप से (छोटे समूहों में वैयक्ति चर्चा से कक्षा चर्चा तक) नई अवधारणाओं की कड़ियों का समन्वेषण करता है, उनका भिन्न रूपों में दर्शन करता है, जिससे उनके महत्वपूर्ण पहलू प्रकट होते हैं जो आम तौर पर छिपे होते हैं। अवधारणा की समझ का उपयोग नए संदर्भों में स्कूल से बाह्य संदर्भों तक अंतरण के लिए किया जाता है। इस चक्र को दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों के स्कूलों में, जिनमें वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के केंद्रीय विद्‌यालय, जे.एन.वी. और पब्लिक स्कूल शामिल थे, आजमाया गया था। इस अध्ययन से पता चलता है कि इस अधिगम चक्र से विद्‌यार्थियों की अभिप्रेरणा, रुचि और कार्य में उनकी भागीदारी में वृद्‌धि होती है और इसके अलावा अवधारणात्मक समझ और अंतरण में भी वृद्‌धि होती है। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि स्पष्टीकरण के दौर में मात्र सामूहिक चर्चा ही ऐसा एकमेव क्रियाकलाप नहीं है, जिससे अवधारणात्मक समझ में सहायता मिलती है, बल्कि विस्तारण और रूपान्तरण के चरणों में जिन क्रियाकलापों का सुझाव दिया गया है, वे भी अवधारणात्मक समझ और अंतरण के लिए आवश्यक पाए गए हैं। किसी भी सार्थक अधिगम के लिए स्पष्ट ढांचा, बाह्य मार्गदर्शन और तत्काल फीडबैक आवश्यक शर्तें हैं।

उड़ीसा राज्य के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अध्यापकों के लिए कठिन स्थलों का पता लगाना

राज्य की जरूरत के आधार पर, माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अध्यापकों के लिए कठिन स्थलों का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया गया था। उड़ीसा की कक्षा नौ और दस की विज्ञान विषय की पाठ्‌यपुस्तकों का उपयोग करते हुए, अवधारणाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया था। इसके अलावा, एक प्रश्नावली तैयार की गई थी, जो विज्ञान के अध्यापकों के पास भेजी गई थी, ताकि वे यह बताएं कि उनके लिए कठिन स्थल कौन से हैं। उनके प्रत्युत्तरों का विश्लेषण एक कार्यशाला में किया गया और विशिष्ट कठिन स्थल निर्धारित किए गए, जो अध्यापकों के लिए अनुदेशात्मक सामग्री विकसित करने के लिए आधार के रूप में काम देंगे। गणित के +2 स्तर के कठिन स्थलों का भी पता लगाया गया, जिसका उद्‌देश्य केरल और आंध्र प्रदेश के अध्यापकों के लिए अधिगम संबंधी कार्यनीतियों का सुझाव देना था।

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान की पाठ्‌यचर्या का बोझ परिप्रेक्ष्य और संभावनाएँ

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्‌देश्य अपेक्षित अवधारणाओं की मात्रा, 'कैसे सीखना चाहिए, यह सीखने' के कार्यक्षेत्र, विषयों के सातत्य और उनकी सुसंबद्‌धता पर विशेष बल देते हुए, पूर्वी राज्यों के माध्यमिक स्कूलों के विज्ञान के विषय की मौजूदा पाठ्‌यचर्या का गहराई से अध्ययन करना, और आवश्यक सिफारिशें देना था। इस कार्यक्रम में पाठ्‌यचर्या विशेषज्ञों और उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और बिहार के कार्यरत अध्यापकों को शामिल किया गया।

गणितीय योग्यताओं के संबंध में स्त्री-पुरुषों के बीच के अंतर के बारे में भी जांच की गई और कक्षा पांच के विद्‌यार्थियों द्‌वारा गणित में की गई गलतियों का विश्लेषण भी किया गया।

पांडिचेरी और मैसूर के उच्चतर माध्यमिक स्तर (श्रेणी बारह) पर जीवविज्ञान के प्रयोगशाला-कौशल प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों के कारणों का पता लगाने के लिए अध्ययन किया जा रहा है और इसके अलावा उच्चतर माध्यमिक हाई स्कूलों में ड्राइंग के कौशल के मूल्यांकन के बारे में मामला-अध्ययन किये जा रहे हैं।

विकास

विद्‌यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए विज्ञान और गणित की पाठ्‌यपुस्तकों की रचना

एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय और बाहरी विशेषज्ञों को शामिल करके श्रेणी छः, नौ और ग्यारह के लिए विज्ञान और गणित की हस्तलिपियों का पहला प्रारूप तैयार किया गया। ये हस्तलिपियां विद्‌यालयी तंत्र से फीडबैक और विद्‌यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या की रूपरेखा, 2000 में चर्चित

विभिन्न मुद्दों और सरोकारों के आधार पर विकसित की गई थीं। इन हस्तलिपियों की समीक्षा कार्यशाला में इन विषयों के विशेषज्ञों, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों द्वारा की गई। समीक्षा-कार्यशालाओं में की गई टिप्पणियों और दिये गये सुझावों पर इन प्रारूपों के लेखकों द्वारा विचार किया गया और प्रारूप को उपयुक्त रूप से संशोधित किया गया। इन हस्तलिपियों को, इनके प्रकाशन से पहले, विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा संपादित किया गया।

विज्ञान और गणित को लोकप्रिय बनाना

देश के सुप्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को सहयोजित करके, 10 से 16 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए 'पढ़ें और सीखें' (रीडिंग टू लर्न)' शृंखला के अंतर्गत विज्ञान के विशुद्ध और व्यावहारिक क्षेत्रों में लगभग चार दर्जन पुस्तकें तैयार की गईं। मोटे तौर पर, ये पुस्तकें इन क्षेत्रों के बारे में थीं: प्राकृतिक विज्ञान (भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान), जैव प्रौद्योगिकी, न्यक्लीय विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और ब्रह्माण्ड विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, समुद्र विज्ञान, नौ विज्ञान, इलेक्ट्रानिकी, भू-विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, खाद्य और पोषाहार, मौसम विज्ञान और ऊर्जा। इस शृंखला के अंतर्गत दो और पुस्तकें मुद्रण के लिए प्रस्तुत की गईं:

(1) वनस्पति-कार्बोनिक रसायनों की प्रयोगशाला, (2) रूई से नाइलॉन तक। ये पुस्तकें मुद्रित रूप में उपलब्ध होंगी।

विद्यालयी शिक्षा का पर्यावरणिक अभिविन्यास-डी.आई.ई.टी. कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल

'विद्यालयी शिक्षा का पर्यावरणिक अभिविन्यास' के बारे में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की परियोजना पूरी की गई और डी.आई.ई.टी. (जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों) के कार्मिकों द्वारा संचालित किये जाने वाले सेवाकालीन शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए पर्यावरणिक शिक्षा के बारे में चार मॉड्यूल विकसित किये गये। ये मॉड्यूल चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर) की सहायता से पूरे किए गए थे, और ये चार क्षेत्रों (उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी) की आवश्यकताओं पर आधारित थे।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर जैव-विज्ञान के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज, माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में नवाचारी प्रयोगों, वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर अवधारणात्मक भौतिकी के बारे में एक संसाधन बैंक, माध्यमिक स्कूल के स्तर के गणित के विभिन्न विषयों की चुनी हुई अवधारणाओं के बारे में क्रियाकलापों, गणित, भौतिक विज्ञान की विषयवस्तु व कार्यविधि के बारे में विषयवस्तु समृद्धिकारी सामग्री और प्रशिक्षण पैकेज का विकास किया गया।

प्रशिक्षण और विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. ने माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में अध्यापकों, मूल संसाधन व्यक्तियों और राज्यों के पदधारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किये। केंद्रीय विद्यालय संगठन के भौतिकी, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित के स्नातकोत्तर अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया। रसायन विज्ञान के शिक्षण में कंप्यूटरों के अनुप्रयोग और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर भौतिकी और जैव विज्ञान के शिक्षण के तरीकों और उसकी विषय वस्तु के बारे में और माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान के बारे में फैली गलत धारणाओं का पता लगाने के लिए मूल संसाधन व्यक्तियों के लिए भी प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान उपचारात्मक उपायों के सुझाव भी दिये गये। गणित के अध्यापन को प्रभावकारी बनाने के लिए गणित के शिक्षकों को गणितीय मॉडल विकसित करने की जानकारी दी गई। उन्हें गणित की प्रयोगशाला विकसित करने के लिए काफी निविष्टियां भी प्रदान की गईं।

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियां

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी किसी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में लगने वाली जिला और क्षेत्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों की परिणति है। छत्तीसगढ़,

झारखंड और उत्तरांचल के नवनिर्मित राज्यों ने भी वर्ष 2001-2002 में बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन किया था। ये प्रदर्शनियां राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में वर्ष के दौरान राज्यों की सुविधानुसार आयोजित की जाती हैं। वर्ष 2001-2002 के दौरान आयोजित राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों का मुख्य विषय था 'समाज के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी'। उप-विषय थे (1) विज्ञान की युगान्तरकारी घटनाएं, (2) ऊर्जा को काबू में करना, (3) खाद्य, (4) पर्यावरणिक प्रबन्ध (5) पोषाहार और स्वास्थ्य, (6) परिवहन और संचार, (7) मनोरंजन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी, (8) शैक्षिक प्रौद्योगिकी। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को (1) केन्द्रीय विषय और उप-विषयों के बारे में मॉडल तैयार करने, (2) मूल्यांकन की कसौटियां विकसित करने, (3) राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों के लिए आयोजित की जाने वाली 29वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में प्रदर्शित करने के लिए चुनिंदा मॉडलों के लिए आलेख प्रस्तुत करने के वास्ते प्रोफार्मा का उपयोग करने के बारे में विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया गया। वर्ष 2001-2002 के दौरान बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करने के बारे में और मुख्य विषय और उप-विषयों के बारे में भी मार्ग निर्देशों का हिंदी संस्करण भी कुछ राज्यों को भेजा गया था। अधिकतर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों, अध्यापकों, विद्यालयों और आम लोगों द्वारा इन प्रदर्शनियों में अत्यन्त रुचि ली गई। इन प्रदर्शनियों में सभी प्रकार के स्कूलों, अर्थात् प्राइवेट, सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और पब्लिक स्कूलों ने भाग लिया। जैसा कि अधिकतर राज्यों द्वारा सूचित किया गया है, ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के स्कूलों के लड़के और लड़कियों ने इन प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। बहुत से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों ने विज्ञान प्रदर्शनियों के दौरान सुविख्यात वैज्ञानिकों के भाषणों, प्रश्नोत्तर कार्यक्रमों, वाद-विवादों और वैज्ञानिक अध्ययन यात्राओं का आयोजन भी किया। परिषद् ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी 2001-2002 आयोजित करने के लिए लगभग 15.80 लाख रुपये के सहायता अनुदान दिये।

बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

एन.सी.ई.आर.टी. ने उत्तर प्रदेश की सरकार के सहयोग से 17 से 23 नवम्बर, 2001 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में बच्चों के लिए 28वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी का केन्द्रीय विषय था 'विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी'। प्रदर्श पांच उप-विषयों में विभाजित किए गए, अर्थात् (1) सबके लिए खाद्य, स्वास्थ्य और पोषाहार, (2) उद्योग, (3) परिवहन और संचार, (4) ऊर्जा (5) सूचना प्रौद्योगिकी। देश के विभिन्न भागों (शहरी और ग्रामीण दोनों) से राज्य स्तर पर चुने गये प्रदर्श राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किये गये। जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी, 2001 में कुल मिला कर 150 प्रदर्श प्रदर्शित किये गये। लगभग 300 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने, जो 33 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों, अजमेर और भोपाल स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, परमाणु ऊर्जा शैक्षिक सोसाइटी के स्कूलों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, इस प्रदर्शनी में भाग लिया। दोहा-कतार के 6 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भी इसमें भाग लिया था। एन.सी.ई.आर.टी. ने भी अपने स्टाल लगाये थे। प्रदर्शनी में भाग लेने वाले विद्यार्थियों, अध्यापकों और दर्शकों को निःशुल्क वितरित किये जाने के लिए सामग्री तैयार की गई, जैसे विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञान प्रदर्शनी के उद्देश्यों सहित, प्रदर्शनी के विशेष पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले फोल्डर (अंग्रेजी/हिंदी), प्रदर्शों की सूची (अंग्रेजी/हिंदी), और 'विज्ञान के मॉडलों का ढांचा और कार्यचालन।

'स्कूल साइंस' पत्रिका

'स्कूल साइंस' नामक त्रैमासिक पत्रिका अध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं, पाठ्यचर्या का विकास करने वाले व्यक्तियों, प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों को भी विज्ञान और गणित की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में अपने विचार, अनुभव, नवाचार और अनुसंधान के निष्कर्ष प्रस्तुत करने का एक मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका में विज्ञान और गणित के अध्यापन/अधिगम के क्षेत्र में हुई अद्यतन प्रगति, विषय वस्तु की समृद्धि और नवाचारात्मक विधियों के बारे में अनेक प्रकार की पठन सामग्री शामिल की जाती है। इस पत्रिका के नियमित स्तम्भों में 'विज्ञान समाचार' और 'पुस्तक समीक्षा' शामिल हैं। पत्रिका का एक 'संपादकीय सलाहकार बोर्ड' है, जिसके सदस्य सुविख्यात वैज्ञानिक हैं, और जो पत्रिका के सुधार और उसके पाठकों की संख्या को बढ़ाने के लिए सुझाव देता है। पत्रिका के चार अंकों की हस्तलिपियां तैयार की गईं। इनमें से, पत्रिका के जून और सितम्बर अंक पहले से ही मुद्रित किए जा चुके हैं। दिसम्बर, 2001 और मार्च, 2002 के शेष दो अंकों की प्रति (कापी) संपादित की जा चुकी हैं और उन्हें प्रकाशन के लिए भेज दिया गया है।

विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का केन्द्र

एन.सी.ई.आर.टी. ने 'विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का केन्द्र' स्थापित करने की एक परियोजना हाथ में ली है। यह केन्द्र विकसित किया जा रहा है। पहले चरण में विज्ञान उद्यान स्थापित किया गया है। विभाग की वर्कशाप में विज्ञान के बुनियादी सिद्धांतों को प्रदर्शित करने वाले परस्पर क्रियात्मक मॉडल गढ़े गए हैं। इन मॉडलों से हमारे दैनिक जीवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग को उजागर करने में भी सहायता मिलती है। स्कूलों के बच्चों को मॉडलों के प्रचालन को स्पष्ट करने वाले सूचना-पट्ट प्रत्येक मॉडल के साथ लगाये गये हैं। पार्क में लगाये गये मॉडलों में सरल मशीनें, लीवर, पुली, पेंडुलम, जादुई ध्वनि, साइक्लाइड मार्ग और पहाड़ पर चढ़ने वाली काया शामिल हैं।

पार्क में भारत सरकार के गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय द्वारा प्रायोजित 'ऊर्जा पार्क' परियोजना के अंतर्गत सौर उपकरण लगाने की योजना है। इन उपकरणों में सौर पम्प, सौर टेलीविजन, सड़कों पर सौर रोशनी, सौर कुकर, सौर हीटर शामिल हैं।

परियोजना के दूसरे चरण में, केन्द्र में एक विज्ञान क्लब होगा, जो बच्चों को 'हैंड्स आन' अनुभव प्रदान करेगा। इसमें एक साइबर कैफे होगा। केन्द्र बच्चों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बुनियादी सिद्धांतों और अनुप्रयोगों से परिचित कराने के लिए स्कूलों को नियमित आधार पर आमंत्रित करेगा।

विभिन्न शैक्षिक संस्थानों को उपलब्ध कराई गई संसाधन सहायता

केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, सी.बी.एस.ई., एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., डी.ए.वी. स्कूल प्रबंधकों और कुछ पब्लिक स्कूलों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के लिए और सरकारी स्कूलों, पब्लिक स्कूलों, केन्द्रीय विद्यालयों, दिल्ली प्रशासन के स्कूलों में शिक्षकों के चयन के लिए संसाधन सहायता दी गई।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- उच्च प्राथमिक स्तर के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्य विवरण
- माध्यमिक स्तर के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्य विवरण
- उच्च माध्यमिक स्तर के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्य विवरण
- साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी फॉर क्लास VI
- साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी फॉर क्लास IX
- मैथेमैटिक्स फॉर क्लास VI
- मैथेमैटिक्स फॉर क्लास IX
- मैथेमैटिक्स फॉर क्लास XI (पार्ट I)
- कैमिस्ट्री फॉर क्लास XI
- फिजिक्स फॉर क्लास XI

- वनस्पति-कार्बोनिक रसायन की प्रयोगशाला (मुद्रणाधीन)
- बायोलॉजी फॉर क्लास XI
- 'स्कूल साइंस' त्रैमासिक पत्रिका-दो अंक 2001-2002
- बच्चों के लिए 28वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के लिए प्रदर्शों की सूची
- विज्ञान मॉडलों का ढांचा और कार्यचालन, 2001
- डी.आई.ई.टी. कार्मिकों के लिए विद्यालयी शिक्षा का पर्यावरणिक अभिविन्यास-4 मॉडल
- कक्षा ग्यारह के लिए रसायन विज्ञान में मल्टी मीडिया के बारे में अकादमिक आलेख (टंकित)
- प्रयोगशाला मेनुअल सहित लेसर-आधारित आप्टिक्स किट (फोटोकापी)
- वैल्यू ऑफ मैथेमैटिक्स एजुकेशन
- सृजनात्मक निर्माणवादी विज्ञान अधिगम मॉडल का प्रयोगात्मक अध्ययन, 2002 (फोटोकापी)
- पुस्तिका, 'विद्यालयों की पाठ्यचर्या में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा में प्रौद्योगिकी का संघटक 2000-भाग-1 (निम्न प्राथमिक), (फोटोकापी)
- माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में मुख्य संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर गणित पढ़ाने वाले अध्यापकों का प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- माध्यमिक स्तर पर मुख्य संसाधन व्यक्तियों को विज्ञान के व्यावहारिक कौशलों का प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- पंजाब राज्य के लिए समृद्धिकारी पैकेज और कंप्यूटरों का उपयोग करते हुए वरिष्ठ माध्यमिक स्तर (+2 स्तर) पर भौतिकी के अध्यापकों का प्रशिक्षण
- पंजाब राज्य के लिए वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों का प्रशिक्षण और प्रशिक्षण पैकेज का विकास (फोटोकापी)
- माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान के बारे में गलत धारणाओं का पता लगाना और उपचारात्मक उपाय सुझाना (फोटोकापी)
- केन्द्रीय विद्यालय संगठन के स्नातकोत्तर अध्यापकों (जीव विज्ञान) के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- उड़ीसा राज्य के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अध्यापकों के लिए कठिन स्थलों का पता लगाना (मुद्रणाधीन)
- माध्यमिक स्तर पर विज्ञान की पाठ्यचर्या का बोझ–परिप्रेक्ष्य और संभावनाएं (मुद्रणाधीन)
- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर अवधारणात्मक भौतिकी की संसाधन पुस्तक का विकास, भाग-1: माप, यांत्रिकी और गुरुत्वाकर्षण (मुद्रणाधीन)
- माध्यमिक स्तर पर गणित प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए प्रयोगों की सूची तैयार करने के लिए अन्वेषण (मुद्रणाधीन)
- कर्नाटक के मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए माध्यमिक स्तर के लिए भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान की विषय वस्तु और कार्यविधि के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- आन्ध्र प्रदेश की भौतिकी की इंटरमीडिएट पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- आन्ध्र प्रदेश की गणित की इंटरमीडिएट पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- आन्ध्र प्रदेश में जीव विज्ञान की इंटरमीडिएट पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन और विश्लेषण (फोटोकापी)
- उच्च प्राथमिक स्कूलों में गणित शिक्षण की विषय वस्तु और कार्यविधि के बारे में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- गणित के स्व-शिक्षण की सामग्री (फोटोकापी)
- केन्द्रीय विद्यालयों के स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए भौतिकी में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में रिपोर्ट (फोटोकापी)

- +2 स्तर पर भौतिकी के बारे में अन्वेषणात्मक परियोजना (फोटोकापी)
- केन्द्रीय विद्यालयों के गणित संबंधी सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में रिपोर्ट (फोटोकापी)
- उच्च प्राथमिक स्कूलों में गणित के शिक्षण की विषय वस्तु व कार्यविधि (फोटोकापी)
- विज्ञान के शिक्षण की विषय वस्तु और कार्यविधि के बारे में प्रशिक्षण पैकेज
- गणित (कक्षा छः) की स्व-शिक्षण सामग्री (फोटोकापी)
- गणित (कक्षा सात) की स्व-शिक्षण सामग्री (फोटोकापी)

8

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान और मानविकी की शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या और अनुदेशात्मक सामग्री के अनुसंधान और विकास, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण/अभिविन्यास और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने से संबंधित अनेक क्रियाकलाप कार्यान्वित किए जाते हैं। वर्ष 2001-2002 के दौरान कार्यक्रमों का मुख्य जोर इस बात पर था कि केवल तथ्यात्मक ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया को पाठ्य सामग्री को समझने, उस पर मनन करने और उसे आत्मसात करने की प्रक्रिया में बदला जाए।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान और मानविकी की शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या और अनुदेशात्मक सामग्री के अनुसंधान और विकास, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण/अभिविन्यास और राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने से संबंधित अनेक क्रियाकलाप कार्यान्वित किए जाते हैं। वर्ष 2001-2002 के दौरान कार्यक्रमों का मुख्य जोर इस बात पर था कि केवल तथ्यात्मक ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया को पाठ्य सामग्री को समझने, उस पर मनन करने और उसे आत्मसात करने की प्रक्रिया में बदला जाए। कार्यक्रमों की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि सभी क्षेत्रों का एकीकरण करके सामाजिक विज्ञान की एक पाठ्यपुस्तक तैयार की गई, जिसमें कक्षा X तक अध्ययन की एक सामान्य स्कीम के अंतर्गत मूल्यपरक शिक्षा, कला की शिक्षा और कार्य शिक्षा के तत्व शामिल किए गए। विभिन्न विषय-क्षेत्रों में उपयुक्त रूप से एकीकृत किए गए अति महत्त्वपूर्ण संघटक क्षेत्रों और मूल्यों को पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग बनाया गया है।

भाषाओं के पाठ्यक्रम में सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और सोचने की योग्यताओं और संचार-कौशलों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि समाज विज्ञान में मानवीय पर्यावरण को उसके संपूर्ण रूप में समझने पर जोर दिया गया है, ताकि एक अपेक्षाकृत व्यापक परिप्रेक्ष्य और अनुभवजन्य, तर्कसंगत और मानवीय दृष्टिकोण विकसित किया जाए। पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री में शिक्षार्थियों को यह सहायता देने का प्रयास किया गया है कि वे जानकारी वाले और जिम्मेदार नागरिकों के रूप में अपना विकास कर सकें, जिनके पास ऐसे कौशलों का भंडार हो, जिनसे विकास और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में भाग ले सकें और योगदान कर सकें।

विकास

भाषाओं – हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत (उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर), सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा और कार्य शिक्षा (उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर), भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र और वाणिज्य (उच्च माध्यमिक स्तर) के लिए मार्गनिर्देश और पाठ्य विवरण प्रकाशित किए गए। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, समाज विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र और वाणिज्य की पाठ्यपुस्तकों के नए सेट तैयार करने का काम चरणबद्ध तरीके से शुरू किया गया। वर्ष 2001-2002 में कक्षा VI, IX और XI के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं।

ज्ञान और आनन्द प्राप्ति के लिए और पाठकों को संस्कृत में उपलब्ध सूत्र विचारों और अवधारणाओं के समृद्ध भंडार से परिचित कराने के लिए अतिरिक्त पठन सामग्री प्रकाशित की गई। संस्कृत शैक्षिक शृंखला के अंतर्गत हिंदी में विकसित सामग्री में भारतीय बाल विकास, शिक्षा की भारतीय परंपरा-आदर्श और प्रयोग, और प्राचीन संस्कृत शिक्षा-सिद्धांत और प्रयोग शामिल हैं। संस्कृत विज्ञान शृंखला के अंतर्गत 'संस्कृत में गणित' की हस्तलिपि अंग्रेजी में तैयार की गई है। राष्ट्रीय संस्कृत परियोजना के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षार्थियों के लिए 20 घंटे का एक पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री जिसमें कहानियां, कविताएं और व्याकरण शामिल हैं, और अध्यापकों के लिए संदर्शिकाएं और त्वरित पाठ्यक्रम की सामग्री विकसित की गई। उच्च माध्यमिक स्तर के लिए वाणिज्य के कतिपय विनिर्दिष्ट विषयों में नैदानिक परीक्षा मदों और लेखाशास्त्र के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण पैकेज का विकास किया गया।

उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने और प्राथमिक स्तर पर उर्दू पढ़ाने की कार्यनीतियों के बारे में प्रशिक्षण पैकेज विकसित किए गए। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों पर अंग्रेजी में बातचीत करने के कौशल में सुधार करने के लिए श्रव्य कैसेट तैयार किए गए। माध्यमिक स्तर पर तमिल पढ़ाने के लिए अध्यापकों के लिए एक हस्तपुस्तिका तैयार की गई।

शिक्षण/विस्तार

"संस्कृत के माध्यम से संस्कृत के शिक्षण" की राष्ट्रीय संस्कृत परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाकलाप आयोजित किए गए :

- एन.सी.ई.आर.टी. के कर्मचारियों के लिए चार सप्ताह की अवधि की बोलचाल की संस्कृत की कक्षाएं।
- एन.सी.ई.आर.टी. के परिसर में स्थित केंद्रीय विद्यालय और वसंत कुंज में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के लिए दस दिन की अवधि की बोलचाल की संस्कृत कक्षाएं।
- एन.सी.ई.आर.टी. के कर्मचारियों के लिए बीस दिन की अवधि की बोलचाल की संस्कृत की कक्षाएं और अभ्यास कक्षाएं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी, हिंदी और लेखाशास्त्र की शिक्षा देने वाले अध्यापकों और माध्यमिक स्तर पर संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए।

उड़ीसा में माध्यमिक स्तर पर भूगोल पढ़ाने वाले अध्यापकों और कर्नाटक में उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने वाले अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए मुख्य संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया। मातृभाषा (उड़िया) की शिक्षा देने के बारे में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।

अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, मराठी और गुजराती पढ़ाने के तरीकों के बारे में बहुत सी संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

असम के स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए +2 स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने और हिमाचल प्रदेश और राजस्थान के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई.आर.टी./डी.आई.ई.टी. कार्मिकों के लिए संचार कौशलों के बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए गए।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- संदर्शिकाएं और पाठ्य विवरण
  - प्राथमिक स्तर I-V
  - उच्च प्राथमिक स्तर VI-VIII
  - माध्यमिक स्तर IX-X
  - उच्च माध्यमिक स्तर XI-XII
- कक्षा VI, IX और XI के लिए विभिन्न विषय क्षेत्रों के बारे में पाठ्यपुस्तकें
- लेखाशास्त्र की शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- असम के स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए +2 स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने के बारे में प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- उड़ीसा में माध्यमिक स्तर पर भूगोल पढ़ाने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए मुख्य संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास (मुद्रणाधीन)
- माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों और मातृभाषा (उड़िया) पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (मुद्रणाधीन)
- किशोर शिक्षा संबंधी भित्ति चार्ट

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना अप्रैल, 1980 में देश को अपने जनांककीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता देने के एक शैक्षिक उपाय के रूप में शुरू की गई थी। यह परियोजना चार चरणों में क्रियान्वित की गई है। परियोजना का पहला चरण 1985 में पूरा किया गया था; दूसरा 1992 में, और तीसरा 1997 में। वर्ष 2001-2002 इसके चौथे चरण (1998-2001) का अंतिम वर्ष है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) इस परियोजना को इसकी शुरूआत के समय से क्रियान्वित कर रही है।

वर्ष 2001-2002 में परियोजना के क्रियाकलापों का ध्यान पाठ्य विवरणों और पाठ्यपुस्तकों में, जिन्हें विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसरण में एन.सी.ई.आर.टी. और कुछ राज्यों द्वारा संशोधित किया जा रहा है, जनसंख्या संबंधी शिक्षा के तत्वों को एकीकृत करने को बढ़ावा देने पर केंद्रित था। राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राज्य और जिला स्तरों पर अनेक प्रकार के क्रियाकलाप, जैसे-अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण,

पक्षपोषण, सह-पाठ्यचर्या और मानीटरिंग और समन्वय संबंधी कार्य किए गए। जो मुख्य कार्य किए गए, वे इस प्रकार हैं :

अनुसंधान

मुख्य रूप से विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों वाले किशोरों की आवश्यकताओं का पता लगाने के लिए निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन किए गए :

(i) किशोरों के जनन स्वास्थ्य के बारे में बेसलाइन सर्वेक्षण;

(ii) उड़ीसा के खुरदा, बालासोर और कोरापुट जिलों के लोगों के जीवन की भौतिक गुणावत्ता के प्राचलों के बारे में स्थिति रिपोर्ट;

(iii) विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों वाले किशोरों की शैक्षिक आवश्यकताओं का पता लगाने के मुख्य उद्देश्य से मैसूर में किशोर शिक्षा के बारे में आवश्यकता आकलन अध्ययन।

इसके अलावा, जनसंख्या शिक्षा की भावी दिशाओं पर चर्चा करने के मुद्दों का पता लगाने के लिए राज्य-वार परियोजना स्थिति अध्ययन किए गए।

विकास

जनसंख्या और विकास के बारे में युवाओं के विचार नामक एक पुस्तक को अंतिम रूप दिया गया और उसे प्रकाशन के लिए भेजा गया। जनसंख्या शिक्षा बुलेटिन के दो अंक प्रकाशित और प्रचारित-प्रसारित किए गए। जनसंख्या सूचना शिक्षा और संचार के बारे में एक संक्षिप्त विब्लियोग्राफी तैयार की गई और पॉपडॉक, डी.एल.डी.आई. द्वारा वितरित की गई। 10 आलेखों और 6 पूरक सामग्रियों की स्लाइडों का एक सेट तैयार किया गया।

प्रशिक्षण

राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और राज्य स्तरों पर काम करने वाले परियोजना-कार्मिकों के लिए वित्तीय प्रबंध और रिपोर्टिंग के बारे में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अपने-अपने संगठनों में लेखा करने वाले प्रशासनिक कार्मिकों ने भाग लिया।

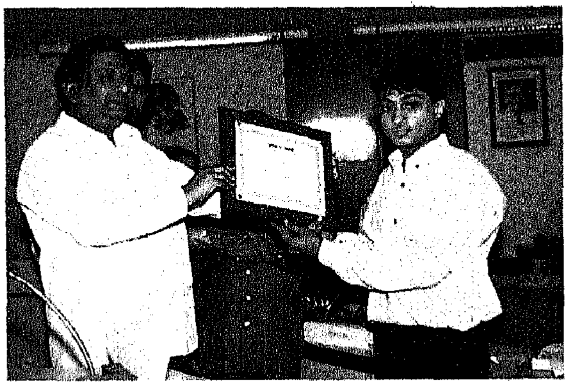
विस्तार

दसवीं पंचवर्षीय योजना के लिए एक महत्त्वपूर्ण निविष्टि के रूप में, चंडीगढ़, गुवाहाटी, बंगलौर और पणजी (गोवा) में चार क्षेत्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गईं। इन संगोष्ठियों में शिक्षा नीति निर्माताओं, पाठ्यचर्या निर्माताओं, शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, अध्यापकों, माता-पिता और किशोरों ने भाग लिया।

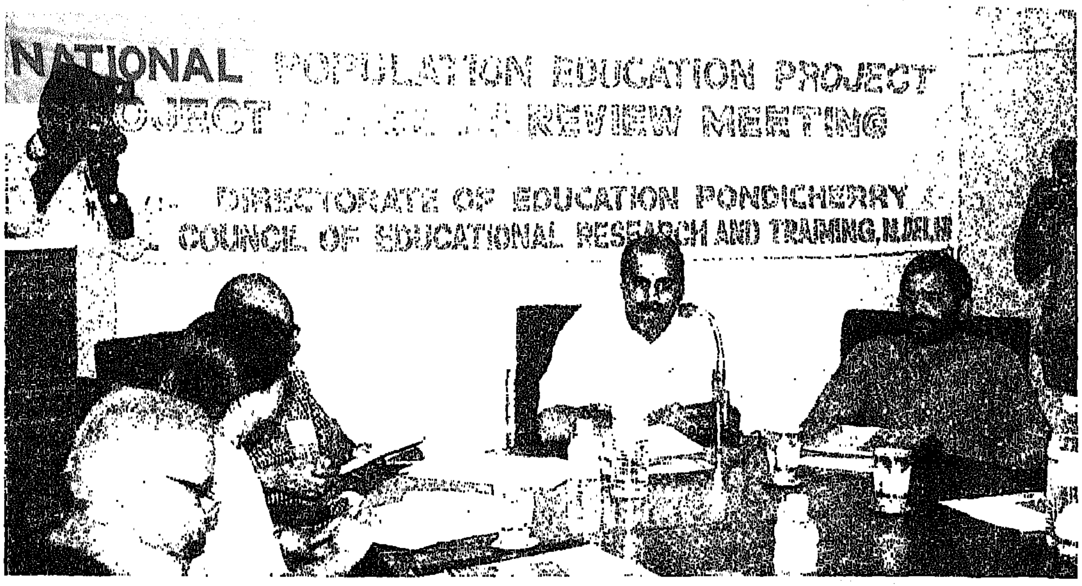
मई और सितम्बर, 2001 में अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता, 2001 आयोजित की गई, जो यू.एन. एफ.पी.ए. द्वारा प्रायोजित क्रियाकलाप है। प्रतियोगिता का विषय था 'जनसंख्या और पर्यावरण'। देश के सभी भागों से 700 से अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता 2000 के पंद्रह राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में स्मारिकाएं प्रदान की गईं। पांचवें आयु वर्ग में विश्व स्तर के विजेता को भी, जो प्रथम स्थान पर रहा था, पुरस्कृत किया गया।

आर.आई.ई. संकाय और डी.एम. स्कूलों के अध्यापकों के लिए नई अवधारणाओं वाली जनसंख्या शिक्षा के पक्षपोषण के बारे में कार्यक्रम आयोजित किए गए।



एन.सी.ई.आर.टी. के संयुक्त निदेशक, डा. एम.एस. खापर्डे विश्व स्तर की अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता-2000 के प्रथम पुरस्कार विजेता श्री कैलाश कुमार को पुरस्कार देते हुए



पांडिचेरी सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री परियोजना की प्रगति की समीक्षा बैठक का उद्घाटन करते हुए

परियोजना के क्रियान्वयन की मानीटरिंग

इस परियोजना का कार्यान्वयन 30 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में संबंधित राज्य जनसंख्या शिक्षा कक्षों द्वारा और राष्ट्रीय संगठनों, जैसे केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (एन.ओ.एस.), केंद्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.) और नवोदय विद्यालय समिति (एन.वी.एस.) द्वारा किया जा रहा है। परियोजना के कार्यान्वियन की मानीटरिंग करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए गए थे :

- विद्यालयी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्रकों की परियोजनाओं का प्रभावकारी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों को समर्थन प्रदान करने के लिए तीन अंतर्क्षेत्रकीय समन्वय बैठकें आयोजित की गईं।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, एम.एच.ओ.एफ.डब्ल्यू. और यू.एन.एफ.पी.ए. में आयोजित की जाने वाली त्रिपक्षीय प्रगति समीक्षा बैठक सहित अन्य बैठकों में परियोजना के कार्यान्वयन की नियमित अंतराल के बाद समीक्षा की गई।
- वर्ष 2001 में हुई प्रगति की समीक्षा करने और वर्ष 2002 के लिए कार्य योजनाएं और बजट अनुमान तैयार करने और उन्हें अनुमोदित करने के लिए जनवरी, 2002 में दो परियोजना प्रगति समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं।

जैसी कि राज्य क्रियान्वयन अभिकरणों द्वारा रिपोर्ट दी गई है, राज्य स्तर पर निम्नलिखित निविष्टियां की गईं :

- संबंधित राज्य भाषाओं में पाठ्यचर्या, पक्षपोषण, प्रशिक्षण और शिक्षण-सामग्री के बारे में तिरसठ पुस्तिकाएं तैयार की गईं।
- लगभग 80 हजार माता-पिता ने किशोर शिक्षा के पक्षपोषण कार्यक्रमों में भाग लिया।
- प्रशिक्षित संसाधन व्यक्तियों की सहायता से लगभग 1200 संसाधन व्यक्तियों को जनसंख्या शिक्षा और किशोर शिक्षा के बारे में प्रशिक्षण दिया गया और लगभग 3000 अध्यापकों को किशोर शिक्षा में सह-पाठ्यचर्या क्रियाकलापों का आयोजन करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।
- 180 जिलों में विभिन्न सह-पाठ्यचर्या क्रियाकलाप आयोजित किए गए। 2500 से अधिक विद्यालयों में किशोर शिक्षा के बारे में विद्यार्थियों के क्रियाकलाप आयोजित किए गए।

- नौ अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए और ग्यारह अध्ययन पूरे होने वाले हैं।

प्रकाशन

राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

- जनसंख्या और विकास के बारे में युवाओं के विचार (मुद्रणाधीन)
- जनसंख्या शिक्षा बुलेटिन (दो अंक)
- वार्षिक परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक, 1999 की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- परियोजना स्थिति सर्वेक्षण अनुसूची (फोटोकापी)
- मैसूर जिले में किशोर शिक्षा के बारे में आवश्यकता आकलन अध्ययन (फोटोकापी)
- किशोरों के जनन स्वास्थ्य के बारे में विद्‌यार्थियों की जागरूकता और उनकी अभिवृत्ति के संबंध में अध्ययन (फोटोकापी)

9

परीक्षा सुधार

शिक्षार्थियों के कार्य-निष्पादन में गुणात्मक सुधार के लिए, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों से संबंधित चार डी.एम. विद्यालयों में 'स्कूल-आधारित आकलन की स्कीम' शुरू की गई है। इस स्कीम में विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन की निरंतर मानीटरिंग, अधिगम के विद्यालयी और सह-विद्यालयी दोनों पहलुओं के आकलन और निदान के द्वारा वांछनीय उपचारात्मक उपाय करने की व्यवस्था है।

परीक्षा सुधार

एन.सी.ई.आर.टी. ने इससे पहले शैक्षिक मापन और मूल्यांकन और विशेष रूप से परीक्षा सुधार के क्षेत्र में बहुत से कार्यक्रम हाथ में लिए हैं। मौजूदा कार्यक्रमों का उद्देश्य विशिष्ट रूप से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में शैक्षिक और परीक्षा लेने वाले दोनों किस्मों के अभिकरणों को शैक्षिक और तकनीकी सहायता मुहैया करना है। इनमें संसाधन व्यक्तियों, प्रश्नपत्र तैयार करने वाले व्यक्तियों, परीक्षकों, मॉडरेटरों को प्रशिक्षण देना, शैक्षिक मूल्यांकन के लिए अवधारणात्मक और नमूने की सामग्री विकसित करना, अनुसंधान करना और उसे बढ़ावा देना, परामर्शदात्री सेवाएं मुहैया करना और शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में सूचना के आदान-प्रदान करने के केंद्र की भूमिका निभाना शामिल है। शैक्षिक मूल्यांकन और परीक्षा सुधार से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी नीचे दी जा रही है :

अनुसंधान

स्कूल-आधारित आकलन की स्कीम

शिक्षार्थियों के कार्य-निष्पादन में गुणात्मक सुधार के लिए, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों से संबंधित चार डी. एम. विद्यालयों में 'स्कूल-आधारित आकलन की स्कीम' शुरू की गई है। इस स्कीम में विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन की निरंतर मानीटरिंग, अधिगम के विद्यालयी और सह-विद्यालयी दोनों पहलुओं के आकलन और निदान के द्वारा वांछनीय उपचारात्मक उपाय करने की व्यवस्था है।

माध्यमिक आकलन करने और इस स्कीम के क्रियान्वयन के बारे में फीडबैक प्राप्त करने के लिए पर्यवेक्षण और मानीटरिंग दौरे किए गए, ताकि उन समस्याओं का पता लगाया जा सके और उन्हें हल किया जा सके जो अध्यापकों को इस स्कीम के क्रियान्वयन में पेश आ रही हैं, विशेष रूप से उन समस्याओं को जो यूनिट परीक्षाओं और आवधिक परीक्षाओं के डिजाइन और ब्लू प्रिंट तैयार करने, सह-शैक्षिक क्षेत्रों के आकलन रिकार्डों को रखने, शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में ग्रेड देने के मामले में पेश आती हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के समन्वयकर्ताओं, प्राथमिक अनुभागों के प्रभारियों, टीम लीडरों और अध्यापकों के साथ विस्तृत चर्चा की गई। स्कीम के बारे में माता-पिता और कक्षा V के विद्यार्थियों की राय जानने की कोशिश की गई। इन दौरों के समय स्कूलों के वातावरण का वास्तविक सर्वेक्षण और कक्षाओं का निरीक्षण किया गया तथा स्कूलों के अभिलेखों की जांच की गई है।

कक्षा V के अंत में उपलब्धियों का सर्वेक्षण

समूचे देश में कक्षा V के विद्यार्थियों की उपलब्धियों के स्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 'कक्षा V के अंत में उपलब्धियों के सर्वेक्षण' का काम हाथ में लिया गया है। इस उपलब्धि सर्वेक्षण के लिए भाषाओं, गणित और पर्यावरणिक अध्ययन के बारे में परीक्षा-पत्र तैयार किए गए और विद्यार्थियों, अध्यापकों और स्कूलों के लिए प्रश्नावलियां तैयार की गईं और पंद्रह क्षेत्रीय भाषाओं में उन्हें छापा गया। वास्तविक उपलब्धि सर्वेक्षण करने के लिए राज्यों के समन्वयकर्ताओं के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान जिलों, ब्लॉकों, स्कूलों और विद्यार्थियों का नमूना तैयार करने (सेम्पलिंग), परीक्षाओं के प्रशासन और सर्वेक्षण से संबंधित अन्य क्रियाकलापों के समन्वय के लिए जोरदार प्रशिक्षण दिया गया। बाद में फरवरी से अप्रैल, 2002 तक की अवधि में 32 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में नमूने के लगभग 75,000 विद्यार्थियों की परीक्षा ली गई।

वाणिज्य के विषय में नैदानिक परीक्षा की मदों का परीक्षण

वाणिज्य के विषय में परीक्षा की मदों का परीक्षण किया गया और स्वतः अधिगम संबंधी शैक्षिक सामग्री में, जो वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के लिए विकसित की जा रही है, शामिल किए जाने के लिए उनका चयन किया गया।

कक्षा V और VI के विद्यार्थियों को सीखने में आने वाली कठिनाइयों के स्वरूप का अध्ययन

क्षेत्र में किए गए अध्ययनों के आधार पर कक्षा V और VI के विद्यार्थियों को हिंदी, गणित और अंग्रेजी सीखने में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाया गया और निवारक अध्ययन विकसित किए गए।

सेवाकालीन कार्यक्रमों के मूल्यांकन के साधनों का परीक्षण

मूल्यांकन के लिए विकसित किए गए साधनों की आजमाइश की गई और सेवाकालीन अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए आयोजित दो कार्यशालाओं में उन्हें अंतिम रूप दिया गया।

विकास

कक्षा VII और VIII के लिए उपलब्धि परीक्षा

कक्षा VII और VIII के लिए उपलब्धि परीक्षाएं विकसित करने और उनका मानकीकरण करने का काम हाथ में लिया गया, ताकि शिक्षा के उच्च प्राथमिक स्तर के अंत में बच्चों के कार्यनिष्पादन का अध्ययन किया जा सके। विकसित की गई मदों का चार कार्यशालाओं में पुनरीक्षण किया गया, ताकि कक्षा VII और VIII के लिए पाठ्यचर्या के चार क्षेत्रों, अर्थात गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और भाषाओं के बारे में तीन समानान्तर सेट (हिंदी और अंग्रेजी दोनों में) तैयार किए जा सकें। विभिन्न राज्यों के लिए परीक्षाओं की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए राज्यों की पाठ्यचर्या के अनुसार अंतर का पता लगाया गया और संबंधित राज्यों की पाठ्यचर्या से तुलनीय प्रतिस्थापन मदें विकसित की गईं। कक्षा VII और VIII के लिए उपर्युक्त चार विषयों में उपलब्धियों की परीक्षा के तीन समानान्तर सेट अन्तिम रूप से तैयार किए गए। हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के अलावा, इन उपलब्धि परीक्षाओं का तेरह क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुवाद/अनुकलन किया गया। बाद में आजमाइश के लिए 26 राज्यों और 2 संघ राज्य क्षेत्रों में से प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में नमूने के 300 विद्यार्थियों की ये उपलब्धि परीक्षाएं ली गईं।

प्रश्न बैंक

केरल राज्य के अध्यापकों के उपयोग के लिए +2 स्तर पर गणित के बारे में एक प्रश्न बैंक विकसित किया गया।

प्रशिक्षण और विस्तार

राज्यों के संसाधन व्यक्तियों की क्षमता का निर्माण

शैक्षिक मूल्यांकन, प्रश्नपत्र तैयार करने, निरंतर और व्यापक मूल्यांकन और ग्रेड प्रदान करने के बारे में मुख्य संसाधन व्यक्तियों की क्षमता के निर्माण के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विभिन्न विषय-क्षेत्रों में विद्यार्थियों के कौशलों और योग्यताओं की जांच करने की क्षमता का निर्माण करना है। ये कार्यक्रम निम्नलिखित हैं :

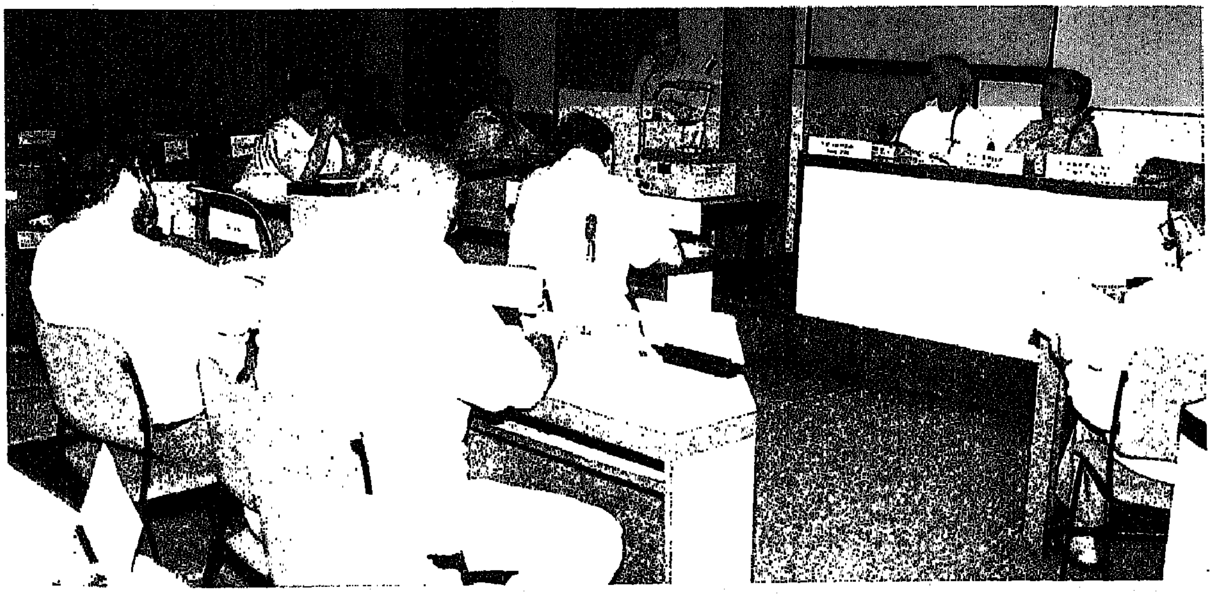
- गोवा के स्कूल शिक्षा बोर्ड की विषय समिति के सदस्यों, अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों को निरन्तर और व्यापक मूल्यांकन और ग्रेडिंग की अवधारणाओं से परिचित कराया गया।
- मिजोरम के स्कूल शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र तैयार करने वाले व्यक्तियों, परीक्षकों और मॉडरेटरों को संतुलित प्रश्नपत्र विकसित करने के बारे में अभिविन्यस्त किया गया। प्रशिक्षण में शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर भिन्न प्रकार के प्रश्न निर्धारित करने, और डिजाइन तथा ब्लू प्रिंट के आधार पर संतुलित प्रश्नपत्र तैयार करने और इसके अलावा विस्तृत मार्किंग स्कीम तैयार करने के लिए प्रशिक्षण देने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी, मिजो, विज्ञान, समाज विज्ञान और गणित के विषय-क्षेत्रों में नमूने के प्रश्नपत्र विकसित किए गए।
- उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्धारित करने वाले व्यक्तियों और मॉडरेटरों

का संतुलित प्रश्नपत्र निर्धारित करने के बारे में 5-दिवसीय अभिविन्यास किया गया। बोर्ड के इस्तेमाल के लिए गणित, विज्ञान और समाज विज्ञान के विषयों के नमूने के प्रश्नपत्रों के दो-दो सेट और अंग्रेजी और उड़िया भाषा के लिए एक-एक सेट विकसित किए गए।

- असम की उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद के प्रश्नपत्र तैयार करने वाले व्यक्तियों का संतुलित प्रश्नपत्र तैयार करने के बारे में अभिविन्यास किया गया। भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, शिक्षा वाणिज्य और असमिया भाषा के विषय-क्षेत्रों के नमूने के प्रश्नपत्र विकसित किए गए।
- उपलब्धि सर्वेक्षण के लिए उपर्युक्त मदों का चुनाव करने और जिलों, ग्रामीण ब्लॉकों तथा शहरी क्षेत्रों और स्कूलों के सैम्पल बनाने के लिए एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई./डी.ई.आर.टी. के राज्य समन्वयकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान परीक्षा लेने की प्रक्रिया और अन्य संबंधित क्रियाकलापों के बारे में विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।
- कर्नाटक राज्य के अध्यापकों के लिए टी.सी.एच. में प्रश्नपत्र सेट करने के बारे में एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- मध्य प्रदेश की डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य ध्यान कार्यक्रम मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों पर केंद्रित था।
- मध्य प्रदेश राज्य की डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए प्रश्नपत्र निर्धारित करने की तकनीकों के बारे में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाने और उनके मूल्यांकन के बारे में कर्नाटक राज्य की डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 40 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- लक्षद्वीप के उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए शैक्षिक मूल्यांकन के बारे में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम लक्षद्वीप में आयोजित किया गया।

स्कूल शिक्षा बोर्डों के सभापतियों का सम्मेलन

परीक्षा के क्षेत्र में नवाचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करने, बोर्डों और एन.सी.ई.आर.टी. के बीच की कड़ियों को मजबूत बनाने और ग्रेडिंग सहित परीक्षा-सुधार से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए स्कूल शिक्षा बोर्डों के सभापतियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में सभापतियों और 21 बोर्डों के सचिवों अथवा उनके



शिक्षा बोर्डों के सभापतियों का बारहवां सम्मेलन (19-20 सितंबर 2001)

प्रतिनिधियों ने भाग लिया। परीक्षा सुधार से संबंधित मुद्दों पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया और सम्मेलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा निम्नलिखित के बारे में सिफारिशें की गईं : (i) सी.सी.ई. (ii) ग्रेडिंग, (iii) समेस्टर प्रणाली (iv) सार्वजनिक परीक्षाओं में पारदर्शिता, (v) परीक्षा की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग, और (vi) बोर्डों की क्षमता का निर्माण।

माध्यमिक शिक्षा में सार्वभौम गुणवत्ता की कार्यनीतियों की योजना बनाने के लिए सम्मेलन

इस सम्मेलन में मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और बोर्ड की परीक्षा में ग्रेड का उपयोग करने की वकालत की गई। यह भी निर्णय लिया गया कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बोर्डों को सभी संभव तकनीकी सहायता दी जा सकती है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2002 में मूल्यांकन संबंधी सरोकार

सिक्किम राज्य के 42 उच्च स्तरीय शैक्षिक योजना-निर्माताओं, प्रशासकों और शिक्षकों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और पाठ्यचर्या के नवीकरण के अंतर्निहित महत्व से सुपरिचित कराने का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान चर्चा के मुख्य मुद्दे थे : एन.सी.एफ.एस.ई. की मुख्य विशेषताएं, पाठ्यचर्या और मूल्यांकन संबंधी सरोकार, परिवर्तित स्थिति में प्रणाली प्रबंध। प्रत्येक प्रस्तुतीकरण के बाद प्रश्नोत्तरों का सत्र आयोजित किया गया। पाठ्यचर्या नवीकरण और विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रस्तावित मूल्यांकन के बारे में प्रतिनिधियों के मन में जो बहुत से संदेह थे, उनका निवारण किया गया। पाठ्यचर्या के बोझ को कम करने, +2 स्तर पर समेस्टर प्रणाली लागू करने, विभिन्न शैक्षिक और मूल्यांकन अभिकरणों के बीच नेटवर्किंग की व्यवस्था करने, प्रणाली के प्रबंध के लिए संसाधन जुटाने से संबंधित मुद्दों का प्रतिनिधियों द्वारा स्वागत किया गया और सराहना की गई। राज्य द्वारा संकल्प लिया गया कि इसी प्रकार के कार्यक्रम राज्य के चार क्षेत्रों में आयोजित किए जाएंगे और बाद में, एन.सी.एफ.एस.ई. के क्रियान्वयन के उद्देश्य से अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- शैक्षिक मूल्यांकन के बारे में एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों की क्षमता का निर्माण (फोटोकापी)
- प्रवेश के लिए ग्रेडों के उपयोग के बारे में रिपोर्ट (फोटोकापी)
- प्रवेश के लिए ग्रेडों का उपयोग
- स्कूल शिक्षा बोर्डों के सभापतियों के 12वें सम्मेलन की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- भाषाओं, गणित और पर्यावरणिक विज्ञान के बारे में उपलब्धि परीक्षा - कक्षा V
- वाणिज्य के विषय में नैदानिक परीक्षा मदें (फोटोकापी)
- सेवाकालीन कार्यक्रमों के मूल्यांकन के साधनों का विकास (फोटोकापी)
- मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मूल्यांकन संबंधी हस्त पुस्तिका (फोटोकापी)
- असम के डी.पी.ई.पी. के चरण-I के जिलों में शैक्षिक हस्तक्षेपों का मूल्यांकन
- आंध्र प्रदेश में गणित, भौतिकी और जीव विज्ञान की इंटरमीडिएट पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन (कंप्यूटर द्वारा मुद्रित)
- कक्षा V और VI के विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों के स्वरूप और निवारक अध्ययन विकसित करने के बारे में अध्ययन (फोटोकापी)
- सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाना, उनकी तैयारी और उनका मूल्यांकन (कंप्यूटर द्वारा मुद्रित)

10

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान, मार्गदर्शन और परामर्श के विषयों के अनुप्रयोग द्‌वारा विद्‌यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना एन.सी.ई. आर.टी. का एक प्रमुख कार्य है। देश में मार्गदर्शन और परामर्श के एक नोडल अभिकरण के रूप में, एन.सी.ई.आर.टी. विद्‌यालयों को ये सेवाएँ प्रदान करने में राज्य स्तर के अभिकरणों की सहायता करती रही है।

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान, मार्गदर्शन और परामर्श के विषयों के अनुप्रयोग द्वारा विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक प्रमुख कार्य है। देश में मार्गदर्शन और परामर्श के एक नोडल अभिकरण के रूप में, एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयों को ये सेवाएँ प्रदान करने में राज्य स्तर के अभिकरणों की सहायता करती रही है।

अनुसंधान

कक्षा XII की मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन

विद्यार्थियों, अध्यापकों और समीक्षकों से फीडबैक प्राप्त करके कक्षा XII की "बेहतर जीवन के लिए मनोविज्ञान" नामक मनोविज्ञान की मौजूदा पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन अध्ययन किया गया, ताकि एक नई पाठ्यपुस्तक तैयार की जा सके।

विकास

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या और कक्षा XI के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक तैयार करना

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए मनोविज्ञान की नई पाठ्यचर्या के विकास से संबंधित कार्य किया गया। इसके बाद कक्षा XI के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न अध्यायों की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया गया। ये अध्याय विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गए थे, जिनका बाद में विशेषज्ञों द्वारा पुनरीक्षण किया गया। +2 स्तर पर मनोविज्ञान की शिक्षा देने वाले अध्यापकों से फीडबैक भी प्राप्त किया गया। विशेषज्ञों और अध्यापकों से प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों के आधार पर, लेखकों द्वारा अध्यायों को अंतिम रूप दिए जाने से पहले, उनके अपेक्षित सुधार किए गए। इन अध्यायों को अंतिमतः संपादकों के एक समूह द्वारा संपादित किया गया। कक्षा XI के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक की हस्तलिपि के अंग्रेज़ी संस्करण 'इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी पार्ट-I' को छाप दिया गया है। कक्षा XI के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण मुद्रणाधीन है।

प्रशिक्षण

मार्गदर्शन और परामर्श के बारे में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

मार्गदर्शन और परामर्श के स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम को अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा मान्यता दी जाती रही।

मार्गदर्शन और परामर्श के बारे में अल्पकालीन कार्यक्रम

पांडिचेरी में उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रिंसिपलों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श संबंधी एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। बिहार, उड़ीसा और असम राज्यों के लिए भी व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विस्तार

शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं का राष्ट्रीय पुस्तकालय

शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं का राष्ट्रीय पुस्तकालय शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधानकर्ताओं और उसका व्यवहार करने वाले व्यक्तियों को सेवाएँ प्रदान करके शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करता रहा। अद्यतन मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं को निरंतर जोड़ा जाता रहता है, ताकि उपलब्ध परीक्षाएँ संबंधित सरोकारों के अधिकतर महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर करें, जैसे बुद्धि, योग्यता, अभिवृत्ति, रुचि, मूल्य, व्यक्तित्व, उपलब्धि, सृजनात्मकता, अधिगम और मार्गदर्शन एवं परामर्श आदि।

मार्गदर्शन प्रयोगशाला

मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्र में अद्यतन सामग्री प्राप्त और विकसित करके मार्गदर्शन प्रयोगशाला को अद्यतन और समृद्ध बनाया गया है। प्रयोगशाला में मार्गदर्शन और परामर्श के विभिन्न उपकरणों के अलावा, मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं और मार्गदर्शन से संबंधित साहित्य उपलब्ध है।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी पार्ट I क्लास XI
- कक्षा XII के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन-अध्ययन की रिपोर्ट (टंकित)

11

मूल्यपरक शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने का नोडल केंद्र माना जाता है, इसलिए उसके विभिन्न संघटकों ने देश में विद्यालयी स्तर पर मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं।

मूल्यपरक शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. को विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने का नोडल केंद्र माना जाता है, इसलिए उसके विभिन्न संघटकों ने देश में विद्यालयी स्तर पर मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं। इस केन्द्र के लक्ष्य और कार्य ये हैं: (i) विद्यालयी शिक्षा के मूल्यपरक अभिविन्यास के लिए योजनाएं, कार्यक्रम और क्रियाकलाप तैयार करना, (ii) योजनाओं और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए कार्यनीतियां विकसित करना, (iii) शैक्षिक सामग्री और अन्य सहायक उपकरण विकसित करना, (iv) मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, प्रशिक्षण पैकेजों, श्रव्य और दृश्य सामग्री के कोष-व-सन्दर्भ पुस्तकालय के रूप में काम करना।

अनुसंधान

स्कूलों में मूल्य-आधारित व्यवहारों का अध्ययन

विद्यार्थियों के अन्दर मूल्यों की भावना भरने के लिए विभिन्न प्रकार के स्कूलों द्वारा जिन तरीकों को अपनाया जाता है उनका पता लगाने के लिए दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में स्थित कुछ चुने हुए स्कूलों में मूल्य-आधारित व्यवहारों का अध्ययन किया गया ताकि विद्यालयी प्रणाली के लिए सार्थक निहितार्थ निकाले जा सकें।

महापुरुषों के जीवन से मूल्यों की खोज

पूर्वी भारत के महान व्यक्तियों के जीवन-मूल्यों का पता लगाने के लिए उनकी जीवनियों का विश्लेषण करने के लिए एक अध्ययन शुरू किया गया। चुने हुए महान व्यक्तियों के जीवन पर आधारित मूल्यपरक शिक्षा का एक पैकेज विकसित किया गया और विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा उसका पुनरीक्षण किया गया। पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों में इस सामग्री को आजमाया जा रहा है।

मूल्य-बोध और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध

इस अध्ययन में मैसूर, कर्नाटक के समवेत और अनन्य विद्यालयों की छात्राओं और छात्रों के मूल्य-बोध और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच के संबंध पर ध्यान केंद्रित किया गया।

विकास

भारत में मूल्यपरक शिक्षा के संबंध में सटीक ग्रन्थ सूची

मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र ने देश में मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित प्रकाशनों और अन्य कृतियों का डाटाबेस एक सटीक सन्दर्भ ग्रंथ सूची के रूप में तैयार करने का कार्य शुरू किया। भारत में मूल्यपरक शिक्षा संबंधी सटीक सन्दर्भ ग्रंथ सूची में पुस्तकों की टीका, पत्रिकाएं, लेख, डॉक्टरेट विषयक अनुसंधान, प्रशिक्षण पैकेज, श्रव्य/दृश्य कार्यक्रम, आदि शामिल हैं, जो मूल्यपरक शिक्षा के बारे में 1980 से अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित किए गए हैं। यह ग्रंथ सूची मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधानकर्ताओं, कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और अध्यापकों द्वारा उपयोग किए जाने के लिए है।

विद्यार्थियों में मानवीय उत्तरदायित्वों और अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्कूल-आधारित कार्यक्रम

मानव अधिकारों के क्षेत्र में उपलब्ध कार्य की समीक्षा के आधार पर, विशेष रूप से कक्षा VI, VII और VIII के लिए मानव अधिकारों और उत्तरदायित्वों की शिक्षा के बारे में एक अवधारणात्मक रूपरेखा विकसित की गई, ताकि इस विषय पर अध्यापकों और विद्यार्थियों के बोध का आकलन करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की जा सके। इस अध्ययन के आधार पर मानव अधिकारों और उत्तरदायित्वों के बारे में उच्च प्राथमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की जागरूकता बढ़ाने के लिए एक स्कूल-आधारित कार्यक्रम विकसित किया गया और विद्यालयों में उसका क्षेत्र-परीक्षण किया गया।

विद्‌यालयी शिक्षा में एकीकृत समवर्ती कार्यपद्धति के रूप में मूल्यों का स्पष्टीकरण

अध्यापकों/मूल्यों की शिक्षा देने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए संसाधन सामग्री विकसित की गई, जिसमें प्रशिक्षण और अध्यापन-अधिगम के दौरान अध्यापकों और विद्‌यार्थियों के उपयोग के लिए विभिन्न क्रियाकलाप/अभ्यास शामिल थे।

सृजनात्मकता के मूल्यों का पोषण-अध्यापकों के लिए संसाधन सामग्री तैयार करना

एक विनिबंध मोनोग्राफी के रूप में संसाधन सामग्री विकसित की गई, जिसमें विद्‌यार्थियों में सृजनात्मकता के मूल्यों के पोषण के लिए आदर्श विचार और क्रियाकलाप शामिल थे। आदर्श विचार और क्रियाकलाप विकसित किए गए और विद्‌यालयों में उनका परीक्षण किया गया। अध्यापकों से फीडबैक भी प्राप्त किया गया। यह विनिबंध अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं के पास भेजा जा रहा है ताकि सेवा-पूर्व और सेवाकालीन कार्यक्रमों में उसका उपयोग किया जा सके।

विद्‌यार्थियों के आध्यात्मिक अभिविन्यास के लिए अध्यापकों के वास्ते सामग्री का विकास

विद्‌यालयों के विद्‌यार्थियों के आध्यात्मिक अभिविन्यास के लिए अध्यापकों के वास्ते संसाधन सामग्री विकसित की गई है। आध्यात्मिक मुद्‌दों और अवधारणाओं के बारे में अध्यापकों और विद्‌यार्थियों के बोध को समझने के लिए प्रश्नावलियां विकसित की गईं और सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्‌यालयों और केंद्रीय विद्‌यालयों के कक्षा XI और XII के विद्‌यार्थियों और अध्यापकों से आधारभूत सूचना (डाटा) एकत्र की गई। इस सूचना से विद्‌यार्थियों के आध्यात्मिक अभिविन्यास के लिए अध्यापकों के वास्ते संसाधन सामग्री विकसित करने के लिए प्रतिपाद्‌य विषयों और उनकी अंतर्वस्तु का पता लगाने में सहायता मिली। इन सामग्रियों का उपयोग अध्यापकों/अध्यापक-प्रशिक्षकों/परामर्शदाताओं, आदि के प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों में किया जाएगा।

मूल्यों के विकास के बारे में माता-पिता के लिए पठन सामग्री

मूल्यों के बारे में माता-पिता के लिए हिंदी में पठन सामग्री तैयार की गई है, ताकि उन्हें बच्चों में वांछनीय मूल्यों का संचार करने में सहायता मिले। इस सामग्री में दस मूल्यों पर ध्यान केंद्रित किया गया है अर्थात माता-पिता का सम्मान, समय-पालन, सफाई और स्वच्छता, सच्चाई, सामाजिक जिम्मेदारी, ईमानदारी, नेतृत्व, सहयोग, साहस और अनुशासन। सामग्री के विकास के लिए शीर्षक, फार्मेट, शैली और विषय-वस्तु को विशेषज्ञों और लेखकों की बैठकों में अंतिम रूप दिया गया।

प्रशिक्षण

मूल्यपरक शिक्षा के बारे में मार्गदर्शक परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण

मार्गदर्शक-परामर्शदाताओं के सेवाकालीन प्रशिक्षण का पांच-दिवसीय एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया, ताकि मूल्यपरक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में उनकी भूमिका के बारे में उन्हें सुपरिचित कराया जा सके।

मूल्यपरक शिक्षा के बारे में अभिविन्यास शिविर/विस्तार भाषण

व्यावसायिक शिक्षकों के लिए मूल्यपरक शिक्षा के बारे में दो अभिविन्यास शिविर आयोजित किए गए, ताकि उन्हें मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता से सुपरिचित कराया जा सके और उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय, सामाजिक, वैयक्तिक और कार्य संबंधी मूल्यों से अवगत कराया जा सके। व्यावसायिक शिक्षा के जरिए मूल्यपरक शिक्षा के बारे में चार विस्तार-भाषणों का आयोजन भी किया गया।

मूल्यपरक शिक्षा के बारे में अल्पकालिक कार्यक्रम

मूल्यपरक शिक्षा के अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ये बातें शामिल हैं: (i) उत्तरी राज्यों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए सात-दिवसीय एक 'जीवन विज्ञान



योग शिविर', (ii) पश्चिम बंगाल के पी.टी.टी.आई. के मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए मूल्यपरक शिक्षा की कार्यविधि के बारे में एक अभिविन्यास कार्यक्रम, (iii) मूल्यपरक शिक्षा के बारे में दक्षिणी राज्यों के मुख्य कार्मिकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम, (iv) दक्षिणी क्षेत्र की डी.आई.ई.टी. के संकाय-सदस्यों और शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए योग प्रशिक्षण।

विस्तार

परम पावन दलाई लामा द्वारा 'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर भाषण

परम पावन दलाई लामा द्वारा 4 जनवरी, 2002 को एन.सी.ई.आर.टी. के एन.आई.ई. परिसर में 'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर एक विस्तार भाषण दिया गया, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय के सदस्यों और स्टाफ ने भाग लिया। परम पावन दलाई लामा द्वारा 'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर दिए गए भाषण को परिषद् द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रकाशित किया गया है।

मानव मूल्यों की शिक्षा के बारे में अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के बारे में क्षेत्रीय संसाधन केंद्रों की परामर्शदात्री बैठक

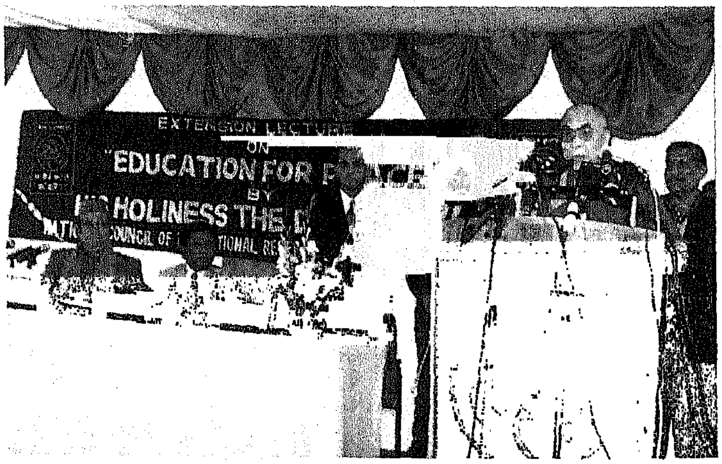
मानव मूल्यों की शिक्षा के बारे में अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए सात गैर-सरकारी संगठनों की, जिन्हें क्षेत्रीय संसाधन केंद्र घोषित किया गया है, एक परामर्शदात्री बैठक मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई थी, जिसका उद्देश्य अनुभवों का आदान-प्रदान करना, गैर-सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मौजूदा स्थिति की समीक्षा करना और मानव मूल्यों की शिक्षा के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण की कार्यनीतियां तैयार करना था।

जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन

'जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन' पत्रिका का प्रकाशन मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के तत्वावधान में किया जा रहा है और इसका उद्देश्य सभी स्तरों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तथा इसके साथ अभिभावकों और समाज के सदस्यों के लिए मानव मूल्यों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों के बारे में विचार प्रकट करने और अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच की व्यवस्था करना है। यह पत्रिका मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित मुद्दों की समालोचनात्मक जांच करने का एक बहु-विषयक मंच है। इसमें दार्शनिक प्रवचन, नवाचारों की रिपोर्टें और अनुभवाश्रित और मूल्यांकन संबंधी रिपोर्टें, सर्वेक्षण, विवेचनात्मक निबंध, मूल्यपरक शिक्षा संबंधी पुस्तकों की समीक्षाएं और मूल्यपरक शिक्षा की कार्यनीतियों, विधियों और प्रक्रियाओं के आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रकाशित किए जाते हैं। इस जर्नल में, मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित क्रियाकलापों और कार्यक्रमों की रिपोर्टें भी प्रकाशित की जाती हैं। यह एक छमाही पत्रिका है, जो हर वर्ष जनवरी और जुलाई में निकाली जाती है। वर्ष 2001-2002 में इस पत्रिका के जुलाई, 2001 और जनवरी, 2002 के अंक प्रकाशित किए गए।

मानव मूल्यों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं का नेटवर्किंग

वर्ष 2001-2002 में लगभग 300 संगठनों की एक निर्देशिका (डायरेक्टरी) प्रकाशित की गई थी, जिसमें



'शांति के लिए शिक्षा' विषय पर विस्तार भाषण

इन संगठनों के पूरे पते, उद्देश्यों और क्रियाकलापों के स्वरूप की जानकारी दी गई थी। वर्ष 2001-2002 में एक पूरक खंड संकलित किया गया है, जिसमें 100 से अधिक ऐसे अन्य संगठनों के बारे में सूचना दी गई है, मूल्यों के लिए काम करने वाले प्रख्यात गैर-सरकारी संगठनों से संबंधित सूचना एन.सी.ई.आर.टी. के भीतर और बाहर प्रचारित-प्रसारित की गई है। इसे एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट में भी प्रस्तुत किया गया है।

मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र का संदर्भ पुस्तकालय

मूल्यपरक शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र का संदर्भ पुस्तकालय मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित सामग्री के संग्रह के कोषागार के रूप में कार्य करता है। इसके संग्रह में मूल्यपरक शिक्षा के संबंध में दो हजार से अधिक पुस्तकें, पत्रिकाएं, प्रशिक्षण पैकेज, श्रव्य और दृश्य के कैसेट और सी.डी. हैं।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- भारत में मूल्यपरक शिक्षा के बारे में टीकायुक्त ग्रंथसूची
- जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन (जुलाई, 2001 का अंक)
- जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन (जनवरी, 2002 का अंक)
- 'शांति के लिए शिक्षा' (परम पावन दलाई लामा का विस्तार भाषण)
- मूल्यपरक शिक्षा के लिए कार्यरत गैर-सरकारी संगठनों की निर्देशिका, खंड II (फोटोकापी)
- श्रेष्ठता की अवधारणात्मक रूपरेखा, अध्यापकों के लिए आदर्श सामग्री सहित (फोटोकापी)
- मूल्यपरक शिक्षा के लिए सेवाकालीन अध्यापक-प्रशिक्षण के लिए क्षेत्रीय संसाधन केंद्रों की बैठक की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- कुछ चुनिंदा स्कूलों में मूल्य-आधारित व्यवहारों का अध्ययन-तीन सरकारी स्कूलों की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- मार्गदर्शक-परामर्शदाताओं के लिए मूल्यपरक शिक्षा के बारे में पठन सामग्री
- मानव मूल्यों की शिक्षा : विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण (फोटोकापी)
- विषय क्षेत्रों के जरिए विद्यार्थियों में मूल्यों के संचार के नवाचारी तरीके
- ई.वी.एस.एस. के जरिए मूल्यों की शिक्षा को सुदृढ़ बनाना
- महापुरुषों के जीवन से मूल्यों की खोज की परियोजना की रिपोर्ट (मुद्रणाधीन)
- जीवन विज्ञान योग प्रशिक्षण शिविर (फोटोकापी)
- मूल्यपरक शिक्षा के बारे में एस.सी.ई.आर.टी, डी.आई.ई.टी. और आई.एस.टी.सी. के कार्मिकों का प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- मूल्यों के संचार के लिए अध्यापकों की शिक्षाः राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- नैतिक मूल्यों का विकास - मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यः मूल्य-संचार के लिए अध्यापक शिक्षा
- मूल्यपरक शिक्षा की कार्यविधि के बारे में पश्चिम बंगाल की पी.टी.टी.आई के मुख्य व्यक्तियों का अभिविन्यास (मुद्रणाधीन)
- महापुरुषों के जीवन से मूल्यों की खोज (मुद्रणाधीन)
- मूल्यों का खजाना (फोटोकापी)

12

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक निविष्टि है। अतः एन.सी.ई.आर.टी. सेवा-पूर्व और सेवाकालीन, दोनों प्रकार के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने और आयोजित करने का कार्य स्वयं करती है।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा मे सुधार के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक निविष्टि है। विद्यालयों के लिए तैयार की गई नीतियों को अध्यापकों द्वारा लागू किया जाना होता है और इसलिए अध्यापकों को तदनुसार तैयार करना है। अतः एन.सी.ई.आर.टी. सेवा-पूर्व और सेवाकालीन, दोनों प्रकार के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने और आयोजित करने का कार्य स्वयं करती है। इस विषय क्षेत्र से संबंधित कार्यक्रम और कार्यकलाप अनुसंधान, सामग्री विकास, सेवा-पूर्व स्तर पर अध्यापक तैयार करने, अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण, 'डाइट', एस.सी.ई.आर.टी., सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. जैसे अध्यापक शिक्षा के केंद्रीय रूप से प्रायोजित संस्थानों को अकादमिक सहायता प्रदान करने और विस्तार कार्यक्रमों पर केंद्रित होते हैं।

अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रवेश नीतियां और पद्धतियां

सामाजिक परिवर्तनों और अध्यापन के क्षेत्र में नई अंतर्दृष्टियों के कारण आज शिक्षा अधिक जटिल हो गई है। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश/दाखिले को नियंत्रित करने वाली नीतियों में भी परिवर्तन हो रहा है ताकि समाज को उत्कृष्ट और गुणवत्तापूर्ण छात्र नागरिक के रूप में दिए जा सकें। मौजूदा अध्ययन का उद्देश्य है राज्यों में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रवेश नीतियों का विश्लेषण करना। प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों (शिक्षा अधिनियम, नियमों, संहिताओं आदि) के माध्यम से प्राथमिक-पूर्व, प्राथमिक, माध्यमिक आदि विभिन्न स्तरों पर सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, पब्लिक और प्राइवेट जैसे विभिन्न प्रकार के स्कूलों की दाखिला नीतियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनसे यह पता चला कि प्राथमिक-पूर्व स्तर पर अधिकांश प्राइवेट पब्लिक स्कूल बच्चों, उनके माता-पिता का साक्षात्कार लेने और यहां तक कि उनके लिए परीक्षा आयोजित करने जैसी पद्धतियां अपनाते हैं। सरकारी विद्यालयों ने अपनी शैक्षिक संहिताओं, अधिनियमों और नियमों में प्राथमिक-पूर्व, प्राथमिक और माध्यमिक, सभी तीनों स्तरों के लिए दाखिले की आयु, दाखिले की प्रक्रिया के लिए अपनी दाखिला नीतियां निर्धारित की हैं। हालांकि सरकारी विद्यालय पड़ोसी विद्यालयों के सिद्धांत पर आधारित दाखिला नीति अपना रहे हैं, फिर भी राज्यों में इसे लेकर भिन्न-भिन्न नीतियां मौजूद हैं।

शिक्षा का विधान और विकास

यह अध्ययन भारतीय गणतंत्र के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्य के रूप में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुरोध पर विभिन्न कार्यकलापों में से एक कार्यकलाप के तौर पर किया गया था। इस अध्ययन में 1813 के चार्टर अधिनियम से लेकर शिक्षा को बालक का मूल अधिकार बनाने के लिए संविधान में किए गए संशोधन तक भारत में शिक्षा पर कानून निर्माण का अत्यंत व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में शिक्षा के विकास की तुलना में विभिन्न अनिवार्य शिक्षा नियमों के निहितार्थ को भी विश्लेषित किया गया है। इस अध्ययन में केंद्र तथा राज्य सरकारों की मानव-शक्ति संबंधी आवश्यकता और वित्तीय दावों तथा शिक्षा को बालक का मूल अधिकार बनाने के संदर्भ में माता-पिता के दायित्वों और कर्तव्यों को भी विश्लेषित किया गया है।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के अध्यक्षों की परिच्छेदिका/प्रोफाइल

अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के प्रधानों/अध्यक्षों, खासकर प्रबंधन, द्वारा निभाई जाने वाली सुस्पष्ट भूमिकाओं को ध्यान में रखते हुए और स्टाफ, समुदाय के साथ उनके संबंध और गुणात्मक कार्यक्रम आयोजित करने और अनुसंधान करवाने की उनकी भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. ने इन संस्थाओं के अध्यक्षों के कार्यों (भूमिकाओं) की रूपरेखा के

अध्ययन का कार्य आरंभ किया जिसका उद्देश्य था पेशेवर योग्यता, कार्य परिच्छेदिका, कार्य-प्रतिबद्धता, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, प्रबंधन शैली, पेश आई कठिनाइयों और उनके भावी दृष्टिकोण को विशेष रूप से रेखांकित करना। इस प्रयोजन के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें 48 प्रश्न थे। यह प्रश्नावली देश में 800 प्रारंभिक शिक्षा संस्थाओं को भेजी गई। आंकड़ों के संग्रहण की प्रक्रिया चल रही है।

दो-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति छात्रों का रुझान

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम में किए गए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप एन.सी.ई.आर.टी. ने अपने चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) और गुजरात विद्यापीठ में वर्ष 1999 में दो-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम शुरू किया। चूंकि यह एक प्रमुख संरचनात्मक परिवर्तन था अतः यह प्रस्ताव किया गया कि दो-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के बारे में प्रथम बैच के छात्रों से फीडबैक प्राप्त किया जाए। इस संबंध में समग्र प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अध्ययन की रूपरेखा बनाई गई। इस हेतु एक प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें सिद्धांत-पक्ष, व्यावहारिक अध्यापन, सह-पाठ्यचर्यात्मक कार्यकलाप और मूल्यांकन आदि समाहित किए गए और चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों तथा गुजरात विद्यापीठ से आंकड़े इकट्ठे किए गए। आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

भारतीय शिक्षा में निजी उद्यमों की भूमिका और योगदान

भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की मौजूदा प्रवृत्ति में शिक्षा क्षेत्र को भी शामिल किया जा सकता है। बच्चों/युवाओं की निरंतर बढ़ती जनसंख्या के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना, अकेले सरकार के लिए, एक कठिन कार्य है। अतः बच्चों और युवाओं की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी आने वाले वर्षों में एक आवश्यकता बन सकती है। यह भी सच है कि काफी लोग अपने बच्चों को प्राइवेट संस्थाओं में भेजने की क्षमता भी रखते हैं। शिक्षा में निजी क्षेत्र की भागीदारी के संबंध में किसी बहस या नीति के लिए, भारतीय शिक्षा में निजी उद्यमों की मौजूदा स्थिति तथा विगत प्रवृत्तियों पर अनुसंधान साक्ष्य की आवश्यकता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध माध्यमिक आंकड़ों के आधार पर 'निजी उद्यमों की भूमिका और योगदान' पर एक अनुसंधान अध्ययन आयोजित किया गया। इसका उपयोग भारतीय शिक्षा के विश्वकोश (एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन एजुकेशन) में एक अध्याय जोड़ने के लिए किया गया है।

दक्षिणी क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा पेश किए गए, छात्र अध्यापकों द्वारा चुने गए और प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में आवश्यक विशेषज्ञता विषयों का अध्ययन

यह अध्ययन दक्षिणी क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा पेश किए गए विशेषज्ञता विषय की तुलना में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर विभिन्न विषयों के अध्यापकों की नियुक्ति के लिए आवश्यक शैक्षिक तथा व्यावसायिक योग्यताओं का पता लगाने के लिए किया गया। अध्ययन की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

उद्देश्यों, अध्यापक सामर्थ्य और प्रतिबद्धता क्षेत्रों के संदर्भ में पाठ्यक्रम की अंतर्वस्तु और कार्य व संपादन नीतियों की उपयुक्तता के संबंध में दो-वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन

भावी अध्यापकों में योग्यता को विकसित करने और प्रतिबद्धता पैदा करने तथा उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम अंतर्वस्तु और कार्यसंपादन नीतियों की उपयुक्तता का पता लगाने के लिए दो-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम पर यह अध्ययन किया गया।

विकास

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन एजुकेशन

एन.सी.ई.आर.टी. ने भारतीय शिक्षा विश्वकोश (एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन एजुकेशन) के

रूप में एक परियोजना आरंभ की है जो भारतीय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में एक साथ संपूर्ण ज्ञान तथा जानकारी उपलब्ध कराने वाला एकमात्र स्रोत होगा। एक सर्वांगपूर्ण कृति के रूप में इसमें भारत में घटित शैक्षिक इतिहास की प्रमुख घटनाएं शामिल होंगी। देश के विभिन्न भागों में किए गए नवाचारी उपाय तथा प्रयोग शामिल होंगे। इसमें प्रमुख संस्थाओं तथा शिक्षाविदों के योगदान, भारतीय शिक्षा के विकास के विभिन्न चरणों, शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर भारतीय अध्येताओं के अनुसंधान संबंधी योगदान आदि का समावेश होगा। इस विश्वकोश की विषय-वस्तु पांच श्रेणियों में विभाजित होगीः (i) शैक्षिक विषय (ii) शैक्षिक संस्थाएं/संगठन आदि (iii) शैक्षिक परियोजनाएं तथा योजनाएं (iv) विभिन्न राज्यों में शिक्षा प्रणाली तथा (v) शिक्षा संबंधी विभिन्न भारतीय अवधारणाएं। इस विश्वकोश में प्रविष्टि हेतु लेख तैयार करने वाले लेखकों के लिए संकल्पनात्मक रूपरेखा तथा सुझाव तैयार कर लिए गए हैं और इनका प्रकाशन भी हो चुका है।

विश्वकोश के सलाहकार सदस्यों ने लेखकों के एक पैनल के साथ मिल कर 417 प्रविष्टियों का अभिनिर्धारण किया है ताकि विश्वकोश के लिए समुचित लेख तैयार किए जा सकें। साथ ही विश्वकोश संबंधी विभिन्न चरणों का कार्य प्रगति पर है। लगभग 200 लेख प्राप्त हो चुके हैं और संपादक मंडल ने इन्हें संपादित भी कर दिया है।

उच्च प्राथमिक स्तर वाले विज्ञान अध्यापकों के लिए स्वतः शिक्षण सामग्री

कक्षा प्रक्रियाओं तथा विज्ञान अध्यापन के मौजूदा तरीकों पर हुए अनुसंधानों से यह संकेत मिला है कि हमारे विद्यालयों में विज्ञान शिक्षण अभी भी उपदेशात्मक है और आज भी तथ्यों को रटने पर बल दिया जाता है और इनका मूल्यांकन उपलब्धि-परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। अभी हाल ही तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयुक्त पहलू विज्ञान शिक्षण के भाग नहीं थे। अतः यह अनुभव किया गया कि विषयवस्तु और अध्यापन के संबंध में अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए स्वतः शिक्षण सामग्री (एस.एल.एम) तैयार करने की आवश्यकता है ताकि विद्यालयों में अध्यापन प्रासंगिक और उच्चतर प्राथमिक स्तर पर अर्थपूर्ण बन सके।

स्वतः शिक्षण सामग्री तैयार करने में अध्यापकों को जो कठिनाइयां पेश आईं उनका विश्लेषण किया गया और समस्यामूलक स्थलों और प्रमुख संकल्पनाओं की पहचान की गई। एस.एल.एम. पैकेज में छात्रों में संकल्पनात्मक समझ पैदा करने, प्रत्येक अभिचिह्नित संकल्पना को तैयार करने संबंधी कार्यनिष्पादन नीतियों पर बल देने का सुझाव दिया गया। छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन कार्यनिष्पादन नीति के साथ समाकलित है। एस.एल.एम. स्वतः व्याख्यात्मक, अभिप्रेरणात्मक और अंतःक्रियाशील है। लघु अंतराल पर अध्यापकों के लिए स्वमूल्यांकन की भी व्यवस्था है ताकि अध्यापकों की रुचि को बनाए रखा जा सके और वे विचारशील चिंतन कर सकें।

उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए सामाजिक विज्ञानों पर स्वतः शिक्षण सामग्री

इस स्कीम को 1993-94 में शुरू किया गया और नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान इसे विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों तक विस्तारित कर दिया गया है। हालांकि राज्यों को उनके अध्यापकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं के आधार पर प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने की छूट दी गई है तथापि नोडल कार्यान्वयक एजेंसी के रूप में एन.सी.ई.आर टी. से नमूना सामग्री उपलब्ध कराने की अपेक्षा की जाती है। यह पैकेज सामाजिक विज्ञानों के उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए तैयार किया गया है। इस पैकेज में 11 स्वतः शिक्षण मॉड्यूल शामिल हैं जो सामाजिक विज्ञानों के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंधित हैं। ये मॉड्यूल सामाजिक विज्ञानों के अध्यापन में शिक्षण के उभरते परिवर्तन बिंदुओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।

उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए जागरूकता पैकेज

चूंकि एस.ओ.पी.टी. स्कीम का विस्तार उच्चतर माध्यमिक स्तर तक कर दिया गया है अतः एन. सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों

पर पढ़ा रहे अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए नमूना प्रशिक्षण पैकेज संशोधित/तैयार करने की प्रक्रिया में लगी हुई है। प्राथमिक तथा उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक 'जागरूकता पैकेज' तैयार किया गया है जिसका मूल प्रयोजन उन्हें सामान्य तौर पर विद्यालयी शिक्षा से संबंधित प्रमुख पाठ्यचर्या संबंधी सरोकारों, मुद्दों और नीतियों से अवगत कराना और विशेष रूप से उन्हें उच्चतर प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में इनसे अवगत कराना है। पैकेज में 12 स्वतः शिक्षण मॉड्यूल निहित हैं।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए जागरूकता और कार्य निष्पादन पैकेज

उभरते सरोकारों को ध्यान में रखते हुए और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को अधिक स्थिति-आधारित बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने दो पैकेज तैयार किए हैं (i) प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए जागरूकता पैकेज, (ii) एस.ओ.पी.टी. स्कीम के अंतर्गत विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञानों में प्राथमिक अध्यापकों के लिए कार्यनिष्पादन पैकेज।

शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था के लिए संस्कृति-विशिष्ट शिक्षाशास्त्र पर पुस्तिका

भारत बहुसंस्कृति, बहुभाषा और बहुधर्म वाला समाज है। भारतीय समाज की बहुलतावादी प्रकृति को अध्यापन या शिक्षण की पद्धतियों एवं प्रवृत्तियों में व्यक्त करने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा प्राप्ति को आनंददायक बनाया जा सके। इसे ध्यान में रखते हुए शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था के लिए संस्कृति-विशिष्ट शिक्षाशास्त्र पर एक पुस्तिका तैयार की जा रही है।

क्षमता, प्रतिबद्धता और कार्यनिष्पादन आधारित अध्यापक शिक्षा पर प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के लिए स्व-शिक्षणात्मक मॉड्यूल

अध्यापकों के लिए यह आवश्यक होता है कि वे स्वयं को निरंतर क्षमतासंपन्न करते चलें और अपने कार्य के प्रति निरंतर अधिक प्रतिबद्ध और समर्पित होते चलें और साथ ही अपने व्यावसायिक कार्यनिष्पादन में वृद्धि भी करें। अध्यापकों की कार्यकुशलता न केवल क्षमताओं और दक्षताओं पर बल्कि प्रतिबद्धता और कार्यनिष्पादन पर भी निर्भर करती है। ये तीनों घटक अध्यापक शिक्षा में महत्वपूर्ण हैं। शिक्षणात्मक मॉड्यूलों, तीनों घटकों में से प्रत्येक में पांच, के लेखन का कार्य चल रहा है।

प्रशिक्षण पैकेज तैयार करना

विज्ञान किटों के प्रयोग, उच्चतर प्राथमिक स्तर पर कम लागत वाली सामग्री के प्रयोग, प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण सहायता उपकरण तैयार करने, प्राथमिक स्तर पर उर्दू शिक्षण नीतियों में, जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों अर्थात् सेवाश्रमों के अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्या कार्य संपादन पर, माध्यमिक स्तर पर अध्यापन की तकनीकों और नीतियों पर, उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं के लिए अंग्रेजी भाषा पर तथा महत्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए माध्यमिक स्तर पर शारीरिक विज्ञान में अंतर्वस्तु-सह-प्रणाली विज्ञान पर प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए गए थे।

अध्यापकों के लिए पुस्तिकाएं तैयार करना

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर तमिल पढ़ाने के लिए प्रमुख महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करने पर तथा अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर अध्यापकों के लिए पुस्तिकाएं (हैंडबुक) तैयार की गई हैं।

प्रशिक्षण

(क) सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. का एक प्रमुख सरोकार है नवाचारी सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों, अर्थात् विज्ञान शिक्षा में चार-वर्षीय समेकित बी.एससी.बी.एड., बी.एससी.एड. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम, विज्ञान और मानविकी में दो-वर्षीय बी.एड.माध्यमिक पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में एक-वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में मार्गदर्शन और

परामर्श में एक-वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों को तैयार करना और कार्यान्वयन करना। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में पीएच.डी. कार्यक्रम के लिए भी सुविधाएं मौजूद हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में विभिन्न सेवा-पूर्व पाठ्यक्रमों में कुल 1964 छात्र पंजीकृत थे। चार-वर्षीय समेकित बी.एससी.बी.एड./बी. एससी. एड. पाठ्यक्रम का मुख्य बल गुणवत्ता पर अर्थात् विषय के अच्छे ज्ञाता और विद्वान अध्यापक तैयार करना है जो प्रक्रिया, शिक्षाशास्त्र तथा पाठ्यक्रम से संबंधित कार्यकलापों से भी भलीभांति परिचित हों। अध्यापक शिक्षा में एक-वर्षीय एम.एड. प्रारंभिक शिक्षा पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा और अनुसंधान आधारित निविष्टियों (इनपुटों) से संबंधित मुद्दों और सरोकारों पर पर्याप्त बल देता है। पाठ्यक्रम में शिष्य-अध्यापक प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न प्राथमिकता क्षेत्रों में अनेक अनुसंधान अध्ययन करते हैं। विज्ञान और मानविकी में दो-वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई. के मार्गदर्शी सिद्धांतों पर आधारित एक प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम-वार पंजीयन और परीक्षाफल आगे दिए गए हैं।

निदर्शन विद्यालय

निदर्शन विद्यालय (डिमोन्स्ट्रेशन स्कूल) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के अभिन्न अंग होते हैं तथा विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यासों के परीक्षण हेतु एक प्रयोगशाला की तरह कार्य करते हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में चलाए जा रहे विभिन्न सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में दाखिल हुए प्रशिक्षणार्थियों को भी इन विद्यालयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। बहु-उद्देशीय निदर्शन विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षक पिछले पांच वर्षों के दौरान क्रियानिष्ठ अनुसंधान जैसे तरीकों से सक्षमता-आधारित शिक्षण में अभ्यास करते रहे हैं। वे बच्चों की शैक्षिक जरूरतों तथा उपचारात्मक कार्यनीति संबंधी शिक्षण-कक्ष (क्लासरूम) आंकड़ों पर आधारित शिक्षण की योजना बनाते हैं। ये विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध होते हैं तथा इनमें कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। ये विद्यालय मार्गदर्शन एवं परामर्श सुविधाएं भी उपलब्ध कराते हैं और इनकी विशेषता है कि ये स्कूल 10+2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी चलाते हैं।

वर्ष 2001-2002 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में पाठ्यक्रम वार पंजीयन

क्र.सं.	*पाठ्यक्रम*	*अजमेर*	*भोपाल*	*भुवनेश्वर*	*मैसूर*
1.	**बी.एससी.बी.एड.**				
	प्रथम वर्ष	82	77	91	80
	द्वितीय वर्ष	72	68	82	58
	तृतीय वर्ष	77	80	76	70
	चतुर्थ वर्ष	73	80	80	63
2.	**बी.एड. (माध्यमिक)**				
	विज्ञान				
	प्रथम वर्ष	39	41	37	40
	द्वितीय वर्ष	37	34	34	38
	मानविकी				
	प्रथम वर्ष	40	44	39	40
	द्वितीय वर्ष	35	41	32	37
3.	**एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)**	20	14	25	34
4.	**मार्गदर्शन एवं परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम**	20	09	16	09
	कुल	**495**	**488**	**512**	**469**



वर्ष 2001-2002 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के परीक्षा-परिणाम (उत्तीर्ण प्रतिशत)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1.	**बी.एससी.बी.एड./ बी.एससी.एड.**				
	प्रथम वर्ष	97	94	95	82
	दुवितीय वर्ष	97	98	100	84
	तृतीय वर्ष	100	100	98	75
	चतुर्थ वर्ष	98	100	99	90
2.	**बी.एड. (माध्यमिक) विज्ञान**				
	प्रथम वर्ष	100	100	97	97
	दुवितीय वर्ष	100	100	100	97
	मानविकी				
	प्रथम वर्ष	100	100	100	39
	दूवितीय वर्ष	98	100	97	75
3.	**एम.एड. (प्रारंभिक)**	100	100	100	100
4.	**मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा**		100	93	100

वर्ष 2001-2002 के दौरान निदर्शन विद्यालयों में कक्षावार पंजीयन

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
I	27	65	70	69
II	332	70	71	70
III	28	68	71	68
IV	35	70	77	68
V	34	72	76	71
VI	60	82	119	70
VII	59	71	111	70
VIII	66	67	111	70
IX	64	65	117	70
X	46	56	107	64
XI	85	63	65	34
XII	60	79	69	44
योग	**597**	**828**	**1064**	**768**

वर्ष 2001-2002 के दौरान निदर्शन विद्यालयों के परीक्षा परिणाम (उत्तीर्ण प्रतिशत)

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
X	96	89	98	87
XII (विज्ञान)	87	100	90	94
XII (कला)	92	-	100	-
XII (वाणिज्य)	93	100	100	-
XII (व्यावसायिक)	100	100	50	-
XII (मानविकी)	-	-	-	100

स्कूल-आधारित मूल्यांकन सभी चारों डी.एम. स्कूलों में प्राथमिक भाग में आरंभ किया गया है। इस मूल्यांकन स्कीम की मुख्य विशेषताओं में छात्रों के शैक्षिक, गैर-शैक्षिक असंज्ञानात्मक, व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं का निरंतर मूल्यांकन और अंक देने की स्कीम के स्थान पर ग्रेडिंग का प्रयोग शामिल है।

(ख) सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. ने 24 से 31 दिसंबर 2001 तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में 'डाइट' संस्थानों के प्रधानाचार्यों के लिए एक क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। गुजरात, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के 31 डाइट प्रधानाचार्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। डाइट, क्रियानिष्ठ, अनुसंधान, स्वशिक्षण मॉड्यूलों का विकास, सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी, कार्य अनुभव, मूल्यांकन, ग्रेडिंग प्रणाली, डेलोर्स कमीशन आदि की भूमिका और कार्यों पर अन्योन्य-सक्रित सत्रों का आयोजन किया गया।

डाइट तथा एस.सी.ई.आर.टी. स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

एस.सी.ई.आर.टी./डाइट के संकाय सदस्यों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रमों के योजना-निर्माण और आयोजन में, कार्य अनुसंधान, संचार कौशलों, मूल्य शिक्षा, अनुवर्ती अध्ययन, अध्यापन में इंटर्नशिप, प्रश्नपत्र बनाने की तकनीकों, कार्यक्रम मूल्यांकन, प्रारंभिक स्तर पर उभरते संसाधन परिप्रेक्ष्यों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों की शिक्षा, कार्यकलाप-आधारित मूल्यांकन नीतियों और योग में प्रशिक्षण कार्यक्रम-आयोजित किए गए। सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और आंध्र प्रदेश के नए भर्ती हुए डाइट प्राध्यापकों के लिए प्रवेश स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन भी किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों के डाइट प्राध्यापक वर्ग के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग में सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का बल डाइट की विभिन्न शाखाओं के काम-काज पर था।

अध्यापक-प्रशिक्षकों/महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान के व्यावहारिक कौशलों में, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान के अध्यापन की विषय-वस्तु और पद्धतियों में उच्चतर प्राथमिक स्तर पर विज्ञान के अध्यापन में, प्राथमिक स्तर पर उर्दू के अध्यापन की नीतियों में और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर रसायन शास्त्र के अध्यापन में कंप्यूटर प्रयोग में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए मूल्य शिक्षा के प्रणाली विज्ञान में, माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों और अध्यापकों के लिए मातृभाषा (उड़िया) में अध्यापन के लिए, प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय अध्ययन के लिए अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए, अंग्रेजी के अध्यापन पर प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए और क्रियानिष्ठ अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए तथा सक्षमता-आधारित अध्यापन, शिक्षा प्राप्ति और मूल्यांकन में प्रारंभिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विद्यालय के अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.)

विद्यालय के अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम एक केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित स्कीम है जो 1993-94 के दौरान प्रारंभ की गई थी और जिसका उद्देश्य था प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण/सार्वभौमीकरण की लक्ष्य प्राप्ति की नीति के एक भाग के रूप में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना। इस स्कीम का ध्यान प्रमुख रूप से अध्यापकों के बीच बाल-केंद्रित शिक्षा प्राप्ति उपागम अपनाने के लिए क्षमता विकसित करने पर केंद्रित रहा है। अभिविन्यास कार्यक्रम का एक अन्य उद्देश्य है एम.एल.एल. पर राष्ट्रीय रिपोर्ट में निरूपित की गई क्षमताओं का विकास करना। एन.सी.ई.आर.टी. को राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों

में इसके कार्यान्वयन को सुगम बनाने का दायित्व सौंपा गया है। इस संबंध में एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रशिक्षण डिजाइन, प्रशिक्षण पैकेज और श्रव्य-दृश्य सामग्री को तैयार किया है। एक त्रिस्तरीय प्रशिक्षण मॉडल को निरूपित किया गया जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. ने राज्य शिक्षा विभागों के महत्वपूर्ण व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जिन्होंने प्रत्युत्तर में जिला स्तर पर संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया। संसाधन व्यक्तियों को राज्य में प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने का दायित्व सौंपा गया।

भारत सरकार ने इस स्कीम को संशोधित किया है और इसका क्षेत्र नवंबर 2000 से विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों तक विस्तारित कर दिया गया है। एन.सी.ई.आर.टी. को एस.ओ.पी.टी. के संशोधित मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार राज्य नोडल एजेंसियों (एस.एन.ए) के माध्यम से राज्यों में इस स्कीम को लागू करने का दायित्व सौंपा गया है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान 3.41 लाख अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। 1993-1994 में इस स्कीम के लागू होने से लेकर अब तक 20.94 लाख विद्यालयी अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

विस्तार

अध्यापक शिक्षा तथा विद्यालयी शिक्षा में नवाचार-अखिल भारतीय प्रतियोगिता

अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा विद्यालयी अध्यापकों में प्रयोग, अनुसंधान तथा नवाचार की भावना बढ़ाने के लिए परिषद् हर वर्ष दो अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। ये प्रतियोगताएं हैं: अध्यापक शिक्षा में नवाचार और विद्यालयी शिक्षा में नवाचार। इनका लक्ष्य अध्यापक-प्रशिक्षकों तथा विद्यालयी अध्यापकों में प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देना है। इस स्कीम के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. चुनिंदा अध्यापकों को अपने नवाचारों पर चर्चा करने और अपने नवाचारों की उपयोगिता के क्षेत्रगत परीक्षण का अवसर प्रदान करती है। वर्ष 2001-2002 के दौरान 68 स्कूली अध्यापकों और 21 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने एन.आई.ई. परिसर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने पर्चे प्रस्तुत किए। इनमें से कुल 56 अध्यापकों और 18 अध्यापक-प्रशिक्षकों को उनके नवाचारों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने मेरिट सर्टीफिकेट और नकद पुरस्कार प्रदान किए।

एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशकों का सम्मेलन

एन.सी.ई.आर.टी. प्रति वर्ष एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशकों का सम्मेलन आयोजित करती है ताकि विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को आपस में बांटा जा सके, उन पर चर्चा की जा सके। इस वर्ष विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2000 को लागू करने पर प्रमुख रूप से बल दिया गया। इस सम्मेलन में 19 राज्यों के निदेशकों ने भाग लिया। नमूना पाठ्यपुस्तकों, तथा संसाधन सामग्री, एन.सी.एफ.एस.ई. के तत्वावधान में सेवापूर्व तथा सेवाकालीन कार्यक्रम तैयार करने, ग्रेडिंग प्रणाली आरंभ करने, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने, अध्यापक शिक्षा की पुनः संरचना और पुनर्गठन करने, एस.ओ.पी.टी. लागू करने, अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा तथा नवाचारी शाखाओं जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई और सिफारिशें की गईं।

दो-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम 2001-2002 के लिए अध्यापन में इंटर्नशिप के संबंध में सहयोगी विद्यालयों के अध्यापकों तथा मुख्याध्यापकों का सम्मेलन

सहयोगी विद्यालयों के पदाधिकारियों के लिए अध्यापन कार्यक्रम में इंटर्नशिप के अभिनव व्यवहार अनिवार्य हैं। यह कार्यक्रम सहयोगी अध्यापकों, मुख्याध्यापकों तथा पर्यवेक्षकों को उनकी भूमिकाओं, दायित्वों, कार्यों, अपेक्षाओं और इंटर्नशिप-इन-टीचिंग प्रोग्राम के दौरान प्रयुक्त होने वाले पाठ योजना आरूपों के संबंध में अभिमुख करने के उद्देश्य के साथ आयोजित किया गया।

बी.एड. के छात्रों के बहु-सांस्कृतिक नियोजन की रूपरेखा तैयार करने के लिए सहयोगी संस्थाओं का सम्मेलन

बहु-सांस्कृतिक नियोजन कार्यक्रम 2-वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या की अभिनव विशेषता है। इस कार्यक्रम के मूल दर्शन की जानकारी प्राप्त करने के लिए सहयोगी संस्थानों के 12 अध्यापकों को दो-दिवसीय एक सम्मेलन में भाग लेने और बहु-सांस्कृतिक नियोजन की रूपरेखा तैयार करने के लिए आमंत्रित किया गया।

4-वर्षीय समेकित बी.एससी. बी.एड. कार्यक्रम से संबंधित अध्यापन में इंटर्नशिप के संदर्भ में सहयोगी विद्यालयों के अध्यापकों और मुख्याध्यापकों का सम्मेलन

यह कार्यक्रम विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली एक माह के अध्यापन में इंटर्नशिप के दौरान सहयोगी विद्यालयों के मुख्याध्यापकों/प्रधानाचार्यों को उनकी भूमिकाओ, कार्यों, दायित्वों और कार्यकलापों के संबंध में अभिमुखित करने के लिए आयोजित किया गया। पाठ-पूर्व चर्चा, छात्र अध्यापकों द्वारा निदर्शन पाठ और पाठोत्तर चर्चा में सहयोगी विद्यालय संस्थान के 12, सहयोगी विद्यालयों के 19 तथा संस्थान के 12 प्राध्यापकों ने भाग लिया।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- शिक्षा का विधान और विकास (फोटोकापी)
- उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए सामाजिक विज्ञानों में प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- उच्चतर प्राथमिक अध्यापकों के लिए जागरूकता पैकेज (फोटोकापी)
- पूर्वोत्तर राज्यों के डाइट-प्राध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम-एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- डाइट के प्रधानाचार्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम—एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- एन.सी.एफ.एस.ई.-2000 के कार्यान्वयन पर एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशकों का सम्मेलन—एक रिपोर्ट (फोटोकापी)
- उच्चतर प्राथमिक स्तर के विज्ञान के अध्यापकों के लिए स्वतः शिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- माध्यमिक तथा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रभावी प्रबंधन के लिए मुख्याध्यापकों और प्रधानाचार्यों को प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- संचार कौशलों में हिमाचल प्रदेश और राजस्थान के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई./डाइट कर्मियों को प्रशिक्षण (फोटोकापी)
- आर.आई.ई., अजमेर द्वारा आयोजित चुनिंदा सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अनुवर्ती अध्ययन (फोटोकापी)
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित करने का प्रणाली-विज्ञान (फोटोकापी)
- सेवाकालीन कार्यक्रमों के मूल्यांकन के साधन (फोटोकापी)
- पश्चिमी क्षेत्र के डाइट के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए आधारभूत स्तर के अनुसंधान अध्ययन पर अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- आई.ए.एस.ई. तथा सी.टी.ई. के लिए प्रबंधन, पर्यवेक्षण और परिवीक्षण/प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- महत्त्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मूल्यांकन पर पुस्तिका (फोटोकापी)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए परिचर्चा दस्तावेज में निरूपित किए गए कार्य को लागू करने के लिए आवश्यक विभिन्न विषय-क्षेत्रों में माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों की कार्यात्मक क्षमताओं का वर्गीकरण
- उद्देश्यों, अध्यापक सामर्थ्य और प्रतिबद्धता क्षेत्रों के संदर्भ में पाठ्यक्रम की अंतर्वस्तु और कार्य संपादन नीतियों की उपयुक्तता के संबंध में 2-वर्षीय बी.एड.कार्यक्रम का गहन अध्ययन

- प्रारंभिक स्तर पर उभरते हुए संसाधन परिप्रेक्ष्यों में डाइट के संकाय-सदस्यों का अभिमुखीकरण
- सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश के नए भर्ती हुए डाइट प्रवक्ताओं के लिए प्रवेश स्तरीय प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- 2-वर्षीय बी.एड.पाठ्यचर्या में यथानिरूपित समुदाय के साथ कार्य करने पर बी.एड. भाग-II के छात्र-अध्यापकों को प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- अंडमान निकोबार द्वीपसमूह के लिए कार्रवाई अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पर अध्यापक-प्रशिक्षकों/महत्वपूर्ण संसाधन अध्यापकों को प्रशिक्षण (मुद्रणाधीन)
- 2001-2002 के 2-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के लिए अध्ययन में इंटर्नशिप के संबंध में सहयोगी विद्यालयों के अध्यापकों व मुख्याध्यापकों का सम्मेलन (मुद्रणाधीन)
- बी.एड. के छात्रों के बहु-सांस्कृतिक नियोजन की रूपरेखा तैयार करने के लिए सहयोगी संस्थानों का सम्मेलन
- 4-वर्षीय समेकित बी.एससी. बी.एड. कार्यक्रम से संबंधित अध्यापन में इंटर्नशिप के संबंध में सहयोगी विद्यालयों के अध्यापकों और मुख्याध्यापकों का सम्मेलन
- इंटर्नशिप इन टीचिंग-सहयोगी अध्यापकों और छात्र अध्यापकों के लिए स्रोत पुस्तक (फोटोकापी)
- माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के लिए जागरूकता प्रशिक्षण पैकेज (फोटोकापी)
- प्रभावकारी विद्यालयी शिक्षा समिति तथा आंध्र प्रदेश के डी.पी.ई.पी. जिलों में पंजीयन, अवधारणा और उपलब्धि पर इनके प्रभाव का अध्ययन (फोटोकापी)
- चार दक्षिणी भाषाओं में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे के अनूदित पाठ (फोटोकापी)
- सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आयोजना, तैयारी और मूल्यांकन (फोटोकापी)

13

[illegible] शिक्षा

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान पाठ्यचर्या तथा शिक्षण सामग्री का विकास, प्रशिक्षण, सूचना का प्रचार-प्रसार, विस्तार, अनुसंधान, परिवीक्षण तथा मूल्यांकन संबंधी कार्य करता है तथा मार्गदर्शन एवं समन्वय भी करता है और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में परामर्श सेवाएँ प्रदान करता है।

वृद्धजनों के कल्याण/देखभाल/जनचिकित्सा/आहार-विज्ञान, ग्रामीण विपणन, भवन अनुरक्षण, फीज़ियोथेरेपी टैक्नीशियन पाठ्यक्रम, पौधा संरक्षण, दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए गृह विज्ञान पर आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम, पोषण तथा पर्यावरणिक शिक्षा आदि पर पाठ्यक्रम मॉड्यूल रूप में तैयार किये गए।

व्यावसायिक शिक्षा

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक संघटक यूनिट है। यह व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में एक शीर्ष अनुसंधान एवं विकास संस्थान है। यह यूनेस्को द्वारा भारत में संचालित तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा संबंधी अंतर्राष्ट्रीय परियोजना 'यूनेवॉक' का भी एक केंद्र है।

यह विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को अनुसंधान एवं विकास संबंधी तकनीकी सहायता प्रदान करता है तथा संयुक्त व्यावसायिक शिक्षा परिषद् तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तकनीकी स्कंध के रूप में केंद्र सरकार, राज्य सरकारों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को व्यावसायिक शिक्षा तथा कार्यानुभव कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के संबंध में सलाह तथा सहायता देता है। यह संस्थान औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा और कार्यानुभव कार्यक्रमों के लिए एक सर्वोपरि संसाधन के रूप में कार्य करता है। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. पाठ्यचर्या तथा शिक्षण सामग्री का विकास, प्रशिक्षण, सूचना का प्रचार-प्रसार, विस्तार, अनुसंधान, परिवीक्षण तथा मूल्यांकन संबंधी कार्य करता है तथा मार्गदर्शन एवं समन्वय भी करता है और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में परामर्श सेवाएँ प्रदान करता है। यह संस्थान व्यावसायिक शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय प्रणाली में एकरूपता सुनिश्चित करने और साथ ही शिक्षण व्यवसाय में गुणवत्ता तथा स्तर को बनाए रखने और देश में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम-औपचारिक तथा अनौपचारिक, दोनों में विभिन्न स्तरों पर विशिष्टता के प्रोन्नयन को सुनिश्चित करने हेतु प्रयास करता है। यह संस्थान व्यावसायिक शिक्षा तथा मानव संसाधन विकास के अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं की भी देखरेख करता है।

अनुसंधान

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) द्वारा प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाएँ

एरिक द्वारा प्रायोजित दो अनुसंधान परियोजनाएँ अर्थात् (i) कुछ राज्यों में सामान्य आधारिक पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन और (ii) भारत के व्यापार तथा वाणिज्य-आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के उत्तीर्ण छात्रों के बारे में स्थिति अध्ययन योजना, पूरी हो गई हैं तथा रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया गया है। एरिक की छः अनुसंधान परियोजनाएँ प्रगति पर हैं जिनमें निम्नलिखित परियोजनाएं शामिल हैं :

i) माध्यमिक व्यावसायिक स्कूलों में स्कूल-उद्योग सहलग्नता की स्थापना-क्रियानिष्ठ अनुसंधान
ii) कृषि में व्यावसायिक अध्ययन-अध्यापन की स्थिति तथा प्रभावकारिता का अध्ययन
iii) महाराष्ट्र की कुछ व्यावसायिक संस्थाओं में स्कूल-उद्योग सहलग्नता पर एक केस अध्ययन
iv) पंजाब के व्यावसायिक छात्रों के कार्यनिष्पादन पर अंतःकार्य प्रशिक्षण का प्रभाव
v) महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए गृहविज्ञान संबंधी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का महत्व, तथा
vi) 10+2 स्तर के छात्रों में व्यावसायिक कौशलों के विकास में शिक्षकों की भूमिका।

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन

हरियाणा तथा असम राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन का मूल्यांकन कार्यक्रम की खूबियों तथा खामियों का पता लगाने तथा गुणात्मक सुधार की आवश्यकता के लिए किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष इन राज्यों में कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन में सहायता करेंगे। संकाय की दो टीमों ने इन राज्यों का दौरा किया तथा विभिन्न जिलों के विभिन्न कर्मियों के साथ विचार-विमर्श किया। कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आंकड़ों को विभिन्न प्रश्नावलियों के जरिए संगृहीत किया गया जो पदधारियों (स्टेकहोल्डरों) के पास भेजी गई थीं। असम के अध्ययन की रिपोर्ट पहले ही तैयार कर ली गई है।

विकास

व्यावसायिक पाठ्यचर्याओं का विकास तथा संशोधन

व्यावसायिक शिक्षा में स्नातक स्तर की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप दे दिया गया है तथा वृद्धजनों के

कल्याण/देखभाल/जनचिकित्सा/आहार-विज्ञान से संबंधित पाठ्यचर्या तैयार की जा चुकी है। मॉड्यूल रूप में तैयार की गई पाठ्यचर्या में शामिल हैं: ग्रामीण विपणन, भवन अनुरक्षण, फीज़ियोथेरेपी टैक्नीशियन पाठ्यक्रम, पौधा संरक्षण, दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए गृह विज्ञान पर आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम, कृषि-व्यवसाय, शिशुगृह तथा शाला पूर्व प्रबंधन, स्वास्थ्य के क्षेत्र में शैक्षिक खेलों से संबंधित मॉड्यूल, कार्य-शिक्षा कार्यक्रम के लिए पोषण तथा पर्यावरणिक शिक्षा।

राष्ट्रीय व्यावसायिक अर्हता (एन.बी.क्यू.) प्रणाली का विकास

राष्ट्रीय व्यावसायिक अर्हता प्रणाली के अंतर्गत कुक्कुट उत्पादन तथा यात्रा एवं पर्यटन में बड़ी संख्या में अल्पकालीन मॉड्यूलर पाठ्यक्रम तैयार किए गए।

व्यावसायिक तथा व्यवसायपूर्ण पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षण सामग्री का विकास

व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित शिक्षण सामग्री की 31 पांडुलिपियाँ जो अधिकतर कक्षा XI तथा XII की पाठ्यपुस्तकों/प्रैक्टिकल पुस्तकों की हैं, प्रकाशित की जा रही हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा से संबंधित वर्कबुक की पांडुलिपियाँ तैयार की गईं और सतत् विकास से संबंधित, मॉड्यूल भी तैयार किए गए। संरक्षित खेती, ऊन तथा उसके उत्पाद, आधारभूत दृश्य के साथ प्रारंभ, फलों का विपणन पर व्यवसायपूर्ण शिक्षा से संबंधित मॉड्यूल तैयार किए गए। पूर्वनिर्मित (प्रीफेब्रिकेटिड) भवन निर्माण सामग्री तथा मोती कला के लिए व्यावसायपूर्ण शिक्षा से संबंधित अनुदेशात्मक सामग्री भी तैयार की गई। व्यावसायिक शिक्षा और स्कूली शिक्षा में कार्य-शिक्षा के माध्यम से मूल्यों के समावेश के विषय में दिशा-निर्देशों के दस्तावेज़ों का मसौदा भी तैयार किया गया।

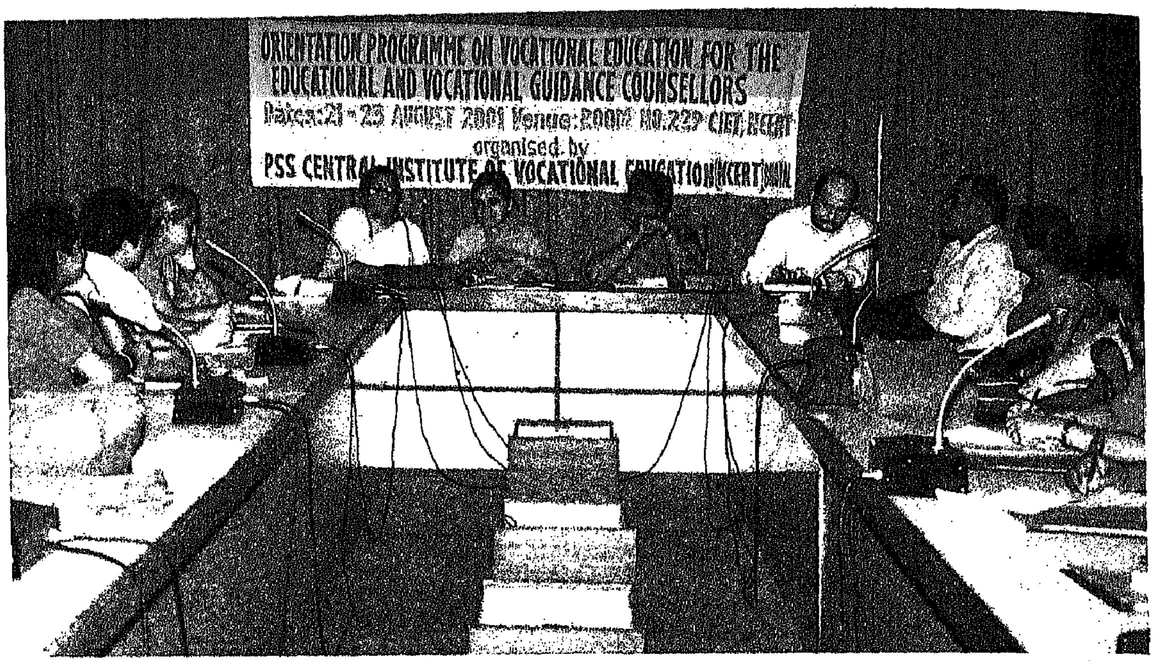
प्रशिक्षण

अठारह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जिनके माध्यम से 408 व्यावसायिक शिक्षकों/प्राध्यापकों तथा अन्य कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण घरेलू इलेक्ट्रिक उपकरणों तथा रेडियो तथा टेलीविजन रिसीवरों के रखरखाव तथा मरम्मत, वाणिज्यिक स्तर पर पोशाकें डिज़ाइन करना तथा बनाना, लेखा परीक्षा तथा लेखा, क्रय तथा भंडार रक्षण, उद्यमशीलता विकास, लाइनमैन, सामान्य व्यवसाय पाठ्यक्रम, स्वास्थ्य क्षेत्र, डेरी-उद्योग, भवन रखरखाव/सिविल निर्माण क्षेत्र व्यावसायिक मार्गदर्शन तथा परामर्श और पढ़ाई संबंधी विशिष्ट निर्योग्यताओं के क्षेत्र में दिया गया। इनमें से घरेलू इलेक्ट्रिक उपकरण तथा रेडियो एवं टेलीविजन रिसीवरों का रखरखाव तथा मरम्मत के क्षेत्र में दो कार्यक्रम विशेष रूप से असम राज्यों के लिए आयोजित किए गए तथा घरेलू इलेक्ट्रिक उपकरणों के रखरखाव तथा मरम्मत और लाइनमैन पाठ्यक्रम के क्षेत्र में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम हरियाणा के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए आयोजित किए गए। बिहार, उड़ीसा तथा असम के लिए व्यावसायिक मार्गदर्शन तथा परामर्श पर एक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा कार्य-अनुभव-बागवानी में प्रशिक्षण कार्यक्रम मैसूर में भी आयोजित किए गए।

विस्तार

अभिविन्यास कार्यक्रम

राज्य के प्रमुख कर्मियों, शिक्षकों तथा अन्य लोगों के लिए अठारह अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनके माध्यम से 557 कर्मियों को अभिविन्यस्त किया गया। इनमें से एक कार्यक्रम मध्य प्रदेश के मदरसों के कर्मियों के लिए आयोजित किया गया जिनमें 71 कर्मी उपस्थित थे। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाला एक अभिविन्यास कार्यक्रम अल्पसंख्यक संस्थानों (महिलाओं के लिए) के कर्मियों के लिए तथा एक कार्यक्रम अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए भी आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा के अधिक से अधिक कर्मियों को अभिविन्यस्त करने के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए, इनमें से एक कार्यक्रम मणिपुर राज्य के लिए तथा दूसरा पूर्वोत्तर राज्यों के लिए था। अन्य



शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन परामर्शदाताओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम

कार्यक्रम थे— विभिन्न राज्यों के बी.ई.पी. के प्रमुख कर्मियों का अभिविन्यास, दिल्ली के शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन परामर्शदाताओं के लिए कार्यक्रम, सामान्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम तथा व्यवसायपूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में अभिविन्यास तथा सहयोगी स्वास्थ्य संस्थानों तथा सी.बी.एस.ई./के.वी.एस/एन.ओ.एस. के संबद्ध स्कूलों के कर्मियों के लिए पैरामेडिकल व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम। व्यावसायिक शिक्षकों के लिए मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित दो अभिविन्यास शिविर आयोजित किए गए जिनमें विभिन्न राज्यों के 68 शिक्षकों ने भाग लिया।

उत्पादन तथा प्रशिक्षण केंद्रों को प्रोत्साहन

कुछ चुने हुए राज्यों, जैसे कर्नाटक, पंजाब तथा महाराष्ट्र में उत्पादन तथा प्रशिक्षण केंद्रों (पी.टी.सी.) के प्रवर्तन के लिए एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्देश्य ऐसे स्थानों पर उत्पादन तथा प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने तथा चलाने के लिए आवश्यक सहायता तथा सलाह देना था जहाँ पर ऐसे केंद्र विद्यमान नहीं हों, विद्यमान उत्पादन तथा प्रशिक्षण केंद्रों को सुदृढ़ बनाना तथा भाग लेने वाले राज्यों में उत्पादन तथा प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए कार्रवाई योजना तैयार करना था। संगोष्ठी में 19 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

खोज सम्मेलन

पहली बार दो खोज सम्मेलन आयोजित किए गए जिनमें ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं एवं विक्रेताओं तथा घरेलू विद्युत उपकरणों के विनिर्माताओं तथा उनके प्राधिकृत वितरकों ने भाग लिया। इसका प्रयोजन विनिर्माताओं तथा उनके वितरकों के विचार जानना, कार्य के दौरान ही प्रशिक्षण देने के प्रयोजन के लिए उनके साथ सहलग्नता विकसित करना, व्यावसायिक विषयों के साथ उत्तीर्ण होकर निकले विद्यार्थियों के रोज़गार में वृद्धि करना तथा कर्मचारियों एवं स्कूलों के बीच सहयोग करने के लिए कार्यविधियाँ तैयार करना था।

व्यावसायिक शिक्षा में सर्वोत्तम पद्धतियों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार

कर्तव्यनिष्ठ लोगों का उत्साह बढ़ाने के उद्देश्य से तथा दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक वर्ष व्यावसायिक शिक्षा में 'सर्वोत्तम पद्धतियों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार' कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यह

समझा जाता है कि इस पुरस्कार से देश में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। आलोच्य वर्ष के पुरस्कार वितरण समारोह में 250 आमंत्रित व्यक्ति उपस्थित थे जिनमें विशिष्ट शिक्षाविद्, प्रशासक, तथा विभिन्न राज्यों से आए पुरस्कार प्राप्त करने वाले 47 व्यक्ति शामिल थे। पुरस्कार प्राप्त करने वालों में व्यावसायिक विद्यार्थी, व्यावसायिक शिक्षक, व्यावसायिक संस्थानों के प्राधानाचार्य तथा सहयोगी उद्योगों के प्रतिनिधिगण शामिल थे। इस अवसर पर पाँच श्रेणियों में एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार दिए गए : सर्वोत्तम उपलब्धिकर्ता पुरस्कार, द्वितीय सर्वोत्तम उपलब्धिकर्ता पुरस्कार, सर्वोत्तम व्यावसायिक शिक्षक पुरस्कार, सर्वोत्तम संस्थान पुरस्कार, सर्वोत्तम स्कूल-उद्योग सहलग्नता पुरस्कार। पुरस्कार प्राप्त करने वालों को स्मृति चिह्न तथा प्रमाण-पत्र दिए गए। विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को नकद पुरस्कार भी दिए गए।

व्यावसायिक शिक्षा का त्रैमासिक बुलेटिन

व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए 'व्यावसायिक शिक्षा' नाम से एक त्रैमासिक बुलेटिन प्रकाशित किया जाता है। बुलेटिन की प्रतियाँ राज्य के प्रमुख कर्मियों तथा व्यावसायिक स्कूलों को भेजी जाती हैं। इस वर्ष बुलेटिन के तीन अंक प्रकाशित किए गए तथा चौथा अंक मुद्रित हो रहा है।

इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन

'इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन' शीर्षक से एक छःमाही पत्रिका प्रकाशित की जाती है ताकि सभी संबंधित व्यक्तियों को व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित शोधपत्रों, लेखों, समीक्षाओं और सारांशों के योगदान के लिए मंच प्रदान किया जा सके। वर्ष के दौरान इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किए गए हैं।

विस्तार व्याख्यान शृंखला

संकाय के व्यावसायिक संवर्धन तथा अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए छः विस्तार व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें से चार व्याख्यान मूल्यपरक शिक्षा पर थे। व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विषयों पर विस्तार व्याख्यान देने के लिए सुप्रसिद्ध शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया।

प्रकाशनों की प्रदर्शनी

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के व्यापक प्रचार के उद्देश्य से विभिन्न अवसरों पर पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के प्रकाशनों की प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। इस वर्ष ऐसी दो प्रदर्शनियाँ दो अवसरों पर आयोजित की गईं, अर्थात् पहली प्रदर्शनी एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार समारोह के दौरान तथा दूसरी पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. में आयोजित प्रमुख कर्मियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम के दौरान।

अन्य कार्यकलाप

राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन

व्यावसायिक कार्यक्रम का प्रचार करने तथा संबंधित राज्यों के अधिकारियों को व्यावसायिक



प्रो. बी.पी. खंडेलवाल, निदेशक 'नीपा', नई दिल्ली 'एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार-2001' प्रदान करते हुए

शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के बारे में जागरूक बनाने के उद्देश्य से संस्थान ने कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन को सरल बनाने के लिए राज्य अधिकारियों के साथ गहन रूप से विचारों का आदान-प्रदान किया। संकाय के सदस्यों तथा कुछ मामलों में संयुक्त निदेशक ने विभिन्न राज्यों, जैसे छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, झारखंड, राजस्थान, गुजरात का दौरा किया तथा व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित सचिवों, निदेशकों, संयुक्त निदेशकों तथा अन्य प्रमुख कर्मियों से विचार-विमर्श किया। छत्तीसगढ़ तथा उत्तरांचल में माननीय मुख्यमंत्री तथा शिक्षा मंत्रियों के साथ भी बैठकें आयोजित की गईं।

राज्यों व संघ राज्य क्षेत्रों को परामर्श-सेवा

दौरों और विचार-विमर्श के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और कार्यशिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों को परामर्श दिया गया। मध्य प्रदेश सरकार के अनुरोध पर पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के संकाय ने अभिविन्यास कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अल्पसंख्यक संस्थानों के प्रमुख कर्मियों को संबोधित किया तथा +2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित करने वाले उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों, उपप्रधानाचार्यों तथा वरिष्ठ प्राध्यापकों के लिए सार्वजनिक शिक्षा निदेशालय, मध्य प्रदेश द्वारा आयोजित व्यावसायिक शिक्षा पर चार अभिविन्यास कार्यक्रमों की एक शृंखला में संसाधन व्यक्तियों के रूप में भाग लिया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा राज्य व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, आंध्र प्रदेश द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित कार्यशाला की एक शृंखला में आंध्र प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए लगभग 1350 प्राधानाचार्यों तथा कनिष्ठ प्राध्यापकों (व्यावसायिक) को सुग्राही बनाने तथा अभिप्रेरित करने के लिए संसाधन सहायता भी उपलब्ध कराई। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद् के कृषि विषय में पाठ्यचर्या में संशोधन करने में सहायता दी गई। आंध्र प्रदेश सरकार के अनुरोध पर व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के संवर्धन से संबंधित एक परियोजना प्रस्ताव तैयार किया गया तथा राज्य सरकार को प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मध्य प्रदेश को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार की गई व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तथा अनुदेश संबंधी सामग्री की सूची उपलब्ध कराई गई तथा एन.सी.एफ.एस.ई.–2000 में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए की गई व्यापक सिफारिशों तथा आठवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों को रोज़गार के अवसरों में वृद्धि करने के लिए आवश्यकता आधारित पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए संसदीय स्थायी समिति की सिफारिशों के बारे में संक्षिप्त रूप से जानकारी दी गई।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

सामान्य प्रकाशन

- व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से मूल्यों का समावेश–राष्ट्रीय सम्मेलन की रिपोर्ट
- पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई. के कार्य तथा कार्यकलाप विवरणिका
- व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम – चंडीगढ़ की सफलता की कहानियाँ
- व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम – महाराष्ट्र की सफलता की कहानियाँ
- तमिलनाडु राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम–रिपोर्ट
- पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. प्रकाशनों की सूची–एक विवरणिका
- यात्रा तथा पर्यटन पर राष्ट्रीय बैठक - एक रिपोर्ट
- त्रैमासिक बुलेटिन-खण्ड-VII अंक-III
- त्रैमासिक बुलेटिन-खण्ड-VII अंक-IV
- त्रैमासिक बुलेटिन-खण्ड-VIII अंक-I
- त्रैमासिक बुलेटिन-खण्ड-VIII अंक-II (मुद्रणाधीन)
- इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन खण्ड 4, सं. 2
- इंडियन जर्नल ऑफ वोकशनल एजुकेशन खण्ड 5, सं. 1

व्यावसायिक पाठ्यचर्या

- कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन एंड ड्राफ्टिंग
- पौधा संरक्षण टैक्नीक
- ऑटो इलेक्ट्रीशियन
- भवन अनुरक्षण
- बेचलर ऑफ वोकेशनल एजुकेशन बिजनेस एवं कॉमर्स स्ट्रीम
- बेचलर ऑफ वोकेशनल एजुकेशन-कृषि शाखा
- बायोमेडिकल इक्विपमेंट
- वस्त्र अभिकल्पन
- एक्स-रे टैक्नीशियन
- एग्री. बिजनेस
- ट्रैवल एंड टूरिज़्म टैक्नोलॉजी
- इन्फॉर्मेशन टैक्नोलॉजी
- फीज़ियोथैरेपी टैक्नीशियन
- जनरल रिसेप्शनिस्ट
- ऑटो इलेक्ट्रीशियन – करिक्यूलम इन मॉड्यूल फॉर्म
- विपणन और विक्रय कला
- एंट्रेप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट
- चिकित्सा प्रयोगशाला
- कॉम्पिटेन्सी-बेस्ड ऑक्यूपेशनल मॉड्यूल्स ऑन इनलैंड फिशरीज़
- कॉस्ट इफेक्टिव बिल्डिंग टैक्नोलॉजी
- कॉम्पिटेन्सी-बेस्ड ऑक्यूपेशनल मॉड्यूल्स इन बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन
- ई.सी.जी. एंड ऑडियोमेट्री टैक्नीशियन (मुद्रणाधीन)

शिक्षण सामग्रियाँ

- जेनरिक वोकेशनल कोर्स-कक्षा VIII प्रैक्टिकल
- कंप्यूटर कम्यूनिकेशन फॉर इंटरनेट कैफे
- मत्स्य पालन में रोज़गार (नव-साक्षरों के लिए)
- मत्स्य परीक्षण प्रयोगिका

कार्यक्रम रिपोर्ट

- रिपोर्ट–व्यवसाय शिक्षा पर विशेषज्ञ ग्रुप की बैठक (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–मध्य प्रदेश के मदरसों के प्रमुख कर्मियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–घरेलू इलेक्ट्रिक उपकरणों के अनुरक्षण तथा मरम्मत में अल्पकालिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (असम के लिए) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–रेडियो तथा टेलीविजन रिसीवरों के अनुरक्षण तथा मरम्मत में अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण-कार्यक्रम (असम के लिए) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–हरियाणा तथा चंडीगढ़ के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए कमर्शियल गारमेंट डिज़ाइनिंग तथा मेकिंग के क्षेत्र में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–पर्चेज़िंग तथा स्टोर कीपिंग के क्षेत्र में अल्पकालिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–मध्य प्रदेश के पूर्णकालिक अध्यापकों के लिए उद्यमशीलता विकास में अल्पकालिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–व्यावसायिक शिक्षा में सर्वोत्तम पद्धतियों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–घरेलू इलेक्ट्रिकल उपकरण पाठ्यक्रम के अनुरक्षण तथा मरम्मत का व्यावसायिक शिक्षकों के लिए अल्पकालिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–लाइनमैन के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए अल्पकालिक शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–कर्नाटक के बिजनेस तथा कॉमर्स क्षेत्र के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–सामान्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम पर अल्पकालिक शिक्षाक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–स्वास्थ्य रक्षा व्यवसाय के अध्यापकों के लिए अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट–छत्तीसगढ़ राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन (फोटोकापी)

- रिपोर्ट-चुने हुए राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन (उत्तरांचल) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-पांडिचेरी, केरल तथा कर्नाटक के व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रमुख कर्मियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-दिल्ली के ई.वी.जी. परामर्शदाताओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-असम राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन का मूल्यांकन अध्ययन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-चुने हुए राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन (गुजरात) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-व्यावसायिक शिक्षा के अल्पसंख्यक संस्थानों के प्रमुख कार्यकलापों के शिक्षकों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी पर अखिल भारतीय आधारभूत अभिविन्यास तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-डेरी-उद्योग में अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम (मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के लिए) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-झारखंड राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं तथा डीलरों के लिए खोज सम्मेलन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-पौड़ी मंडल (उत्तरांचल) के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-कुमाऊं (उत्तरांचल) के इंटर कालेजों के प्राधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-भवन अनुरक्षण/सिविल निर्माण व्यावसायिक पाठ्यक्रम के शिक्षकों के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र) (फोटोकापी)
- रिपोर्ट- व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अनुसूचित जाति/जनजाति के शिक्षकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अभिविन्यास कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-रेडियो तथा टेलीविजन रिसीवरों के रखरखाव तथा मरम्मत में अल्पकालिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-उत्तरांचल राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-छत्तीसगढ़ राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन (फोटोकापी)
- रिपोर्ट-व्यावसायिक शिक्षकों के लिए मूल्यपरक शिक्षा से संबंधित अभिविन्यास शिविर (फोटोकापी)

14

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के एक अग्रणी संस्थान के रूप में, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान आवश्यकताओं का आकलन करने, आलेख तैयार करने और श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों का निर्माण करने, राज्य स्तर के कार्मिकों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रक्रियाओं और कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान करने का काम करता है।

वर्ष के दौरान मुख्य जोर स्कूल स्तर के पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या संबंधी क्रियाकलापों को समर्थन देने के श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों को विकसित करने में आवश्यकताओं का आकलन करना, बच्चों, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के विभिन्न लक्ष्यगत समूहों के लिए मीडिया कार्यक्रमों का निर्माण करने पर रहा।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी एन.सी.ई.आर.टी. के क्रियाकलापों का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसमें विद्यालयी शिक्षा की पहुँच में सुधार करना और उसकी साम्या और गुणवत्ता को बढ़ावा देना शामिल है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के एक अग्रणी संस्थान के रूप में, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, जो एन.सी.ई.आर.टी. का एक संघटक यूनिट है, आवश्यकताओं का आकलन करने, विभिन्न लक्ष्यगत समूहों के श्रोताओं और दर्शकों की रूपरेखा (प्रोफाइल) तैयार करने, आलेख तैयार करने और श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों और अन्य श्रव्य-दृश्य साधनों का निर्माण करने और राज्य स्तर के कार्मिकों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रक्रियाओं और कौशलों का, जिनमें स्टूडियो-उपस्करों का तकनीकी प्रचालन भी शामिल है, प्रशिक्षण प्रदान करने का काम करता है। यह अनुसंधान और मूल्यांकन, प्रलेखन तथा प्रचार-प्रसार से संबंधित क्रियाकलाप हाथ में लेता है और साथ ही मीडिया से संबंधित शैक्षिक सामग्री विकसित करने में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के बारे में विभिन्न संगठनों को परामर्श प्रदान करता है। यह संस्थान मल्टीमीडिया सीडी सहित इंटरएक्टिव श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों, मीडिया संसाधनों के कंप्यूटरीकृत डाटा आधारों के विकास के लिए नई उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के प्रयोग कर रहा है। परिषद् के अन्य संघटक यूनिटों द्वारा भी, जिनमें क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान शामिल हैं, शैक्षिक प्रौद्योगिकी से संबंधित क्रियाकलाप हाथ में लिए जाते हैं।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) पर डी.डी.-I और आकाशवाणी से क्रमशः तरंग और उमंग नाम से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों और ज्ञानदर्शन और ज्ञानवाणी शैक्षिक चैनलों से प्रसारित होने वाली दूरदर्शन और रेडियो प्रसारण सेवाओं के पोषण का भी उत्तरदायित्व है। इसे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय और उत्तर प्रदेश तथा बिहार के राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों जैसी अन्य सहयोगी संस्थाओं के साथ स्कूल क्षेत्रक के लिए कार्यक्रमों का समन्वय और पोषण करने की जिम्मेदारी भी दी गई है। इसके क्रियाकलापों के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में सात राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों के क्रियाकलापों का सीधे, और प्रसारण नीति, कार्यक्रम समन्वय और केंद्रीय पूर्वावलोकन विषयक तीन समितियों के माध्यम से समन्वय करना शामिल है।

अनुसंधान

मॉनीटरिंग, विश्लेषण और दर्शकों की प्रतिक्रिया

सी.आई.ई.टी. डी.डी.-I और ज्ञानदर्शन चैनलों से प्रसारित होने वाले तरंग कार्यक्रम की मॉनीटरिंग करने का अपना नियमित कार्य करता रहा। साप्ताहिक रिपोर्टें तैयार की गईं और उन पर पूर्वावलोकन बैठकों में चर्चा की जाती रही। तरंग के बारे में दर्शकों से पत्रों के रूप में प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया। प्राथमिक स्कूलों के बच्चों में 'तरंग' की दर्शक संख्या को बढ़ाने की कार्यनीतियां तैयार करने के लिए अध्यापकों की बैठकें आयोजित की गईं।

टी.वी. का व्यवहार-पैटर्न पर प्रभाव

व्यवहार-पैटर्न के विकास, विशेष रूप से बच्चों में मूल्यों के निर्माण पर टी.वी. कार्यक्रमों का क्या प्रभाव पड़ा है, इसके बारे में एक अध्ययन शुरू किया गया है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित करने वाले विभिन्न टी.वी. चैनलों की एक सूची बनाई गई और उन्हें देखने वाले बच्चों की तरज़ीहों की जानकारी प्राप्त की गई। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले मूल्यों के बारे में निर्णायकों (जजों) द्वारा निर्धारित 'रेटिंग' का विश्लेषण किया गया। व्यवहार और मूल्य-निर्माण पर टी.वी. के प्रभावों का आकलन करने के लिए 'फोर्स्ड चॉयस परीक्षा' के लिए बहुत से प्रश्न तैयार किए गए हैं। परीक्षा को अंतिम रूप देने का काम चल रहा है।

दूरस्थ शिक्षा में टी.वी. पाठ्यक्रमों की प्रभावकारिता

दूरस्थ शिक्षा में टी.वी. पाठ्यक्रमों की प्रभावकारिता के बारे में किए गए अनुसंधान अध्ययनों के अधि-विश्लेषण का काम पूरा हो चुका है। रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

गणित की अवधारणाओं को समझने में ई.टी.वी. कार्यक्रमों की प्रभावकारिता

गणित की अवधारणाओं को समझने में ई.टी.वी. के कार्यक्रमों की प्रभावकारिता के बारे में एक क्षेत्र-अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। उपलब्धि परीक्षाएँ तैयार की गईं और जयपुर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कक्षा 3 और 5 के बच्चों की परीक्षा ली गई। डाटा-विश्लेषण का काम शुरू कर दिया गया है।

विकास

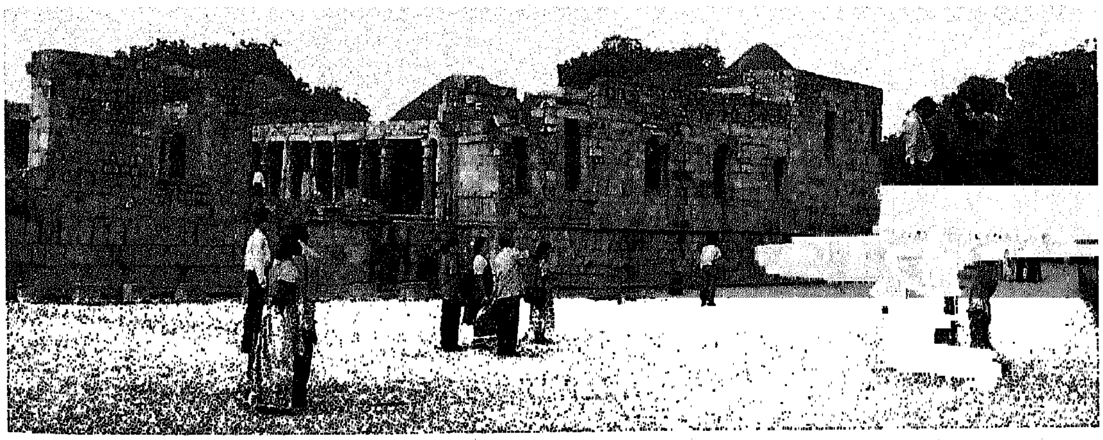
स्कूल स्तर के पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या संबंधी क्रियाकलापों को समर्थन देने के श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों को विकसित करने में आवश्यकताओं का आकलन करना, कार्यक्रमों के सार और आलेख तैयार करना और बच्चों, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के विभिन्न लक्ष्यगत समूहों के लिए मीडिया कार्यक्रमों के निर्माण के लिए निर्माण और निर्माणोत्तर कार्य हाथ में लेना शामिल है। विषयों (थीम) का चयन करने और उनकी प्राथमिकताएँ निर्धारित करने का काम परिषद् की आलेख समिति में, जो इस प्रयोजन के लिए गठित की जाती है, चर्चा करके किया जाता है। निर्माण संबंधी जो विभिन्न कार्य हाथ में लिए गए, वे इस प्रकार थे :

आलेख रचना

माध्यमिक कक्षाओं के लिए विज्ञान के शिक्षण के लिए जिन विषयों पर आलेख तैयार किए गए हैं, वे इस प्रकार हैं : नज़र, देखकर ही विश्वास होता है; और रंगों की जिज्ञासा, कृषि विज्ञानों, इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी और मानविकी के क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के बारे में कार्यक्रम; समकालीन सरोकारों, अध्यापकों की प्रतिबद्धताओं और योग्यताओं के संबंध में अध्यापकों की शिक्षा के कार्यक्रम। मूल्यांकन की प्रक्रियाओं के बारे में भी संक्षिप्त आलेख तैयार किए गए हैं, जैसे ग्रेडिंग प्रणाली, समेस्टर प्रणाली और स्कूल-आधारित मूल्यांकन। इसके अलावा, मूल्यपरक शिक्षा, शिक्षाविदों के कार्यों और जीवन के बारे में भी आलेख तैयार किए गए हैं, जो अन्य क्षेत्र कवर किए गए हैं उनमें शामिल हैं : चिकित्सकीय पौधे और एन.सी.ई.आर.टी. संबंधी प्रलेख चित्र के तीन संस्करण। अध्यापकों के लिए जैव-विज्ञानों, भौतिकी, भाषा-शिक्षण और शारीरिक शिक्षा के बारे में तेरह और आलेखों की रचना की गई है। इनका अभिकल्पन मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में हुई कार्यशाला में किया गया था।

ई.टी.वी. निर्माण

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान छियानबे ई.टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण किया गया था। जिन महत्त्वपूर्ण शृंखलाओं और कार्यक्रमों का निर्माण किया गया, उनमें ये शामिल हैं : विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2000 के विभिन्न पहलुओं के बारे में अध्यापकों के लिए कार्यक्रम; चिकित्सकीय पौधों के बारे में दो कार्यक्रम, व्यावसायिक के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में दस कार्यक्रम; जैसे कृषि



सी.आई.ई.टी. का आउटडोर शूटिंग का एक कार्यक्रम

विज्ञानों (रेशम कीट पालन और खुम्भी की खेती) व्यापार और वाणिज्य (इंडेक्सिंग के बारे में), गृह विज्ञान (खाद्य अपमिश्रण के बारे में), इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी (फैक्स और अर्थिंग), और परा-चिकित्सा (निष्क्रिय धूम्रपान और तम्बाकू खाने से इंकार करें), और एन.सी.ई.आर.टी. के बारे में 30 मिनट की अवधि का प्रलेख चित्र। इसके अन्य दो संस्करण निर्माणाधीन हैं। अध्यापकों के कार्य-निष्पादन के बारे में दो कार्यक्रमों और अध्यापकों की प्रतिबद्धता के बारे में पाँच कार्यक्रमों की एक शृंखला का निर्माण किया गया है। अध्यापकों की योग्यताओं के बारे में छः अन्य कार्यक्रम निर्माणाधीन हैं। दो-आयामीय ज्योमेट्री की शृंखला में कक्षा XI के लिए गणित के बारे में दस कार्यक्रम; 'पत्रों के उत्तर' शृंखला के अंतर्गत दर्शकों से प्राप्त पत्रों के विश्लेषण के आधार पर हर महीने एक नियमित कार्यक्रम; उदीयमान वैज्ञानिकों की शृंखला में छः कार्यक्रम; मूल्यपरक शिक्षा की शृंखला के अंतर्गत 'क्रोध पर विजय' नामक एक कार्यक्रम; मानव अधिकारों और मूलभूत कर्तव्यों के बारे में कई स्पाट का भी निर्माण किया गया है।

श्रव्य कार्यक्रमों का निर्माण

पिचासी श्रव्य कार्यक्रम (i) आओ मिलकर गाएँ, (ii) आओ मिलकर सीखें, और (iii) हिंदी सिखाने के लिए रंगोली शृंखलाओं के अंतर्गत निर्मित किए गए थे।

माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए अंग्रेज़ी में बातचीत करने के कौशल में सुधार करने और सुनकर समझने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से कक्षा I और II के लिए तमिल भाषा में योग्यता-आधारित श्रव्य कैसेट तैयार किए गए हैं।

विविध

अन्य विकासात्मक क्रियाकलापों में गणित के कम लागत वाले अध्यापन उपकरणों के भंडार की स्थापना करना और श्रव्य और दृश्य कैसेटों की अक्तूबर, 2001 तक अद्यतन बनाई गई सूचियां तैयार करना शामिल था। प्राथमिक स्तर पर अध्यापन के सहायक उपकरण तैयार करने के बारे में प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए गए और जनसंख्या शिक्षा के बारे में 10 आलेखों के लिए 10 स्लाइडों का निर्माण किया गया और किशोर शिक्षा के लिए एक भित्ति चार्ट विकसित किया गया। ई.टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माण का उन्नयन करने के लिए ग्राफिक एनीमेशन के विकास से संबंधित क्रियाकलापों को चालू वर्ष में भी जारी रखा गया।

प्रसारण

ई.टी.वी. कार्यक्रम डी.डी.-I और ज्ञानदर्शन चैनलों पर तरंग नामक सेवा के अंतर्गत प्रसारित किए जाते हैं। संस्थान ने डी.डी.-I और ज्ञानदर्शन चैनलों से प्रसारित किए जाने के लिए प्रति सप्ताह 37 केप्सूल भेजे। यह उपग्रह इनसेट 3-सी तक अपलिंकिंग के लिए सी.आई.ई.टी. से इग्नू तक के माइक्रोवेब लिंक का उपयोग करके एक घंटे की अवधि के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण भी कर रहा है।

विभिन्न लक्ष्यगत समूहों के लिए दूरदर्शन से प्रसारण के समय का ब्यौरा अगले पृष्ठ पर तालिका में दिया गया है।

एन.सी.ई.आर.टी. आकाशवाणी के 195 केंद्रों से छोटे बच्चों के लिए सप्ताह में एक बार 10 मिनट के लिए उमंग नाम की रेडियो सेवा के प्रसारण के लिए श्रव्य सॉफ्टवेयर प्रदान करती रही। सितंबर, 2001 से इस सेवा को बंद कर दिया गया। आर.आई.ई., मैसूर का श्रव्य दृश्य स्टूडियो ज्ञानवाणी एफ.एम. रेडियो स्टेशन, बंगलौर के लिए निर्माण केंद्र का काम करता था। यह चैनल श्रव्य कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए 30 मिनट के स्लाट की व्यवस्था करता है।

प्रशिक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं के बारे में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करती है, जैसे आलेखों की रचना, निर्माण तकनीक और निर्माणोत्तर कार्य, जैसे संपादन आदि, एनीमेशन और ग्राफिक्स, कैमरा प्रचालन, स्टूडियो संबंधी कार्य। विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर अध्यापक-प्रशिक्षकों को भी प्रशिक्षण

डी.डी.-I तथा ज्ञानदर्शन चैनलों से सी.आई.ई.टी. के प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का समय

चैनल	*प्रसारण समय*	*लक्ष्यगत प्रयोक्ता*
डी डी-I	5.00-5.25 प्रातः	माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं
	10.30-11.00 प्रातः	प्राथमिक कक्षाएं
ज्ञानदर्शन	5.00-5.25 प्रातः	माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं
	7.00-7.15 प्रातः	अध्यापक
	10.00-10.30 प्रातः	माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं
	10.30-11.00 प्रातः	प्राथमिक कक्षाएं
	3.00-3.30 अपराह्न	माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं
	3.30-4.00 अपराह्न	प्राथमिक कक्षाएं
	6.30-7.00 सायं	प्राथमिक कक्षाएं
	7.30-8.00 सायं	माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं

प्रदान किया जाता है। इस वर्ष आयोजित अभिविन्यास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ये शामिल थे : (i) उत्तर पूर्वी राज्यों, और (ii) उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल राज्यों की डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम, सी.आई.ई.टी./एस.आई.ई.टी. के इंजीनियरों के लिए (i) स्टूडियो वातानुकूलन और ध्वनि प्रणाली और (ii) ई.टी.वी./रेडियो कार्यक्रम निर्माण के बारे में दो पुनश्चर्या कार्यक्रम, और आर.आई.ई., मैसूर की संकाय के लिए ई.टी.वी. आलेख लिखने के बारे में एक अभिविन्यास कार्यशाला। आर.आई.ई., अजमेर में प्राथमिक स्तर पर अध्यापन के सहायक उपकरण तैयार करने के बारे में मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में (i) श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए, और (ii) दक्षिण-पूर्वी अफ्रीकी देशों के शैक्षिक योजना-निर्माताओं और प्रशासकों के लिए भी अभिविन्यास/ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।



संगीत-कक्षा की वीडियो रिकॉर्डिंग



युवा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की वीडियो रिकॉर्डिंग

विस्तार

सी.आई.ई.टी. जापान के वीडियो पुस्तकालय के लिए दक्षिण-पूर्वी एशिया के केंद्र के रूप में काम करता है और सभी एन.एच.के. अवार्ड विजेता कार्यक्रमों के बीटाकैम कैसेट उसे प्राप्त होते हैं। ये सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. के अंदर और अन्य मीडिया संगठनों के निर्माताओं को संदर्भ के लिए उपलब्ध कराए जाते हैं। नवंबर, 2001 में इलाहाबाद में बच्चों के लिए आयोजित 28वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का वीडियो कवरेज किया गया। इस अवसर के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्रदर्शों और मीडिया कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया गया और उन्हें फिर से दिखाया गया।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को कार्यक्रमों के निर्माण के विभिन्न पहलुओं के बारे में हुई बैठक में भाग लेकर, मीडिया कार्यक्रम तैयार करने के संबंध में परामर्श दिया गया।

श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों की सूचियों को अक्तूबर, 2001 तक अद्यतन बनाया गया और मुद्रित किया गया और उन्हें विभिन्न अकादमिक और मीडिया संगठनों में वितरित किया गया।

800 कार्यक्रमों के वीडियो कार्यक्रमों का कंप्यूटरीकृत डाटाबेस विकसित किया गया है। इस डाटाबेस में तकनीकी ब्यौरा, स्थिर चित्रों (स्टिल्स) का एक सेट और एक मिनट के वीडियो क्लिप शामिल हैं। सूचना की पुनःप्राप्ति की प्रक्रिया में विभिन्न भावी प्रयोक्ताओं, जैसे ई.टी.वी. पुस्तकालय के कर्मचारियों, मीडिया संसाधन प्रभाग, निर्माताओं और शिक्षाविदों की जरूरतों का ध्यान रखा गया है। सूचियों सहित समूचे डाटाबेस को सी.आई.ई.टी. की वेबसाइट में शामिल करने का प्रस्ताव है।

संस्थान के ई.टी.वी. कार्यक्रमों को समृद्ध बनाने के लिए कई एनीमेटेड ग्राफिक्स विकसित किए गए। इस कार्यक्रम के अंतर्गत फ्लैश कार्डों, पोस्टरों और संस्कृत परियोजना के लिए सचित्र कहानियों के निर्माण के लिए भी सहायता दी गई है। इस परियोजना के परिणामस्वरूप वीडियो टेप पुस्तकालय के लिए एक 'बार कोड पुस्तकालय प्रबंध प्रणाली' का क्रियान्वयन हुआ है।

मूल्यपरक शिक्षा कार्यक्रम के बारे में एक टीकायुक्त ग्रंथ सूची तैयार की गई है और प्रकाशन के लिए भेजी गई है।

तकनीकी उपस्करों का उन्नयन

2.25 करोड़ रुपए के मूल्य के श्रव्य और दृश्य उपस्कर खरीदने के लिए कदम उठाए गए हैं। इसमें नॉन-लीनियर संपादन प्रणाली, ई.एन.जी. रिकार्डिंग के लिए डिजिटल कलर कैमकार्डर कैमरे, डिजिटल स्टूडियो वी.सी.आर., डिजिटल श्रव्य उपस्कर और एक लोगो जेनरेटर शामिल है। इसके अलावा, कार्यक्रम निर्माण और प्रसारण से संबंधित क्रियाकलापों को हाथ में लेने के लिए 5.6 लाख रुपए के मूल्य के विविध उपस्कर खरीदे गए थे।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- बच्चों की कविताओं का संग्रह (मेरा भी तो मन करता है) (मुद्रणाधीन)
- शैक्षिक टी.वी. के लिए आलेख विकसित करना–एक हैंडआउट (फोटोकापी)
- दूरस्थ शिक्षा में दूरदर्शन पाठ्यक्रमों की प्रभावकारिता–एक अधिविश्लेषण (वर्ड प्रोसेसिंग के अधीन)
- ज्ञानदर्शन चैनल से तरंग के प्रसारण का मॉनीटरिंग और मूल्यांकन :

  (i) वार्षिक रिपोर्ट (फोटोकापी)

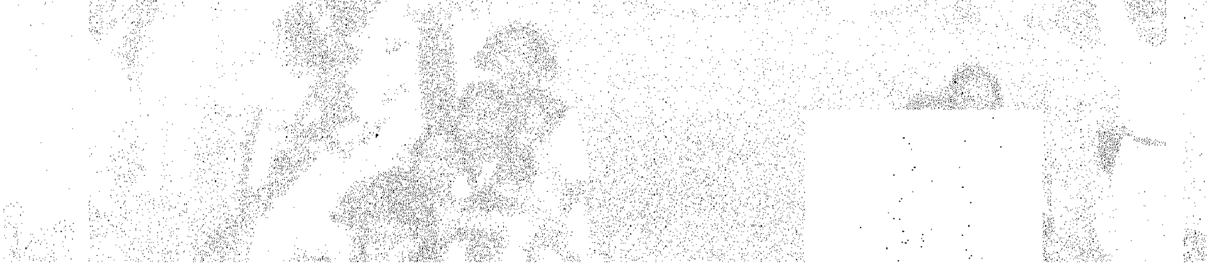
  (ii) दर्शक सर्वेक्षण : सी.आई.ई.टी. की अवलोकन स्थिति के आकलन के लिए (फोटोकापी)
- भारतीय शैक्षिक विचारकों के बारे में मीडिया पैकेज का विकास (फोटोकापी)
- श्रीलंका के वरिष्ठ शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी के बारे में अभिविन्यास कार्यक्रम की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- उत्तर-पूर्वी राज्यों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी के बारे में अभिविन्यास पाठ्यक्रम की रिपोर्ट (फोटोकापी)
- कक्षा V के विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तमिल में श्रव्य कैसेट (कैसेट)

15

कंप्यूटर शिक्षा

परिषद् के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त निवेश किया गया। सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी की सुविधाओं में वृद्धि की गई और अकादमिक तथा प्रशासनिक कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।

'लर्निंग विद कंप्यूटर्स' (स्तर 1, 2 व 3) की तीन खंडों की एक शृंखला प्रकाशित की जा चुकी है। इसके प्रत्येक खंड में बच्चों के लिए कार्यकलाप और अध्यापकों के लिए विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं।



कंप्यूटर शिक्षा

गत वर्ष सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) की पहल के शैक्षिक उपयोग के क्षेत्र में समेकित प्रयास किए गए। सामान्य शिक्षा में आई.सी.टी. का एकीकरण एक मुख्य सरोकार था। तदनुरूप, आई.सी.टी. के उपयोग हेतु बच्चों के लिए उपयुक्त अनुदेशात्मक सामग्री का विकास करना और उसका प्रकाशन करना महत्त्वपूर्ण क्रियाकलाप था। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों का अभिविन्यास, तथा विभिन्न क्षेत्रों के प्रधानाध्यापकों और सेवाकालीन अध्यापकों को प्रशिक्षण देना एक अन्य महत्त्वपूर्ण क्रियाकलाप था।

विद्यालयी पाठ्यक्रम पर आधारित मल्टी-मीडिया अधिगम सामग्री का विकास करना महत्त्वपूर्ण क्रियाकलापों में से एक था। इस प्रकार की कुछ सामग्री का प्रसार परिषद् की वेबसाइट के माध्यम से किया गया।

इसके अतिरिक्त, परिषद् के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त निवेश किया गया। आई.सी.टी. की सुविधाओं में वृद्धि की गई और अकादमिक तथा प्रशासनिक कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।

विकास

'लर्निंग विद कंप्यूटर्स' (स्तर 1, 2 व 3) की तीन खंडों की एक शृंखला, जो एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा जनवरी 2001 में निकाली गई, पाठ्यचर्या संदर्शिका तथा पाठ्य विवरण पर आधारित है, प्रकाशित की जा चुकी है। इसके प्रत्येक खंड में बच्चों के लिए कार्यकलाप और अध्यापकों के लिए विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं। कार्यकलाप श्रेणीबद्ध (ग्रेडिड) हैं जो कार्यकलाप लेवल-1 में दिए गए हैं वे प्रारंभिक छात्रों के लिए हैं और लेवल-2 में दिए गए कार्यकलाप कुछ आगे बढ़े हुए अध्ययनकर्ता बच्चों के लिए हैं। लेवल-3 के कार्यकलाप उन बच्चों के लिए हैं जो स्वतंत्र रूप से बिना किसी सहारे के काम कर सकते हैं

'इनफोर्मेशन टैक्नोलॉजी इन स्कूल्स : कारिक्यूलम गाइड एंड सिलेबस' नामक पुस्तक का हिंदी संस्करण प्रकाशित किया जा चुका है।

'फ्रैक्शंस' विषय पर मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर का परीक्षणार्थ संस्करण प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए विकसित किया गया है। क्षेत्रगत परीक्षण के बाद यह पैकेज एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट पर और सीडी पर भी उपलब्ध करा दिया जाएगा। दो अन्य मल्टीमीडिया मॉड्यूल अर्थात् प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए 'सिमुलेशन ऑफ पायजेशियन टास्कस' और वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के लिए "लैक्टोज़ ऑपेरॉन" एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट में शिक्षण साधनों की टोकरी में जोड़ दिए गए हैं। और भी बहुत से कार्यक्रम शीघ्र ही जारी किए जाने वाले हैं।

कार्यालय के स्वचलीकरण के लिए कंप्यूटर संबंधी अभ्यास दीपिका/मैन्युअल और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिविन्यास के लिए मैन्युअल तैयार किए गए।

साफ्टवेयर की एक ऐसी कृति विकसित की गई है जो परिषद् के अन्य संघटकों द्वारा पूरे किए गए कार्यक्रमों पर सूचना देती है। इसके अलावा, 14 परियोजनाओं पर डेटा का कंप्यूटरीकरण वर्ष के दौरान संपन्न किया गया।

प्रशिक्षण और विस्तार

एन.आई.ई. परिसर में राष्ट्रीय कंप्यूटर शिक्षा केंद्र में, केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और सरकारी स्कूलों के सेवारत अध्यापकों के लिए



विद्यालयी शिक्षा में एकीकृत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

शिक्षण-कक्ष में कंप्यूटर-आधारित शिक्षण सामग्रियों के उपयोग, समझ और विकास के विषय पर 15 दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षण कक्ष में सॉफ्टवेयर के अनुप्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया और अनुसंधान के उपकरण/साधन के रूप में इंटरनेट के उपयोग और ग्राफिक डिजाइन के बारे में जानकारी दी गई। राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए और उनमें भाग लेने वालों को सामान्य शिक्षा में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) के विभिन्न उपयोगों से अवगत कराया गया।

श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के एक शिष्टमंडल को विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकीयों की बुनियादी संक्रियाओं में प्रशिक्षित किया गया।

मध्य प्रदेश में 'डाइट' संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान की शिक्षा में कंप्यूटर के अनुप्रयोग के बारे में भी एक अभिविन्यास कार्यक्रम प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए आयोजित किया गया।

आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल और पांडिचेरी की एस.सी.ई.आर.टी./सी.टी.ई./आई.ए.एस.ई./एस.आई.ई. संस्थानों के प्रधानाध्यापक, हाईस्कूल अध्यापक और प्रमुख संसाधन व्यक्ति कंप्यूटर के अनुप्रयोग में प्रशिक्षित किए गए।

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय और प्रशासनिक तथा अनुसचिवीय कर्मचारियों को परिसर में उपलब्ध आई.सी.टी. सुविधाओं के उपयोग में प्रशिक्षित करने के लिए छः प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए।

एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट को जनसाधारण के लिए समाचार विचारों के साथ नियमित रूप से अद्यतन बनाया जाता रहा है और विद्यालय समुदाय के लिए उसे सामग्रियों से समृद्ध किया जाता है।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- लर्निंग विद कंप्यूटर्स (लेवल 1, 2 व 3) विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए पुस्तकों के तीन खंड
- विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी : पाठ्यचर्या संदर्शिका और पाठ्य विवरण
- प्रैक्टिस मैन्युअल इन कंप्यूटर्स फॉर ऑफिस ऑटोमेशन (टंकित)
- अध्यापन अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग में अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिविन्यास के लिए दीपिका/मैन्युअल (टंकित)
- लैक्टोज ऑपेरॉन (एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट पर कंप्यूटर प्रोग्राम)
- फ्रैक्शंस (कंप्यूटर प्रोग्राम) सीडी पर प्रोटोटाइप
- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान की शिक्षा में कंप्यूटरों के अनुप्रयोगों में प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास (फोटोकापी)
- अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए हैंडबुक (फोटोकापी)
- अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिविन्यास के लिए एक पैकेज का विकास (मुद्रणाधीन)

16

प्रतिभा की पहचान और प्रोत्साहन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् प्रति वर्ष अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत 1000 छात्रवृत्तियां प्रदान करती है जिनमें 150 छात्रवृत्तियां अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए तथा 75 छात्रवृत्तियां अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए होती हैं। परिषद् उम्मीदवारों की प्रतिभा को विकसित करने के लिए उपयुक्त ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था भी करती है।



प्रतिभा की पहचान और प्रोत्साहन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् प्रति वर्ष अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत 1000 छात्रवृत्तियां प्रदान करती है जिनमें 150 छात्रवृत्तियां अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए तथा 75 छात्रवृत्तियां अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए होती हैं। इस योजना का उद्देश्य कक्षा 10 के अंत में मेधावी एवं प्रतिभाशाली छात्रों का पता लगाकर उन्हें वित्तीय सहायता देना है ताकि उन्हें अच्छी शिक्षा मिल सके, जिससे उनकी प्रतिभा का और अधिक विकास हो सके और वे अपनी रुचि के विषय में उन्नति करते हुए राष्ट्र की सार्थक सेवा कर सकें।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत छात्रवृत्तियों के लिए चयन दो स्तरों पर किया जाता है। प्रथम स्तर पर चयन, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा लिखित परीक्षा के माध्यम से किया जाता है जो सामान्यतः अक्तूबर व दिसंबर के बीच आयोजित की जाती है। इस परीक्षा के आधार पर निर्धारित संख्या में उम्मीदवारों की द्वितीय स्तर की परीक्षा के लिए परिषद् के पास भेजा जाता है। छात्रवृत्तियों की अपेक्षित संख्या के चयन हेतु द्वितीय स्तर पर लिखित परीक्षा के साथ-साथ साक्षात्कार भी लिया जाता है। परिषद् इन चयनित उम्मीदवारों को न केवल छात्रवृत्तियां प्रदान करती है अपितु इन उम्मीदवारों की प्रतिभा को विकसित करने के लिए देश के प्रमुख संस्थानों की सहायता व सहयोग से उपयुक्त ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था भी करती है।

अनुसंधान

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाओं की निर्मित वैधता

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज (एन.टी.एस.) परीक्षाओं की निर्मित वैधता का अध्ययन यह जानने के लिए किया गया कि मानसिक योग्यता परीक्षा (मैट) और शैक्षिक अभिदक्षता परीक्षा (सैट), जो छात्रवृत्तियों के उम्मीदवारों के दूसरे स्तर के चयन के लिए ली जाती हैं, उनका सहज स्वरूप और निर्मित वैधता कैसी है? इस प्रयोजन के लिए एन.टी.एस. परीक्षा-2000 के लिए प्रयुक्त 'मैट' और 'सैट' के प्राप्तांकों का विश्लेषण किया गया जिसके लिए कारक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण के परिणामों से पता चला कि निर्मित वैधता में सुधार करने के लिए 'मैट' स्वरूप की दृष्टि से जटिल होता है। आकृतिक और प्रतीकात्मक संबंधों, वर्गों तथा प्रणालियों से संबंधित कई तरह की मदों को जोड़कर इसे सबल बनाने की आवश्यकता है। जहां तक 'सैट' की निर्मित वैधता का संबंध है, वर्तमान परीक्षा में शामिल नहीं की गई विशिष्टियों की मदों को जोड़कर इसकी लंबाई को बढ़ाने की जरूरत है।

एन.टी.एस. छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं की परिच्छेदिका (प्रोफाइल)

प्रत्येक छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ता की परिच्छेदिका उसके द्वारा अपने बारे में अपनी अन्य उपलब्धियों सहित दी गई सूचना के आधार पर तैयार की गई। इस प्रयोजन के लिए विभाग में एक सूचना-अनुसूची विकसित की गई। यह शीट वर्ष 2000-2001 में चुने गए 1000 एन.टी.एस. छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं के पास भरने के लिए भेजी गई। लगभग 700 छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं से उत्तर-शीटें प्राप्त हुईं, जिनका विश्लेषण किया गया और प्रोफाइलें तैयार की गईं।

एन.टी.एस. परीक्षा 2001 का मूल्यांकन

एन.टी.एस. परीक्षा 2001 में प्रयोग किए गए 'मैट' और 'सैट' प्रश्नपत्रों का विश्लेषण विषयगत कठिनाई, भेदभाव सूचक, विश्वसनीयता, प्रामाणिकता जैसे विभिन्न पैरामीटरों को ध्यान में रखकर किया गया। विश्लेषण के परिणामों के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार की गई। बाद में विश्लेषण के परिणामों के बारे में प्रश्नपत्र बनाने वालों, अनुशोधकों/मॉडरेटरों को बताया गया ताकि अगले वर्ष के एन.टी.एस. चयन के लिए विकसित परीक्षा की मदों को परिष्कृत किया जा सके।

विकास

आइटम बैंक का विकास

एन.टी.एस. परीक्षा के लिए एक गोपनीय आइटम बैंक के विकास को सुकर बनाने के लिए मानसिक योग्यता परीक्षा (मैट) और शैक्षिक अभिदक्षता परीक्षा (सैट) में विषयों को अंतिम रूप देने के लिए दो अनुशोधन कार्यशालाएं आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला 'मैट' विषयों के अनुशोधन के लिए संचालित की गई जिसमें 2400 आइटमों को प्रश्न

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रदान की गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज संबंधी छात्रवृत्तियों की संख्या

क्र.सं.	राज्य/सं.रा.क्षे.	आवंटित कोटा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	प्रदान की गई छात्रवृत्तियों की संख्या		
				सामान्य	अ.ज.व.अ.ज.जा.	जोड़
1.	आंध्रप्रदेश	240	203	23	09	32
2.	अरुणाचल प्रदेश	25	22	01	01	02
3.	असम	120	115	05	06	11
4.	बिहार	240	238	74	31	105
5.	दिल्ली	70	69	41	05	46
6.	गोवा	25	24	05	-	05
7.	गुजरात	215	183	05	02	07
8.	हरियाणा	95	94	39	-	39
9.	हिमाचल प्रदेश	40	40	06	07	13
10.	जम्मू व कश्मीर	40	39	01	-	01
11.	कर्नाटक	215	213	50	28	78
12.	केरल	225	216	25	12	37
13.	मध्य प्रदेश	285	260	43	19	62
14.	महाराष्ट्र	500	496	178	55	233
15.	मणिपुर	25	24	02	02	04
16.	मेघालय	25	23	-	-	-
17.	मिजोरम	25	10	-	-	-
18.	नागालैण्ड	25	25	-	03	03
19.	उड़ीसा	225	217	42	11	53
20.	पंजाब	120	120	23	03	26
21.	राजस्थान	180	176	57	09	66
22.	सिक्किम	25	25	-	-	-
23.	तमिलनाडु	340	322	33	08	41
24.	त्रिपुरा	25	07	-	-	-
25.	उत्तर प्रदेश	500	474	56	16	72
26.	पश्चिम बंगाल	215	209	38	18	56
27.	अंड. व निको. द्वीप समूह	10	09	-	-	-
28.	चंडीगढ़	10	10	07	01	08
29.	दादर और नगर हवेली	10	09	-	-	-
30.	दमन और दीव	10	01	-	-	-
31.	लक्षद्वीप	10	05	-	-	-
32.	पांडिचेरी	10	10	-	-	-
	जोड़	**4125**	**3888**	**754**	**246**	**1000**

वर्ष 2001-2002 के दौरान छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या	
+2 स्तर पर	
सभी धाराएं	1968
अवर स्नातक	
बुनियादी विज्ञान	124
सामाजिक विज्ञान	29
इंजीनियरिंग	1719
चिकित्सा	405
स्नातकोत्तर	
बुनियादी विज्ञान	12
सामाजिक विज्ञान	02
एम.ई./एम.टैक	08
एम.डी./एम.एस.	32
एम.बी.ए.	08
एम.सी.ए.	07
पीएच.डी.	01
जोड़	**4315**

वर्ष 2001-2002 के दौरान व्यय		
1.	छात्रवृत्तियों का वितरण	रुपये 97,81,500
2.	एन.टी.एस. परीक्षा का आयोजन	रुपये 13,78,659
	जोड़	रुपये 1,11,60,159

बैंक के लिए अंतिम रूप दिया गया। इन आइटमों के समूह में से 'मैट' के तीन परीक्षण तैयार किए गए। दूसरी कार्यशाला सात विषय-क्षेत्रों में सैट आइटमों के अनुशोधन के लिए आयोजित की गईं। 'सैट' में आइटम पूल के लिए गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, इतिहास और भूगोल तथा नागरिक शास्त्र में काफी बड़ी संख्या में आइटमों का अनुशोधन किया गया और तीन समानांतर परीक्षण तैयार किए गए।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- प्रोफाइल्स ऑफ नेशनल टेलेंट सर्च अवार्डीज़ ऑफ दि ईयर 2001-2002 (फोटोकापी)
- ए स्टडी ऑफ कंस्ट्रक्ट वैलिडिटी ऑफ एन.टी.एस. टेस्ट्स 2000 (फोटोकापी)
- एन ऐप्रेजल ऑफ नेशनल टेलेंट सर्च टेस्ट्स 2001 (फोटोकापी)

17

शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन

विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक अनुसंधान और अनुसंधान-आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा देना एन.सी.ई.आर.टी. का एक महत्त्वपूर्ण सरोकार है। अन्य कार्यों में शामिल हैं : सांस्थानिक अनुसंधान क्षमताओं का विकास और सुदृढ़ीकरण, शैक्षिक अनुसंधान से जुड़े कार्मिकों व हिताधिकारियों तक इन्हें पहुंचाने के लिए संप्रेषण के माध्यम प्रदान करना।

शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन

विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक अनुसंधान और अनुसंधान-आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा देना एन.सी.ई.आर.टी. का एक महत्वपूर्ण सरोकार है। इस क्षेत्र के मुख्य कार्यों में शामिल हैं– (i) विश्वविद्यालयों, संस्थाओं और एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों से संबद्ध अनुसंधानकर्ताओं की अनुसंधान परियोजनाओं का वित्तपोषण करना, (ii) सांस्थानिक अनुसंधान क्षमताओं का विकास और सुदृढ़ीकरण, (iii) विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में सूचना से संबंधित शैक्षिक अनुसंधान का प्रचार, तथा (iv) शैक्षिक अनुसंधान से जुड़े कार्मिकों व हिताधिकारियों तक इन्हें पहुंचाने के लिए संप्रेषण के माध्यम प्रदान करना और अनुसंधान के निष्कर्षों तथा शिक्षा प्रणाली पर इनके प्रभाव के संबंध में फीडबैक प्राप्त करना। एन.सी.ई.आर.टी. की एक स्थायी समिति शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) विद्यालय व अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में काम करती है तथा सहायता प्रदान करती है। इस समिति के सदस्यों में विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थाओं के शिक्षा और संबद्ध विषयों के अध्यक्ष तथा अनुसंधानकर्ता और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि शामिल हैं। परियोजनाओं के वित्तपोषण, अनुसंधान के लिए क्षमता-निर्माण करने और अनुसंधान के निष्कर्षों के प्रसार के लिए वर्ष 2001-2002 के दौरान किए गए कार्यकलाप और उनके परिणाम संक्षेप में नीचे के खंड में प्रस्तुत किए गए हैं।

एरिक द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजनाएँ

वर्ष 2001-2002 के दौरान एरिक द्वारा वित्तपोषित 16 अनुसंधान परियोजनाएं पूरी हो गईं और 40 पर काम चल रहा था। अध्ययन का शीर्षक, अनुसंधानकर्ताओं के नाम तथा पूर्ण हो चुकी और चल रही परियोजनाओं के साथ उनकी सांस्थानिक संबद्धता का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:

(i) पूर्ण हो चुकी अनुसंधान परियोजनाएं

क्र.सं.	*अध्ययन का शीर्षक*	*प्रधान शोधकर्ता*
1.	राज्यों में व्यावसायिक मार्गदर्शन पर संदर्भिका बेंचमार्क सर्वेक्षण	डा. (श्रीमती) किरण माथुर पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
2.	प्रारंभिक स्तर (कक्षा VI, VII, VIII) पर विज्ञान के अध्यापन के प्रति एकीकृत दृष्टिकोणः एक मॉडल का विकास	डा. एम.के. सतपथी, आर.आई.ई. भुवनेश्वर
3.	शिक्षा महाविद्यालयों में प्रशिक्षण के निष्कर्षों पर महत्वपूर्ण सांस्थानिक तथा आनुदेशिक परिवर्तों के प्रभाव का अध्ययन	डा. अरुण के. गुप्ता जम्मू
4.	जन्मजात नेत्रहीन बच्चों में हस्त और कार्य प्रशिक्षण	डा. मिरियम इटियेरा दिल्ली विश्वविद्यालय
5.	पठन संबंधी कठिनाइयों से छात्रों को अवगत कराना और कक्षा-अनुदेशों के लिए सुधारात्मक उपायों का विकास	डा. एन.एस. भारती आर.आई.ई., भुवनेश्वर
6.	विषय-क्षेत्रों के संबंध में मूल्यों का विकास करने के लिए नवाचारात्मक तरीके	डा. एच.के. सेनापति आर.आई.ई., भुवनेश्वर
7.	बालकों और बालिकाओं द्वारा मैकेनिक्स में संकल्पनाओं की विभेदक शिक्षा प्राप्ति-स्कूली वर्षों की केस स्टडी	डा. (श्रीमती) माधुरी महापात्र आर.आई.ई., भुवनेश्वर

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	प्रधान शोधकर्ता
8.	ग्रेड V में पढ़ रहे सुविधा-वंचित बच्चों के बीच अंकगणितीय समस्या समाधान में कठिनाइयों का विश्लेषण	डा. रमा एस. तथा डा. गौरम्म आई.पी., आर.आई.ई., मैसूर
9.	पठन-वैकल्य वाले बच्चों का भाषा संबंधी विकार कम करने में विभिन्न उपचारी उपायों की तुलना	डा. तेहल कोहली पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
10.	सोलो टैक्सोनॉमी और बोर्ड की परीक्षाओं द्वारा शिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि का आकलन : एक तुलनात्मक अध्ययन	डा. रणजीत बसु भारतीय जैव व्यवहार विज्ञान संस्थान कोलकाता
11.	आदिवासी बच्चों के विज्ञान सीखने पर मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारकों का प्रभाव	डा. (श्रीमती) एम. महापात्र वरिष्ठ प्रवक्ता, आर.आई.ई., भुवनेश्वर
12.	भारत में व्यापार और वाणिज्य-आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों की स्थिति का अध्ययन	डा. ए. पालानिवेल पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
13.	बच्चों के प्रक्रियात्मक तथा संकल्पनात्मक ज्ञान के बीच की खाई को भरना तथा पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएं	प्रो. ए.बी. सक्सेना आर.आई.ई., अजमेर
14.	विभिन्न विषय-क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रकार्यात्मक क्षमताओं की वर्गिकी/टैक्सोनॉमी जिनसे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के लिए विचार-विमर्श संबंधी दस्तावेज में व्यक्त किए गए कार्यों को लागू करने की अपेक्षा की जाती है।	डा. बी.एन. पांडा आर.आई.ई. भुवनेश्वर
15.	पाइएजेशियन विकासात्मक अवस्था के माध्यम से बच्चों के विकास को निरूपित करने वाले गणितीय मॉडल को तैयार करना	डा. जे.के. महापात्र आर.आई.ई., भुवनेश्वर
16.	शहरी निर्धन बच्चों के शिक्षण की समस्या (बालिकाओं के विशेष संदर्भ में)	डा. एस.के. पंत जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद

(ii) चल रहे अनुसंधान अध्ययन

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	प्रधान शोधकर्ता
1.	विभिन्न राज्यों में सामान्य आधारभूत पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन	डा. डी.पी. सिंह पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
2.	माध्यमिक व्यावसायिक स्कूलों में स्कूल-उद्योग सहलग्नता की स्थापना-क्रियात्मक अनुसंधान	डा. सौरभ प्रकाश पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
3.	व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण समुदायों की बालिकाओं की आजीविका संबंधी महत्वाकांक्षाएं	डा. श्रीमती पूनम अग्रवाल जी.बी. पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तरांचल)
4.	दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों द्वारा अपेक्षित अध्यापक शिक्षा संस्थाओं द्वारा प्रदान किए गए तथा शिक्षक छात्र द्वारा चुने गए विशेषज्ञता विषयों का अध्ययन	डा. के. डोरास्वामी आर.आई.ई., मैसूर

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	प्रधान शोधकर्ता
5.	महाराष्ट्र की व्यावसायिक संस्थाओं में स्कूल-उद्योग सहलग्नता की स्थिति अध्ययन	डा. आसफा एम. यासीन पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
6.	कृषि में व्यावसायिक अध्ययन-अध्यापन की स्थिति और प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन	डा. वी.एस. मेहरोत्रा पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
7.	पंजाब में अंतःकार्य प्रशिक्षण के कार्यान्वयन तथा व्यावसायिक छात्रों पर इसके प्रभाव के संबंध में अध्ययन	डा. ब्रजयंती देवी पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
8.	संकल्पना मानचित्रण का विज्ञान उपलब्धि, संज्ञानात्मक कौशलों तथा छात्रों की अभिवृत्ति पर प्रभाव	डा. मंजुला पी. राव क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
9.	चुनिंदा राज्यों में व्यावसायिक पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता और स्तर का तुलनात्मक मूल्यांकन	डा. मृदुला पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
10.	प्राथमिक स्कूल के बच्चों में भावात्मक बुद्धिमत्ता की पहचान और इसका पोषण-एक अन्वेषण	डा. अंजुम सिबिया डी.ई.पी.एफ.ई., एन.सी.ई.आर.टी.
11.	महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर गृहविज्ञान के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का महत्त्व	डा. पिंकी खन्ना पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
12.	10+2 स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशलों के विकास में शिक्षक की भूमिका	डा. वी.के. जैन पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
13.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ रहे वाणिज्य के छात्रों में उद्यमिता की भावना के प्रभाव क्षेत्र के मूल्यांकन का अध्ययन	डा. शिप्रा वैद्या एन.सी.ई.आर.टी.
14.	कक्षा आठ में द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने के संदर्भ में कंप्यूटर सहायता प्राप्त भाषा अध्ययन और परीक्षण की प्रभावकारिता	डा. एन. बालसुब्रमण्यन भारतियार विश्वविद्यालय कोयम्बतूर
15.	शिक्षक रणनीति, शिक्षक भागीदारी और स्कूल उपलब्धि	डा. बी. सुलोचना रेड्डी उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
16.	सूचना प्रसंस्करण पद्धति के माध्यम से भौतिकी में समस्या हल करने की योग्यता का विकास	डा. एस. मोहन अलगप्पा विश्वविद्यालय, करायकुडी
17.	आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्रों में आश्रम विद्यालयों की कार्यप्रणाली का अध्ययन	डा. पी. सुधाकर रेड्डी एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति
18.	शैशवकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन तथा परिप्रेक्ष्य योजनाओं का सुझाव देना	प्रो. एस.पी. मल्होत्रा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
19.	ग्रामीण क्षेत्रों में चयनित भौतिकी संकल्पनाओं में निदर्शनात्मक शिक्षण के प्रभावकारी मॉडलों का विकास	डा. गौरी शंकर राय रावेनशा कालेज, कटक
20.	किशोर आत्महत्या विचारण का मनोविकृति विज्ञान	प्रो. वी.वी. उपमन्यु पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
21.	शैक्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षकों में स्वाध्यायी कौशलों का विकास	प्रो. पी.जी. पटेल निदेशक जी.आई.आर.ई.डी., गुजरात

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	प्रधान शोधकर्ता
22.	शिक्षकों की प्रभावकारिता में सुधार के लिए सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	डा. (श्रीमती) उषा खरे ज्ञान प्रबोधिनी संशोधन संस्थान, पुणे
23.	ग्रामीण समुदाय के लिए महिला शिक्षा कार्यक्रमों में महिला स्वास्थ्य कार्मिकों की भागीदारी की संभावना का अध्ययन	डा. (श्रीमती) पी. माथुर आई.आई.टी., दिल्ली
24.	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बच्चों के अध्ययन और गृहकार्य व्यवहारों के सुधार से जुड़ी अभिभावक प्रशिक्षण तकनीकों का व्यवहारात्मक विश्लेषण और संशोधन	डा. संध्या सिंह कौशिक बी.एच.यू., वाराणसी
25.	वाराणसी के जूनियर हाईस्कूल छात्रों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का अध्ययन	प्रो. वी.के. दुबे बी.एच.यू., वाराणसी
26.	भारत में स्कूली शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए नवाचारी संस्थाएं एवं उनके कार्यक्रम	प्रो. मोहम्मद मियां निदेशक (डी.ई.पी.-डी.पी.ई.पी.), इग्नू, नई दिल्ली
27.	जीवन विज्ञान के माध्यम से मूल्यों का विकास-एक प्रयोगात्मक अध्ययन	डा. हेमलता तलेसरा राजस्थान शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंध परिषद्, उदयपुर
28.	उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तरों पर जीव विज्ञान शिक्षा में स्थानीय संसाधनों की प्रभावकारिता	प्रो. जी.एस. पालीवाल एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (पौड़ी), उत्तरांचल
29.	महिला कालेज/विश्वविद्यालय छात्रों के साथ प्रयोग के लिए कैरियर परिपक्वता सूची का विकास	डा. (श्रीमती) अर्चना शुक्ला लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
30.	6-8 आयु वर्ग के बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर घरेलू वातावरण का प्रभाव	डा. सुधा भोगले बंगलौर विश्वविद्यालय, बंगलौर
31.	शिक्षकों में बर्नआउट सिंड्रोम पर कार्यानुभव का प्रभाव	डा. उमा रंगन उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
32.	महिला शिक्षकों में बर्नआउट घटाना	प्रो. नीलिमा मिश्रा लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
33.	माध्यमिक स्कूलों में सामाजिक दृष्टि से उपयोगी उत्पादक कार्य-एक प्रायोगिक अध्ययन	डा. ए.बी. पाठक उदयपुर
34.	सुविधावंचित वर्गों के बच्चो में गणित में तार्किक चिंतन के क्रम का अध्ययन	डा. एच.एम. काशीनाथ धारवाड़
35.	अध्यापकों और छात्रों के बीच शाश्वत मूल्यों पर अष्टांग योग के प्रभाव का अध्ययन	डा. के.जी. प्रसाद राजू धीरु सुमारु डब्ल्यू.जी., आंध्र प्रदेश
36.	मूल्य शिक्षा के लिए घर और स्कूल के बीच सहयोग के लिए रूपात्मकताओं का विकास	डा. सुबीर चौधरी कोलकाता
37.	भारतीय संविधान में वर्णित मूल कर्तव्यों में अंतर्निहित मूल्यों को बढ़ावा देने वाले स्कूली कार्यकलापों का अध्ययन	डा. एस.एस. श्रीवास्तव लखनऊ

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	प्रधान शोधकर्ता
38.	प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के बीच भारतीय संविधान में अंतर्निहित मूल्यों के प्रति जागरूकता और निष्ठा का अध्ययन	डा. कल्पलता पांडे वाराणसी, उत्तर प्रदेश
39.	अभिप्रेरणा के माध्यम से अभावग्रस्त छात्रों के कार्यनिष्पादन में संवर्धन	डा. के.एन. त्रिपाठी भोपाल
40.	माध्यमिक स्कूलों में संपोष्य विकास के लिए शिक्षा को रेखांकित करते हुए पाठ्यक्रम तथा शैक्षणिक मुद्दों के संबंध में अध्यापकों के बोध का अध्ययन	शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.

(iii) प्रकाशन अनुदान

एरिक, एन.सी.ई.आर.टी. ने डा. (श्रीमती) प्रेमा माथुर, भोपाल को उनका पीएच.डी. का शोध प्रबंध प्रकाशित करवाने के लिए आंशिक अनुदान प्रदान किया। इस शोध प्रबंध का शीर्षक था ''मातृ-पितृत्व की चुनौतियां: मातृक रोजगार और शिशु के मनोवैज्ञानिक विकास के निहितार्थ।''

नीति तथा कार्यक्रम नियोजन के लिए डाटाबेस संबंधी कार्यकलाप

सातवां अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण (ए.आई.एस.ई.एस.)

एन.सी.ई.आर.टी. शैक्षिक सर्वेक्षणों और विषयात्मक अध्ययनों के माध्यम से सरकारी नीतियों और योजनाओं के निर्माण और पुनरीक्षण के लिए प्रयुक्त होने वाली आधारभूत निविष्टियां (इनपुट) प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनगणना विधि में आयोजित किए गए अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण स्कूली शिक्षा के स्तर और विकास को एक अत्यंत व्यापक फलक प्रदान कर रहे हैं। सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण को आंतरिक विचार-विमर्श के उपरांत तैयार किया गया। यह विचार-विमर्श मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षाशास्त्रियों आदि के साथ किया गया। इसकी संदर्भ तिथि 30 सितंबर 2002 है। यह सर्वेक्षण एन.सी.ई.आर.टी., राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र तथा सभी 35 राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जाएगा। पहली बार इस सर्वेक्षण में अमान्यताप्राप्त स्कूलों, ओरियंटल स्कूलों, ई.जी.एस. और ए.आई.ई. स्कीम के अंतर्गत आने वाले स्कूलों/केंद्रों को शामिल किए जाने का प्रस्ताव है। इनके अलावा निशक्तता-वार नामांकन/भर्ती अल्पसंख्यक समुदाय का नामांकन, अवरुद्धता और विरतता (ड्रापआउट) आदि इस सर्वेक्षण की कुछ नई विशेषताएं हैं। यह सर्वेक्षण जनगणना विधि से देश में समस्त ग्रामीण आबादी, कस्बों और स्कूलों को समाहित करते हुए किया जाना है। 7वीं ए.आई.एस.ई.एस. में शामिल की जाने वाली डाटा-मदों को अंतिम रूप देने के लिए 12 फरवरी 2002 को डाटा प्रयोक्ता सम्मेलन आयोजित किया गया।

शैक्षणिक आंकड़ों का सार संग्रह (विद्यालयी शिक्षा)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आदेश पर शैक्षणिक तथा जनसांख्यिकीय आंकड़ों को, जो विभिन्न संगठनों द्वारा प्रकाशित किए गए थे, संकलित किया गया और राष्ट्रीय स्तर पर प्रवृत्ति या रुझान दर्शाने और राज्यों में परस्पर विसंगतियों को दर्शाने के लिए लिए इन्हें प्रस्तुत किया गया। परियोजना की मसौदा रिपोर्ट 31 दिसंबर 2001 को प्रस्तुत कर दी गई है जो आंकड़ों संबंधी जानकारी प्राप्त करने के साधन के रूप में कार्य करेगी।

विद्यालयी शिक्षा में राज्यों के अध्ययन : स्तर, मुद्दे और भावी परिप्रेक्ष्य

हालांकि एन.सी.ई.आर.टी. ने देश में एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभाई है तथापि शैक्षणिक संरचना, नीतियों, पहलों, पहुंच, गुणवत्ता और संसाधनों को लेकर राज्यों के बीच व्यापक रूप से विषमताएं मौजूद हैं। कुछ राज्यों में यदि सफलता प्राप्त हुई है तो कुछ अन्य राज्य राष्ट्रीय मानदंडों पर खरा उतरने का अभिप्रयत्न कर रहे हैं। सबके लिए शिक्षा का उद्देश्य अभी भी प्राप्त किया जाना है। उपर्युक्त बातों को ध्यान में में रखते हुए, राज्यों की भावी शिक्षा-योजनाओं को तैयार करने में उनकी मदद करने के लिए, अन्य राज्यों की सफलताओं से सीखने और लाभान्वित होने के लिए विद्यालयी शिक्षा के स्तर, मुद्दों और भावी परिप्रेक्ष्यों की योजना बनाने के लिए अनेक अध्ययन किए गए। ये परियोजनाएं राज्यों में एस.सी.ई.आर.टी./एस. आई.ई. में आधारित हैं। निदेशक, एस.सी.ई.आर. टी./एस.आई.ई. नोडल अधिकारी हैं जो एक राज्य सलाहकार समिति के सर्वोपरि पर्यवेक्षण के अंतर्गत, जिसका अध्यक्ष शिक्षा आयुक्त/सचिव होता है, परियोजना कार्यान्वयन दल की सहायता से अध्ययन करता है। राष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय सलाहकार समूह, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. की अध्यक्षता में समय-समय पर परियोजना की प्रगति की समीक्षा करता है और परियोजना के प्रभावी तथा त्वरित कार्यान्वयन के लिए आवश्यक कदम उठाता है। दो प्रश्नावलियों और एक साक्षात्कार अनुसूची सहित आंकड़ा-संग्रहण के साधन परियोजना निदेशकों के परामर्श से राष्ट्रीय सलाहकार समूह द्वारा तैयार किए गए और इन्हें अंतिम रूप भी इसी समूह ने दिया। ये अध्ययन इन राज्यों/संघ राज्यों क्षेत्रो में आरंभ किए गए हैं: आंध्रप्रदेश, असम, अरुणाचल प्रदेश, दिल्ली, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, पांडिचेरी, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, मणिपुर, सिक्किम। उपर्युक्त राज्यों में से आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मेघालय, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के अध्ययन पूर्ण हो चुके हैं और रिपोर्टों को मुद्रण के लिए तैयार किया जा रहा है।

अनुसंधान-क्षमता निर्माण

(i) सामग्री का विकास

उन्नत स्तर के अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम के लिए सामग्री

शैक्षिक संदर्भों में यथाप्रयुक्त अनुसंधान प्रणाली विज्ञान में हाल ही में हुए कुछ अत्याधुनिक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए उन्नत स्तर के अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पर एक पाठ्यक्रम आरंभ करने की योजना बनाई गई थी। पाठ्यक्रम के समर्थन में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु एक कार्यशाला में अभिनिर्धारित की गई।

प्रस्तावित पाठ्यक्रम में ''आधारभूत विषय' और 'विशेषीकृत विषय' शामिल हैं। आधारभूत विषयों में 9 यूनिट या इकाइयां निहित हैं जो पाठ्यक्रम के सभी सहभागियों को उपलब्ध कराई जाएंगी जबकि विशेषीकृत पाठ्यक्रम पांच हैं जिन्हें पिटक पद्धति (बास्केट एप्रोच) का प्रयोग करते हुए उपलब्ध कराने की योजना है। सहभागी अपनी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम का चुनाव कर सकते हैं, अर्थात यह ऐच्छिक है और उनकी आवश्यकताओं पर आधारित है। पाठ्यक्रम के लिए तैयार की गई विषयवस्तु के आधार पर विशेषज्ञों से पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने का अनुरोध किया गया है। कुल मिला कर लगभग 32 इकाइयां (यूनिटें) हैं। अभी तक 7 इकाइयों के मसौदे प्राप्त हो चुके हैं।

कार्रवाई अनुसंधान पर प्रयोक्ता मार्गदर्शिका

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के प्रयोग के लिए कार्रवाई अनुसंधान पर एक प्रयोक्ता मार्गदर्शिका तैयार की गई थी जो अभी मुद्रणाधीन है।

प्रशिक्षण

अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम (स्तर I)

एन.सी.ई.आर.टी. ने असम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और मिजोरम के उत्तर-पूर्व राज्यों के 26 डाइट तथा एस.सी.ई.आर.टी. के प्राध्यापकों के लिए एक अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम (स्तर I) का आयोजन किया। पाठ्यक्रम कार्यकलाप के एक भाग के रूप में सहभागियों ने अपने-अपने कार्यस्थलों पर अनुसंधान करने के लिए अनुसंधान प्रस्ताव भी तैयार किए।

प्रसार

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (आई.ई.आर.)

आई.ई.आर. एक छमाही संदर्भ पत्रिका है जो एन. सी.ई.आर.टी. की स्थापना के लगभग आरंभिक दशकों से ही प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका अनुसंधानकर्ताओं को अपने नवीनतम शोधपत्र और शोध-अध्ययन प्रकाशित करने का मंच प्रदान करती है। जनवरी 2000, जुलाई 2000 (अंक 36) और जनवरी 2001 (अंक 37) के आई.ई.आर. के तीन अंक प्रकाशित किए गए थे और जुलाई, 2001 (अंक 37) का अंक प्रकाशनाधीन था। जनवरी 2002 (अंक 38) के लिए सामग्री मुद्रणार्थ तैयार कर ली गई थी।

शैक्षिक अनुसंधान तथा भारतीय शैक्षिक सारों का सर्वेक्षण

शैक्षिक अनुसंधान का छठा सर्वेक्षण चल रहा है। 26 क्षेत्रों में प्रवृत्ति रिपोर्टें लिखने के लिए विशेषज्ञों के पैनल को अंतिम रूप दे दिया गया था, उनकी सहमति प्राप्त कर ली गई थी और उन्हें उनका कार्य सौंप दिया गया है। अध्यापक शिक्षा तथा अध्यापक व्यवहार और शिक्षा का इतिहास संबंधी विषयों की प्रवृत्ति रिपोर्टों का मसौदा प्राप्त हो चुका है। वर्ष 2001 (खंड-I) के लिए भारतीय शैक्षिक सारों के प्रथम दो अंक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो गए हैं।

प्रोत्साहन स्कीमों पर राज्य की नीतियां तथा बालिकाओं की भागीदारी में इनका योगदान

एकदिवसीय दो उप-राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया ताकि यूनेस्को द्वारा वित्त-पोषित उक्त अध्ययन के निष्कर्षों से राज्य, जिला तथा खंड स्तर के उन अधिकारियों को अवगत कराया जा सके जो स्कीमों का कार्यान्वियन कर रहे हैं और उनके सुझाव आमंत्रित किए गए। राज्य सरकार के अधिकारियों तथा राज्य स्तर के गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने चेन्नई में आयोजित प्रथम कार्यशाला में भाग लिया जिनकी कुल संख्या 43 थी। राज्य, गैर-सरकारी संगठनों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के 68 प्रतिनिधियों ने लखनऊ, उत्तर प्रदेश में आयोजित दूसरी कार्यशाला में भाग लिया।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- कार्रवाई अनुसंधान पर प्रयोक्ता गाइड (फोटोकापी)
- शैक्षिक अनुसंधान का परिचय-नौसिखियों के लिए हैंडबुक (फोटोकापी)
- प्रारंभिक चरण पर एकल-आयुवार नामांकन का प्राक्कलन (मुद्रणाधीन)
- प्राथमिक स्तर पर स्टैगनेशन (प्रगतिरोध) और ड्रापआउट (विरतता) (मुद्रणाधीन)
- विद्यालय के अध्यापकों की रूपरेखा पर एटलस
- प्रोत्साहन स्कीमों पर राज्य नीतियों और बालिकाओं की सहभागिता में इनके योगदान पर उप-राष्ट्रीय कार्यशाला
- 17 अप्रैल 2001 को चेन्नई, तमिलनाडु में आयोजित उप-राष्ट्रीय कार्यशाला (फोटोकापी)
- 8 जून 2001 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में आयोजित उप-राष्ट्रीय कार्यशाला (फोटोकापी)
- शैक्षिक आंकड़ों का सार-संग्रह स्कूली शिक्षा (टंकित)

18

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के प्रावधानों को कार्यान्वित करने वाली भारत सरकार की एजेंसी के रूप में कार्य करती है। परिषद् यूनेस्को, 'एपीड', यू.एन.डी.पी. इत्यादि द्वारा प्रायोजित परियोजनाएं और कार्यक्रम संचालित करती है और विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए विदेशी शिष्टमंडलों और विशेषज्ञों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के प्रावधानों को कार्यान्वित करने वाली भारत सरकार की एजेंसी के रूप में कार्य करती है। परिषद् यूनेस्को, 'एपीड', यू.एन.डी.पी. इत्यादि द्वारा प्रायोजित परियोजनाएं और कार्यक्रम संचालित करती है और विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए विदेशी शिष्टमंडलों और विशेषज्ञों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती है। परिषद् यूनेस्को, यू.एन.डी.पी., यूनीसेफ इत्यादि के तत्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिसंवादों, बैठकों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अपने संकाय-सदस्यों को प्रायोजित करती है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी राष्ट्रों के लिए लघु अवधि के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती है। यह भारत में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न देशों, संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों को सूचना भी उपलब्ध कराती है।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत पाठ्यपुस्तकों, संदर्शिकाओं और अनुपूरक पुस्तकों जैसी शैक्षिक सामग्री/सूचना विभिन्न देशों को भेजी जाती है और उनसे प्राप्त की जाती है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत पाठ्यचर्या के क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञ एक-दूसरे के देश का दौरा करते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत प्राप्त सामग्री को परिषद् के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग में स्थित अंतर्राष्ट्रीय संसाधन केंद्र में प्रदर्शित किया जाता है।

यूनेस्को द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम

वर्ष 2001-2002 के दौरान निम्नलिखित यूनेस्को प्रायोजित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध पर उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम

'सार्क' क्षेत्र में सर्व शिक्षा अभियान के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध विषय पर, यूनेस्को, नई दिल्ली और आई.बी.ई., जेनेवा की सहायता से 11 से 23 फरवरी, 2002 तक 12-दिवसीय एक उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। भूटान, भारत, मालदीव, श्रीलंका से आए उच्च कोटि के प्रशासकों और पाठ्यचर्या का विकास व



उच्च कोटि के प्रशासकों, पाठ्यचर्या का विकास व कार्यान्वियन और मूल्यांकन करने वालों के लिए सर्व शिक्षा अभियान के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध विषय पर उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह का दृश्य

कार्यान्वयन और मूल्यांकन करने वालों और यूनेस्को (नई दिल्ली), आई.बी.ई, (जेनेवा) के प्रतिनिधियों ने इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम की प्रशिक्षण कार्य-विधि में शामिल थेः मुख्य विषय का प्रस्तुतीकरण तथा परिचय/प्रस्तावना; सामूहिक चर्चा; स्वतः अध्ययन मॉडयूल, क्षेत्र विशेष की यात्रा और कार्यशालाएं। पाठ्यचर्चा के अभिकल्पना/डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई और विभिन्न देशों में इस संबंध में हुए अनुभवों, समस्याओं और सरोकारों के बारे में सहभागियों ने विचारों का आदान-प्रदान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम तीन दिनों में इन विषयों पर चार कार्यशालाएं आयोजित की गईः (i) पाठ्यचर्या परिवर्तन की योजना और विकास, (ii) पाठ्यचर्या का संचालन, (iii) पाठ्यचर्या परिवर्तन का मूल्यांकन, पुनरीक्षण और समीक्षा और (iv) पाठ्यचर्या के संचालन की रणनीतियों सहित प्रत्येक देश के लिए प्रशिक्षण योजना।

पहली तीन कार्यशालाएँ मिली-जुली किस्म की थीं। अन्तिम कार्यशाला देश-विशेष से संबंधित थी जिसमें प्रत्येक देश के सहभागियों ने सर्व शिक्षा अभियान के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन का प्रबंध करने के लिए प्रशिक्षण योजना तैयार की। इस कार्यशाला में भिन्न-भिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया और पाठ्यचर्या के विकास, डिजाइन, कार्यान्वयन, पुनरीक्षण, समीक्षा और मूल्यांकन आदि विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों ने विचार-विमर्श किया तदोपरान्त उन विषयों पर चर्चा हुई। कार्यशालाओं में विभिन्न मुद्दों पर विचार किया गया और एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार की गई जिसमें सर्व शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रभावकारी प्रबंध हेतु प्रत्येक विषय में रणनीतियों के बारे में सुझाव दिया गया और प्रत्येक देश के लिए अलग-अलग प्रशिक्षण योजना तैयार की गई।

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में प्रवसन शिक्षा

'प्रोएप' यूनेस्को बैंकाक द्वारा प्रायोजित प्रवसन शिक्षा कार्यक्रम का तीसरा चरण संपन्न किया गया। अध्यापकों के लिए मॉड्यूल और छात्रों के लिए अध्ययन सामग्री स्कूलों, एन.सी.ई.आर.टी और विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले अभिज्ञात लेखकों द्वारा विकसित की गई। प्रो. पूरनचंद, कार्यक्रम समन्वयकर्ता, डॉ. बसबी खान बैनर्जी और डॉ. ओ.एस. देवल (दोनों मॉड्यूल लेखकों) के एक दल ने मार्च 2002 में बैंकाक में प्रवसन शिक्षा विषय पर हुई क्षेत्रीय बैठक में भाग लिया।

विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (दो कार्यक्रम)

एन.सी.आर.टी ने श्रीलंका के राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा प्राधिकरण के अनुरोध पर, विभिन्न श्रीलंका के विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए 3-मास के दो व्यावसायिक विकास कार्यक्रम संचालित किए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य अध्यापक-प्रशिक्षकों को दक्षिण



श्रीलंका के वरिष्ठ शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह पर श्री एच.ई. अशोक गिरिगहाहृरा, काउंसिलर, श्रीलंका हाई कमीशन, मुख्य अतिथि

एशियाई परिप्रेक्ष्य में अध्यापक तथा विद्यालयी शिक्षा के सभी पक्षों पर अभिविन्यस्त करना और शिक्षा के इसी क्षेत्र में प्रचलित नई रणनीतियों/प्रवृत्तियों से उन्हें परिचित कराना था। पहला कार्यक्रम 23 सितंबर से 24 दिसंबर 2001 तक आयोजित किया गया। इसमें पंद्रह वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भुवनेश्वर तथा भोपाल स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में दो-दो सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त किया और फिर

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक सप्ताह रहकर ज्ञानार्जन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक महत्व के स्थानों की सांस्कृतिक यात्रा के अलावा, 'डाइट', आई.ए.एस.ई., एन.सी.टी.ई., 'नीपा', सी.बी.एस.ई., एन.ओ.एस. और 'इग्नू' जैसी शैक्षिक संस्थाओं का अवलोकन भी शामिल था। इन अध्यापक-प्रशिक्षकों ने शैक्षिक प्रौद्योगिकी के स्टूडियो और कंप्यूटर कार्यों का एक सप्ताह का व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया। प्रत्येक सहभागी ने अपनी रुचि की एक परियोजना पूरी की और उसे विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की रिपोर्ट और परियोजना संबंधी प्रस्तावों का प्रारूप, दोनों प्रकाशित एवं प्रसारित किए गए।

श्रीलंका के आठ वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए दूसरा व्यावसायिक विकास कार्यक्रम 4 फरवरी से 3 मई 2002 तक एन.सी.आर.टी, नई दिल्ली में और भुवनेश्वर, अजमेर तथा भोपाल स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में और सी.आई.ई.टी में आयोजित किया गया। इस दल ने शैक्षिक संस्थाओं तथा सांस्कृतिक महत्व के स्थलों की भी यात्रा की। इस प्रशिक्षण में कई विषय शामिल थे; जैसे, शिक्षा में भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य, अध्यापक और विद्यालयी शिक्षा, कक्षा पद्धतियां, विद्यालय संबंधी कार्यों में समुदाय को साथ लेना, प्रतिस्पर्धा में व्यावहारिक अनुभव और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में व्यावहारिक ज्ञान। कार्यक्रम की रिपोर्ट और सहभागियों द्वारा विकसित परियोजना प्रस्ताव प्रकाशित एवं प्रसारित किए गए।

मालदीव के अध्यापकों के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दो कार्यक्रम)

मालदीव गणराज्य के शिक्षा मंत्रालय के अनुरोध पर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर मालदीव के अध्यापकों के लिए इस समय दो कार्यक्रम चला रहा है। प्राथमिक विद्यालयों के 15 प्रधानाध्यापकों का एक समूह 15 महीने (3 सेमेस्टर) के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहा है जिसे पूरा करने के बाद उन्हें डिप्लोमा दिया जाएगा। विज्ञान, अंग्रेजी, गणित और सामाजिक अध्ययन इस कार्यक्रम के संघटक हैं। इन प्रधानाध्यापकों को विद्यालयी शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार दोनों पक्षों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। डॉ. सी. जंगैया इस कार्यक्रम के अकादमिक समन्वयकर्ता हैं। यह कार्यक्रम 31 दिसंबर 2001 को प्रारंभ हुआ था। इस कार्यक्रम के लिए निधि की व्यवस्था 'एडसिल', नई दिल्ली द्वारा की जा रही है।

मिडिल स्कूल अध्यापन पाठ्यक्रम में एक अन्य दो-सेमेस्टर का डिप्लोमा पाठ्यक्रम 30 मालदीवी अध्यापकों के लिए आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के लिए निधि की व्यवस्था, मालदीव गणराज्य द्वारा की जा रही है। प्रो. राघवन और डॉ. बी.एस. उपाध्याय मालदीवी प्रशिक्षणार्थियों के दूसरे दल के लिए समन्वयकर्ता हैं।

विदेशी आगंतुक

वर्ष 2001-2002 के दौरान, एन.सी.ई.आर.टी ने उपर्युक्त यूनेस्को प्रायोजित कार्यक्रमों और विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सहभागियों के अतिरिक्त, भिन्न-भिन्न देशों के निम्नलिखित शिक्षाविदों/विशेषज्ञों/शिष्टमंडलों का स्वागत-सत्कार किया:

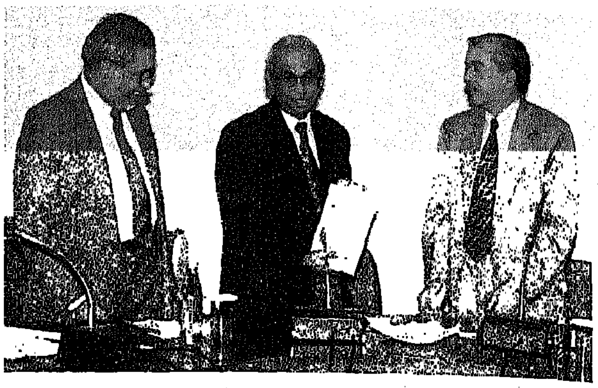
- एक आस्ट्रेलियाई शिष्टमंडल ने 20 अप्रैल 2001 को एन.सी.ई.आर.टी का दौरा किया। शिष्टमंडल के सदस्य एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यकलापों के बारे में जानने के लिए आए थे। उन्होंने विभिन्न देशों में शिक्षा की स्थिति पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया।
- भूटान के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों तथा शैक्षिक योजना-निर्माताओं के एक शिष्टमंडल ने अध्ययन यात्रा के प्रयोजन से 24 अप्रैल 2001 को सी. आई.ई.टी., और एन.सी.ई.आर.टी का दौरा किया। उन्हें सी.आई.ई.टी. और एन.सी.ई.आर.टी. के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने शैक्षिक प्रौद्योगिकी (ई.टी.) और शिक्षा के कतिपय महत्वपूर्ण मुद्दों पर यहां के अधिकारियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया।
- मालदीव गणराज्य के माननीय मानव संसाधन, रोजगार तथा श्रम मंत्री महामहिम श्री अब्दुल्ला कमालुद्दीन, भारत सरकार के माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री के निमंत्रण पर, भारत

पधारे। भारतीय उच्चायोग के सुझावों के आधार पर और आगंतुक महानुभाव द्वारा अभिव्यक्त अभिरुचि को देखते हुए, उन्हें जून, 2001 को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ले जाया गया। वहां उन्होंने मालदीव के अध्यापकों के लिए एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने की संभावना पर प्रधानाचार्य से विचार-विमर्श किया।

- मालदीव गणराज्य के डॉ. महमोद्ध शोऊगी, मुख्य शैक्षिक पर्यवेक्षक, शिक्षा मंत्रालय, श्री अहमद अनवर, महानिदेशक, शिक्षा मंत्रालय, और श्रीमती रशीदा अलाई, महानिदेशक, मानव संसाधन रोजगार एवं श्रम मंत्रालय ने 25 से 27 जून, 2001 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर का दौरा किया। उन्होंने वर्ष 2001-2002 के दौरान मालदीव के 30 स्कूली अध्यापकों के एक समूह के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर में एक 10 महीने (दो सेमेस्टर) का डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने की संभावना के बारे में प्रधानाचार्य तथा संकाय सदस्य के साथ चर्चा की।
- नेपाल के तकनीकी शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (टी.आई.टी.आई) के निदेशक श्री देवी प्रसाद डहल और संकाय सदस्य श्रीमती अकिम श्रेष्ठा ने 26 जून 2001 को पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई, एन.सी.ई.आर.टी., का दौरा किया जिसका उद्देश्य तकनीकी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए कार्यरत संस्थाओं के साथ सामग्री तथा विशेषता का आदान-प्रदान किए जाने की संभावना का पता लगाना था। उन्होंने पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक और संकाय सदस्य के साथ बैठक की, जिसमें उन्होंने टी.आई.टी.आई. के कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण दिया। इस बैठक के फलस्वरूप वे अन्तरक्रिया को और अधिक बढ़ाना चाहते हैं और टी.आई.टी. आई. तथा पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के बीच विशेषज्ञों के आदान-प्रदान की आशा रखते हैं।
- जापान के कुमानोटो राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ.एच. फरूता ने 9 से 13 जुलाई 2001 तक एन.सी.ई.आर.टी का दौरा किया। डॉ फरूता अपनी शोध परियोजना-'केरल राज्य, भारत और श्रीलंका के बीच विशेष शिक्षा का सम्मिश्रित अध्ययन' के सिलसिले में विशेष जरूरतमंद बच्चों के विषय में जानकारी इकट्ठी करने के लिए आई थीं। उन्हें जनजातीय भाषाभाषी बच्चों सहित विशेष जरूरतमंद बच्चों पर भारत में किए गए कार्य के विषय में बुनियादी जानकारी दी गई।
- श्रीलंका के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के एक शिष्टमंडल ने 26 सितंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। शिष्टमंडल के सदस्यों ने देशों में शिक्षा की स्थिति के बारे में अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यकलापों के बारे में जानकारी प्राप्त की।
- यूनेस्को (मुख्यालय) पेरिस के परामर्शदाता डॉ. मिलौदी मोहम्मद ने 29 से 31 अक्तूबर 2001 तक एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उनकी यात्रा का उद्देश्य, दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा के लिए टर्मिनल स्थापित करने की संभावना का पता लगाना था। डी.ई.जी.एस.एन. ने यूनेस्को के दल को विशेष जरूरतमंद बच्चों के शिक्षा केन्द्र में भेजने की व्यवस्था की। दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा के लिए ब्रेल टर्मिनल स्थापित करने के उद्देश्य से एक परियोजना तैयार की गई। परामर्शदाता ने दृष्टिबाधित शिक्षा संबंधी कुछ और संस्थाओं का भी दौरा किया और उन्होंने प्रौद्योगिकी अंतरण और दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ई-अधिगम केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव पेश किया।
- तंजानिया के राजकीय जंजीबार विश्वविद्यालय के उप-कुलपति प्रो. सालेह इदरीस मोहम्मद और वहां के शिक्षा, संस्कृति और खेल मंत्रालय के प्रधान सचिव श्री अब्दुल हमीद वाई म्ही 5 नवंबर 2001 को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मैसूर में पधारे। इन महानुभावों ने संस्थान में

आयोजित किए जा रहे सेवापूर्व तथा सेवाकालीन कार्यक्रमों के बारे में प्राधानाचार्य और संकाय के सदस्यों से विचार-विमर्श किया। कन्सल्टैंट्स इंडिया लि.; नई दिल्ली के श्री राजीव रंजन ठाकुर जंज़ीबार की टीम के साथ आए थे।

- जर्मनी की अध्यापक-यात्रा अकादमी के श्री फ्रेंक कुहम 18 नवंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. आए। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के लिए स्वयं अपने द्वारा अभिकल्पित अध्ययन-अधिगम सहायता-साधन का प्रदर्शन किया।
- कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग, बैंकूवर, कनाडा के निदेशक डॉ. जी. धनराजन 27 नवंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. में आए। उन्होंने भारत में विद्यालय तथा अध्यापक शिक्षा और मुक्त अधिगम-अध्ययन के महत्व पर विचारों का आदान-प्रदान किया और एन.सी.ई.आर.टी. के साथ सहयोग की संभावनाओं की खोज की। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. के दो नए प्रकाशनों–'एक्सपीरिएंसिज़ इन स्कूल एजुकेशन' और 'एटलस ऑन टीचर्स' का विमोचन किया।
- फ्रांस के इंस्टीच्यूट यूनिवर्सितिइरे फार्मेशन मैत्रेस के निदेशक डॉ मिशल पौस ने 28 नवंबर 2001 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और आर.आई.ई. भोपाल का दौरा किया। उन्होंने पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के संकाय सदस्य से सामान्य रूप से विद्यालयी शिक्षा के व्यवसायीकरण और विशेष रूप से अध्यापकों की तैयारी के विषय में चर्चा की और आर.आई.ई., भोपाल के संकाय सदस्य से फ्रांस में अध्यापक शिक्षा की प्रणाली के विषय में विचार-विमर्श किया।
- हांगकांग के शिक्षा संस्थान के प्रो. यिनचियोंग चिग 10 दिसंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. आए और यहां उन्होंने भारत में विद्यालय तथा अध्यापक शिक्षा के विषय में विचारों का आदान-प्रदान किया और एन.सी.ई.आर.टी. से सहयोग स्थापित किए जाने की संभावनाओं का पता लगाया।



कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग के निदेशक प्रो. जी. धनराजन एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित 'एक्सपीरिएंसिज़ इन स्कूल एजुकेशन' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए

- नेपाल का एक शिष्टमंडल 17 दिसंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. आया। उन्होंने भारत में विद्यालय तथा अध्यापक शिक्षा के विषय में विचारों का आदान-प्रदान किया और एन.सी.ई.आर.टी. के साथ सहयोग स्थापित किए जाने की संभावनाओं की खोज की।
- श्रीलंका के प्रांतों के शिक्षा निदेशकों ने 21 दिसंबर 2001 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्होंने देशों में शिक्षा की स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान किया और एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यकलापों के बारे में जानकारी ली।
- नार्वे से दो संकाय सदस्यों तथा ग्यारह छात्रों के एक दल ने यूनेस्को/ए.एस.पी. सांस्कृतिक मैत्री आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 17-22 जनवरी 2002 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर और उससे संलग्न डी.एम.स्कूल का दौरा किया, जिसका उद्देश्य भारत के पूर्वी क्षेत्र के



हांगकांग के शिक्षा संस्थान के प्रो. यिनचियोंग चिग एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक से विचार-विनिमय करते हुए

विशेष संदर्भ में भारतीय विद्यालयी शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना था। इस दल ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान तथा भुवनेश्वर में स्थित अन्य संस्थानों जैसे एस.सी.ई.आर.टी. और सी.टी.ई. की कक्षाओं को देखा और वहां के अध्यापकों तथा छात्रों के साथ चर्चा की।

- श्रीलंका के राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा प्राधिकरण के निदेशक डॉ नंदन धर्मकीर्ति और डॉ. रंजीत रामनायके ने 7 जनवरी 2002 से 5 फरवरी 2002 तक एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उनका प्रमुख उद्देश्य भारत में अध्यापक शिक्षा की प्रत्यापन प्रक्रियाओं तथा पद्धतियों का अध्ययन करना था ताकि उन्हें श्रीलंका में भी अपनाया जा सके। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक, संयुक्त निदेशक (सी) और अन्य वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करने के बाद, उपयुक्त श्रीलंकाई निदेशकों ने अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने और प्रत्यापन प्रक्रियाओं का अवलोकन करने के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.सी.), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई) और राष्ट्रीय प्रत्यापन तथा आकलन/निर्धारण परिषद (एन.ए.ए.सी.), बंगलौर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूर, केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान (सी.आई.ई.एफ.एल), हैदराबाद का दौरा किया।
- यू.के. से अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के विशेषज्ञ प्रो. डॉन बर्न पैट्रिक 18 फरवरी 2002 को आर.आई.ई., मैसूर में आए। प्रो. डॉन बर्न इस संस्थान में संकाय सदस्य रह चुके हैं। इनके मैसूर प्रवास के दौरान संस्थान ने उन्हें अपने दो-वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम के छात्रों के लिए, 'भारत में अंग्रेजी की स्थिति' विषय पर एक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।
- मारीशस के विकलांग प्रशिक्षण तथा रोजगार बोर्ड (टी.ई.डी.पी.बी) की अध्यक्षा श्रीमती आर.रघुबर 4 मार्च 2002 को एन.सी.ई.आर.टी. पधारीं। उन्होंने भारत में विशेष जरूरतमंद बच्चों के अध्यापन के लिए अपनाई जा रही शैक्षिक रणनीतियों पर विचार विमर्श किया और प्रशिक्षण के लिए दो प्रशिक्षणार्थियों को भारत भेजने की संभावना पर भी चर्चा की।
- एशियाई तथा अफ्रीकी देशों का 24-सदस्यीय शिष्टमंडल शैक्षिक मीडिया कार्यक्रमों की प्रस्तुति की प्रक्रिया पर चर्चा करने के लिए 4 मार्च 2002 को सी.आई.ई.टी. आया। आगंतुकों को सी.आई.ई.टी. की कार्य प्रणाली के बारे में अवगत कराया गया। ई.टी.वी और ऑडियो में स्क्रिप्ट/आलेख लेखन तथा प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया भी समझाई गई। कुछ चुने गए ऑडियो/वीडियो कार्यक्रम भी प्रदर्शित किए गए और उन पर चर्चा की गई।
- मंगोलिया के शिक्षा मंत्री श्री ए. इसानजिद 19 मार्च 2002 को एन.सी.ई.आर.टी. पधारे। उन्होंने विद्यालयी शिक्षा के विषय में विचारों का आदान-प्रदान किया।
- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों, जैसे मालदीव, भूटान, फिलिपीन्स, श्रीलंका, थाईलैंड आदि के शैक्षिक पदाधिकारियों का एक शिष्टमंडल अध्ययन यात्रा पर 22 मार्च, 2002 को सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. आया। उन्हें एन.सी.ई.आर.टी.,



मंगोलिया के माननीय शिक्षा मंत्री श्री ए. इसानजिद एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत को एक स्मारिका भेंट करते हुए

सी.आई.ई.टी. के कार्यकलापों के बारे में जानकारी दी गई और उन्होंने ई.टी और शिक्षा संबंधी कतिपय महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श किया।

- भूटान, कंबोडिया, गुयाना, कज़ाखस्तान, मारीशस, म्यनमार, नामीबिया, ओमान, पापुआ, न्यू गिनी, तोंगा, सिसिली और जांबिया जैसे 13 विकासशील देशों से उन्नीस शैक्षिक प्रशासकों का एक शिष्टमंडल 28 मार्च 2002 को सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. में आया। उन्हें सी.आई.ई.टी. के कार्यों से और एल.सी.टी.ए. कार्यक्रमों से लेकर मल्टीमीडिया कार्यक्रमों तक ई.टी. के सभी सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों से अवगत कराया गया।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के संकाय सदस्यों की सहभागिता/भागीदारी

- प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने 9-13 जुलाई 2001 तक विंडहॉक, नामीबिया का दौरा किया। वहां उन्होंने कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग द्वारा आयोजित मुक्त-दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के विषय पर आयोजित सर्व-अफ्रीकी नीति संवाद (पैन-अफ्रीकन पॉलिसी डायलॉग) में भाग लिया। उन्होंने भारत में प्रचलित मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षण प्रणालियों पर नीतिसूचक मुख्य भाषण दिया। सहभागियों ने विभिन्न भारतीय मॉडलों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और इन गतिविधियों में उत्कट रुचि प्रदर्शित की। भारतीय मॉडलों पर विचार-विमर्श में एक पूरा दिन लग गया, जिसमें प्रस्तुतीकरण, सामूहिक चर्चा और प्रश्नोत्तर सत्र भी शामिल था।
- डॉ. वी.पी.गुप्ता, रीडर, रसायन विज्ञान, आर.आई.ई., अजमेर ने 29 से 31 जुलाई 2001 तक ढाका, बांग्लादेश का दौरा किया। वहां उन्होंने 'साक्षरता तथा अनौपचारिक शिक्षा गरीबी उन्मूलन का साधन है' विषय पर यूनेस्को उप-क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की तैयारी बैठक में भाग लिया। भारत, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान और बांग्लादेश के सहभागियों तथा संसाधन व्यक्तियों ने इस बैठक में भाग लिया और अपने देश के विषय में शोध-पत्र प्रस्तुत किए। आगे की रणनीतियों के लिए रिपोर्ट का मसौदा तैयार किया गया।
- प्रो. पूरनचंद, अध्यक्ष, आई.आर.डी. ने यूनेस्को द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में भाग लेने के लिए 5-8 सितंबर 2001 तक जेनेवा, स्विट्जरलैंड का दौरा किया।
- डॉ. के.सी.जैन, प्रोफेसर, वाणिज्य, आर.आई.ई, अजमेर और डॉ. एन.एम.राव, प्रोफेसर, गणित, आर.आई.ई., मैसूर ने क्रमशः ए.सी.सी. और गणित में विशेषज्ञ के रूप में, भारतीय विद्यालय, बहरीन में आयोजित स्टाफ विकास कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 9 से 14 सितंबर 2001 तक बहरीन का दौरा किया। प्रशिक्षण का कार्यक्रम विषय-वस्तु तथा अध्यापन विधियों पर केंद्रित था। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों, उच्च प्राथमिक अध्यापकों, और गणित विषय के स्नातकोत्तर अध्यापकों और लेखा तथा अर्थशास्त्र के स्नातकोत्तर अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। अध्यापकों को गणित सीखने के लिए अभिप्रेरक रणनीतियों और गणित में भिन्न-भिन्न मूल्यांकन तकनीकों और कार्यकलाप आधारित शिक्षण के बारे में प्रशिक्षित किया गया। स्नातकोत्तर अध्यापकों को भी सी.बी.एस.ई. की आवश्यकताओं के अनुसार ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के लिए परियोजनाएं विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।
- डॉ. संत प्रकाश, रीडर, भौतिक विज्ञान, आर.आई.ई., भोपाल और डॉ. ए.एन.गुप्ता, रीडर, रसायन विज्ञान, आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने भारतीय विद्यालय, बहरीन के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 16 से 21 सितंबर 2001 तक बहरीन का दौरा किया। उन्होंने कक्षा 5 से 12 तक के भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान के अध्यापकों को दो अलग-अलग समूहों में प्रशिक्षित

किया, जिसके लिए विद्यालय में नियमित कक्षा की पद्धतियों का पालन किया। उन्होंने भौतिक विज्ञान तथा अन्य विषयों में नवाचारात्मक (सरल) प्रयोग और उपचारात्मक अध्यापन पद्धति प्रदर्शित की।

- डॉ. बी.एन.पंडा, रीडर, शिक्षा और श्री के. साहू ग्रेड-1 अध्यापक, डी.एम.विद्यालय, आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने यूनेस्को/ए.एस.पी. सांस्कृतिक सौहार्द, आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत, पांच छात्रों के साथ 16 से 21 अक्तूबर, 2001 तक नार्वे की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, इन संकाय सदस्यों तथा छात्रों को ओसलो, नार्वे में विद्यालयी शिक्षा की प्रणाली से अवगत कराया गया। वहां उन्हें कक्षा में ले जाया गया और अध्यापन प्रक्रिया को दिखाया गया। उन्होंने विद्यालय के प्राधिकारियों तथा विद्यालयी शिक्षा विभाग के प्राधिकारियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया।
- प्रो. जी.के. लहरी, अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई., प्रो. मोहम्मद सबरीन, डी.ई.एस.एस.एच और डॉ वी.पी. श्रीवास्तव, रीडर, डी.ई.एस.एम. ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 21 अक्तूबर से 2 नवंबर, 2001 तक मिस्र का दौरा किया। शिष्टमंडल के सदस्यों ने मिस्र के शिक्षा मंत्रालय तथा पाठ्यचर्या विकास, शैक्षिक अनुसंधान, परीक्षा, मूल्यांकन आदि से संबंधित विभागों और प्रौद्योगिकी केंद्र के अधिकारियों से मुलाकात की और विचारों का आदान-प्रदान किया। इसके अलावा, वे कैरो और गिज़ा में स्थित शैक्षिक संस्थाओं और दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए भी गए और उन्होंने मिस्र तथा भारत की शिक्षा प्रणालियों के विभिन्न पक्षों पर अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया।
- डॉ. वी.के. वाजपेयी, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच. ने 'एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र में विदेशी/दूवितीय भाषा की शिक्षा' के विषय पर आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी/सेमिनार में भाग लेने के लिए 28 नवंबर से 7 दिसंबर 2001 तक टोकियो (जापान) का दौरा किया। उन्होंने देश के विषय में रिपोर्ट पेश की। अन्तिम रिपोर्ट में इस क्षेत्र में दूवितीय भाषा की शिक्षा की समस्या और कुछ अन्य सामान्य समस्याओं जैसे सामग्रियों, अध्यापक प्रशिक्षण और मूल्यांकन की समस्याओं के बारे में बताया गया है। यह सहमति हुई है कि सदस्यों के बीच और अधिक अंतरक्रिया होनी चाहिए।
- डॉ. (श्रीमती) सविता सिन्हा, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच. ने यूनेस्को दूवारा बैंकाक में सामाजिक विज्ञान विषय पर आयोजित क्षेत्रीय परामर्श बैठक में भाग लेने के लिए 10-12 दिसंबर, 2001 तक बैंकॉक (थाईलैंड) का दौरा किया। आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डोनाल्ड डेनून दूवारा तैयार किए गए चर्चा पत्र के मसौदे पर चर्चा की गई। सदस्य देशों दूवारा निर्दिष्ट महत्त्वपूर्ण मुद्दों के आधार पर यह पत्र संशोधित किया गया। इन चर्चाओं के आधार पर, यूनेस्को की सामाजिक तथा मानव विज्ञान इकाई अगले कुछ वर्षों के लिए अपने कार्यक्रमों की योजना बनाएगी।
- प्रो. एस.ज़ैड. हैदर, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने "भारत में व्यावसायिक शिक्षा : सरोकार एवं प्रवृत्तियां" विषय पर सातवें यूनेस्को-एसीड वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में यूनेस्को के निमंत्रण पर एक विशेषज्ञ के रूप में भाग लेने के लिए 11-14 दिसंबर 2001 तक बैंकाक (थाईलैंड) का दौरा किया। प्रो. हैदर ने "भारत में व्यावसायिक शिक्षा : सरोकार एवं प्रवृत्तियां" विषय पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया और 'टी.वी.ई.टी' के विशेष अभिरुचि समूह सत्र में और 'यूनेवॉक' बैठक में भी भाग लिया।
- डॉ. पुष्पा मंडल, व्याख्याता, डी.ई.ई. ने "साक्षरता तथा अनौपचारिक शिक्षा : गरीबी उन्मूलन का साधन" विषय पर आयोजित उप-क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने के लिए 27 दिसंबर 2001 से 9 जनवरी 2002 तक ढाका, बांग्लादेश का दौरा किया।

- प्रो. स्वदेश मोहन, डी.ई.पी.एफ.ई. ने 'शांति की रोगहर शक्ति' विषय पर माउंट आबू में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संवाद में 9 से 11 फरवरी 2002 तक भाग लिया। ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में शांति और अहिंसा की आध्यात्मिक शक्ति से रोग चिकित्सा विषय पर प्रवचन/व्याख्यान और शांति विषय पर चिंतन-मनन के अनेक सत्र शामिल थे। 'दि ट्रेवेल्स'-ज्ञानोदय की सात कुंजियां का मंचन किया गया। शांति के अग्रदूतों के रूप में सहभागियों की भूमिका विषय पर छोटे-छोटे समूहों में विचारों का आदान-प्रदान किया गया। प्रो. मोहन ने एक समूह के कार्य पर अपनी रिपोर्ट पेश की। इस सम्मेलन में 21 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- डॉ. वी.पी. गुप्ता, प्रोफेसर, डी.ई.ई. ने 'सार्क' देशों में सर्व शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध पर नई दिल्ली, भारत में आयोजित उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम में 11-23 फरवरी 2002 तक संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया। उन्होंने गणित की शिक्षा के विषय में एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रो. पूरनचंद, अध्यक्ष, आई.आर.डी और डॉ. (श्रीमती) बसबी खान बैनर्जी, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच. ने माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में प्रवसन शिक्षा के समावेश पर एशिया-प्रशांत क्षेत्र के लिए बैंकाक स्थित यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित क्षेत्रीय बैठक में भाग लेने के लिए 18-20 मार्च 2001 तक बैंकाक, थाईलैंड का दौरा किया। थाईलैंड, समोआ और भारत ने अपनी प्रगति रिपोर्ट और मॉड्यूल प्रस्तुत किए जो विद्यालयी शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में प्रवसन शिक्षा का समावेश करने के लिए तैयार किए गए थे। एन.सी.ई.आर.टी. की सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्याओं में प्रतिबिंबित प्रवसन शिक्षा के नमूने भी पेश किए गए।
- प्रो. आर.डी. शुक्ल, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम. ने शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अध्ययन केन्द्र (सी.एस.आई.सी.ई.) हिरोशिमा विश्वविद्यालय हिगाशी, जापान द्वारा आयोजित गणित और विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक परियोजना के लिए लेखकों की बैठक में भाग लेने के लिए 17 से 21 नवंबर 2001 तक जापान का दौरा किया। उन्होंने 'विद्यालयों में गणित तथा विज्ञान का अध्यापन-एक भारतीय अनुभव' शीर्षक अध्याय के रूप में अपना योगदान दिया।
- डॉ. के.बी. गुप्त, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम. ने पर्यावरणिक शिक्षा की पारस्परिक समर्थन प्रणालियों के विषय पर पर्यावरण शिक्षा को एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र में आगे प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेने के लिए 20-21 नवंबर 2001 को जापान की यात्रा की। एशिया के भिन्न-भिन्न देशों से आए सहभागियों ने अपने देश के बारे में रिपोर्टें पेश कीं और चार समूहों में काम किया। संगोष्ठी में छः सिफारिशें की गईं।
- डा. जे.एस. गिल, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम. ने विज्ञान शिक्षा में पर्यावरणिक मुद्दों के समावेश विषय पर चंडीगढ़, भारत में दक्षिण एशियाई देशों के लिए आयोजित उप-क्षेत्रीय कार्यशाला में 16 से 20 अप्रैल 2001 तक भाग लिया। उसमें उन्होंने 'विज्ञान पाठ्यचर्याओं के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा' विषय पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला में बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, नेपाल और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, एन.सी.ई.आर.टी., 'नीपा' और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इन संगठनों के एक नेटवर्क की स्थापना इस आयोजन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही।

वर्ष 2001-2002 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (24 सितंबर से 23 दिसंबर 2001 तक) की रिपोर्ट (फोटोकापी)।
- श्रीलंका के वरिष्ठ अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (4 फरवरी से 3 मई 2002 तक) की रिपोर्ट (फोटोकापी)।
- सर्व शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध पर उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम (11 से 23 फरवरी 2002) की रिपोर्ट।
- सर्व शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रबंध पर उप-क्षेत्रीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम के मॉड्यूल।

19

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन

परिषद् द्वारा प्रशासनिक और अकादमिक कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराने पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। इस प्रयोजनार्थ परिषद् द्वारा समय-समय पर कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, भावी योजनाएं विकसित की गईं। विभिन्न संघटकों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति का परिवीक्षण और उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने बहुत से कदम उठाए हैं। परिषद् ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए आदेशों, निर्देशों और राजभाषा नियमों की समुचित अनुपालना को सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए। इन कार्यकलापों में परिषद् द्वारा प्रशासनिक और अकादमिक कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराने पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। इस प्रयोजनार्थ परिषद् द्वारा समय-समय पर कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, भावी योजनाएं विकसित की गईं। विभिन्न संघटकों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति का परिवीक्षण और उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

परिषद् में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा नियमों के समुचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 27 अप्रैल 2001, 5 नवंबर 2001 और 20 मार्च 2002 को आयोजित की गईं। इन बैठकों के दौरान परिषद् के निदेशक की अध्यक्षता में पिछली बैठकों में लिए गए निर्णयों और उन पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर चर्चा की गई। पिछली बैठक के बाद हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा पूरे किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों के ब्यौरे भी समिति के समक्ष रखे गए। इन बैठकों के दौरान पिछली तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर भी समीक्षा की गई। ऐसी ही बैठकें क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में भी आयोजित की गईं।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

14 सितंबर से 28 सितंबर 2001 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं :

1. हिंदी टंकण प्रतियोगिता (कंप्यूटर पर)
2. हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता (कंप्यूटर पर)
3. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता
4. हिंदी टिप्पण एंवं प्रारूपण प्रतियोगिता
5. हिंदी निबंध प्रतियोगिता
6. हिंदी कविता प्रतियोगिता
7. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं में शैक्षिक/अकादमिक तथा प्रशासनिक दोनों श्रेणियों के कर्मचारियों ने भाग लिया और जिन्होंने सफलता प्राप्त की उन्हें पुरस्कृत किया गया। कुल मिलाकर 112 कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इनमें से 24 कर्मचारियों का कार्य-निष्पादन बहुत अच्छा रहा और उन्हें प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान तथा विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए।

समापन और पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर प्रो. एम.एस. खापर्डे, संयुक्त निदेशक (सी) ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को प्रशस्ति-पत्र तथा क्रमशः 800 रु., 500 रु. और 300 रु. के नकद पुरस्कार प्रदान किए। कुछ विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार भी वितरित किए गए। इस अवसर पर उन्होंने यह भी अपील की कि परिषद् में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक मात्रा में किया जाए।

कार्यान्वयन का परिवीक्षण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न अनुभागों/विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का मूल्यांकन करने की योजना के तहत निम्नलिखित अनुभागों का निरीक्षण किया गया :

1. शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन विभाग
2. परिसर/कैंपस अनुभाग
3. कल्याण अनुभाग
4. स्थापना समन्वय अनुभाग

हिंदी कार्यशाला

हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा प्रवीणता विकसित करने के लिए हिंदी प्रकोष्ठ ने अवर श्रेणी लिपिकों, उच्च श्रेणी लिपिकों, आशुलिपिकों, वैयक्तिक सहायकों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया।

हिंदी टंकण और आशुलिपि सहायता

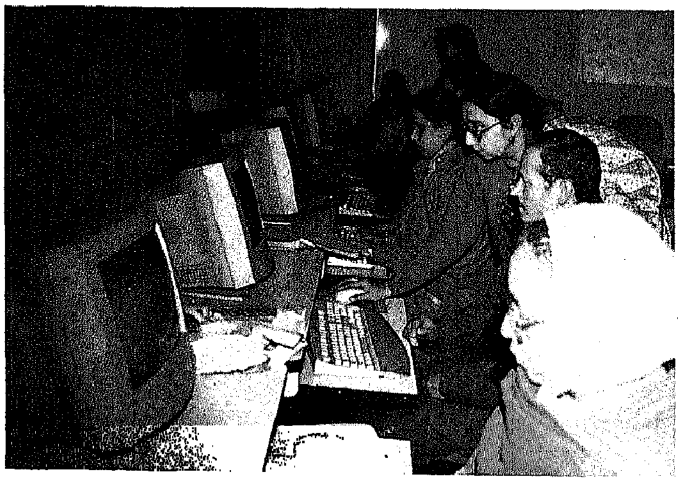
हिंदी प्रकोष्ठ ने परिषद् मुख्यालय के उन अनुभागों/प्रभागों/विभागों को हिंदी टंकण तथा आशुलिपिक सुविधाएँ प्रदान कीं जहाँ ये सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं।

अनुवाद कार्य

परिषद् के मुख्यालय के अनुभागों/एककों/विभागों से प्राप्त दस्तावेज़ों और प्रशासनिक कागज़-पत्रों का हिंदी में अनुवाद किया गया। इनमें राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले पत्रों अर्थात् कार्यालय आदेशों, ज्ञापनों, परिपत्रों, प्रेस विज्ञप्तियों, प्रशासनिक व लेखा संबंधी अन्य रिपोर्टों आदि का हिंदी अनुवाद भी शामिल है।

राजभाषा के प्रयोग के संबंध में त्रैमासिक प्रगति रिपोट

अकादमिक कार्य में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में सूचना प्राप्त करने के लिए एक अलग प्रपत्र (प्रोफॉर्मा) विकसित किया गया। अनुभागों/विभागों/क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के प्रशासनिक और अकादमिक कार्य में हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति के आंकड़े/डेटा संगृहीत एवं संकलित किए गए।



हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते हुए एन.सी.ई.आर.टी. के प्रशासनिक कार्मिक

20

परिशिष्ट

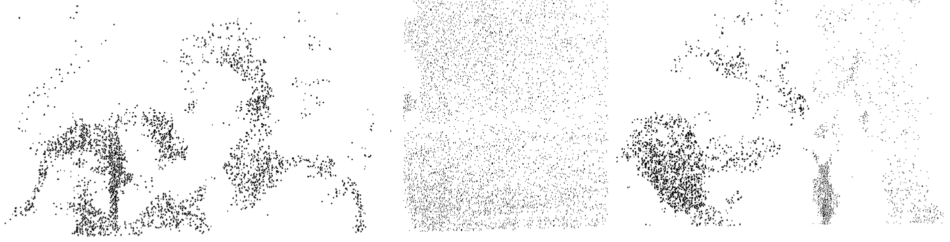
- **परिशिष्ट I**
  एन.सी.ई.आर.टी. की समितियां :
  वर्ष 2001-2002

- **परिशिष्ट II**
  संस्वीकृत स्टाफ की क्षमता : 31 मार्च 2002

- **परिशिष्ट III**
  राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् :
  31 मार्च 2002 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति एवं
  भुगतान लेखा

- **परिशिष्ट IV**
  वर्ष 2001-2002 के दौरान निकाले गए प्रकाशन

- **परिशिष्ट V**
  एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों के थोक एजेंटों के
  नाम और पते



एन.सी.ई.आर.टी. की समितियां : वर्ष 2001-2002

- महानिकाय
- कार्यकारिणी समिति
- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन एवं निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति
- सी.आई.ई.टी. का संस्थान सलाहकार बोर्ड
- पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल का संस्थान सलाहकार बोर्ड
- आर.आई.ई., अजमेर की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., भोपाल की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., भुवनेश्वर की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., मैसूर की प्रबंध समिति
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति

महानिकाय

(i) मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(पदेन) अध्यक्ष

1. डा. मुरली मनोहर जोशी
केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

(ii) अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
(पदेन)

2. डा. हरि प्रताप गौतम
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली 110 002

(iii) सचिव
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)
(पदेन)

3. श्री एम.के. काव
सचिव (शिक्षा)
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

(iv) भारत सरकार द्वारा नामित विश्वविद्यालय के चार उप-कुलपति
(प्रत्येक क्षेत्र से एक)

4. प्रो. सुजित के. बसु
उप-कुलपति
विश्व भारती
शान्ति निकेतन (पश्चिम बंगाल)

5. डा. संतोष कुमार
उप-कुलपति
हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय
सागर
मध्य प्रदेश

6. डा. के.एन. पाठक
उप-कुलपति
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

(v) प्रत्येक राज्य सरकार और विधान सभा से युक्त संघ राज्य क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि जो राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा मंत्री (अथवा उनका प्रतिनिधि) होंगे

7. प्रो. एम.एन. हेगड़े
उप-कुलपति
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर

8. विद्यालय शिक्षा मंत्री
आंध्र प्रदेश सरकार
ए.पी. सचिवालय भवन
हैदराबाद 500 022

9. विद्यालय शिक्षा मंत्री
अरुणाचल प्रदेश सरकार
ईटानगर 791 111

10. विद्यालय शिक्षा मंत्री
असम सरकार
जनता भवन
दिसपुर (असम) 781 006

11. विद्यालय शिक्षा मंत्री
बिहार सरकार
नया सचिवालय भवन
पटना 800 015

12. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गोवा सरकार
गोवा सचिवालय
पणजी 403 001

13. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गुजरात सरकार
ब्लॉक नं. 1, सचिवालय
गांधी नगर 382 010

14. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हरियाणा सरकार
हरियाणा सिविल सचिवालय
चंडीगढ़ 160 001

15. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला 171 002

16. विद्यालय शिक्षा मंत्री
जम्मू और कश्मीर सरकार
श्रीनगर 180 001

17. विद्यालय शिक्षा मंत्री
कर्नाटक सरकार
विधान सौध
बंगलौर 560 001

18. विद्यालय शिक्षा मंत्री
केरल सरकार
अशोक नंथनकोडे
तिरुअनंतपुरम 695 001

19. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मध्य प्रदेश सरकार
भोपाल 462 001

20 विद्यालय शिक्षा मंत्री
महाराष्ट्र सरकार
मंत्रालय मेन
मुंबई 400 032

21. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मणिपुर सरकार
मणिपुर सचिवालय
इम्फाल 759 001

22. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मेघालय सरकार
मेघालय सचिवालय
शिलांग 793 001

23. विद्यालय शिक्षा मंत्री
नागालैंड सरकार
कोहिमा 797 001

24. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मिजोरम सरकार
आइजोल 796 001

25. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उड़ीसा सरकार
उड़ीसा सचिवालय
भुवनेश्वर 751 001

26. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पंजाब सरकार
चंडीगढ़ 160 017

27. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राजस्थान सरकार
सरकारी सचिवालय
जयपुर 302 001

28. विद्यालय शिक्षा मंत्री
सिक्किम सरकार
सिक्किम सचिवालय
ताशिलिंग
गंगटोक 737 101

29. विद्यालय शिक्षा मंत्री
तमिलनाडु सरकार
फोर्ट सेंट जॉर्ज
चेन्नई 500 009

30. विद्यालय शिक्षा मंत्री
त्रिपुरा सरकार
सिविल सचिवालय
अगरतला 799 001

31. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पश्चिम बंगाल सरकार
राइटर्स बिल्डिंग
कोलकाता 700 001

32. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ 226 001

33. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय
दिल्ली 110 054

34. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पांडिचेरी सरकार
विधान सभा सचिवालय
विक्टर सिमोनल स्ट्रीट
पांडिचेरी 605 001

35. विद्यालय शिक्षा मंत्री
छत्तीसगढ़ सरकार
रायपुर
छत्तीसगढ़

36. विद्यालय शिक्षा मंत्री
झारखंड सरकार
रांची
झारखंड

37. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तरांचल सरकार
देहरादून, उत्तरांचल

(vi) कार्यकारिणी समिति के वे सदस्य जो ऊपर दी गई सूची में सम्मिलित नहीं हैं

38. प्रो. रीता वर्मा
शिक्षा राज्य मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग)
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110 001



39. प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

40 डा. ए.के. गुप्ता
अध्यक्ष
जे.के. अनुप्रयोग भौतिक और प्रौद्योगिकी संस्थान
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद
(उत्तर प्रदेश)

41. डा. के. गोपालन
पूर्व निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
चामेली चेरमुकु, त्रिचूर 680 020
केरल

42. डा. जी.एस. नेगी
प्रधानाचार्य
भारतीय विद्या भवन
सीनियर सेकंडरी स्कूल
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली 110 001

43. कुमारी खालिदा ज़ाहिदी
प्रधानाध्यापिका
म.न. 3098
गली निसार अहमद
कूचा पंडित
दिल्ली 110 006

44. प्रो. एम.एस. खापर्डे
संयुक्त निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

45. प्रो. एस. ज़ैड. हैदर
संयुक्त निदेशक
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
(एन.सी.ई.आर.टी.)
131, जोन-2
एम.पी. नगर
भोपाल 462 011

46. प्रो. नीरजा शुक्ला
अध्यक्ष
डी.ई.जी.एस.एन.
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

47. डा. ए.एन. गुप्ता
रीडर, रसायन विज्ञान
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 750 007

48. श्री एम.एम. झा
संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा)
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

49. श्री वी.के. पिपरसेनिया
संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

(vii) (क) अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
नई दिल्ली
(पदेन)

50. अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केंद्र
2, कम्युनिटी सेंटर
प्रीत विहार
दिल्ली 110 092

(ख)	आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन नई दिल्ली (पदेन)	51.	आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया शहीद जीत सिंह मार्ग नई दिल्ली 110 016
(ग)	निदेशक केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो नई दिल्ली (पदेन)	52.	निदेशक केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (डी.जी.एच.एस.) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय कोटला रोड नई दिल्ली 110 002
(घ)	उपमहानिदेशक प्रभारी, कृषि शिक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली (पदेन)	53.	उपमहानिदेशक प्रभारी, कृषि शिक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कृषि अनुसंधान भवन, पूसा नई दिल्ली 110 012
(ड.)	निदेशक (प्रशिक्षण) प्रशिक्षण और रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय नई दिल्ली (पदेन)	54.	निदेशक (प्रशिक्षण) प्रशिक्षण और रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय श्रम शक्ति भवन नई दिल्ली 110 001
(च)	शिक्षा प्रभाग के प्रतिनिधि योजना आयोग नई दिल्ली (पदेन)	55.	प्रधान शिक्षा सलाहकार योजना आयोग योजना भवन, संसद मार्ग नई दिल्ली 110 001
(viii)	भारत सरकार द्वारा मनोनीत छः व्यक्ति (जिनमें कम से कम चार स्कूली अध्यापक हों)	56.	श्रीमती कमलदीप पीटर केंद्रीय विद्यालय 13वां चौराहा मल्लेश्वरम, बंगलौर 560 055
		57.	श्रीमती कमला बतरा पी.जी.टी., गीता निकेतन आवासीय स्कूल कुरुक्षेत्र, हरियाणा

58. श्री के. वासुदेवन
गवर्नमेंट हाईस्कूल
डा.घ. पठमंगलम्
कैथापुरम
एम.एम. बाजार
कन्नूर

59. डा. एच.पी. राजगुरु
भू.पू. उप निदेशक
नवोदय विद्यालय
भोपाल

60. श्री जी.एस. नेगी
प्रधानाचार्य
भारतीय विद्या भवन
सीनियर सेकंडरी स्कूल
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली 110 001

61. श्रीमती अनीता देवराज
प्रधानाचार्य
डी.ए.वी. स्कूल
बहादुरगढ़
हरियाणा

विशेष आमंत्रित

62. सचिव
भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा परिषद्
प्रगति भवन
तीसरी मंजिल
47, नेहरु प्लेस
नई दिल्ली 110 019

संयोजक

63. श्री सतिन्दर सिंह
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

कार्यकारिणी समिति

(i)	परिषद् के अध्यक्ष जो कार्यकारिणी के पदेन अध्यक्ष होंगे	1.	डा. मुरली मनोहर जोशी केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
(ii) (क)	मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री (शिक्षा) जो कार्यकारिणी के पदेन उपाध्यक्ष होंगे	2.	प्रो. रीता वर्मा राज्य मंत्री शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
(ख)	परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा उपमंत्री	3.	...
(ग)	परिषद् के निदेशक	4.	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
(घ)	सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (पदेन)	5.	श्री एम.के. काव सचिव (शिक्षा) भारत सरकार माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
(iii)	अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग *सदस्य* (पदेन)	6.	डा. हरि प्रताप गौतम अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली 110 002

(iv) अध्यक्ष द्वारा मनोनीत स्कूल शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल के अध्यापक हों)	7. डा. ए.के. गुप्ता अध्यक्ष जे.के. अनुप्रयुक्त भौतिकी संस्थान इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
	8. डा. के. गोपालन पूर्व निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. चामेली, चेरमुकु त्रिचूर 680 020 केरल
	9. डा. जी.एस. नेगी प्रधानाचार्य भारतीय विद्या भवन सीनियर सेकंडरी स्कूल कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली 110 001
	10. कुमारी खालिदा ज़ाहिदी प्रधानाध्यापिका म.नं. 3098 गली निसार अहमद कूचा पंडित दिल्ली 110 006
(v) परिषद् के संयुक्त निदेशक	11. प्रो. एम.एस. खापर्डे संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
(vi) अध्यक्ष द्वारा मनोनीत परिषद् के संकाय के तीन सदस्य (जिनमें कम से कम दो सदस्य प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के हों)	12. प्रो. एस. ज़ैड. हैदर संयुक्त निदेशक पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. 131, ज़ोन-2 एम.पी. नगर भोपाल 462 011

13. प्रो. नीरजा शुक्ला
अध्यक्ष
डी.ई.जी.एस.एन.
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

14. डा. ए.एन. गुप्ता
रीडर, रसायन विज्ञान
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर

(vii) मानव संसाधन विकास/शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि

15. श्री एम.एम. झा
संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा)
माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

(viii) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा

16. श्री वी.के. पिपरसेनिया
संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

(ix) परिषद् के सचिव कार्यकारी समिति के सचिव होंगे

17. श्री सतिन्दर सिंह *संयोजक*
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

वित्त समिति

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. (पदेन)	*अध्यक्ष*	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी.	*सदस्य*	प्रो. एम.एस. खापर्डे संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
वित्तीय सलाहकार (मा.सं.वि.मं.)	*सदस्य*	श्री वी.के. पिपरसेनिया संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 016
	सदस्य	प्रो. एन.के. अम्बष्ट अध्यक्ष राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय बी-31–बी, कैलाश कालोनी नई दिल्ली 110 048
	सदस्य	डा. अशोक गांगुली अध्यक्ष केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड शिक्षा केंद्र 2 कम्युनिटी सेंटर प्रीत विहार दिल्ली 110 092
सचिव एन.सी.ई.आर.टी.	*सदस्य-संयोजक*	श्री सतिन्दर सिंह सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016

स्थापना समिति

(i)	परिषद् के निदेशक (पदेन) — *अध्यक्ष*	1.	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
(ii)	परिषद् के संयुक्त निदेशक उपाध्यक्ष (पदेन)	2.	प्रो. एम.एस. खापर्डे संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
(iii)	परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का नामित व्यक्ति	3.	संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
(iv)	अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद् जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4.	प्रो. एम.एस. सोढा एफ.एन.ए. बी-113, निराला नगर लखनऊ 122 027
		5.	डा. दिवाकर कुंडु प्रोफेसर (शिक्षा) विश्व भारती शांतिनिकेतन पश्चिम बंगाल
		6.	डॉ. डी.पी. तिवारी पूर्व उप कुलपति मेरठ विश्वविद्यालय एम-24, मिनी कैम्पस आई.आई.टी. हौज़ खास नई दिल्ली 110 016

	7. प्रो. रमेश घंटा डीन शिक्षा विभाग काकतीय विश्वविद्यालय वारांगल (आंध्र प्रदेश)
(v) अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	8. प्रो. ए.बी. सक्सेना प्रधानाचार्य क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर 305 004
(vi) अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा मनोनीत राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (नई दिल्ली) से एक प्रतिनिधि	9. डा. (श्रीमती) नीरजा शुक्ला प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डी.ई.जी.एस.एन. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
(vii) परिषद् के शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक नियमित स्टाफ, प्रत्येक में से एक-एक प्रतिनिधि जिनका चयन परिशिष्ट में इस संबंध में निर्धारित विनियम के अनुसार किया गया हो	10. — 11. श्री नेपाल सिंह यू.डी.सी., सी.आई.ई.टी. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली 110 016 (23-7-2004 तक) (गैर-शैक्षिक स्टाफ के प्रतिनिधि)
(viii) वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी.	12. श्री वी.के. पिपरसेनिया वित्तीय सलाहकार माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
(ix) सचिव एन.सी.ई.आर.टी. सदस्य-संयोजक	13. श्री सतिन्दर सिंह सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016

भवन एवं निर्माण समिति

1.	निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. (पदेन)	*अध्यक्ष*	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
2.	संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. (पदेन)	*उपाध्यक्ष*	प्रो. एम.एस. खापर्डे संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
3.	मुख्य अभियंता केंद्रीय लोक निर्माण विभाग या उनका प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री वी.के. शर्मा अधीक्षक अभियंता केंद्रीय लोक निर्माण विभाग कमरा सं. 113, सेवा भवन आर.के. पुरम नई दिल्ली 110 022
4.	वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री एस.के. ग्रोवर उप-वित्तीय सलाहकार शहरी विकास एवं ग़रीबी उन्मूलन मंत्रालय वित्त प्रभाग निर्माण भवन नई दिल्ली 110 001
5.	एन.सी.ई.आर.टी. परामर्शदाता वास्तुकार	*सदस्य*	श्री दीना नाथ वरिष्ठ वास्तुकार केंद्रीय लोक निर्माण विभाग सेवा भवन आर.के. पुरम नई दिल्ली 110 022
6.	परिषद् के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री वी.के. पिपरसेनिया संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001

7.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री एम.एम. झा संयुक्त सचिव (विद्यालय) माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
8.	एक प्रतिष्ठित सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	श्री जी.सी. राजोरिया कार्यकारी इंजीनियर प्रभाग-5, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग सरोजिनी नगर नई दिल्ली 110 023
9.	एक प्रतिष्ठित विद्युत अभियंता (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	श्री एस.एन. गिरोत्रा संस्थान अभियंता (विद्युत) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली 110 016
10.	कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	प्रो. एस.ज़ैड. हैदर संयुक्त निदेशक पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) 131, जोन-2, एम.पी. नगर भोपाल 462 011
11.	सचिव एन.सी.ई.आर.टी.	*सदस्य-सचिव*	श्री सतिन्दर सिंह सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत *अध्यक्ष*
   निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
   नई दिल्ली 110 016

2. प्रो. एम.एस. खापर्डे *उपाध्यक्ष*
   संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
   नई दिल्ली 110 016

एन.सी.ई.आर.टी. के अध्यक्ष द्वारा नामित पांच सदस्य जो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं शिक्षा तथा अन्य संबंधित विषय के विभागाध्यक्ष हों

3. डा. आर.पी. सिंघल
   डी-24, सी.सी. कालोनी
   समीप राणा प्रताप बाग
   दिल्ली 110 007

4. डा. पुरुषोत्तम पटेल
   प्रोफेसर एमेरिटस
   गुजरात विद्यापीठ
   आश्रम रोड, अहमदाबाद 380 014

5. डा. मनमोहन सिंह
   प्रोफेसर
   पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय
   शिलांग 793 008

6. डा. (श्रीमती) सुमन करंदीकर
   999-बी, नियोजन फाटक
   बंग नवी पेठ, पुणे 411 030

7. डा. सी. शेषाद्रि
   391, पूर्णदृष्टि रोड
   सी व डी ब्लाक, कुवेंपुनगर
   मैसूर 570 023

एन.सी.ई.आर.टी. के अध्यक्ष द्वारा नामित राज्य शिक्षा संस्थानों के पांच निदेशक

8. निदेशक
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
   आंध्र प्रदेश
   हैदराबाद

9. निदेशक
   महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक अनुसंधान
   एवं प्रशिक्षण परिषद्
   सदाशिव पेठ
   पुणे 411 030

10. निदेशक
    सिक्किम राज्य शिक्षा संस्थान
    गंगटोक 737 101

11. निदेशक
    राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
    निशात गंज, लखनऊ 228 007

12. निदेशक
    राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
    गुजरात, गांधी नगर 382 021

एन.आई.ई. के प्रत्येक विभाग के दो प्रतिनिधि जिनमें से एक विभागाध्यक्ष तथा एक प्रिंसिपल हो और एन.सी.ई.आर.टी. की प्रत्येक संघटक संस्था से एक प्रोफेसर/रीडर जो निदेशक द्वारा नामित हो

13. संयुक्त निदेशक
    केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
    (सी.आई.ई.टी.), एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली

14. प्रो. आर.एल. फुटेला
केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
नई दिल्ली

15. संयुक्त निदेशक
पंडित सुंदरलाल शर्मा
केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
(पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
भोपाल 462 011

16. प्रो. ए.के. सचेती
पंडित सुंदरलाल शर्मा
केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
(पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
भोपाल 462 011

17. प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर 305 004

18. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर 305 004

19. प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर 462 013

20. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल 462 013

21. प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 751 007

22. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 751 007

23. प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर 570 006

24. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर 570 006

25. विशेष कार्याधिकारी
पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
शिलांग 793 003

26. अध्यक्ष
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
(डी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

27. डा. (श्रीमती) शुक्ला भट्टाचार्य
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

28. अध्यक्ष
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
(डी.ई.जी.एस.एन.) एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

29. प्रो. (कु.) के. शर्मा
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
(डी.ई.जी.एस.एन.) एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

30. अध्यक्ष
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

31. डा. (श्रीमती) गौरी श्रीवास्तव
रीडर
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

32. अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एस.एच.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

33. प्रो. (श्रीमती) सविता सिन्हा
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एस.एच.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

34. अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

35. प्रो. हुकुम सिंह
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

36. अध्यक्ष
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग
(डी.सी.ई.टी.ए.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

37. प्रो. एच.ओ. गुप्ता
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

38. अध्यक्ष
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

39. डा. के.पी. गर्ग
रीडर
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

40. प्रो. वी.के. जैन
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

41. अध्यक्ष
शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
(डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

42. प्रो. सतवीर सिंह
शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
(डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

43. अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
(डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

44. प्रो. वी.के. रत्न
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
(डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

45. अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

46. डा. (श्रीमती) सुषमा गुलाटी
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

47. अध्यक्ष
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग
(डी.ई.आर.पी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

48. अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

49. अध्यक्ष
योजना, प्रोग्रामिंग, परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

50. डा. जे.पी. मित्तल
रीडर
योजना, प्रोग्रामिंग, परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

51. अध्यक्ष
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

52. अध्यक्ष
पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग
(डी.एल.डी.आई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

53. संयुक्त शिक्षा सलाहकार (ए)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

54. सचिव *संयोजक*
एन.सी.ई.आर.टी.

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

एन.सी.ई.आर.टी. से

1. डीन (अनुसंधान) *अध्यक्ष*
2. डीन (अकादमिक)
3. डीन (समन्वय)
4. एन.सी.ई.आर.टी. के सभी संघटकों के अध्यक्ष
   - (i) संयुक्त निदेशक
     केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
   - (ii) संयुक्त निदेशक
     पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल
   - (iii) प्रधानाचार्य
     क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
   - (iv) प्रधानाचार्य
     क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
   - (v) प्रधानाचार्य
     क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
   - (vi) प्रधानाचार्य
     क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
   - (vii) विशेष कार्य अधिकारी
     उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग
   - (viii) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों/प्रभागों के अध्यक्ष
5. अध्यक्ष, डी.ई.आर.पी.पी. *संयोजक*

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) के प्रतिनिधि

(i) निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छटलांग, आइजोल 796 012
मिजोरम

(ii) निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
तिरुअनंतपुरम, पूजापुरा
केरल

विशेषज्ञ/शिक्षाविद्/अनुसंधान अध्येता

1. अध्यक्ष
   केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
   शिक्षा केंद्र
   2, सामुदायिक केंद्र
   प्रीत विहार
   नई दिल्ली 110 092
2. डा. दिवाकर कुंडु
   प्रोफेसर, शिक्षा
   विश्व भारती, शांतिनिकेतन
   पश्चिम बंगाल
3. प्रो. सी.एल. आनंद
   एफ-87, विकासपुरी
   नई दिल्ली 110 018
4. प्रो. लोकेश कौल
   प्रोफेसर एमेरिटस
   4, जुटोग व्यू
   टीचर्स फ्लैट्स, समरहिल
   शिमला 171 005 (हि.प्र.)
5. प्रो. पी.आर. पंचमुखी
   निदेशक
   बहुविषयक विकास अनुसंधान केंद्र
   धारवाड़
6. प्रो. डी.के. मेनन
   19, गेबल क्लोज
   एबोट्स लैंग्ले, वैटफोर्ड हर्ट्स
   डब्ल्यू.डी.-5 ओ.एल.डी., यू.के.

7. प्रो. आर.एस. पांडे
172, किदवई नगर
इलाहाबाद (उ.प्र.)

8. प्रो. पी.एल. चतुर्वेदी
पूर्व उप कुलपति
3/30 जवाहर नगर
जयपुर (राजस्थान)

स्थायी विशेष आमंत्रित (निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित)

1. संयुक्त सचिव (माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा)
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

2. प्रो. (सुश्री) कुसुम शर्मा
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
(डी.ई.जी.एस.एन.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

3. प्रो. (श्रीमती) एम. चंद्रा
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

4. प्रो. सरला राजपूत
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.) एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

5. प्रो. सतवीर सिंह
शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
(डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

6. प्रो. आर.एल. फुटेला
केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
(सी.आई.ई.टी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

7. प्रो. ए.के. सचेती
पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
भोपाल

8. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

9. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

10. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

11. डीन (अनुदेशन)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति

1. डीन (अकादमिक) *अध्यक्ष*
एन.सी.ई.आर.टी.

2. अध्यक्ष
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

3. अध्यक्ष
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
(डी.ई.जी.एस.एन), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

4. अध्यक्ष
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

5. अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एस.एच.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

6. अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

7. अध्यक्ष
कंप्यूटर शिक्षा तथा प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग
(डी.सी.ई.टी.ए.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

8. अध्यक्ष
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

9. अध्यक्ष
शैक्षिक सर्वेक्षण और आँकडा संसाधन विभाग
(डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

10. अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
(डी.टी.ई.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

11. अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

12. अध्यक्ष
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग
(डी.ई.आर.पी.पी.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

13. अध्यक्ष
पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग
(डी.एल.डी.आई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

14. अध्यक्ष
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

15. अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

16. अध्यक्ष
योजना, प्रोग्रामिंग, परिवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग
(पी.पी.एम.ई.डी.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

17. डा. हुकुम सिंह
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

18. डा. अवतार सिंह
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

19. डा. (श्रीमती) सुषमा गुलाटी
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

20. डा. (श्रीमती) एन. सब्बरवाल
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
(डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

21. डा. डी.पी. पटनायक
बी-188, बारामुंडा, डुपलेक्स कालोनी
भुवनेश्वर 751 003

22. डा. एस.सी. सर्मा
20-8/2-7, न्यू अयोध्या नगर
विजयवाड़ा-3 (आंध्र प्रदेश)

23. प्रो. एस.एन. सिंह
(i) 36/34-के-1, शक्ति नगर
कबीर नगर
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
(ii) मार्फत ग्लोब बुक सेंटर
लंका, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

24. डा. सीताराम जायसवाल
निदेशक
बी-23, सेक्टर-ए
महानगर
लखनऊ-226 006 (उत्तर प्रदेश)

25. डा. एस.के. गुप्ता
बी-17, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली

सी.आई.ई.टी. का संस्थान सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक *अध्यक्ष*
   सी.आई.ई.टी.
2. प्रो. आर.एल. फुटेला
   सी.आई.ई.टी.
3. डा. एस.पी. बन्याल, रीडर
   सी.आई.ई.टी.
4. डा. हरमेश लाल, रीडर
   सी.आई.ई.टी.
5. श्री एम. ब्रह्माजी, अध्यक्ष
   डी.पी.ओ.एम. प्रभाग
   सी.आई.ई.टी.
6. एन.आई.ई. के सभी विभागों के अध्यक्ष
7. प्रो. लोकेश कौल
   डीन (अध्ययन) एवं अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
   शिमला
8. श्री पूरन चंद
   संयुक्त आयुक्त (अकादमिक)
   केंद्रीय विद्यालय संगठन
   न्यू महरौली रोड
   नई दिल्ली 110 016
9. प्रो. ओ.एस. देवल
   ई-250, मयूर विहार, फेस II
   नई दिल्ली
10. प्रो. डी.पी. तिवारी
    16-ए, मंदाकिनी एनक्लेव
    अलकनंदा परिसर
    नई दिल्ली 110 019
11. प्रो. एन.के. अम्बष्ट
    अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय
    बी-31-बी, कैलाश कालोनी
    नई दिल्ली 110 048

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल का संस्थान सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक *अध्यक्ष*
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल
2. प्रो. ए.के. सचेती
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल
3. प्रो. ए.पी. वर्मा
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल
4. प्रो. डी.के. वैद
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल
5. प्रो. एन.के. अम्बष्ट
   अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय
   बी-31-बी, कैलाश कालोनी
   नई दिल्ली 110 048

6. अध्यक्ष
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
सी-2/10, सफदरजंग विकास क्षेत्र
श्री अरविन्द मार्ग
नई दिल्ली 110 016

7. प्रो. एस.वी. आर्य
49, आलोक नगर
आधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

8. प्रो. वी.डी. देशमुख
निदेशक (व्यावसायिक शिक्षा)
व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय
3, महापालिका मार्ग, पोस्ट बाक्स नं. 10036
मुंबई 400 001

9. डा. रवि प्रकाश
ई-100/40, शिवाजी नगर
भोपाल 462 016

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर की प्रबंध समिति

1. उपकुलपति — *अध्यक्ष*
एम.डी.एस. विश्वविद्यालय
अजमेर

2. प्रधानाचार्य — *उपाध्यक्ष*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

क्षेत्र में स्थित प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा विभाग का एक नामिती

3. निदेशक — *सदस्य*
सहायता प्राप्त निजी विद्यालय
द्वारा डी.पी.आई. (एस) पंजाब
चंडीगढ़

4. उप-निदेशक — *सदस्य*
द्वारा निदेशक
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा सरकार
चंडीगढ़

5. शिक्षा निदेशक — *सदस्य*
हिमाचल प्रदेश सरकार, लालपानी
शिमला 171 001

6. प्रधानाचार्य — *सदस्य*
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय
चंडीगढ़

7. अपर शिक्षा निदेशक — *सदस्य*
(विद्यालय)
पुराना सचिवालय, कमरा नं. 3
दिल्ली

8. प्रधानाचार्य, आई.ए.एस.ई. — *सदस्य*
अजमेर (राजस्थान)

9. संयुक्त निदेशक (विद्यालय शिक्षा) — *सदस्य*
श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर)

10. निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. — *सदस्य*
लखनऊ (उ.प्र.)

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

11. डा. लोकेश कौल — *सदस्य*
भूतपूर्व प्रोफेसर एवं डीन
शिक्षा विभाग
शिमला विश्वविद्यालय
समर हिलस, शिमला

12. डा. टी.एन. धर *सदस्य*
भूतपूर्व शिक्षा सलाहकार
योजना आयोग
नई दिल्ली

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. के एक नामिती

13. हर बार बैठक से पहले निश्चित किया जाएगा

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के दो विभागाध्यक्ष

14. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष *सदस्य*
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

15. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष *सदस्य*
शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर जिससे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है, के उपकुलपति का नामिती

16. डा. वी.के. वसिष्ठ *सदस्य*
एम.डी.एस. विश्वविद्यालय
अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल की प्रबंध समिति

1. उपकुलपति *अध्यक्ष*
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल

2. प्रधानाचार्य *उपाध्यक्ष*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

क्षेत्र के प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा विभाग का एक नामिती

3. प्रधान सचिव *सदस्य*
विद्यालय शिक्षा विभाग
(म.प्र.), भोपाल

4. निदेशक *सदस्य*
जी.सी.ई.आर.टी.
गांधीनगर (गुजरात)

5. निदेशक *सदस्य*
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
पुणे

6. निदेशक *सदस्य*
विद्यालय शिक्षा, गोवा सरकार
शिक्षा निदेशालय, पणजी, गोवा

7. सहायक शिक्षा निदेशक *सदस्य*
(अकादमिक)
दादर और नगर हवेली
सिलवासा

8. सहायक शिक्षा निदेशक *सदस्य*
(अकादमिक)
दमन एवं द्वीप

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

9. डा. रवि प्रकाश *सदस्य*
भूतपूर्व उपकुलपति
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय
ई-100/40 शिवाजी नगर
भोपाल 462 016

10. डा. एस.एस. कालबाग *सदस्य*
विज्ञान आश्रम
पबाल, जिला-पुणे
महाराष्ट्र

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का एक नामिती

11. हर बार बैठक से पहले अलग से निश्चित किया जाएगा

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के दो विभागाध्यक्ष

12. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, विज्ञान एवं *सदस्य*
गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

13. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष *सदस्य*
शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है

14. डा. एच.के. गोस्वामी *सदस्य*
प्रोफेसर (आनुवंशिकी) एवं अध्यक्ष
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

15. संतोष कुमार *सदस्य*
जीव विज्ञान विभाग
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर की प्रबंध समिति

1. उपकुलपति *अध्यक्ष*
उत्कल विश्वविद्यालय
भुवनेश्वर

2. प्रधानाचार्य *उपाध्यक्ष*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक नामिती

1. अपर सचिव *सदस्य*
विद्यालय एवं जन शिक्षा विभाग
उड़ीसा सरकार, उड़ीसा सचिवालय
भुवनेश्वर

2. संयुक्त सचिव *सदस्य*
विद्यालय शिक्षा विभाग
पश्चिम बंगाल सरकार
विकास भवन (पांचवां तल)
कोलकाता 700 091

3. उप सचिव *सदस्य*
मानव संसाधन विकास विभाग, शिक्षा
बिहार सरकार
नया सचिवालय
पटना

4. सहायक शिक्षा निदेशक (प्रशासन) *सदस्य*
अंडमान एवं निकोबार प्रशासन
पोर्ट ब्लेयर

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

1. डा. दिवाकर कुंडू *सदस्य*
शिक्षा विभाग
विश्व भारती, शांतिनिकेतन
जिला बीरभूम
पश्चिम बंगाल

2. प्रो. आर.पी. सिंह *सदस्य*
भूतपूर्व डीन (शिक्षा)
बी-45, लोहिया नगर
पटना

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का एक नामिती

1. हर बार बैठक से पहले अलग से निश्चित किया जाएगा

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के दो विभागाध्यक्ष

1. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष *सदस्य*
   विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भुवनेश्वर

2. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष *सदस्य*
   शिक्षा विभाग
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भुवनेश्वर

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है

1. प्रो. (श्रीमती) रीता रॉय
   स्नातकोत्तर समाज विज्ञान विभाग
   उत्कल विश्वविद्यालय
   वाणी विहार, भुवनेश्वर 751 005

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर की प्रबंध समिति

1. उपकुलपति *अध्यक्ष*
   मैसूर विश्वविद्यालय
   मैसूर

2. प्रधानाचार्य *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   मैसूर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा विभाग का एक नामिती

1. निदेशक *सदस्य*
   डी.एस.ई.आर.टी.
   बी.पी. वाडिया रोड, बसावनगुडी
   बंगलौर 560 004

2. निदेशक *सदस्य*
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
   आंध्र प्रदेश सरकार
   हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

3. निदेशक *सदस्य*
   डी.टी.ई.आर.टी.
   कॉलेज़ रोड
   चेन्नई (तमिलनाडु)

4. निदेशक *सदस्य*
   डी.एस.ई.आर.टी.
   तिरुअनंतपुरम

5. सचिव (शिक्षा) *सदस्य*
   पांडिचेरी सरकार
   पांडिचेरी 605 001

6. शिक्षा अधिकारी (कोचि) *सदस्य*
   शिक्षा निदेशालय, लक्षद्वीप प्रशासन
   लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र
   कावारत्ती (वाया) कोचीन

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

7. श्री के.पी. सुरेंद्रनाथ *सदस्य*
   भूतपूर्व अध्यक्ष
   दक्षिण क्षेत्रीय समिति
   राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
   सं. 145, संतृप्ति
   छठा सी मैन
   सातवां ए क्रॉस
   एच.एम.टी. लेआउट
   विश्वेश्वरैया नगर
   आर.टी. नगर
   बंगलौर 560 032

8. श्री ए.वी. भास्करन *सदस्य*
संगठन सचिव
दक्षिण जोन
केशव मंदिरम्
कलेक्केड
पालघाट 678 015

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का एक नामिती

9. हर बार बैठक से पहले अलग से निश्चित किया जाएगा

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के दो विभागाध्यक्ष

10. अध्यक्ष *सदस्य*
शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर

11. अध्यक्ष *सदस्य*
विज्ञान विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परिषद् मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. — *सदस्य*
4. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. — *सदस्य*
5. सभी विभागों/प्रभागों के अध्यक्ष — *सदस्य*
6. सभी उपसचिव — *सदस्य*
7. मुख्य लेखाधिकारी — *सदस्य*
8. सतर्कता एवं सुरक्षा अधिकारी — *सदस्य*
9. जन संपर्क अधिकारी — *सदस्य*
10. निदेशक, राजभाषा मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली — *सदस्य*
11. निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, नई दिल्ली — *सदस्य*
12. प्रोफेसर एवं प्रभारी, हिंदी प्रकोष्ठ — *सदस्य-सचिव*
13. हिंदी अधिकारी — *सदस्य*

परिषद् की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. — *सदस्य*
4. संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. — *सदस्य*
5. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. — *सदस्य*
6. सभी विभागों/प्रभागों के अध्यक्ष — *सदस्य*
7. सभी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के प्रधानाचार्य — *सदस्य*
8. विशेष कार्याधिकारी (ओ.एस.डी.) पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग — *सदस्य*
9. सभी क्षेत्र सलाहकार — *सदस्य*
10. सभी उपसचिव — *सदस्य*
11. मुख्य लेखाधिकारी — *सदस्य*
12. सतर्कता एवं सुरक्षा अधिकारी — *सदस्य*
13. जन संपर्क अधिकारी — *सदस्य*
14. प्रोफेसर एवं प्रभारी हिंदी प्रकोष्ठ — *सदस्य-सचिव*
15. हिंदी अधिकारी — *सदस्य*

एन.सी.ई.आर.टी. के संस्वीकृत स्टाफ की क्षमता/संख्या : 31 मार्च 2002 को

क्र.सं.	संघटक	क			ख			ग			घ	जोड़
		अका.	प्रशा.	आनु.	अका.	प्रशा.	आनु.	अका.	प्रशा.	अनु.		
1	एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय	197	30	80	01	250	113	02	317	224	295	1509
2	आर.आई.ई., अजमेर	59	01	04	22	13	04	29	40	41	84	297
3	आर.आई.ई., भोपाल	58	02	04	22	20	–	42	57	18	91	314
4	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	58	01	03	27	13	05	55	35	40	92	329
5	आर.आई.ई., मैसूर	60	01	03	19	12	06	44	35	36	75	291
6	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग	02	01	–	–	02	–	–	03	02	04	14
7	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल	40	03	–	–	05	01	–	25	03	06	83
8	आर.पी.डी.सी. (दक्षिण क्षेत्र की क्षेत्रस्थ इकाइयों सहित)	06	–	04	–	06	04	–	12	07	10	49
	जोड़	**480**	**39**	**98**	**91**	**321**	**133**	**172**	**524**	**371**	**657**	**2886**

* क्षेत्रस्थ सलाहकार एवं सहायक क्षेत्रस्थ सलाहकारों के तीन पद, दक्षिणी क्षेत्र में

अका. - अकादमिक
प्रशा. - प्रशासनिक
आनु. - आनुषंगिक

परिशिष्ट III

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
31 मार्च 2002 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

प्राप्तियां	चालू वर्ष 2001-02	राशि रु. में	गत वर्ष 2000-01	राशि रु. में
I. अथशेष				
क) रोकड़ शेष और बैंक जमा	347,374,339		181,967,642	
ख) मार्गस्थ निधि	9,800,000	357,174,339	9,997,447	191,965,089
II. प्राप्त अनुदान				
क) भा.स., मा.सं.वि.मं. से				
i) योजनेतर	300,000,000		265,800,000	
ii) योजनागत	83,700,000	383,700,000	96,700,000	362,500,000
ख) अन्य स्रोतों से (विशिष्ट अनुदान)		127,642,645		290,790,978
III. निवेशों पर प्राप्त आय				
क) दीर्घावधिक निवेश से	42,296,874		36,313,864	
ख) अल्पावधिक निवेश से	7,349,600	49,646,474	10,976,290	47,290,154
IV. प्राप्त ब्याज				
ऋणों एवं अग्रिमों से		2,745,680	2,458,880	

भुगतान	चालू वर्ष 2001-02	राशि रु. में	गत वर्ष 2000-01	राशि रु. में
I. व्यय				
(अ) स्थापना व्यय				
क) वेतन व मजदूरी				
योजनेतर				
i) अधिकारियों को वेतन	100,824,603		100,729,073	
ii) कर्मचारियों का वेतन	112,325,941		113,403,770	
iii) छात्रवृत्तियां/अध्येता वृत्तियां	669,836	213,820,380	617,123	214,749,966
योजनागत				
i) अधिकारियों का वेतन	689,546		528,964	
ii) कर्मचारियों का वेतन	671,445		653,147	
iii) छात्रवृत्तियां/अध्येता वृत्तियां	-	1,360,991	18,546	1,200,657
ख) भत्ते व बोनस				
योजनेतर				
i) भत्ते व मानदेय	144,333,746		130,662,033	
ii) यात्रा भत्ता	3,625,726	147,959,472	47,072,890	134,734,923
योजनागत				
i) भत्ते व मानदेय	874,018		1,142,562	
ii) यात्रा भत्ता	277,457	1,151,475	577,982	1,720,544
ग) स्टाफ कल्याण				
i) डी.एल.आई.एस.	270,000		572,732	
ii) मृत्यु राहत स्कीम	640,031	910,031	221,258	793,990
(घ) पेंशन व डी.सी.आर.जी.		121,687,720		115,521,344
(ब) प्रशासनिक व्यय				
i) अन्य प्रभार				
योजनेतर	81,191,118		76,763,626	
योजनागत	2,507,378	83,698,496	1,599,686	78,363,312

प्राप्तियां	चालू वर्ष 2001-02	राशि रु. में	गत वर्ष 2000-01	राशि रु. में	भुगतान	चालू वर्ष 2001-02	राशि रु. में	गत वर्ष 2000-01	राशि रु. में
VI.(ब) प्रेषित राशियां					ञ) जी.पी.एफ.	105,080,910		106,249,132	
					ट) सी.पी.एफ.	3,337,199		2,992,436	
क) प्र.मं. राहत कोष	20,377		837,419		ठ) बचाना/प्रतिभूति	3,520,251		2,268,801	
ख) आई.जे.वी.ई.	4,180		11,894		ड) अवधान राशि	90,100		35,650	
ग) जी.पी.एफ./सी.पी.एफ./ई.पी.एफ.	671,720		565,233		ढ) अन्य जमा	854,187		1,095,344	
घ) एल.आई.सी./पी.एल.आई.	934,452		809,207		ण) विविध भुगतान	974,960		857,282	
ङ.) जी.एल.आई.एस.	3,792,772		2,740,716		त) जी.पी.एफ. खातों की राशि	34,879,039	166,663,877	-	128,588,583
च) आयकर	10,120,297		11,160,555						
छ) थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी	2,286,385		1,001,797						
ज) विविध प्रेषण	3,413,995		3,380,124						
झ) उप-कार्यालय प्रेषण	423,971,839		366,295,719						
ञ) उप-कार्यालयों द्वारा प्राप्त निधियां	357,821,423	316,020,371	316,020,371	702,823,035					
					VI.(ब) प्रेषित राशियां				
					क) जी.पी.एफ./सी.पी.एफ./ई.पी.एफ.	676,120		575,955	
					ख) पी.एल.आई./एल.आई.सी.	928,828		811,877	
					ग) जी.एल.आई.एस.	3,525,603		2,484,599	
					घ) आयकर	10,141,157		11,211,330	
					ङ.) टी.सी.एस.	2,285,606		984,238	
					च) विविध	3,435,523		3,376,276	
					छ) उप-कार्यालयों द्वारा प्रेषण	424,454,461		367,403,918	
					ज) प्र.म.राहत कोष	204,748	445,652,046	675,403	387,523,596
					VII.उप-कार्यालयों को जारी की गई निधियां (पी.आर.)		357,821,423		316,020,371
					VIII. क) वसूली योग्य राशियां		-		27,567
					ख) टी.डी.एस. की अधिक वसूली		-		575,343
					IX. इतिशेष				
					रोकड़ शेष व बैंक जमा (अनुसूची घ)	128,467,421		347,374,339	
					मार्गस्थ निधियां	5,000,000	133,467,421	9,800,000	357,174,339
		2,536,775,549		**2,377,758,724**			**2,536,775,549**		**2,377,759,249**

मुख्य लेखा अधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

संयुक्त निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

वर्ष 2001-2002 के दौरान निकाले गए प्रकाशन

पाठ्यपुस्तकें

पहली कक्षा

- लर्निंग इंगलिश बुक-1
- लर्निंग इंगलिश बुक-1
- वर्कबुक फॉर लर्निंग इंगलिश बुक-1
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-1

दूसरी कक्षा

- बाल भारती भाग-2
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-2
- लर्निंग इंगलिश बुक-2
- वर्कबुक फॉर लर्निंग इंगलिश बुक-II
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-II

तीसरी कक्षा

- आओ गणित सीखें पुस्तक-3
- लर्निंग इंगलिश बुक-III
- वर्कबुक फॉर लर्निंग इंगलिश बुक-III
- लैट अस लुक अराउंड एंड लर्न (ई.वी.एस.)
- आओ देखें करें और सीखें (ई.वी.एस.)
- एक्स्प्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-1 (साइंस)
- परिवेश अन्वेषण पुस्तक-1

चौथी कक्षा

- बाल भारती भाग-4
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-4
- इंगलिश रीडर बुक-1 (एस.एस.)
- वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक-1 (एस.एस.)
- रीड फॉर प्लेज़र-1 (इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-IV)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-IV
- अवर कंट्री इंडिया (सोशल स्टडीज़)
- हमारा देश भारत (सामाजिक अध्ययन)
- एक्स्प्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-II (साइंस)

पांचवीं कक्षा

- बाल भारती भाग-5
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-5
- इंगलिश रीडर बुक-II (एस.एस.)
- वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक-II (एस.एस.)
- रीड फॉर प्लेज़र-II (इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-V)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-V
- अवर कंट्री एंड दि वर्ल्ड (सोशल स्टडीज़)
- एक्स्प्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-III (साइंस)
- हमारा देश और संसार (सामाजिक अध्ययन)
- परिवेश अन्वेषण भाग-3 (विज्ञान)

छठी कक्षा

- संक्षिप्त रामायण (पूरक पठन की पुस्तक)
- नया जीवन भाग-1 (पूरक पठन की पुस्तक)
- स्वस्ति भाग-2 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- गणित पुस्तक-1
- एनशंट इंडिया (हिस्ट्री)
- प्राचीन भारत (इतिहास)
- साइंस एंड टैक्नोलॉजी
- मैथमैटिक्स

सातवीं कक्षा

- सरस भारती भाग-2
- संक्षिप्त महाभारत (पूरक पठन की पुस्तक)
- नया जीवन भाग-2 (पूरक पठन की पुस्तक)

- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-3
- इंगलिश रीडर बुक-IV (एस.एस.)
- रीड फॉर प्लेज़र IV (इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास VII)
- मैथेमैटिक्स बुक-II, पार्ट-I
- मैथेमैटिक्स बुक-II, पार्ट-II
- प्रोब्लम बुक ऑफ मैथेमैटिक्स
- गणित पुस्तक-2 भाग-2
- हाउ वी गवर्न अवरसेल्व्ज़ (सिविक्स)
- हम अपना शासन कैसे चलाते हैं (नागरिक शास्त्र)
- मेडीवल इंडिया (हिस्ट्री)
- लैंड्स एंड पीपुल पार्ट-II (ज्योग्राफी)
- देश और उनके निवासी भाग-2 (भूगोल)
- साइंस बुक-II
- विज्ञान पुस्तक-2

आठवीं कक्षा

- सरस भारती भाग-3
- संक्षिप्त बुद्धचरित (पूरक पठन की पुस्तक)
- स्वस्ति भाग-4 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-4
- इंगलिश रीडर बुक-V (एस.एस.)
- रीड फॉर प्लेज़र-V (इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास VIII)
- मैथेमैटिक्स बुक-III, पार्ट-I
- मैथेमैटिक्स बुक-III, पार्ट-II
- प्रोब्लम बुक ऑफ मैथेमैटिक्स
- अवर कंट्री टुडे प्रोब्लम्स एंड चैलेंजिज़ (सिविक्स)
- हमारा भारत आज की समस्याएं और चुनौतियां (नागरिक शास्त्र)
- मॉडर्न इंडिया (हिस्ट्री)
- लैंड्स एंड पीपुल पार्ट-III (ज्योग्राफी)
- देश और उनके निवासी भाग-3 (भूगोल)
- साइंस बुक-III

नौवीं कक्षा

- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-I इंगलिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-I वर्कबुक टू इंगलिश रीडर ('बी' कोर्स)
- स्वाति भाग-1 (हिंदी पाठ्यपुस्तक 'ए' पाठ्यक्रय-पद्य)
- पराग भाग-1 (हिंदी पाठ्यपुस्तक 'ए' पाठ्यक्रम-गद्य)
- मानक हिंदी व्याकरण और रचना कक्षा-9 व 10
- विज्ञान
- मैथेमैटिक्स
- गणित
- दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन वोल्यूम-I (हिस्ट्री)
- सभ्यता की कहानी भाग-1 (इतिहास)
- अंडरस्टैंडिंग एनवायरनमेंट (ज्योग्राफी)
- पर्यावरण बोध (भूगोल)
- हमारी अर्थव्यवस्था : एक परिचय कक्षा-9 व 10 के लिए
- इंडिया : कांस्टीट्यूशन एंड गवर्नमेंट फॉर क्लासिज़ IX-X
- भारत : संविधान और सरकार कक्षा-9 व 10 के लिए
- साइंस एंड टैक्नोलॉजी

दसवीं कक्षा

- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर II इंगलिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-II वर्कबुक टू इंग्लिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर II (सप्लीमेंटरी रीडर) ('बी' कोर्स)

- स्वाति भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक 'ए' पाठ्यक्रम-पद्य)
- मानसी भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक 'बी' पाठ्यक्रम)
- संचयिका भाग-2
- पराग भाग-2
- साइंस
- विज्ञान
- मैथेमैटिक्स
- प्रोब्लम बुक ऑफ मैथेमैटिक्स
- गणित
- दि स्टोरी ऑफ सिविलाइज़ेशन वोल्यूम II (हिस्ट्री)
- सभ्यता की कहानी भाग-II (इतिहास)
- ज्योग्राफी ऑफ इंडिया
- भारत का भूगोल

ग्यारहवीं कक्षा

- निहारिका भाग-1 (हिंदी पाठ्यपुस्तक कोर-पद्य)
- पल्लव भाग-1 (हिंदी पाठ्यपुस्तक कोर-गद्य)
- मंदाकिनी भाग-1 (हिंदी पाठ्यपुस्तक वैकल्पिक-पद्य)
- साहित्य का स्वरूप
- रंगमंचिका (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- ऑरगन्स ऑफ गवर्नमेंट : ए टैक्स्टबुक इन पॉलिटिकल साइंस
- सोसाइटी, स्टेट एंड गवर्नमेंट
- एनशंट इंडिया (हिस्ट्री)
- मेडीवल इंडिया (हिस्ट्री)
- मध्यकालीन भारत
- भूगोल के सिद्धांत भाग-2
- सोशियोलॉजी : एन इंट्रोडक्शन
- समाजशास्त्र : एक परिचय
- अंडरस्टैंडिंग साइकोलॉजी ऑफ ह्यूमन बिहेवियर
- इवोल्यूशन ऑफ इंडियन इकोनॉमी
- एलीमेंटरी स्टैटिस्टिक्स (इकोनॉमिक्स)
- प्रारंभिक सांख्यिकी (अर्थशास्त्र)
- बिजनेस स्टडीज़
- व्यवसाय अध्ययन
- एकाउंटिंग बुक II
- फिजिक्स पार्ट
- कैमिस्ट्री
- बायोलॉजी

बारहवीं कक्षा

- निहारिका भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक कोर-पद्य)
- पल्लव भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक कोर-गद्य)
- मंदाकिनी भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक वैकल्पिक-पद्य)
- प्रवाल भाग-2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक वैकल्पिक-गद्य)
- ए कोर्स इन रिटन इंग्लिश (कोर)
- दि वेब ऑफ अवर लाइफ (कोर)
- डीयर टू ऑल दि म्यूजिज़ (इलैक्टिव)
- संस्कृत गद्य मंदाकिनी (वैकल्पिक)
- संस्कृत कविता कादंबिनी
- डेमोक्रैसी इन इंडिया (पॉलिटिकल साइंस)
- भारत में लोकतंत्र
- मॉडर्न इंडिया (हिस्ट्री)
- आधुनिक भारत (इतिहास)
- कंटेंपोरेरी वर्ल्ड हिस्ट्री पार्ट-I
- कंटेंपोटेरी वर्ल्ड हिस्ट्री पार्ट-II
- समकालीन विश्व इतिहास भाग-2
- इंडिया : ए जनरल ज्योग्राफी (ज्योग्राफी)
- भारत : सामान्य भूगोल
- सोशल चेंज

- एन इंट्रोडक्शन टू इकोनॉमिक थ्योरी
- आर्थिक सिद्धांत का परिचय
- नेशनल इनकम एकाउंटिंग
- राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति
- एकाउंटिंग बुक-I
- एकाउंटिंग बुक-II
- कॉस्ट एकाउंटिंग
- बिजनेस स्टडीज़ पार्ट-I
- बिजनेस स्टडीज़ पार्ट-II
- फिजिक्स पार्ट-I
- फिजिक्स पार्ट-II
- कैमिस्ट्री
- बायोलॉजी पार्ट-I
- बायोलॉजी पार्ट-II
- मैथेमैटिक्स पार्ट-I
- मैथेमैटिक्स पार्ट-II
- मैथेमैटिक्स पार्ट-III

अरुणाचल प्रदेश के लिए पाठ्यपुस्तकें

- अरुण भारती भाग-1
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-1
- अरुण भारती भाग-2
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2
- अरुण भारती भाग-3
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-3
- अरुण भारती भाग-4
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-4
- अरुण भारती भाग-5
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-5
- न्यू डॉन रीडर-1 फॉर क्लास-I
- वर्कबुक फॉर न्यू डॉन रीडर-I फॉर क्लास-I
- न्यू डॉन रीडर-II फॉर क्लास-II
- वर्कबुक फॉर न्यू डॉन रीडर-II फॉर क्लास-II
- न्यू डॉन रीडर-III फॉर क्लास-III
- वर्कबुक फॉर न्यू डॉन रीडर-III फॉर क्लास-III

पश्चिम बंगाल के लिए पाठ्यपुस्तकें

- गद्य भारती
- काव्य भारती

उर्दू पाठ्यपुस्तकें

पहली कक्षा

- आओ हिसाब सीखें किताब-1
- उर्दू की नई किताब

दूसरी कक्षा

- आओ हिसाब सीखें किताब-II
- उर्दू की नई किताब

तीसरी कक्षा

- आओ हिसाब सीखें किताब-III
- हम और हमारा देश
- गिर्द-ओ-पेश का मुताला किताब-I
- उर्दू की नई किताब

चौथी कक्षा

- उर्दू की नई किताब
- हमारा मुल्क हिंदुस्तान
- गिर्द-ओ-पेंश का मुताला किताब-II
- आओ हिसाब सीखें किताब IV

पांचवीं कक्षा

- हमारा मुल्क और दुनिया
- गिर्द-ओ-पेश का मुताला किताब-III
- आओ हिसाब सीखें किताब-V हिस्सा-I
- आओ हिसाब सीखें किताब-V हिस्सा-II
- उर्दू की नई किताब

छठी कक्षा

- हिसाब हिस्सा-I
- साइंस हिस्सा-I
- कदीम हिंदुस्तान
- हमारी शहरी जिंदगी
- मुमालिक और उनके बाशिंदे हिस्सा-1
- उर्दू की नई किताब

सातवीं कक्षा

- हिसाब हिस्सा-II
- साइंस हिस्सा-II
- अहदे वोस्ता का हिंदुस्तान
- हम अपनी सरकार कैसे चलाते हैं
- मुमालिक और उनके बाशिंदे हिस्सा-II

आठवीं कक्षा

- हिसाब हिस्सा-III
- साइंस हिस्सा-III
- आज का हिंदुस्तान-मसाइल और तक़ाज़े
- मुमालिक और उनके बाशिंदे हिस्सा-III
- मुमालिक और उनके बाशिंदे हिस्सा-III (नई किताब)
- उर्दू की नई किताब

नौवीं कक्षा

- रियाज़ी (मैथेमैटिक्स)
- तहजीब की कहानी जिल्द-I
- माहौल सनाशी
- हमारी मईशत का एक नया तार्रुफ
- हमारी ज़बान (नई किताब)

दसवीं कक्षा

- रियाज़ी हिस्सा-II
- हिंदुस्तान का जुगराफिया
- हिंदुस्तान : आईन और हुकूमत IX-X

बारहवीं कक्षा

- तवियात का तजुरबागाही मैन्युअल जिल्द II
- उर्दू की नई किताब

उर्दू भाषा में कार्यानुभव पर उदाहरणस्वरूप अनुदेशात्मक सामग्री

- तखलीकी छपाई कक्षा-VII-VIII के लिए
- धात की चादर का काम कक्षा-VII-VIII
- बिजली का काम कक्षा-VI-VII

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तकें

- डेयरी प्रोडक्ट्स-I प्रैक्टिकल मैन्युअल फॉर क्लास XII (पेपर IV)
- एकाउंटिंग एंड ऑडिटिंग (प्रैक्टिकल मैन्युअल पेपर-XI क्लास-XII)
- कंप्यूटर एप्लीकेशन इन बिजनेस (क्लास XI पेपर II)

अंग्रेजी में अनुपूरक पठन पुस्तकें

- कंटूर्स ऑफ करेज
- ग्लिम्प्सेज ऑफ प्लांट लाइफ पार्ट-I
- ग्लिम्प्सेज ऑफ प्लांट लाइफ पार्ट-II
- सम एमिनेंट इंडियन साइंटिस्ट्स एंड टैक्नोलॉजिस्ट्स
- रिमोट सेन्सिंग
- मेघनाद साहा

हिंदी में अनुपूरक पठनपुस्तकें

- चिकित्सा विज्ञान की कहानियां
- नई-नई कहानियां
- बालू बोले अपनी बात

अनुसंधान अध्ययन और विनिबंध/मोनोग्राफ

- एनवायरनमेंटल ओरिएंटेशन टू स्कूल एजुकेशन-ए ट्रेनिंग मॉड्यूल फॉर ईस्टर्न रीजन
- एनवायरनमेंटल ओरिएंटेशन टू स्कूल एजुकेशन-ए ट्रेनिंग मॉड्यूल फॉर सदर्न रीजन

- एनवायरनमेंटल ओरिएंटेशन टू स्कूल एजुकेशन–ए ट्रेनिंग मॉड्यूल फॉर नॉर्दर्न रीजन
- एनवायरनमेंटल ओरिएंटेशन टू स्कूल एजुकेशन–ए ट्रेनिंग मॉड्यूल फॉर वेस्टर्न रीजन
- रिफ्लेक्शंस ऑन दि फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन
- डेवलपमेंट ऑफ एजुकेशन 1990-2000
- इवेल्युएशन ऑफ एन.जी.ओ. प्रोजेक्ट्स अंडर एम.एच.आर.डी. स्कीम ऑफ इन्नोवेटिव एंड एक्सपेरिमेंटल प्रोग्राम्स इन एलिमेंटरी एजुकेशन
- ईटर्नल ह्यूमन वैल्यूज एंड वर्ल्ड रिलीजन्स
- सिंफोनी ऑफ ह्यूमन वैल्यूज इन एजुकेशन
- गणित मार्गदर्शिका (नॉन-फॉर्मल एजुकेशन)
- डाइमेंशंस ऑफ करिक्यूलम चेंज
- पाठ्यक्रम परिवर्तन के आयाम
- भारत में विद्यालयी शिक्षा
- लर्निंग विद कंप्यूटर लेवल-I
- एक्सपीरीएंसज इन स्कूल एजुकेशन
- इन परस्यूट ऑफ ईक्विटी एंड एक्सिलेन्स

निर्मूल्य प्रकाशन

- इन परस्यूट ऑफ ईक्विटी एंड एक्सिलेन्स एन.सी.ई.आर.टी. : 1986-2000
- संस्कृत : दि वाइस ऑफ इंडिया सोल एंड विजडम
- संस्कृत : भारत की आत्मा और विवेक की वाणी
- विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यचर्या संदर्शिका और पाठ्यक्रम
- फोल्डर : डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशनल सर्वेज़ एंड डेटा प्रोसेसिंग
- फोल्डर : नेशनल रिसोर्स सेंटर फॉर वैल्यू एजुकेशन
- एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर जुलाई-अगस्त 2000
- शैक्षिक दर्पण जुलाई-अगस्त 2000
- एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर सितंबर-अक्तूबर 2000
- एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर नवंबर-दिसंबर 2000
- शैक्षिक दर्पण सितंबर-अक्तूबर 2000
- शैक्षिक दर्पण नवंबर-दिसंबर 2000
- एन.सी.ई.आर.टी. पेससेटर इन एजुकेशनल पब्लिशिंग–ए बुकलेट
- फोल्डर : इंटरनेशनल डिप्लोमा कोर्स इन गाइडेन्स एंड काउंसिलिंग 2001-2002
- फोल्डर ऑफ डी.एल.डी.आई.
- डी.एल.डी.आई. का फोल्डर (हिंदी)
- एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर जनवरी-फरवरी 2001
- शैक्षिक दर्पण जनवरी-फरवरी 2001
- वार्षिक लेखा एन.सी.ई.आर.टी. 1999-2000
- एन.सी.ई.आर.टी. ऐन्युअल एकाउंट्स 1999-2000
- जवाहरलाल नेहरु नेशनल साइंस एक्जीबिशन फॉर चिल्ड्रन, इलाहाबाद–लिस्ट ऑफ एक्ज़ीविट्स (द्विभाषी)
- जे.एल.एन. नेशनल साइंस एक्जीबिशन फॉर चिल्ड्रन, इलाहाबाद–स्ट्रक्चर एंड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स (द्विभाषी)
- फोल्डर एंड सर्टिफिकेट्स ऑफ जे.एल.एन. नेशनल साइंस एक्जीबिशन फॉर चिल्ड्रन, इलाहाबाद
- तरंग–एजुकेशनल टेलीविजन प्रोग्रेम्स अपडेटिट अपटू अक्टूबर 2001
- कैटलॉग ऑफ ऑडियो प्रोग्रेम्स 1976 टू 2001
- एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर मार्च 2001
- शैक्षिक दर्पण मार्च-अप्रैल 2001
- ऑल इंडिया कॉम्पिटीशन फॉर स्कूल टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स ऑन इन्नोवेटिव प्रैक्टिसिज एंड एक्सपेरिमेंट्स–इन्फर्मेशन बुलेटिन
- एन.सी.ई.आर.टी. एन्युअल रिपोर्ट 2000-2001

- एन.सी.ई.आर.टी. वार्षिक रिपोर्ट 2000-2001
- एन.सी.ई.आर.टी. कलैण्डर ऑफ ट्रेनिंग प्रोग्रैम्स 2001-2002
- यूजिंग ग्रेड्स फॉर एडमिशन्स
- फोल्डर ऑफ इंटरनेशनल डिप्लोमा कोर्स इन गाइडेन्स एंड काउंसिलिंग 2002-2003
- चेकलिस्ट ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. पब्लिकेशन्स 2001
- इन परस्यूट ऑफ ईक्विटी एंड एक्सिलेन्स

शैक्षिक पत्रिकाएं

- **स्कूल साइंस**–माध्यमिक विद्यालयों के लिए त्रैमासिक पत्रिका 3 अंक
- **इंडियन एजुकेशनल रिव्यू** 3 अंक
  छःमाही शोध पत्रिका
- **जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन** 3 अंक
  त्रैमासिक शिक्षा पत्रिका
- **भारतीय आधुनिक शिक्षा** 4 अंक
  त्रैमासिक पत्रिका
- **प्राइमरी टीचर**–प्राथमिक अध्यापकों के लिए त्रैमासिक पत्रिका 3 अंक
- **प्राइमरी शिक्षक**–प्राथमिक अध्यापकों के लिए त्रैमासिक पत्रिका 4 अंक
- **जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन** 2 अंक
  छःमाही पत्रिका
- **इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रैक्ट्स** 2 अंक
  छःमाही पत्रिका

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र

क्र.सं.	*नाम और पता*	*शामिल किए गए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र*
●	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नवजीवन ट्रस्ट, डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380014 दूरभाष : 079-7541446	गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गोवा
●	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. 108, 100 फीट रोड होस्केरेहल्ली एक्सटेंशन बनाशंकरी-III स्टेज बंगलौर 560085 दूरभाष : 080-6725740	तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, लक्षद्वीप, मिनीकाय एवं अमिनदीवी द्वीपसमूह
●	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. 32, बी.टी. रोड सुखचर, 24 परगना कोलकाता-743179 दूरभाष : 033-5530454	पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पूर्वोत्तर राज्य, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों के थोक एजेंटों के नाम और पते

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

- मैसर्स अंडमान बुक सेंटर
  गोलघर
  पोर्ट ब्लेयर 744 103
  दूरभाष : 03192

आंध्र प्रदेश

- मैसर्स सैंट्रल बुक शोप
  5-9-186, चेपल रोड
  हैदराबाद 500 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 040-3202980
  (निवास) 040-4530111

- मैसर्स हिमालय बुक डिपो
  5-7-561, नामपल्ली बाजार
  दरगाह युसुफैन रोड
  हैदराबाद 500 011
  दूरभाष : 040-214879, 4612145

- मैसर्स राजकमल बुक एजेंसी
  नारायण नायक कॉम्प्लेक्स
  गांधी ज्ञान मंदिर के पीछे
  सुलतान बाजार
  हैदराबाद 500 195
  दूरभाष : 040-4757207

- मैसर्स अशोक बुक सैन्टर
  मेरिस स्टेली कॉलेज के सामने
  विजयवाड़ा 520 008
  दूरभाष : 476966, 472096

- मैसर्स श्रीनिवास पेपर एंड स्टेशनरी मार्ट
  डोर संख्या 40-5-19/18
  श्री वेंकटेश्वर निलयम्
  मोंगलराजपुरम
  रेवेन्यु कालोनी
  विजयवाड़ा 520 010 (आंध्र प्रदेश)
  दूरभाष : 0866-488213

- मैसर्स गुप्ता ब्रदर्स बुक्स
  47-13-10/1, द्वारका नगर
  विशाखापटनम 530 016
  दूरभाष : 0891-554454, 547580

- मैसर्स ज्योति बुक डिपो
  30-15-138, दाबागार्डन्स
  विशाखापटनम 530 020
  दूरभाष : 0891-546020, 541201

बिहार/झारखंड

- मैसर्स ज्ञान भारती
  कामधेनु कॉम्प्लेक्स, जोरा फाटक रोड
  धनबाद 820 001 (झारखंड)
  दूरभाष : (कार्यालय) 302969, 307933

- मैसर्स गया प्रसाद खण्डेलवाल
  खण्डेलवाल चौक, मैन रोड
  हजारीबाग (झारखंड)
  दूरभाष : 06546-2287

- मैसर्स दुर्गा पुस्तक भंडार
  बंका बाजार, मोती झील
  मुजफ्फरपुर 842 001 (बिहार)

- मैसर्स चिल्ड्रन बुक सेन्टर प्रा. लि.
  मछुआ टोली
  पटना 800 004 (बिहार)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0612-650362,
  220460
  (निवास) 0612-655048

- मैसर्स ज्ञान गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि.
  बोरिंग रोड, 5/5, बेबी होम,
  उत्तरी एस.के. पुरी
  पटना 800 013 (बिहार)
  दूरभाष : 0612-263011, 261956



- मैसर्स पॉपुलर बुक स्टोर
  पटना कॉलेज के सामने
  पटना 800 004 (बिहार)
  दूरभाष : (निवास) 0612-54176

- मैसर्स वर्मा प्रेस (पी. एंड डी.)
  प्रथम तल, गोपाल मार्किट, नया टोला
  पटना 800 004 (बिहार)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0612-663465
  (निवास) 0612-673696

- मैसर्स पुस्तक मंदिर
  पुस्तक पथ, अपर बाजार
  रांची 834 001 (झारखंड)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0651-203273, 313248

- मैसर्स पुस्तक सदन
  राम पथ
  पूर्वी ऊपरी पुल
  रांची 834 001 (झारखंड)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0651-307515, 204364

- मैसर्स श्री किताब घर
  पुस्तक पथ, अपर बाजार
  रांची 834 001 (झारखंड)
  दूरभाष : 0651-202714

- मैसर्स सुबोध ग्रंथमाला
  पुस्तक पथ, अपर बाजार
  रांची 834 001 (झारखंड)

- मैसर्स भारती पुस्तक भंडार
  रामबाबू चौक
  समस्तीपुर 848 101 (बिहार)

- मैसर्स किताब महल
  रतन जी रोड
  पुराना बाजार
  धनबाद 820 001 (झारखंड)
  दूरभाष : (निवास) 304813, 304730

- मैसर्स एस.के. पब्लिकेशंस
  I-बी, चंद्रलोक अपार्टमेंट्स
  कचहरी रोड
  रांची 834 001 (झारखंड)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0651-312541, 202614

- मैसर्स साहू पुस्तक भंडार
  चेकपोस्ट चास, बी.एस.सिटी.
  बोकारो (झारखंड)
  दूरभाष : 66031

- मैसर्स अर्चना बुक डिपो
  जी-10, 110, ठाकुरबाढ़ी रोड
  सरची
  जमशेदपुर 831 001 (झारखंड)
  दूरभाष : 42746

चंडीगढ़

- मैसर्स मनचंदा डिपार्टमेंटल स्टोर
  एस.सी.एफ. सं.-2
  सेक्टर 19-सी
  चंडीगढ़ 160 019
  दूरभाष : (कार्यालय) 0172-775012

- मैसर्स मनचंदा ट्रेडर्स एंड सप्लायर्स
  एस.सी.एफ. सं. 1
  सेक्टर 19-सी
  पो. बॉक्स सं. 705
  चंडीगढ़-160 019
  दूरभाष : (कार्यालय) 0172-775216,
  775768, 775769
  (निवास) 560499

दिल्ली

- मैसर्स शिवदास एंड सन्स
  9665, इस्लामगंज, लाईब्रेरी रोड
  आजाद मार्केट
  दिल्ली 110 006
  दूरभाष 011-7514886, 3677366, 3551616

- मैसर्स रोमिल पब्लिशर्स प्रा. लि.
  ए-18, गली सं. 10
  पूर्वी आजाद नगर
  दिल्ली 110 051
  दूरभाष : (कार्यालय) 011-2436849, 2091154
  (निवास) 2421652

- मैसर्स प्रकाश ब्रदर्स
  46, भगतसिंह मार्केट
  नई दिल्ली 110 001
  दूरभाष : 011-3362615, 3362616

- मैसर्स जनता बुक डिपो प्रा. लि.
  23, शहीद भगतसिंह मार्ग
  नई दिल्ली 110 001
  दूरभाष : 011-336365, 3362985

- मैसर्स सचदेवा बुक डिपो
  9/6081, मेन रोड
  गांधी नगर
  दिल्ली 110 031
  दूरभाष : (कार्यालय) 011-2200299
  (निवास) 2415144, 2073756

- मैसर्स गीता पब्लिशिंग हाउस
  टी-565, प्रगति कॉम्प्लेक्स
  ईदगाह चौक
  दिल्ली 110 006
  दूरभाष : 011-7775482, 7522668

- मैसर्स नीड प्रकाशन प्रा. लि.
  219, जमरूदपुर
  एन ब्लॉक के सामने
  ग्रेटर कैलाश-I
  नई दिल्ली 110 048
  दूरभाष : 011-6443814, 6435460

- मैसर्स जी. लाल एंड कंपनी
  2259, हडसन लेन
  किंग्सवे कैंप
  दिल्ली 110 009
  दूरभाष : 011-7128641

- मैसर्स सुप्रीम बुक डिपो
  डी-56/4 एम.बी. रोड
  (मदर डेरी के सामने) खानपुर
  नई दिल्ली 110 062
  दूरभाष : 011-6082112

- मैसर्स राज पुस्तक भंडार
  54, सेंट्रल मार्केट
  लाजपत नगर, नई दिल्ली 110 024
  दूरभाष : 011-6832627, 6849198

- मैसर्स विश्वभारती प्रकाशन
  4071, नई सड़क
  दिल्ली 110 006
  दूरभाष : (कार्यालय) 011-2916973
  (निवास) 6833079, 6916718

- मैसर्स संजय ब्रदर्स
  2578, नई सड़क
  नई दिल्ली 110 006
  दूरभाष : 011-3250644, 3246732

- मैसर्स सुभाष ब्रदर्स
  2606, नई सड़क
  दिल्ली 110 006
  दूरभाष : 011-3261011, 3283733

- मैसर्स गोपीराम एंड सन्स (पुस्तक विक्रेता)
  2619/20, सी-3, न्यू मार्केट
  नई सड़क
  दिल्ली 110 006
  दूरभाष : 011-325335, 3250632

- मैसर्स राजेश पुस्तक भंडार
  4ए/3, ज्वालाहेड़ी, पश्चिम विहार
  नई दिल्ली 110 063
  दूरभाष : 011-5580992, 5584826

- मैसर्स स्मिथ एंड स्पैन पब्लिकेशंस
  8/7, ज्वालाहेड़ी मार्केट
  पश्चिम विहार
  नई दिल्ली 110 063
  दूरभाष : 011-5575381, 5583302

- मैसर्स मलिक बुकसेलर्स एंड स्टेशनर्स
  2157/टी-2, सत्यम सिनेमा के सामने
  वेस्ट पटेल नगर
  नई दिल्ली 110 008
  दूरभाष : 011-5706082, 5700606

- मैसर्स चावला बुक डिपो
  दुकान सं. 16, सेक्टर 3, आर.के. पुरम
  नई दिल्ली 110 022
  दूरभाषा : 011-6174783,
  6174501, 6184849, 6174900

- मैसर्स दीपक स्टेशनर्स
  709/1, जी.टी. रोड
  कबूल नगर, शाहदरा
  दिल्ली 110 032
  दूरभाष : 011-2285327, 2280956

- मैसर्स गुप्ता बुक कॉर्नर
  दुकान नं. बी-1, डी.डी.ए. मार्केट
  शकरपुर कालोनी, दिल्ली 110 034
  दूरभाष : 011-7186391

- मैसर्स लाम्बा बुक डिपो
  सं. 9, ओल्ड मार्केट, तिलक नगर
  नई दिल्ली 110 018
  दूरभाष : 011-5190207, 5934577

- मैसर्स मल्होत्रा बुक डिपो
  17/39 बी, ओल्ड मार्केट, तिलक नगर
  नई दिल्ली 110 018
  दूरभाष : 011-5439787, 5434956

- मैसर्स जी.बी.एस. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
  एम.एस. हाउस, 994/66, त्रिनगर
  दिल्ली 110 035
  दूरभाष : 011-7186836, 7195926

- मैसर्स जनता बुक डिपो
  1521/2, वजीर नगर
  पी.टी. कॉलेज के सामने, डिफेन्स कालोनी
  नई दिल्ली 110 003
  दूरभाष : (कार्यालय) 011-4621791,
  4692352
  (निवास) 6416656

- मैसर्स आर.जी. बुक स्टोर
  287, नवादा
  मुख्य नजफगढ़ रोड
  उत्तम नगर, नई दिल्ली 110 059
  दूरभाष : (कार्यालय) 011-5564928
  (निवास) 5564947

गुजरात

- मैसर्स शालिभद्र स्टेशनर्स
  शांति सोसायटी
  बाम्बे गैरेज के पीछे
  शाहीबाग, अहमदाबाद 380 004
  दूरभाष : 079-5621748

- मैसर्स तुषार बुक डिपो
  36-37, कैपिटल कामर्शियल सेन्टर
  आश्रम रोड
  अहमदाबाद 380 009
  दूरभाष : 079-6587103, 6578741

- मैसर्स रायल स्टेशनर्स
  सागर अपार्टमेन्ट
  दुकान नं. 14
  रामधाम के सामने, कालवाड़ रोड
  राजकोट 360 005
  दूरभाष : 0281-582926

हरियाणा

- मैसर्स दीपक बुक डिपो
  4269, हास्पिटल रोड
  अम्बाला कैंट 133 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0171-642076, 640706
  (निवास) 0171-641706

- मैसर्स शर्मा ब्रदर्स
  निकट बी.डी. हाईस्कूल
  अम्बाला कैंट 133 001
  दूरभाष : 0171-640525

- मैसर्स फ्रैंड्स बुक सर्विस
  दुकान नं. 68, 2-एच पार्क, एन.आई.टी.
  फरीदाबाद 121 001
  दूरभाष : 0129-5414292, 5413040

- मैसर्स गुलाटी बुक सेंटर
  दुकान नं. 6, मार्केट नं. 1
  एन.आई.टी., फरीदाबाद

- मैसर्स आजाद बुक डिपो
  सदर बाजार
  गुड़गांव 122 001
  दूरभाष : 0124-6328767

- मैसर्स द्वारका प्रसाद एंड संस
  मोती बाजार
  हिसार 125 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 01662-31657
  (निवास) 36122

- मैसर्स स्टूडेंट्स च्वाइस
  4, टावर एनक्लेब
  विद्युत नगर के पास
  दिल्ली रोड
  हिसार 125 005
  दूरभाष : (कार्यालय) 01662-38381
  (निवास) 21181

- मैसर्स अरोड़ा ट्रेड लिंकर प्रा. लि.
  (अग्रवाल धर्मशाला के सामने), रेलवे रोड
  करनाल 132 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0184-255805, 252205
  (निवास) 255305

- मैसर्स भगवती पेपर मार्ट
  पुरानी अनाज मंडी
  रोहतक 124 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 01262-52184
  (निवास) 56184

- मैसर्स स्वामी किताब घर
  कच्चा बेरी रोड
  रोहतक 124 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 01262-45879
  (निवास) 46886

जम्मू और कश्मीर

- मैसर्स गुप्ता बुक सेंटर
  सम्राट होटल, बस स्टैंड के निकट
  जम्मू तवी 180 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0191-577046
  (निवास) 534925

- मैसर्स हरनाम दास एंड ब्रदर्स
  पक्का डंगा
  जम्मू तवी 180 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0191-542175
  (निवास) 574428

- मैसर्स साहित्य संगम
  कच्ची छावनी
  जम्मू तवी 180 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0191-549049
  (निवास) 548729

- मैसर्स अली मोहम्मद एंड संस
  1, बडशाह होटल बिल्डिंग
  लाल चौक
  श्रीनगर 190 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0194-475973,
  474539
  (निवास) 474440

- मैसर्स उस्मान बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स
  43, झेलम मार्केट
  श्रीनगर
  जम्मू और कश्मीर
  दूरभाष : 0194-456637

कर्नाटक

- मैसर्स हेमा स्टोर
  नं. 192, बालाजी थिएटर काम्पलेक्स
  वन्नरपेट
  विवेक नगर
  बंगलौर 560 047
  दूरभाष : 080-5575110

- मैसर्स भगवान कृष्ण ट्रेडर्स
  नं. 25, मामुलपेठ
  बंगलौर 560 053
  दूरभाष : 080-2872774

- मैसर्स सुभाष पब्लिशिंग हाउस
  नं. 116, पांचवां मैन, छठी क्रास
  राम मंदिर बस स्टैंड के निकट
  चामराज पेठ,
  बंगलौर 560 018
  दूरभाष : 080-6507309

केरल

- मैसर्स टी.बी.एस. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
  टी.बी.एस. बिल्डिंग
  जी.एच. रोड, कालीकट 673 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0495-720085,
  720086
  (निवास) 721160

- मैसर्स अकादमिक बुक हाउस
  39/817, चित्तूर रोड
  साउथ जंक्शन
  एरनाकुलम 682 016
  दूरभाष : 0484-369613

- मैसर्स एच. एंड सी. स्टोर्स
  डी.एच. रोड
  एरनाकुलम साउथ
  कोच्चि 682 016
  दूरभाष : 0484-351563

- मैसर्स प्रोग्रेसिव करिक्यूलम
  मैनेजमेंट प्रा. लि.
  अम्मनकोविल रोड, एरनाकुलम
  कोच्चि 682 035
  दूरभाष : 0484-354047,
  374058, 374258, 361824

- मैसर्स वी पब्लिशर्स बुक स्टाल
  सी.एम.एस. कालेज रोड
  कोट्टयम 686 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0481-567470,
  567471, 568645, 561472
  (निवास) 301184

- मैसर्स विद्यार्थी बुक्स एंड लाबैड्स
  सी.एम.एस. कालेज जंक्शन
  कोट्टयम 686 001
  दूरभाष : 481-561203, 567486

- मैसर्स एच. एंड सी. स्टोर्स
  पी.बी. नं. 1, कुन्नमकुलम 680 503
  (थिरशुर जिला)
  दूरभाष : (कार्यालय) 04889-522243
  (निवास) 522383

- मैसर्स ऐकेडमिक बुक हाउस
  पुलिमूदु जंक्शन
  तिरुअनंतपुरम 695 001
  दूरभाष : 0471-333349, 331878

- मैसर्स अशरफी बुक सेंटर एंड
  तिरुअंगडी प्रिंटर्स
  तिरुरंगडी 676 306
  दूरभाष : 0471-331878, 333349

- मैसर्स विद्यार्थी मित्रम् प्रेस
  एंड बुक डिपो
  विद्यार्थी मित्रम् बिल्डिंग
  बाकर रोड
  कोट्टयम 686 001
  दूरभाष : 0481-563281, 563282,
  561713

मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़

- मैसर्स शंकर बुक सेंटर
  8, प्रेसिडेंट कॉम्प्लेक्स
  लालवानी प्रेस रोड
  भोपाल 462 0001 (म.प्र.)
  दूरभाष : 0155-548950

- मैसर्स सुशील प्रकाशन
  212, खजूरी बाजार
  इंदौर 452 002
  दूरभाष : (कार्यालय) 0731-535892,
  282892
  (निवास) 541901

- मैसर्स भैया स्टोर्स
  166, खजूरी बाजार
  इंदौर 452 001
  दूरभाष : (दुकान) 0731-531207
  (निवास) 410401

- मैसर्स पी.के. बुक्स एंड स्टेशनर्स
  सदर बाजार कैंट
  जबलपुर 482 001
  दूरभाष : 0761-320840

- मैसर्स अग्रवाल ट्रेडर्स एंड पब्लिशर्स
  सत्ती बाजार
  रायपुर 492 001
  दूरभाष : 533716

- मैसर्स विद्या मंदिर
  काली मंदिर चौक
  खप्परगंज
  बिलासपुर 495001
  (छत्तीसगढ़)

महाराष्ट्र

- मैसर्स न्यू पॉपुलर बुक शोप
  आई.आई.टी. कैंपस, पोवरी
  मुंबई 400 076
  दूरभाष : 4757207

- मैसर्स एस. चन्द एंड कम्पनी लि.
  3, गांधी सागर ईस्ट
  नागपुर 440 002
  दूरभाष : 0712-723091

- मैसर्स कपूर स्टेशनरी मार्ट
  दुकान नं. 42, आम्रपाली शापिंग आर्केड
  बसन्त बिहार, पोखरन रोड नं. 2
  थाणे (डब्ल्यू) 400 601
  दूरभाष : 022-5330711, 5361053

पूर्वोत्तर राज्य

- मैसर्स हैबंग बुक स्टाल एंड स्टेशनरी
  23, इंडस्ट्रियल इस्टेट नाहरियागुन
  ईटा नगर 791 110, (अरुणाचल प्रदेश)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0360-245280, 244877
  (निवास) 211356 (फैक्स) 214859
- मैसर्स अंबू ट्रेडर्स
  808, के.बी. कामर्शियल बैंक
  तिनाली, ईटानगर
  (अरुणाचल प्रदेश)
  दूरभाष : 0360-217331, 216612
- मैसर्स बानी मन्दिर
  रवि बाड़ी, पान बाजार
  गुवाहाटी 781 001 (असम)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0361-520241
  (निवास) 564488
- मैसर्स एन.बी. एंटरप्राइजिज़
  एस.सी. गोस्वामी रोड
  पान बाजार
  गुवाहाटी 781 001 (असम)
  दूरभाष : 0360-630642
- मैसर्स यूनाइटेड पब्लिशर्स
  मैन रोड, पान बाजार
  गुवाहाटी 781 001 (असम)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0361-517059
  (निवास) 546244
- मैसर्स लियानचुंगी बुक स्टोर्स
  बड़ा बाजार
  आइजोल 796 001
  (मिजोरम)
  दूरभाष : (कार्यालय) 0389-329522
  (निवास) 322855
- मैसर्स स्टूडेंट्स होम
  समीप डी.सी. पार्क, अखोंगरी
  तुरा 794 001 (मेघालय)
  दूरभाष : (कार्यालय) 03651-22338
- मैसर्स ओरिएंट बुक डिपो
  28, लेनिन सरणी
  ओरिएंट चौनुनी
  अगरतला 799 001
  (त्रिपुरा)
  दूरभाष : 0381-223935 (पीपी)

उड़ीसा

- मैसर्स ज्ञान भारती
  स्टेशन स्क्वेयर
  50, खारावेलानगर यूनिट-III
  भुवनेश्वर 751 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0674-508736
  (निवास) 402664
- मैसर्स ए.के. मिश्रा ऐजेंसीज प्रा.लि.
  बानरा बाजार
  कटक 753 002
  दूरभाष : 0671-618327

पंजाब

- मैसर्स प्रवीन जनरल स्टोर
  धोबी बाजार के पीछे
  एस.एस.डी. मंदिर के सामने
  भटिंडा 151 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0164-256965
  (निवास) 255965
- मैसर्स मल्होत्रा बुक डिपो
  रेलवे रोड
  जालंधर 144 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0181-57160, 583888, 59046

- मैसर्स नीलम पब्लिशर्स
  अद्दा टंडा
  जालंधर 144 008
  दूरभाष : (कार्यालय) 0181-56899
  (निवास) 57170
- मैसर्स हरबन्स बुक डिपो
  बुक्स मार्किट, लुधियाना
  दूरभाष : 0161-726480, 720173
- मैसर्स सुमीत एजुकेशनल स्टोर्स
  कालेज रोड
  पठानकोट 145 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0186-216091
  (निवास) 21809
- मैसर्स देशराज एंड सन्स
  अरना बरना बाजार
  पटियाला 147 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0175-216076,
  304179
  (निवास) 219172
- मैसर्स पेप्सु बुक डिपो
  बुक्स मार्किट
  पटियाला 147 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 0175-214696,
  74578
  (निवास) 214331, 74605

राजस्थान

- मैसर्स गुप्ता ब्रदर्स
  मदन गोपाल मार्ग
  कैसरगंज, अजमेर 305 001
  दूरभाष : (निवास) 0145-627870
- मैसर्स एवरग्रीन डिस्ट्रीब्यूटर्स
  बी-7, फतेह सिंह मार्किट
  निकट आर.एस. पोस्ट ऑफिस
  जयपुर 302 006
  दूरभाष : (कार्यालय) 0141-362395, 317234
- मैसर्स मनोहर बुक डिपो
  निकट रेलवे स्टेशन रोड
  सदर बाजार
  जयपुर 302 006
  दूरभाष : (कार्यालय) 0141-202903,
  376486
  (निवास) 516056, 510211
- मैसर्स एस.वी. बुक कंपनी
  5, रास्ता ठठेरान
  चौड़ा रास्ता
  जयपुर 302 003
  दूरभाष : (कार्यालय) 0141-321819,
  317889
  (निवास) 606062
- मैसर्स भंडारी स्टेशनर्स
  गुमानपुरा
  कोटा 324 007
  दूरभाष : 0744-327576
- मैसर्स मनोहर पुस्तक भंडार
  गुलाब सागर, जयपुर-342 002
  राजस्थान
  दूरभाष : 540526, 549027

तमिलनाडु

- मैसर्स सैन्ट्रल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
  6, रामनाथन स्ट्रीट
  चेन्नई 600 017
  दूरभाष : (कार्यालय) 044-4343336,
  4342568
- मैसर्स न्यू सेंचुरी बुक हाउस प्रा.लि.
  136, अन्ना सलाई
  चेन्नई 600 002
  दूरभाष : (कार्यालय) 044-8549563,
  8550664

उत्तर प्रदेश/उत्तरांचल

- मैसर्स आलोक प्रिन्टर्स
  14/188, हास्पिटल रोड
  आगरा 282 003
  दूरभाष : 0562-364217, 261420

- मैसर्स एच.एम. पब्लिकेशंस
  12/62, सुई कटरा, हास्पिटल रोड
  आगरा 282 003
  दूरभाष : (कार्यालय) 0562-263495
  (निवास) 312880

- मैसर्स शक्ति बुक एजेंसी
  राजपुर चुंगी
  आगरा 282 001
  दूरभाष : 0562-331233

- मैसर्स साहित्य भवन पब्लिशर्स
  एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि.
  34, लाजपत कुंज
  आगरा 282 001
  दूरभाष : 0562-352189, 354260,
  353154

- मैसर्स इलाहाबाद बुक सेन्टर
  20, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइंस
  इलाहाबाद 211 001
  दूरभाषा : 0532-623468, 420932, 603159

- मैसर्स साहित्य भंडार
  50, चाहचांद
  इलाहाबाद 211 001
  दूरभाषा : 0532-400787, 402072

- मैसर्स सरस्वती सदन
  19, सुभाष मार्किट, बरेली
  दूरभाष : (कार्यालय) 0581-474092
  (निवास) 474042, 471142

- मैसर्स उत्तम पुस्तक भंडार
  1, अखाड़ा बाजार
  देहरादून 248 011
  दूरभाष : (कार्यालय) 0135-624820
  (निवास) 625645

- मैसर्स कमल प्रकाशन
  153, पक्की मोरी
  गाजियाबाद
  दूरभाष : 0575-748051

- नवयुग बुक डिपो
  12, दिल्ली गेट
  गाजियाबाद
  दूरभाष : (कार्यालय) 0575-733389
  (निवास) 718711

- मैसर्स युनाइटेड लाइब्रेरी एवं बुक स्टॉल
  युनाइटेड सिनेमा कंपाउंड
  सिनेमा रोड, गोलघर, गोरखपुर
  दूरभाष : 0551-344841, 341797

- मैसर्स गौरव पुस्तक भंडार
  208, हरजिंदर नगर
  कानपुर 208 010
  दूरभाष : 0512-403525, 451333

- मैसर्स चाचा बुक स्टोर
  121, सदर बाजार
  लखनऊ 226 002
  दूरभाष : 0522-480077, 481177

- मैसर्स शर्मा स्टेशनरी
  बुक्स एंड जनरल स्टोर्स
  श्रीनगर, आलम बाग
  लखनऊ 226 005
  दूरभाष : (कार्यालय) 0522-45685
  (निवास) 454229

- मैसर्स व्यापार सदन
  177/25, महावीर मार्किट, गुईन रोड
  लखनऊ 226 002
  दूरभाष : (कार्यालय) 0522-221771,
  281423
  (निवास) 373294

- मैसर्स माही बुक पैलेस
  विजय नगर (शंकर आश्रम के सामने)
  पूर्वी कचहरी रोड, मेरठ (यू.पी.)
  दूरभाष : 0121-641791, 645415

- मैसर्स राजहंस पुस्तक भवन
  सुभाष बाजार
  मेरठ (उ.प्र.)
  दूरभाष : 0121-516738, 641791

- मैसर्स कैंब्रिज बुक डिपो
  सिविल लाइंस
  रुड़की 247 667
  दूरभाष : (कार्यालय) 01332-72341
  (निवास) 73892

- मैसर्स श्याम पुस्तक भंडार
  मटिया महल
  दाल मंडी पुल के निकट
  सहारनपुर 247 001
  दूरभाष : (कार्यालय) 643824

- अरुणोदय बुक सेंटर
  गुरु बाग
  वाराणसी 221 010
  दूरभाष 0542-400724, 363678

- मैसर्स बनारस बुक कार्पोरेशन
  विश्वविद्यालय रोड, लंका
  वाराणसी 221 005
  दूरभाष : (कार्यालय) 0542-311385
  (निवास) 312316

- मैसर्स विद्यार्थी केंद्र
  डी-45/3, लक्सा रोड
  वाराणसी 221 010
  दूरभाष : (कार्यालय) 0542-404933
  (निवास) 400730

- मैसर्स आइडियल बुक डिपो
  195, सदर बाजार
  मेरठ कैंट
  (उत्तर प्रदेश)
  दूरभाष : 0121-660048

- मैसर्स जिंदल बुक डिपो
  43, करनपुर
  देहरादून (उत्तरांचल)
  दूरभाष 0135-658271

- मैसर्स गणपति एंटरप्राइजिज
  मोती बाजार
  देहरादून (उत्तरांचल)
  दूरभाष : 0135-655639, 657095

- मैसर्स प्रकाश पुस्तक भंडार
  डबल फाटक, संभल रोड
  मुरादाबाद 244 001 (उ.प्र.)
  दूरभाष : 0591-357912

पश्चिम बंगाल

- मैसर्स देव साहित्य कुटीर प्रा.लि.
  21, झामापूकर लेन
  कोलकाता 700 009
  दूरभाष : (कार्यालय) 033-3504294,
  3504295
  (निवास) 3507887

- मैसर्स गुप्ता प्रकाशन
  पंवार बस्ती, डाकघर - माल
  जिला-जलपाईगुड़ी 735 221
  दूरभाष : 55021

- मैसर्स अजय प्रकाशन
  9, जी.सी. मित्रा रोड
  आसनसोल-1
  दूरभाष : (दुकान) 0341-205909
  (निवास) 208742

कुवैत

- मैसर्स सकीना इंटरनेशनल जनरल ट्रेडिंग कंपनी
  डब्ल्यू.एल.एल., पी.ओ. बाक्स 2606
  सफात, कोड नं. 13027 (कुवैत)
  दूरभाष : 00965-5619361, 5617295,
  9702599